कमलनयन शर्मा
व्यक्तित्व
एवं
कृतित्व

कमलनयन शर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व

परामर्शदाता

पण्डित रामेश्वर दत्त वैद्य, वी एन कौशिक, कश्मीरी लाल मिड्ढा,

मदन लाल कोचर, चम्पालाल रांका

सम्पादक

श्रीधर

चम्पालाल रांका एण्ड कम्पनी

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर–302003

कमलनयन शर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रकाशक
सीमा सन्देश
श्रीगंगानगर (राज०)

वितरक
चम्पालाल रांका एण्ड कम्पनी
धामाणी मार्केट, चौडा रास्ता
जयपुर–302003 फोन 75241

सम्पादक श्रीधर

मूल्य 100 रुपये

प्रथम आवृत्ति 1988

मुद्रक अजन्ता प्रिण्टर्स, जयपुर ☐ 44057

अंतरंग

खण्ड प्रथम अपराजेय सघर्षकर्ता

खण्ड द्वितीय सघर्ष के सेनानी

☐ पृष्ठ 25 पर तीसरी लाइन में राजीव गांव के स्थान पर राजोप गांव पढ़ें।

☐ प्रस्तावना

वे लडते ही रहे, हारे नहीं

सफलता क्या है ? सफलता और सामर्थ्य मे से महत्व किसका अधिक है ? वैसे हम सामर्थ्य को अधिक महत्व देते हैं, क्योंकि अपनी क्षमता का अधिकाधिक विकास बहुत कुछ हमारे हाथ की बात है। किन्तु सामर्थ्य के साथ सफलता तभी प्राप्त हो सकती है जबकि एक तीसरी चीज हमारी सामर्थ्य को सहारा दे और वह है—अवसर। सफलता अवसर और सामर्थ्य का मात्र योग है अथवा गुणनफल, यह और बात है। मूल बात यह है कि अवसर हमारे हाथ में उस तरह नहीं है, जिस तरह सामर्थ्य है।

'कमलनयन व्यक्तित्व और कृतित्व' सामर्थ्य की उस त्रासदी की कथा है, जिसे सफलता क्षमता के अनुपात मे प्राप्त नही हुई। सफलता मिली, तो भी संघर्ष चलता रहा और वह समाप्त नही हुआ। एक विद्रोही के रूप मे कमलनयन ने अपने लिये अपना अलग रास्ता बनाया—पंडित का बेटा पंडिताई न करके सरकारी नौकर बना, मगर चाकरी उसे रास न थी और वह कर्मचारियों का नेतृत्व करके आला हुक्काम की बराबरी में आ खडा हुआ। आगे के पृष्ठो मे आप देखेंगे कि कर्मचारी-संघर्ष के लम्बे ऐतिहासिक युद्ध मे पहला मोर्चा कुर्सियो का ही रहा। रही त्रासदी की बात। त्रासदी तो कमलनयन ने स्वेच्छा से गले लगायी थी। विजय भरपूर थी—लेकिन सिंहगढ़ विजय जैसी, जिसमे सिंह को खोकर गढ़ पर विजय मिली। इस विजय के पुरस्कार स्वरूप कमलनयन को नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया।

सब जानते हैं व्यक्तित्व के निर्माण में शिक्षा का कितना महत्व है। कमलनयन को शिक्षा से वंचित होकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करना पड़ा। बिना गुरु और बिना गुरुकुल विद्यालय के उसने स्वाध्याय किया और उसका अध्ययन समाजवादी दर्शन के ऊपर आकर ठहर गया। नौकरी के बंधन से मुक्त होकर उसने समाजवादी आदर्शों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये संघर्ष किया, किन्तु हमारे समाजवादी आन्दोलनों की नियति ही क्या थी, जो सिद्धि अथवा वरदान के रूप में कमलनयन को कुछ दे पाती ? समाजवादी संघर्ष का काल उनके जीवन में विश्राम, अन्तर्द्वन्द और कुंठा की अवधि का रहा और समाजवाद के साथ पूरी सहानुभूति संजोये हुए कमलनयन पत्रकार बने।

पत्रकार तो बन गये लेकिन 35–40 वर्षों की उपलब्धि के रूप में केवल पत्र ही हाथ में रखने वाले नहीं आ पायी। पत्रकार के रूप में वे जीवन भर गंगानगर की उत्तरोत्तर समृद्धि के बीच अपने नाम के अनुरूप समृद्धि की गंगा के ऊपर कमल की तरह खिले रहे, देखते रहे उनके नयन इस गंगा को, मगर वे इस गंगा में भाग या डूब नहीं। गंगानगर की समृद्धि के छींटे उन पर पड़े तो भी उन पर क्या असर होना था—वे सूखे के सूखे रहे।

1947 की जो क्रांति थी उसमें पत्रों ने अपना योगदान दिया था। समाचार पत्र आजादी की लड़ाई के रंग में रंगे हुए थे और लोग एक एक अखबार से आकर्षित होते तब इनके समाचार पहुँचाने के लिये उन्हें पढ़कर सुनाया करते थे। राजस्थान में 1947 की क्रांति 1949 तक चलती रही और तब तक कमलनयन कर्मचारी रहे। कर्मचारी रहकर भी उन्होंने क्रांति में हिस्सा लिया और साप्ताहिक ललकार जैसे क्षेत्र के अन्य पत्रों ने इस क्रांति का समर्थन किया। किन्तु गणराज्य की स्थापना के बाद से समाचार पत्रों का स्वरूप और चरित्र बदल गया।

हम उसी आमदी की डोर को थामे आगे बढ़ रहे हैं जिसने कमलनयन की सामर्थ्य का संयोग अवसर नामक तीसरे तत्व से नहीं होने दिया। यदि 1951 के स्थान पर 10 वर्ष पूर्व 1941 में उन्होंने अखबार निकाला होता तो उनकी पत्रकारिता सफल कही जाती सम्पादक के नाते उनकी प्रतिष्ठा होती। 1951 के बाद की पत्रकारिता है क्या ? या तो वह बड़े पूंजीपति घरानों की है या कुछ छोटे अखबारनवीसों के पीले हथकंडों की। दोनों के बीच कमलनयन कहां फिट होते ?

इसीलिये हम कहते हैं सफलता और असफलता की दृष्टि से किसी के जीवन का मूल्यांकन नहीं किया जाना चाहिये। सफल न सही किन्तु फिर भी कमलनयन का जीवन भरपूर ऊर्जस्वित और प्रेरक था। कुछ तो था जिसके कारण रियासत बीकानेर के डरपोक कर्मचारी बहादुर बागी के रूप में उठ खड़े हुये। कुछ तो था, जिसके कारण प्रदेश के बच्चे-बूढ़े की जबान पर कमलनयन का नाम रहा और ऐसी कीर्ति कि उसकी गूंज समूचे राजस्थान में व्याप्त हुई। लेकिन जो कुछ कमलनयन में था उसे विकास के लिये अवसर की उपयुक्त आधार भूमि नहीं मिल पायी।

अवसर बड़ा छलिया तत्व है एक तरह की लाटरी जैसा। सीमा सन्देश परिवार ने अपने संस्थापक की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिये इस ग्रंथ की सामग्री यहां वहां से जुटायी।

जानकार लोगों की स्मृतियों का सहारा लिया, कमलनयन जी की डायरी देखी। कर्मचारी-संघर्ष का जो पुराना रिकार्ड उपलब्ध था, उसे देखा और ऐसे सभी सूत्रों को पकड़कर इस सामग्री को लिपिबद्ध किया। अवसर या चांस ने यहां भी साथ नहीं दिया। लेखक अपनी कलम के चमत्कार से न कुछ को सब कुछ बना सकता है, किन्तु लिपिबद्ध करने का काम ऐसे चमत्कारी लेखक ने नहीं किया।

तथापि जो सामग्री यहां प्रस्तुत की जा रही है, वह कमलनयन शर्मा का एक चित्र उपस्थित तो करती ही है। इस चित्र में रंग या चमक-दमक न हो, किन्तु आकृति है। सीमा सन्देश परिवार ने अपने सीमित साधनों और श्रम के बल पर जो प्रयास किया है वह स्तुत्य है। वह और सुन्दर हो सकता था, किन्तु जो है वह इतिवृत्त के रूप में पूर्ण है। मैं, जो स्वयं कमलनयन जी के परिचितों में से एक हूँ, प्रस्तुत सामग्री का वैसा ही पाता हूँ, जैसे कमलनयन जी खुद थे। उनके ज्वाला मुखी व्यक्तित्व पर सादगी और सहजता की हरियाली छायी रहती थी। ऐसी ही सादगी इस इतिवृत्त में भी है।

इस स्मृति-ग्रंथ की सामग्री को केवल क्रमबद्ध और व्यवस्थित करने का-लिखने का नहीं सम्पादन भर का-काम शेष था जब बृज भूषण और श्रीधर इसे जयपुर लाये। सामग्री लाने से लेकर पुस्तक छप जाने की निर्धारित तिथि के बीच इतना समय था कि इसे दुबारा लिखा जाता या इसकी भाषा का और परिष्कार किया जाता। पहली बार पढ़ना शुरू करने पर मुझे ऐसा लगा भी कि यह सब करना है। किन्तु जैसे-जैसे आगे पढ़ता गया, तस्वीर उभरने लगी। इसे मैंने "लण्डस्केप" की शक्ल में रखना ही ठीक समझा। मुझे ऐसा लगा कि इस भूभाग को महल और बगीचे की तरह काट छांट कर बनाना इसके मौलिक, प्राकृत रूप को बिगाड़ने जैसा होगा। मुझे यही ठीक लगा कि यह जो सहज निजी रूप है श्रृंगार से बिगड़ेगा, अतएव इसे यों ही रहने दिया जाये। कमलनयन का जो रूप हम पिछले वर्षों से देखते आ रहे हैं, उनके स्मृति ग्रंथ का रूप भी उससे मिलता जुलता है।

कमलनयन बहुत कुछ बन सकते थे, उनकी कीर्ति का और अधिक विस्तार हो सकता था, किन्तु उन्हें उपयुक्त अवसर नहीं मिल पाये। उन्हें सही साथी नहीं मिले, पर्याप्त साधन नहीं मिले, और असफलता की त्रासदी ने उन्हें कुंठित किया। उनका अन्तिम दिनों का रूप एक थके हुये योद्धा का था, जो कभी पराजित नहीं हुआ। वे थक चुके थे, लेकिन लड़ते रहे। यही कहते रहे, पत्र नहीं चलता, लेकिन चलाना है, राजनीति विकृत है उसे ठीक करना है, आदि।

क्या संघर्ष की यह अक्षुण्ण भावना प्रेरक और अनुकरणीय नहीं है? हम खुद जो अब पिछली पीढ़ी में शुमार हो चुके हैं, यही तो कहना चाहते हैं कि संघर्ष अभी चुका नहीं है, लड़ाई अभी जारी है, जीवन एक संग्राम है। इसीलिए सभी कमजोरियों और नाकामयाबियों के बावजूद हम कमलनयन को एक बुलन्द हस्ती मानकर नयी पीढ़ी के सामने पेश कर रहे हैं।

जगदीश चतुर्वेदी

□ सम्पादकीय

जिनकी जीवनी में इतिहास की सामग्री है

हर पीढी की यह आकाक्षा होती है कि वह आने वाली नयी नस्ल के लिए विरासत म कुछ छोड कर जाये। इसका उद्देश्य नयी पीढी को अपने अनुभवो का लाभ देकर उसका सही माग दशन कराना तो होता ही है, साथ ही यह चाहत भी होती है कि उनके सघषपूण इतिहास से नयी नस्ल प्रेरणा लेकर अपने को जीवन सग्राम के लिए तैयार कर सके। ऐसी ही लालसा कमलनयन जी के मन मे भी थी। इस उद्देश्य से बीकानेर राज्य कमचारी सघ के पुराने सघष के साथियो को लिखे गये अपने पत्र मे उन्होंने यह इच्छा भी प्रकट की थी।

इस इच्छा की अभिव्यक्ति उन्होने अपने मित्रो व परिवार जनो मे भी कई बार की थी और कमचारी सघ की हडताल (1946-49) सम्बधी अनेक महत्वपूण दस्तावेजो को उन्होने बडी लगन से सजोकर रखा हुआ था। इस पुस्तक के लिए कमचारी हडताल के सम्बध म अन्य अधिकारिक जानकारी राजस्थान अभिलेखागार बीकानेर व तत्कालीन समाचार पत्रो स जुटायी गयी। समकालीन कमचारी नेताओ से साक्षात्कार कर व उनकी रचनाओ से भी इस आन्दोलन की घटनाओ को पुष्ट किया गया है।

कमलनयन जी का समाजवाद के प्रति झुकाव उनके कमचारी जीवनकाल से ही स्पष्ट हो गया था। प्रजा परिषद म भाग लेने, कमचारी हडताल को नेतृत्व दने व राजनीतिक (समाज वादी पार्टी) सभाओ म भाषण दने के आरोप मे उन्हें राजकीय सेवा से अलग कर दिया गया तो कुछ वर्षों तक वे पूणकालिक समाजवादी पार्टी कायकर्ता भी रहे। एक सघषशील कायकर्ता और राज नीतिक तैनरो के प्रत्यक्ष दशन ने उनके मन म समाजवादी पार्टी तथा इसम अपने अनुभवो को कलमबद

करने की इच्छा को भी जागृत किया। पुराने समाजवादी साथियों के साथ बात चीत करते समय उन्होंने यह बात कई बार कही कि हम सब मिलकर अपने क्षेत्र के समाजवादी आन्दोलन का इतिहास लिखें। मगर जीवन की भाग दौड़ या अपनी दूसरी जिम्मेदारियों के कारण कोई इस काम के लिये समय न दे पाया और यह इतिहास लिखा न जा सका। उनकी इच्छा पूर्ति के रूप मे इस पुस्तक मे हम जिले मे समाजवादी गतिविधियों की झलक मात्र देने मे ही समर्थ हो पाये हैं जो उनकी डायरी के पन्नों, समाचार पत्रों के समाचारों व समाजवादी कार्यकर्ताओं से की गयी बातचीत पर आधारित है।

कमलनयन जी की मुख्य पहचान एक पत्रकार के रूप में हुई, जिसमें उन्होंने अपना आधा जीवन होम दिया। 35 वर्ष के अपने पत्रकार जीवन में वह सब कुछ झेला, जो छोटे समाचार पत्र के प्रकाशक व सम्पादक को भुगतना पड़ सकता है। अपने समाचार पत्र 'सीमा सन्देश' (पहले साप्ताहिक व बाद मे दैनिक) के माध्यम से उन्होंने अपने क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को पूरी निर्भीकता व मुखरता से उठाया। अपने इस दायित्व का निभाने मे उन्होंने इस बात की कभी परवाह नहीं की कि जनता के प्रति अपना दायित्व पूरा करने मे सेठ राजनीतिज्ञ व मन्त्री नाराज होते हैं या सरकारी अफसर और कर्मचारी। जो जैसा देखा और समझा उसे बेबाक लिख दिया। इस निर्भीकता की कीमत भी उन्होंने चुकायी। उन पर तीन बार प्राणघातक हमले हुए, जिसमें दो बार उन्हें अस्पताल मे भर्ती होना पड़ा और हाथ पैरों की हड्डियां टूटने पर प्लास्टर करवाना पड़ा। हमलावरों को एक वरिष्ठ मन्त्री का आशीर्वाद प्राप्त था। मानहानि के कई मुकदमे झेलने पड़े, जिनमें से एक मुकदमा जनता को राशन मे मिलने वाले गेहूं को एक सेठ द्वारा चोरी से उठाने के बारे मे था। राजस्थान सरकार के मुख्य अभियन्ता द्वारा दायर किया मुकदमा दस वर्ष तक चला। मगर अंतत वह मुकदमा सरकार को वापस लेना पड़ा। गम्भीर आर्थिक संकटों के बावजूद वे कहीं भी झुके नहीं, चाहे टूटने की आशंका ही क्यों न रही हो। जहां दूसरे पत्रकार 2–4 वर्षों में लखपति हो गये, वहां कमलनयन जी 35 वर्ष अखबार निकालने के बाद भी अपने प्रेस व समाचार-पत्र कार्यालय के लिये बाजार मे एक दुकान भी न खरीद पाये।

कमलनयन जी की लड़ाई केवल बौद्धिक स्तर पर कलम के माध्यम से ही नहीं होती थी। वे जिस मुद्दे पर तीव्रता से अनुभव करते थे उसमें सशरीर कूद पड़ते थे। फिर वह मुद्दा चाहे अफसर के हिटलर शाही रवैये का हो या धन के मद मे चूर पूंजीपति का, या जुल्म या सत्ता के नशे मे बेसुध राजनीतिज्ञ का। वे उनके विरुद्ध प्रदर्शन करने व जलसा जलूस करने मे अगुआ रहते थे। हरिजनों का मन्दिर मे प्रवेश का मसला हो, या बहू को जिन्दा जलाने की घटना हो वे पूरी सजगता का परिचय देते थे। कपड़ा मिल व चीनी मिल के मजदूर हो या खेतों में काम करने वाले मुजारे हों, उनके हक मे वे सदा लड़े। कर्मचारी नेता के रूप मे ही नहीं, समाजवादी कार्यकर्ता व पत्रकार के रूप मे भी किसान आन्दोलनों के दौरान वे जेल में बंद हुए।

अपने इलाके श्रीगंगानगर के लिए कमलनयन जी चलते फिरते 'एन्साईक्लोपीडिया' थे। अपनी डायरी मे उन्होंने लिखा है कि जिले के पचास हजार लोगों को वे व्यक्तिगत रूप से जानते

हैं। बीस-बीस, तीस-तीस मील की पैदल यात्राओ के कारण उन्हे यह पता रहता था कि जिले का कौन सा गाव किस तहसील व किस सडक पर स्थित है, वहा की क्या समस्याए हैं और वहा के प्रमुख व्यक्ति कौन-कौन हैं ? जिले म कौन व्यक्ति रातो-रात मालामाल बन गया और कौन बडी मेहनत से बना किसी का चरित्र उनसे छिपा न था। चालीस-पचास वर्ष का इतिहास उन्होंने अपनी पैनी आखो के सामने देखा ही नही बल्कि उससे गुजरे भी और अपनी लेखनी से उसे सकलित भी किया। उन द्वारा सम्पादित सीमा-सन्देश इस जिले के आधुनिक इतिहास लेखन के लिए सूचनाओ का प्रमुख स्रोत बन गया है। इससे भी अधिक व विविध जानकारी स्मृतियो म कद थी जिसकी कुछ झलक हम उनकी डायरियों मे मिलती है, जो वे नियमित रूप स लिखत थे। ये डायरिया उनके विचारों को तो प्रतिबिम्बित करती ही हैं, जिले की अनेक अनजानी घटनाओ की जानकारी भी देती हैं। अत यदि उनके सम्पर्क व जानकारी के आधार पर कमलनयन जी को श्रीगगानगर का एनसाईक्लोपीडिया कहा जाय तो अतिशयोक्ति नही होगी।

ऐसे व्यक्ति के बारे म जिसने श्रीगगानगर के जन जीवन का तीन चार दशाब्दियो तक नेतृत्व दिया, उसके व्यक्तित्व व कृतित्व की, जानकारी पाने की इच्छा श्रीगगानगर जिलेवासियो को होना स्वाभाविक है। सीमा सन्देश का, जिसे उन्होने न कवल जन्म दिया बल्कि पाल-पोस कर बडा भी किया यह पुनीत कर्त्तव्य है कि उनके आगामी जन्म दिवस के अवसर पर एक ऐसी पुस्तक का प्रकाशन करे, जो इस बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति को समझने म सहायक सिद्ध हो। "कमलनयन शर्मा व्यक्तित्व एव कृतित्व का प्रकाशन सीमा सन्देश क वर्तमान सचालको ने इसी जिम्मेवारी को निभाते हुए अपने सस्थापक को एक विनम्र श्रद्धाजलि के रूप मे आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कमलनयन जी जिस कर्मचारी आन्दोलन व समाजवादी आन्दोलन को अपने शब्दो के माध्यम स जन जन तक पहुँचाना चाहते थे, उनकी उस इच्छा का निर्वाह भी वर्तमान प्रकाशन से होता है। यद्यपि उसका वह स्वरूप तो नही बन पाया जो हम चाहते थे तो भी जिस सीमा तक हम इसमे सफल हो पाये हैं उसी मे हमे सतोष है। पुस्तक मे अनेक कमिया रही होगी जिसे स्वीकारते हुए हमे यही कहना है अपूर्णता मनुष्य की स्वाभाविक कमजोरी है।

अत म सीमा सन्देश परिवार की ओर स मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होने हमारे इस प्रयास मे किसी प्रकार से अपना अमूल्य सहयोग देने का अनुग्रह किया है। विशेषत कमलनयन जी के सघर्ष के साथियो, उनके कृतित्व अथवा व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने वाले मित्र धा क विद्वान लेखको, अपने परामर्शदाता मण्डल के सभी सदस्यों एव शुभकामना सदेश प्रेषित करने वाले महानुभावो के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहूगा। श्री चम्पालाल गर्ग का मैं विशेष उल्लेख करना चाहूँगा जिन्होंने ग्रथ की तयारी के हर चरण मे अपना मार्गदर्शन निस्सकोच रूप स प्रदान किया है। ग्रथ के सम्पादन कार्य मे हमे वरिष्ठ लेखक एव पत्रकार श्री जगदीश चतुर्वेदी का जो सहयोग मिला उसक लिए उन्हे धन्यवाद। श्री राजमल जी सघी ने मुद्रण के कार्य म व्यक्तिगत रुचि ली है और इसके लिये उनका मुद्रणालय अजता प्रिन्टस और वे स्वय हमारी कृतज्ञता के पात्र हैं। आवरण-सज्जा क लिये कलाकार श्री सत्यदेव सत्यार्थी के प्रति भी मैं कृतज्ञ हू।

पिता प श्री वासुदेव शर्मा

कमल नयन शर्मा

न्यायमूर्ति जगदीश शरण वर्मा
राज्यपाल, राजस्थान

राज भवन, जयपुर
दिनाक 30 नवम्बर, 1987

सदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि "दैनिक सीमा-सन्देश" श्री गगानगर द्वारा सुप्रसिद्ध पत्रकार एव स्वतन्त्रता सेनानी श्री कमल नयन शर्मा के कृतित्व एव व्यक्तित्व पर एक "स्मृति-ग्रन्थ" प्रकाशित किया जा रहा है।

स्वर्गीय श्री शर्मा एक स्वतन्त्रता सेनानी और भारतीय समाजवादी चिन्तक होने के साथ-साथ नैतिक तथा लोकतान्त्रिक मूल्यो के पक्षधर लेखक एव सजग पत्रकार के रूप मे मित्रो और प्रशासको के बीच सदा अविस्मरणीय रहेगे।

ग्रन्थ के सफल एव जनोपयोगी प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाये प्रेषित है।

आपका
(जगदीश शरण वर्मा)

मुख्य मंत्री राजस्थान
जयपुर

दिनांक 28 नवम्बर, 1987

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि पत्रकार श्री कमलनयन शर्मा की स्मृति मे हिन्दी दैनिक सीमा सन्देश के तत्वाधान मे एक स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा हे ।

राजस्थान मे हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र मे श्री कमलनयन शर्मा ने समाचार-पत्र सम्पादक के रूप मे उल्लेखनीय सेवाए दी है । श्री शर्मा आजादी के दौर की उस पीढी के कार्यकर्ताओ मे से थे जिन्होने राष्ट्र और समाज सेवा के लिए सकल्पित होकर कार्य किया ।

मुझे खुशी है कि उनके द्वारा स्थापित समाचार पत्र उनकी स्मृति मे ग्रन्थ प्रकाशित कर रहा है । आशा हे, इस ग्रन्थ मे ऐसी सामग्री का समावेश किया जायेगा जो श्री शर्मा के व्यक्तित्व एव कृतित्व को समझने मे मददगार होगी ।

मै स्मृति ग्रन्थ की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनाए प्रेषित करता हू ।

आपका
(हरिदेव जोशी)

शिवचरण माथुर
सदस्य
राजस्थान विधान सभा

फोन भीलवाड़ा 6337
जयपुर (का) 68189
(नि) 66808
कार्यालय 3, हॉस्पिटल रोड
जयपुर-302004
निवास ए-87, श्याम नगर
अजमेर रोड जयपुर

दिनांक 11 सितम्बर, 87

संदेश

प्रिय श्री बृजभूषण जी,

आपके पत्र दि० 27-8-87 द्वारा यह जानकारी मिली कि सीमा संदेश के संस्थापक तथा प्रधान संपादक स्वर्गीय श्री कमलनयनजी शर्मा की आगामी जयन्ती के अवसर पर एक स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है।

श्री कमलनयनजी राजस्थान के गंगानगर अंचल के एक निर्भीक सार्वजनिक कार्यकर्ता थे तथा अपनी लेखनी द्वारा उन्होंने पिछड़े तथा दबे हुए समाज के लोगों के प्रति होने वाले अन्याय के प्रति आवाज उठाई थी। श्री शर्मा अपने जीवन में समाजवादी विचाराधारा के प्रति-पोषक रहे।

मैं इस अवसर पर उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

आपका
(शिवचरण माथुर)

हीरालाल देवपुरा
ऊर्जा मंत्री

जयपुर
राजस्थान
दिनाक 30 नवम्बर, 1987

सदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सीमा सदेश के सस्थापक स्वर्गीय श्री कमलनयन शर्मा की स्मृति मे स्मृति ग्रथ प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है इस ग्रथ द्वारा श्री कमलनयन जी की जीवनी व उनके द्वारा जनहित मे किये गये कार्यो को प्रकाशित किया जायगा जिससे पाठक वृन्द उनके त्यागमय जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर लाभान्वित हो सकेंगे।

प्रकाशन की सफलता की कामना के साथ।

आपका
(हीरालाल देवपुरा)

हीरालाल इन्दौरा राज्य मंत्री,
खनिज एवं समाज कल्याण

जयपुर
राजस्थान

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि स्वतन्त्रता सेनानी स्व० कमलनयन शर्मा की पुण्य स्मृति में स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। इस ग्रन्थ के माध्यम से राजस्थान के सभी जागरूक लोगों को श्री कमलनयन शर्मा के जीवन चरित्र की जानकारी हो सकेगी और उनके द्वारा सम्पन्न विभिन्न सामाजिक कार्यों का ज्ञान हो सकेगा।

भवनिष्ठ

(हीरालाल इन्दौरा)

जीवन मूल्यों के लिए सघर्ष का नाम हैं कमलनयन

भारत यद्यपि अगस्त 1947 को आजाद हो गया था और यहा तिरगा फहरा दिया गया था, मगर अन्य रजवाडो की भाति बीकानेर राज्य म 1949 मे रियासतो के एकीकरण से जब तक राजस्थान राज्य नही बना राष्ट्रीय झडा नही फहराया गया। राज की ओर से ऐसा करने की सख्त मनाही थी। वह 15 अगस्त का दिन था। मैं तब दसवी कक्षा मे पढता था। कमलनयन जी का युवा वग पर काफी असर था। उन्होने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि जब आजादी के बाद पूरे देश म तिरगा फहरा सकता है तो गगानगर मे क्यो नही ? विद्यार्थियो न निणय लिया कि वे राजकीय महाविद्यालय पर झडा फहरायेंगे। इसी भावना से विद्यार्थियो का एक झुड इस काम के लिए आगे बढा, जिसमे ओ पी सनी अजुन सहगल मुन्नालाल गोयल, जगदीश चन्द्र कुक्कड शामिल थे। पुलिस का सख्त बन्दोबस्त था। ड्यूटी पर तनात होन वाले पुलिस की ओर से सनी के पिता तथा प्रशासन की ओर से तहसीलदार श्री छगनलाल जी (मेरे पिता) थे। स्वाभाविक रूप से सनी और मैं दुविधा मे पड गये। यह देखकर कमलनयन जी ने कहा तुम दोनो अपने पिताओ से बात करो झडा मैं औरों से फहरवा देता हू। ऐसा ही हुआ। राजकीय महाविद्यालय पर राष्ट्रीय ध्वज तिरगा बीकानेर रियासत की पूण पाबन्दी के बावजूद पहली बार फहरा युवाओ के द्वारा श्री कमलनयन की प्रेरणा से।

कमलनयन जी कमचारियो के नेता ही नही मजदूरो के भी हमदद थे। 1 मई, 1949 का गगानगर मे पहली बार मई दिवस को मजदूर रेली पुरानी आबादी मे निकाली गइ। कमलनयन जी व एक दर्जी (सम्भवत उसका नाम मुल्खराज था) की प्रेरणा से। हम छात्रा के साथ मजदूरो ने यह रैली निकाल कर इसका श्री गणेश किया। तब से यह मजदूर रैली प्रति वष निकलती है।

अपने अखबार से उन्हे कितना मोह था और युवा वग मे उनका कितना असर था, इसकी झलक उस घटना से मिलती है जब इन्हे नगर के कुछ प्रभावशाली व्यक्तियो ने इसलिए पिटवा दिया था क्योकि वे उनके बुरे कामो को अखबार के माध्यम से उजागर करन से नही चूकते थे। गम्भीर चोटें लगने के बाद वे अस्पताल म भरती हुए। हम उनसे मिलने अस्पताल गय। उन्हें अपनी चोटो की चिन्ता नही थी और पूछन पर उन्होने यही इच्छा प्रकट की कि अस्पताल म होने के कारण अब मैं तो अखबार नही निकाल पाऊगा मगर मेरी इच्छा है कि अखबार का प्रकाशन न रुके। तुम लोग यह काम कर सको तो मुझे सतोष मिलेगा। मैन और श्री ज्ञान प्रकाश पिलानिया जी ने अखबार निकाला और उनकी इच्छा पूरी की।

1950 51 के आस पास कमलनयन जी गगानगर मे अखबार निकालने की सोच रहे थे तो मैंने तथा दूसरे युवा साथियो ने उन्हें सलाह दी। हमारा मत था कि गगानगर एक पिछडा इलाका है। यहा शिक्षा का प्रसार न होने के कारण न तो कोई पाठक मिल सकता है और न इसमें लिखने के लिए अच्छे लेखक। हमारे पास आर्थिक साधन भी नही है। एसी परिस्थितियो में अखबार चल नही पायेगा। मगर इन्होन हमारी बात नही मानी और अखबार निकालना आरम्भ कर दिया। उनके इस निणय के बाद उन्होने कुछ काम मेरे जिम्मे भी सौंपा। मुझे कहते हुए प्रसन्नता होती है कि सीमा सन्देश के प्रथम तीन अको के सम्पादकीय मैंन ही लिखे थे।

चालीस वष पूव जो सम्पक कमलनयन जी से शुरू हुआ वह जीवन पयन्त चला। मैं जब भी गगानगर आता मेरा सबसे पहला काम उनस मिलना होता था। अखबार के कार्यालय जाता तो वे अपनी कुर्सी छोडकर मुझे यह कह कर बिठा देते अब इसका असली व पुराना सम्पादक आ गया है अत इस कुर्सी पर तो वही बठेगा। हमारी इतनी निकटता का उन्होने कभी भी कोई लाभ नही उठाया। मैं जन सम्पक निदेशालय मे 7 वष तक निदेशक के पद पर रहा और सोचता कि किसी प्रकार इनकी मदद करू। पर वे मुझे सदा ही समझाते कोचर मेरे अखबार को विज्ञापन ज्यादा कभी न देना। वरना लोग तुम पर ऊगली उठायेंगे कि अपनी घनिष्ठता का तुमने मुझे अनुचित लाभ दिया है। मैं नही चाहता कि मेरे कारण तुम्हे कोई परेशानी झेलनी पडे।

सन् 1977 मे जब जनता सरकार का नया मन्त्रि मण्डल बना, तो तत्कालीन जन सम्पक मन्त्री श्री महबूब अली, कमलनयन जी को भली भाति जानते थे। राज्य स्तर के पत्रकारो की एक समिति जब उन्होने गठित की तो कमलनयन जी को उन्होंने इसका सदस्य बना दिया। इस नियुक्ति की सूचना जसे ही कमलनयन जी को मिली वे उसी दिन रेलगाडी म बठकर जयपुर आ गये। मेरे दफ्तर मे आकर कहा 'कोचर तुमने यह क्या किया? लोग तुम को क्या कहेंगे?' मैंने उन्हे सारी बात समझाई तब जाकर उन्ह तसल्ली हुई।

36 वर्ष तक अखबार चलाने के बावजूद उनकी आर्थिक स्थिति डावाडोल ही रही। इसका प्रमुख कारण यह रहा कि अखबार उन्होंने कभी एक व्यवसाय समझ कर नही वरन् एक मिशन और आदर्श के रूप मे चलाया। सत्ता से उनका सदा विरोध रहा। चाहे वह किसी भी पार्टी की हो। सत्ता से उन्होने कभी समझौता नही किया। इस कारण उनका कोई लाभ नही उठा सके। मैंने उन्हे कई बार कहा कि आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिए लोग अखबारो के विशेषांक निकालते है। आप भी ऐसा कुछ करें। उनका जवाब होता "करूंगा तो अपने बल बूते पर करूंगा।' मैं कमलनयन जी को एक सफल पत्रकार नही मानता मगर जिस लगन, मेहनत व धैर्य से उन्होंने सीमा सन्देश को पहले साप्ताहिक व बाद मे दनिक के रूप मे 36 वर्ष तक चलाया वह वास्तव मे आंचलिक पत्रकारिता की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

पैसे के मामले मे वे फक्कड थे। हमारे बीच एक समझौता था। जब उनके पास पैसो की कड़की होती और जयपुर आते थे मुझसे 50 रुपये लेते थे। जब उनकी जेब मे पैसे होते थे तो मुझे नीरोज होटल ले जाते और 50 रुपये के बिल का भुगतान वे करते थे। जयपुर मे जन सम्पर्क करने के बाद शाम को अक्सर मेरे घर आ जाते थे और 2-3 घण्टो तक मुझसे समाज, देश राजनीति के सम्बन्ध मे विचार व चिन्तनपूर्ण बातें करते। उस समय वे मुझसे कहते 'कोचर अब सरकारी अफसर के रूप मे नही मेरे सहयोगी व दोस्त के रूप मे खुलकर बात करो। अपनी वार्ता मे कभी घोर निराशावादी लगते थे तो कभी पूर्ण आशावादी। सक्रिय राजनीति मे तो वे शायद 1957 तक रहे मगर राजनीतिक मामलो मे उनका अध्ययन व चिन्तन जीवन के अन्तिम समय तक बना रहा। वे महसूस करते थे कि आम गरीब व दबे हुए आदमी के साथ न्याय नही हो रहा है हमारी वर्तमान व्यवस्था मे।

मैं उन्हें 40 वर्षों से देखता आया हूँ और इस लम्बे अर्से मे उनमे कोई अन्तर नही पाया। वही सफेद बाल, सफेद खादी का कुर्ता पायजामा जूती व आंखो पर चश्मा, पैदल ही घूमना। जयपुर आते तो एक बार भी मुझे नही कहा कि गाडी (कार) से मुझे लेने आ जाओ या छुड़वा दो।

गंगानगर के बारे मे अक्सर यह कहा जाता है कि यहा कोई सांस्कृतिक गतिविधियां नही। यहां की कल्चर तो एग्रीकल्चर है। मगर जिन लोगो ने आज से 30 35 वर्ष पहले का जमाना देखा है उन्हे भली भांति याद होगा कि यहा तब गर्मियो की छुट्टियो मे साहित्य सम्मेलन होता था जो तीन दिन तक लगातार चलता। इसमे साहित्यिक गतिविधियो के अलावा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होते थे। इन गतिविधियो का केन्द्र होता था स्थानीय नवयुवक पुस्तकालय और उसका प्रांगण। शायद आपको जान कर आश्चर्य हो, कमलनयन जी इन गतिविधियो मे बढ चढ कर हिस्सा लेते थे। मुझे याद है प्रसिद्ध साहित्यकार व इतिहासकार श्री खड्गावत व श्री गौरीशंकर जी आचार्य भी ऐसे समारोह मे आये थे।

मुझे वह समय याद करते हुए प्रसन्नता का अनुभव होता है कि लोगो मे शिक्षा का प्रसार और जन-जागृति का प्रसार ग्रामीण इलाको मे हमने उस दौर मे किया जब न आवागमन के सुलभ साधन थे, न बिजली थी, और न आडियो विजुएल के आधुनिक साधन। उस जमाने मे हम

पैदल या बसो में धक्के खाते हुए ग्रामीणों तक पहुंचते तथा इधर-उधर से फाटो काटकर बनाई गई स्लाइडो की सहायता से उन्हें बताते कि ये महाराणा प्रताप हैं और ये महात्मा गांधी हैं और ये महान् इसलिए हैं कि इन्होंने देश की ये-ये सेवाए की। यह मच्छर की तस्वीर है। यह पानी के गड्ढो म पैदा होते हैं। यह बीमारी के फैलाने वाला मच्छर है, यह नहीं है। मच्छरो को खत्म करने के लिए क्या करना चाहिए। मुझे याद है मुन्नालाल गोयल व अन्य समर्पित युवकों सहित हम कमलनयन जी के नेतृत्व और प्रेरणा से रात को लालटेन लेकर गावो में जन जागृति व प्रौढ शिक्षा के काम को पूरी निष्ठा व लगन से करते थे।

कमलनयन जी को मैं एक पत्रकार व कर्मचारी नेता ही नहीं, जन जागृति जगाने वाला सचेष्ट नागरिक, श्रमिकों का दोस्त व एक साहित्यिक रुचि वाला व्यक्ति मानता हू जिन्होंने पूरी निर्भीकता व बेफिक्री से अपना जीवन जिया। उनका जीवन वास्तव में मानव मूल्यों के लिए संघर्षों की कहानी है और इसी के लिए उन्हे याद किया जाता है।

कन्हैया लाल कोचर, आई ए एस
श्रम आयुक्त,
राज सरकार

बडे मेहनती व हिम्मत वाले थे

कमलनयन जी से मेरा परिचय 40 वष पुराना है, जब सन् 1946 म वे इस क्षेत्र म कमचारी नेता के रूप मे उभर रहे थे। फिर 1949 म बीकानेर रियासत के कमचारियो का आन्दोलन उन्होंने चलाया और आखिरकार बरखास्त होना मजूर किया, पर आन्दोलन से पीछे नही हटे। इसके बाद गगानगर जिले के 1954 के किसान आबियाना आन्दोलन मे उन्होने सक्रिय भाग लिया और जेल गये। 1969–70 के नहरी भूमि नीलामी रोको आन्दोलन मे उन्होने अपने अखबार के माध्यम से इस आन्दोलन को सफल बनाने मे महत्वपूण भूमिका निभाई।

राजनीति मे उन्हाने पहले 1945-46 से राष्ट्रीय आन्दोलन मे प्रजा परिषद के लिए काय किया और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद समाजवादी विचारो से प्रभावित होकर समाजवादी पार्टी के लिए एक सक्रिय कायकर्त्ता के रूप म काय किया। उन्हाने पूण कालीन पार्टी कायकर्त्ता के रूप में पार्टी का दफ्तर भी सम्भाला, चन्दा भी एकत्रित किया, जगहजगह दौरे किये, भाषण दिये। सप्ताह म कम से कम एक आम जलसा वे करवाते थे और उसम पूरे जोश, गुस्से व उग्रता से बोलते और अपने विचार रखते थे। भाषण करने म वे माहिर थे। मुझे उनकी सबसे बडी विशेषता यह लगी कि वे

काम बहुत करते थे। मैं आश्चर्य करता हूँ कि अभावों में रहने वाला एक व्यक्ति 16-18 घण्टा तक लगातार कैसे काम कर पाता था। वे इस क्षेत्र में सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापकों में से थे। सन् 1957 तक वे सक्रिय राजनीति में रहे। डा० राममनोहर लोहिया की फिलासफी से वे अत्यन्त प्रभावित थे और उनसे कई बार मिले थे।

1957 के बाद उन्होंने अपने अखबार सीमा सन्देश की ओर अधिक ध्यान दिया। अखबार चलाना भी बड़ी हिम्मत काम है। मुझे याद है कि 1950 के दशक में जब अखबार निकलना ही शुरू हुआ था नगर के सत्ताधारी प्रभावशाली व्यक्तियों ने उन पर दो बार प्राण घातक हमले करवाये, क्योंकि वे कमलनयन के अखबार के विरोध की आवाज को खत्म कर देना चाहते थे। कमल नयन के गम्भीर चोटें आईं। वे अस्पताल में भर्ती हुए। मगर युवा तबका उनका अनन्य भक्त था। उन्होंने इन हमलों का बदला लिया। सत्ताधारियों की सभा में जाकर उन्हें ललकारा और इस सभा में उन्होंने अपना पक्ष सुनाने का भी अनुरोध किया। युवा वर्ग (जिनमें आज प्रशासन के उच्च पदों पर बैठे अधिकारी भी थे) ने कमलनयन जी पर हुए हमले के कारण भी पूछे। जब सभा आयोजकों ने युवाओं की बात नहीं सुनी तो सभा में हंगामा हो गया और मारपीट में कमलनयन पर हमला करवाने वालों को भी चोटें आईं। 1970 के आसपास सकीना काण्ड के सम्बन्ध में जब कमलनयन ने अखबार में इस इस इलाके के एक उपमंत्री का नाम लिखा, तो उन पर हमला हुआ। मगर इन हमलों से वे कभी विचलित नहीं हुए। वे बड़े हिम्मत वाले व्यक्ति थे।

कमलनयन जी की अध्ययन के प्रति गहरी रुचि थी। जब भी उन्हें मौका मिलता वे सदा कुछ न कुछ पढ़ते व लिखते रहते थे। इसी रुचि के कारण उन्होंने पुस्तकालय की नौकरी भी की और एक स्कूल भी चलाया था।

कमलनयन जी के बारे में बात अधूरी रह जाती है यदि उनकी पत्नी की हिम्मत का जिक्र न किया जाय। उनकी पत्नी की हिम्मत और सहनशीलता काबिले तारीफ है। इस गरीबी व अभाव में रहकर उन्होंने न केवल कमलनयन जी को सम्भाला वरन् छः बच्चों की परवरिश की और उन्हें योग्य बनाया। हालात इतने खराब थे कि परिवार कभी भी टूट सकता था बिखर सकता था। क्योंकि कमलनयन जी तो सदा सार्वजनिक जीवन में थे। मगर इस औरत ने अपनी हिम्मत से इसे सम्भाले रखा।

आज मैं जब अतीत की ओर झाँकता हूँ तो महसूस होता है जन समस्याओं के लिए लड़ने के लिए जो विश्वास, निष्ठा, धैर्य, सहनशीलता व स्वाध्याय पुराने आन्दोलनों के समय लोगों में था वह आज नहीं है। पार्टी नेताओं का लोगों से वह सम्पर्क भी नहीं रहा जिससे उन्हें जनाधार की शक्ति प्राप्त होती थी। ऐसे माहौल में कमलनयन जी की याद आना स्वाभाविक है, जिन्होंने सार्वजनिक जीवन के लिए अपने परिवार तक की परवाह नहीं की।

प्रो० केदारनाथ शर्मा विधायक
पूर्व गृहमंत्री
राजस्थान सरकार

मेरे कमल : मेरे नयन

□ चम्पालाल राका
सम्पादक, हिन्दी प्रकाशक

मेरे अभिन्न मित्र कमल नयन का स्मरण होते ही पिछले चार युग और उसके प्रवाह म झूलती हुई हमारी मित्रता और सम्बंधित घटनाए याद हो आती हैं। मुझे उसके सभी रूप याद आते हैं—देशी रियासतो के स्वतन्त्रता-सग्राम मे एक सिपाही, कमचारी आदोलन का एक कमठ और जागरूक नेता, गगानगर के आबियाना आदोलन का एक कायकर्ता और जेल मे आकर उसका मिलना फिर पत्रकार-जीवन के उसके उतार-चढ़ाव के विभिन्न चेहरे और इन सबके ऊपर उसका वह रूप, जब वह एक जागरूक इसान की तरह स्वय अपना बराबर विश्लेषण करता रहता था। मैं पिछले 30 वर्षों से बीकानेर स आने के बाद जयपुर मे ही रह रहा हू। इस काल म कमल नयन जब भी गगानगर से जयपुर आये, प्राय वे मुझ से बिना मिले नही गये, और मेरे कार्यालय में आने के बाद कम से कम डेढ दो घण्टे की लम्बी बातचीत और विभिन्न समस्याओ पर जमकर विश्लेषण का दौर जारी रहता था। इसलिए मैं कह सकता हूँ कि ऐसे मित्र बहुत कम होते हैं, जहा 40 साल की पकी हुई मित्रता हो और उसके साथ साथ देश और समाज की ज्वलन्त समस्याओ पर निरन्तर विश्लेपण-कारी जागरूक दृष्टिकोण व्यक्ति मे मौजूद रहे। तो ऐसे थे कमल नयन—मेरे कमल मेरे नयन।

बीकानेर राज्य कमचारी सघ और उसके प्रधान मन्त्री श्री कमल नयन शर्मा जब तेजी से उभर कर सामने आने लगे तो उस समय की रियासती आबोहवा का जायजा लेना जरूरी है।

स्नेह और सुगंध के स्रोत

☐ राजेन्द्र शकर भट्ट

आदर के अनेक आधार होते हैं।

जिन दिनो मे राजस्थान राज्य के जनसम्पर्क विभाग का निदेशक था, पाकिस्तान का आक्रमण होते ही मेरे मन म यह आया कि जहा-जहा मेरे विभागीय सहयोगी आक्रमण की अधिक सम्भावना मे हैं वहा जाकर उनको यह आश्वस्त किया जाय कि हम जो हमले की पहुँच मे दूर लगते हैं, वे भी आसन्न सकट मे पूरी तरह उनके साथ हैं। यह भावना मुझे जसलमेर ले गई जहा जयपुर से पहुँचने वाला मैं पहला अधिकारी था। जोधपुर और बीकानेर जहा हमले हुए थे वहा भी मैं गया। श्रीगगानगर भी मैं गया, जहा उन दिनो भी हवाई हमले हो रहे थे।

एक सवथा भिन्न अनुभव मुझे श्रीगगानगर मे हुआ। पाकिस्तानी हमले से आतकित किसी अन्य नगर मे मेरे साथ वहा का कोई पत्रकार या सम्पादक उस तरह नही हुआ था जिस तरह साप्ताहिक सीमा सन्देश के तत्कालीन सम्पादक स्वर्गीय कमल नयन शर्मा हो लिये थे। सीधे बम गिरने का सकट सिर पर था, और कोई आवश्यकता इस बात की नही थी कि मेरे कतव्यबोध म निजी सकट का सहयोग वे दें। उनका बहुत कुछ बिना कहे मुझे बताना यही था कि जब मैं श्रीगगानगर तक सकट के समय आ सकता हूँ, वे क्या इतने गये-बीते हैं कि मेरे साथ भी नही रह ?

हम दोनो बाजारो को पैदल पार करते रलवे स्टेशन पहुँचे। वहा रेल आदमी औरता से भरी खडी थी। लगा कि उसी को निशाना बनाने पाकिस्तान का मारू जहाज उडान भरकर आया

है। एक किनारे से अचानक आकर उसने स्टेशन पर इतनी नाची उडान भरी, कि खिडकी-दरवाज हिल उठे। कोई शक ही नही रहा कि बम अब गिरा, अब गिरा। सारा रेलवे स्टेशन पूरी भरी रेल तहस-नहस हो सकती थी। हम दोनो को भी नही बचाया जा सकता था। यह सकट तो साथ था ही जब हम बाजारो मे घूम रहे थे, और स्टेशन पर आये थे। लेकिन जाने क्यो पाकिस्तानी हवाई जहाज, इतना नीचे और निशाने के पास आने पर भी, बम गिराये बिना आग निकल गया। हम दोनो, रेलवे स्टेशन पर जो थे उन सबके साथ बच गये। दहशत मन मे कुछ समय रही, ऐसा सोचना सही नही होगा, क्योकि ऐसी दुघटना की आशका पहले से साथ थी। फिर भी, आक्रमणकारी हवाई जहाज के हो सकने वाले निशाने के इतने निकट आने का आनक और अनुभव नितान्त सहज-स्वाभाविक नही हो सकता था।

इसे श्री कमल नयन शर्मा ने सिफ मेरे कारण निकट से आमन्त्रित किया था। सारा गगानगर शहर आक्रमण की परिधि मे था, अवश्य, परन्तु रेलवेस्टेशन ज्यादा जरूरी निशाना हो सकता था, शत्रु की दृष्टि से। वहा स्वय जाना श्रीगगानगर का उस समय का सबसे भयानक सकट हो सकता था। मेरे दायित्वो ने मेरे मे उसके लिए तैयारी बैठा रखी थी, लेकिन श्री कमल नयन पर वसा दायित्व नही था।

इस अनुभव ने उनके प्रति मेरे स्नेह और आदर को परिपुष्ट किया।

दूसरा आदर का कारण यह था कि पत्रकारिता की परम्परा और पृष्ठ भूमि से सवथा पृथक होते हुए भी उन्होंने पत्रकारिता के लिए बजर-सी भूमि से एक सम्माननीय साप्ताहिक निकाल रखा था। मैंने श्रीगगानगर के कई समाचार पत्रो तथा सपादको और पत्रकारो को प्रलोभनो के आगे लडखडाते देखा है, श्री कमल नयन शर्मा निरन्तर डटे और खडे रहे। यह उन स्थितियो म आसान नही था।

मुझे यह देखकर उनके प्रति अपनी मित्रता की प्रामाणिकता का ज्ञान करके अभी तक बहुत प्रसन्नता है कि मेरे जनसम्पर्क विभाग का निदेशक नही रहने पर, जिन चन्द सम्पादको न मेरे प्रति अपनापन नही कम किया उनमे श्री कमल नयन शर्मा भी थे। आम आदमी की पहचान की वह कडी कसौटी होती है। मेरे पास देने को जब कुछ नही था तब भी वे आते रहे और अपना स्नेह देते रहे—नितान्त निष्काम और निरे अपने स्नेहिल स्वभाव के कारण। समय आया जब मेरे स सम्बन्ध जनसम्पर्क विभाग मे पत्रकारो और सम्पादको के लिए कष्ट बढाने वाले हो चले और बहुत ही ज्यादा मेरे से अपने को अनुग्रहीत मानने वालो ने भी मेरे से अपना मुहु दूसरी तरफ कर लिया। मैं भूल नही सकता कि एक सम्पादक जो अपनी नई कार को मेरी कृपा का परिणाम कहता था यद्यपि यह सही नही हो सकता था उसी ने उसमे बैठाने से इन्कार कर दिया। श्री कमल नयन शर्मा के पास जितनी कारें होती वे अवश्य सामने खडी कर देते। क्योंकि वे स्वय मेरे पास पूरे के पूर और सबके देखते आया ही करते थे।

साहस और सूझबूझ के साथ साथ जो स्नेह का अतिरेक श्री कमल नयन शर्मा म था वही उनकी स्मृति को सुगन्धित बनाये हुए है। यह स्मृति और सुगन्ध कभी मिटने वाली नही है।

गगानगरी गेहूँ सी देह
ग्रौर
गगनहर सा निर्मल मन

□ डॉ० मनोहर प्रभाकर

राजस्थान म गगानगर खुशहाली का दूसरा नाम है। हरे भरे खेतो और माल्टा के बगीचों के लिए जितना सरनाम है उतना ही बदनाम है अपराधो के उवर क्षेत्र के रूप म। कुछ ऐसा जुड गया है गगानगर के नाम के साथ, कि उच्चारण मात्र मे वहा के आदमी की जो तस्वीर दिमाग मे बनती है वह व्यक्ति के रौद्र रूप को ही अधिक चित्रित करती है। ऐसी मनोभूमि मे जब किसी सरल-तरल और कोमल व्यक्तित्व स सामना और सरोकार होता है तो वह सुखद आश्चय म कुछ कम नही होता। कमल नयन जी से होने वाली हर मुलाकात का मतलब ऐसे ही आल्हादकारी अनुभव म गुजरना था। हमारे शास्त्रकारों न व्यक्ति के प्रभाव के जो बहिरग तत्व बखाने हैं उनम वपु, वेप वभव और वाणी का प्रमुख स्थान दिया गया है। किन्तु कमल नयन जी इसके भी अपवाद थ। उनकी देह यष्टि साधारण थी, गोरे चिट्टे अवश्य थे पर कद नाटा ही था। वेप के नाम पर सादा खादी का दुग्ध धवल कुर्ता धोती और कभी कभी पजामा भी। वभव के प्रदशन के नाम पर वे

कभी कोई विदेशी कार तो दूर, हिन्दुस्तानी गाडी मे बैठकर भी मिलने नही आये । पर यह जो वाणी का चौथा प्रभावप्रद माध्यम बताया गया है वही उनके व्यक्तित्व का विभूषण था । कोई लखनवी अन्दाज मे बोलते हो, ऐसा भी नही था । पर प्रफुल्लित हुए, एक महज मुस्कान के साथ वे जिस हार्दिकता मे मिलते थे—वह आज कितना दुर्लभ है ! उनसे मिलकर बार-बार मिलने को मन होता था ।

जब कभी पत्रकारिता का मुखौटा ओढे ऐसे लोगो से साक्षात्कार का दुर्भाग्य भोगना पडता है कि देखते ही रूह कापने लगती है, तब लगता है, कमल नयन जी जैसे लोग कितने बिरले हो गये हैं । शिष्ट, मिष्ट और भद्र पुरषो की भीड मे कुछ ऐसे भी घुस आये हैं कि उनके हाथो म कलम एक आततायी की कृपाण की तरह नजर आती है । कमल नयन जी ने न कभी कलम का दुरुपयोग किया और न वाणी का । वे कभी थोडा-बहुत उलाहना भी देते, तो उसमे किसी तरह की कडुवाहट नहीं अपितु आत्मीयता छलकती थी । जयपुर मे जब भी उनका आगमन होता वे मुझ से थोडी ही देर को सही मिलते जरूर थे और हर मुलाकात मे गगानगर आने का बुलावा होता था ।

कमल नयन जी जब तक जिये गगानगर और सीमान्त क्षेत्र की जन-समस्याओ को उजागर करते रहे और आम आदमी की पीडा को वाणी देते रहे ।

अखबार निकालना आजकल वसा ही है जसा और कोई कारोबार करना । बिना विज्ञापन के समाचार पत्र व्यवसाय के विघ्नो की वैतरणी पार करना आसान नही । पर कमल नयन जी ने कभी विज्ञापन जीवी अखबार नवीस की तरह आचरण नही किया । आज जब आर्थिक दोहन के लिए भले लोगो पर भी कीचड उछालने के कुकर्म से लोग बाज नही आते उन्होने अपनी वाजिब माग रखने मे भी सदा सकोचशीलता का ही परिचय दिया । पूरे तीन दशक तक वे एक सघषशील पत्रकार का जीवन जीते रहे ।

जितनी सी जानकारी मुझे है, कमल नयन जी एक ऐसे सवेदनशील भावनामय और परोपकारी जीव थे कि बेसहारा लोगो को हमेशा उनसे सरक्षण मिलता रहा ।

मैं कभी फुर्सत मे होता और ऐसे मे वे कभी आ धमकते, तो यदा-कदा विगत की मीठी यादो को दुहराते हुए आत्म कथात्मक हो जाते । यादो और वादो के रिश्तो की उस दास्तान के पात्र आज के अनेक नेता और प्रशासको के बीच कभी-कभी हमारे पूर्व जन सम्पर्क निदेशक के० एल० कोचर भी होते । उन्हें बडी भाव-प्रवणता के साथ जब वे "कन्हैया" कह कर नामोल्लेख करते तो कमल नयन जी के कोमल और स्नेहिल व्यक्तित्व की भीतरी पर्तें विशेष रूप से विस्तृत और उद्घाटित हो जातीं ।

अपने महा प्रयाण से कोई एक—डेढ महीने पहले ही कमल नयन जी से जब मिलना हुआ था, तो स्वप्न म भी कल्पना नही थी कि यह उनके साथ आखिरी भेंट थी । वे बडे चुस्त

तन्दुरुस्त और प्रसन्नचित्त दिखाई देते थे, पर विधि का विधान कुछ ऐसा ही था कि वे हमारे बीच और ज्यादा नहीं रह पाये।

कमल नयन जी पार्थिव देह हमारे बीच नहीं है, पर उनका सीमा सन्देश और उनके सत्कार्य हमें सदैव उनका स्मरण कराते रहेंगे। एक कवि के नाते मैं निम्न शब्दों में उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ —

गंगानगरी गेहूँ सी थी देह तुम्हारी
मन था निर्मल गंग नहर के जल की झारी।
जन-जीवन में पैठ तुम्हारी थी अति गहरी,
कर्म और वाणी में थे तुम तो सीमा-प्रहरी।
पत्रकार का धर्म निबाहा तुमने ऐसे,
कीच बीच रक्ताभ कमल खिलता हो जैसे।
रेत-कणों से निपजे तुम थे एक रतन।
हे कमल नयन ! स्वीकारो शत शत बार नमन !

अलविदा, कमल !

□ डा० कश्मीरी लाल मिड्ढा
(सीमा-सन्देश के पहले सहसम्पादक)
अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, एस जी एन खालसा कालेज,
श्रीगगानगर

आठ दिसम्बर 1986। प्रात काल का समय। टेलीफोन की घण्टी बजी और फोन पर श्री मदन कोचर द्वारा दुखद समाचार मिला कि श्री कमल नयन का स्वगवास हो गया। मृत्यु तो उनका कुछ समय पहले से ही चुपचाप पीछा कर रही थी लेकिन जिजीविषा उन्ह जीवित रख रही थी। मृत्यु के समाचार ने स्मृति को कल्पना के सहारे अतीत मे ला बैठाया।

वष 1951। अध्ययन समाप्त करके मैंने जुलाई म अध्यापक की वत्ति अपना ली। एक दिन की बात, श्री कमल नयन जी घर पर आये और कहने लगे मैं एक अखबार निकालना चाहता हू और मुझे एक सहयोगी की आवश्यकता है। लेकिन मजबूरी यह हैं कि मैं पसे देने की स्थिति म नही हूँ। उनका सशत प्रस्ताव सुनकर मैंन भी इस निश्चय के साथ अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी कि सहयोग तो दूंगा लेकिन कुछ लेने की इच्छा कभी नही रखूगा और जब तक काम किया इस निश्चय का निर्वाह किया। इस निश्चय के साथ 10 10 51 को दशहरे के दिन साप्ताहिक सीमा-सन्देश का प्रथम अक निकाला और मेरा नाम सह सम्पादक के रूप मे छपा।

अपराजेय संघर्षकर्ता

●

कमलनयन के रूप मे एक दुर्दान्त सघर्षकारी ने जन्म लिया। वे जीवन भर जूझते रहे, वाणी मे, कर्म मे, और विचारो की ऊहापोह मे। जीवन पर्यन्त न सघर्ष ने हार मानी और न कमलनयनजी ने।

इस नेतृत्व के योग्य तेजोमय व्यक्तित्व को, जिससे सभी प्रभावित और सभ्रमित थे, उचित सम्मान और मान्यता नही मिली। और उसने परवाह भी नही की। स्वभावत वह किसी मजिल पर रुकता, ठहरता भी नही।

जीवन-सग्राम
का
सघर्षरत सेनानी

श्री कमलनयन शर्मा का ज`म शुक्रवार 29 अप्रेल 1916 (बैसाखी एकादशी कृष्णपक्ष विक्रम सम्वत् 19`3 को पराम्परावादी ब्राह्मण परिवार मे अविभाजित पजाब (अब हरियाणा) के राजीव गाव (तब जिला करनाल अब जीद) म हुआ। मगर शीघ्र ही उनके पिता पडित वासुदेव शर्मा वह गाँव छोडकर बीकानेर रियासत मे आ बसे। तब बालक कमलनयन की उम्र 5 वप थी। आवागमन के साधन तक विकसित नही थे। इतनी लम्बी यात्रा श्री वासुदेव ने अपने पुत्र के साथ पैदल चलकर जिन कठिनाइयो से पूरी की उनकी याद कमलनयन के कच्चे दिमाग मे अकित हो गई जिसे वह जीवन भर नही भुला पाये। अपनी डायरी म उ`होंने लिखा है 'बीकानर मे मेरे पिता मुझे अकेले, जब मैं 5 वप (1921) का था साथ ल आये थे। मैं पिताजी के पास अकेला श्री केवल राम (राम स्नेही सम्प्रदाय के) के इदकाबारी क अ`दर रहा। मुझे जब पिताजी बीकानेर लाये तो मुझे गोदी या कधे पर उठाकर लाये। वे बीकानेर पहुँचकर अस्वस्थ हो गये। मुझे यह घटना आज ज्यो की त्यो याद है।' (22 6 83)

उनकी शिक्षा बीकानेर के मोहता मूलचन्द हाई स्कूल (1921-26) म हुई। वर्षों बाद भी उन्हें अपने अध्यापकों के नाम याद थे। सर्वश्री शिवशंकर अग्निहोत्री, ज्ञानीराम चौधरी, लक्ष्मी नारायण पुरोहित बुद्धराम पिलानिया डी डी किराडू तथा श्रीचन्द का नाम वे अक्सर लेते थे। मगर स्कूल में वे अधिक समय तक नहीं टिक पाये। उन्होंने मात्र छ कक्षाएं ही पास कीं और पढाई से मन उचाट हो गया। उन्होंने स्कूल जाना छोड दिया। अपने विद्यार्थी काल के बारे में उन्होंने बाद म अपनी आत्म स्वीकृति ईमानदारी से डायरी में अंकित करते हुए लिखा 'मैं पढने म कमजोर रहा, विशेषकर अंग्रेजी व गणित में। हिन्दी मेरी अच्छी थी। मैं वाद विवाद प्रतियोगिताओं म बढ चढ कर भाग लेता था। अपनी व दसवीं कक्षा तक के छात्रों म मेरा प्रभाव था। शारीरिक रूप से भी मैं ठीक था। (21 6 83)' उन्होंने अपनी आत्म स्वीकृति को बाद में प्रमाणित भी कर दिया। स्कूल तो उन्होंने छोड दिया मगर किताबें पढना नहीं छोडा। प्राइवेट तौर पर उन्होंने प्रो दशरथ शर्मा (जिन्होंने राजपरिवार को भी पढाया, फिर विश्वविद्यालय स्तर के इतिहास के प्रोफेसर बने और भारत में मराठा इतिहास पर विशेषज्ञ हुए तथा श्री शिवशंकर अग्निहोत्री से मार्गदर्शन प्राप्त कर ज्ञान प्राप्ति का सिलसिला जारी रखा। अपनी रुचि के विषय हिन्दी में रत्न भूषण व प्रभाकर की परीक्षाएँ (पंजाब विश्वविद्यालय) म पास की। प्रभाकर की उपाधि स्नातक (आनर्स) के समकक्ष मानी जाती थी। उल्लेखनीय बात यह है कि प्रभाकर की परीक्षा उन्होंने पढाई छोडने के काफी वर्षों बाद और नौकरी करते हुए पास की।

बालक कमलनयन शर्मा घर में कम रहते थे और उनके अपने भाई बहनों से कैसे सम्बन्ध थे? छ भाइयों व दो बहिनों के परिवार म व दूसरे स्थान पर थे। परिवार के सदस्यों से कभी ज्यादा नहीं हिले मिले। घर पर वे प्राय गुमसुम व चुपचाप ही रहते थे। बड़े भाई को छोडकर सभी छोटे भाई बहनों पर उनका रोब था। ज्यादा शरारत करने पर वे भाई-बहिनों को डांटते डपटते भी थे और लाड में उन्हें कंधे पर बिठाकर घुमाते फिराते भी थे। बालक कमलनयन को न तो घर म ठहरना रास आता था और न घर के कामों में रुचि। कुए से पानी ढोकर लाना तब एक प्रमुख काम होता था। मगर कमलनयन यह भी नहीं करते थे। कई बार जब माँ बाप के बहुत कहने पर उन्हें यह काम करना पडता था तो कई गली मौहल्ले के लोग यही फब्ती कसते 'आज हाथी को कसे जोत लिया।

विद्रोह की भावना उनमें जन्म जात थी। उनका पहला विद्रोह अपने ही घर में हुआ। पिता श्री वासुदेव पंडिताई के व्यवसाय में पारंगत थे। पंडिताई वे पूरे ठस्के से करते थे और इस मामले में पिता-पुत्र में समानता थी। पंडित वासुदेव अपनी पंडिताई और ज्योतिष का व्यवसाय अपने घर पर बैठकर ही करते थे—अपने ज्ञान व शोहरत के बल पर। बाद के वर्षों में वे चल फिर भी नहीं सकते थे किन्तु अपने फन में उन्हें वह महारत हासिल थी कि राजपरिवार के अनेक लोग तथा बडे सम्पन्न व्यापारी उनके पास आकर अपनी समस्याएं बताते और समाधान लेकर जाते। प वासुदेव संतोषी जीव थे। पैसों का लालच उन्होंने कभी नहीं किया। माँ भगवती के वे परम भक्त थे और उनकी कृपा में उनकी पूरी आस्था थी। वे मालदार तो नहीं थे मगर पैसे की कमी के कारण उनके काम कभी रुके नहीं। उनके परिवार का लालन पालन खूब मजे में हुआ। कुछ लोगों

को आश्चय होता था कि पडित जी बिना कही जाये भरण पोषण क लिए पैसा कसे जुटा पाते होंगे जब कि कुछ दूसर उन्हे लखपति से कम नही समझत थे ।

एक भारतीय पिता होने के नाते वे भी चाहते थे कि उनका पुत्र कमलनयन भी पडिताई और ज्योतिष का काम सीख जाये और उसकी गुजर बसर का साधन बन जाये । मगर पुत्र को तो बागी होना था । इस सम्बन्ध मे अपनी डायरी म उन्होन लिखा जीवन म मैंन सवप्रथम पिता से सघष किया—आस्तिक परिवार मे रहकर नास्तिकता का प्रचार किया ' (20 6 83) कमलनयन ने पिता का स्पष्ट रूप से कह दिया भगवान का नाम लेकर उसकी आड मे पडितो न लोगो को लूटने का जा माग अपनाया है वे उसमे कभी शामिल नही होगे । पिता अपने पुत्र के व्यवहार से बडे दुखी रहते थे और कई बार कहते थे—' इस घर मे यह नास्तिक कहा से आ गया । ' छहो बेटो मे विद्रोह का झडा उठाने वालो मे कमलनयन ही ऐसे पुत्र थे ।

पिता व पुत्र मे विचारों के ऐस गम्भीर मतभेदो के बावजूद इनमे आपसी स्नेह व आदर का आत्मीय सम्बन्ध था । एक पिता और विद्वान (ज्योतिष ज्ञानी) के रूप मे कमलनयन अपने पिता का सम्मान करत थे और अपने पिता के बारे म उन्होने अनेक स्थानो पर अपनी डायरी म लिखा है— 'मेरे पिता जसा सात्विक और सहृदय व्यक्ति मैंने नही देखा ।" (14 7 83)/(2) मैं हृदय से पिता का सदव आदर करता रहा । प्रकट नही ।" (14 3 85) (3) ' मैं जब अपने पिता के प्रति किये गये उपेक्षापूण व्यवहार का स्मरण करता हू तो भारी दु ख व आश्चय होता है । मै पिताजी की उस सहनशीलता से प्रेरणा लेता हू । उनका तपस्यामय साधनामय एव कष्टसाध्य जीवन कितना अनुकरणीय है । (19 4 1984) पिता को अपन पुत्र का नास्तिक होना कमचारी नेता के रूप म राजा का विरोध करना पसद नही था मगर वे जब अपने पुत्र के पीछे हजारो कमचारियो की भीड व विश्वास देखते थे तो गद्‌गद होकर कहते थे ' मुझे खुशी है मेरा बेटा इतने सारे लोगो की भलाई के लिए काम कर रहा है । इस भले काम म मेरा आशीर्वाद उसे प्राप्त है ।'

कक्षा छह तक शिक्षा प्राप्त कर स्कूल से मुह फेर लेने वाला बालक धीरे धीरे किताबो का कीडा बन जाएगा, यह कौन जानता था ? बालक कमलनयन की खेलो म कभी रुचि नही रही । दो-तीन पडोस के बालको को छोडकर उनकी लम्बी चौडी दोस्ती भी नही थी । घर के लोगा मे वे विशेष रम नही पाये । उनका प्रिय स्थान था पुस्तकालय । वहा उन्होन तत्कालीन पत्र पत्रिकाए व किताबें चाट डाली । साहित्य, राजनीति, धम आदि विविध विषयो पर उन्होन सकडा पुस्तकें पढी, उन पर मनन किया । माता पिता अपने पुत्र के इस शौक से कुछ परेशान भी रहते थे । दोपहर व शाम खाने के समय किशोर कमलनयन घर न पहुँचता तो उसकी खोज शुरू होती और उसका अ त पुस्तकालय म होता । काफी डाट फटकार सुननी पडती । यह तो किताबें पढन लग गया है । धम विरोधी हा रहा है । आय समाजी बनगा । कमलनयन पर उन झिडकियो का कोई असर नही होता । किताबो के पन्नो के माध्यम से वे इस विचित्र ससार को जानने का प्रयास करत थे ।

जब वे किशोर अवस्था को पारकर जवानी की देहरी पर थे, तो उनकी मित्रता अपने पड़ोसी छगनलाल से हो गई। दोनो के बीच समानता यह थी उन दोनो ने पढ़ाई बीच मे ही छोड़कर स्कूल से पीछा छुड़ा लिया था। अपने इस मित्र के बारे मे उन्होंने अपनी डायरी मे लिखा है 'मेरे जीवन म छगनलाल का अमिट प्रभाव है। इस व्यक्ति का आचरण उन दिनों देवता से कम नही था।' (9 10 1949) श्री छगनलाल ने एक भेंट मे बताया कि वह हमारी आवारागर्दी का दौर था। पढ़ाई छूट चुकी थी, काम कुछ मिल नही रहा था। छगनलाल के अनुसार "मुझे पहलवानी का शौक था सो मैं तो सुबह शाम अखाड़े म चला जाता था। कमलनयन तब क्या करता था, कहा जाता था मुझे नही मालूम। हा दोपहर के समय हम दोनो कुछ अन्य लोगो के साथ समीप के माताजी के मन्दिर मे चौपड़ खेलते थे। इसके अलावा मैंने कमलनयन को कोई खेल खेलते हुए नही देखा।'

श्री छगनलाल ने अपनी यादो का सिलसिला जारी रखते हुए बताया 'हम अक्सर पब्लिक पार्क मे घूमने जाते थे। उनकी एक विशेषता मुझे आज भी याद है कि वे मनुष्य का चेहरा पढ़ने मे, परखने मे माहिर थे। जब कभी हम सड़क पर घूमने जाते और सामने कोई आदमी दिखाई देता तो उसके बारे म उसका चेहरा देखते ही वे अपनी राय प्रकट कर देते। यह आदमी क्रूर है यह दयालु है, इसका चरित्र ठीक नही है इसकी आखो से यह लगता है आदि आदि। बाद म अक्सर उनकी धारणा सही साबित होती थी। ऐसा कहने से उनका तात्पर्य किसी व्यक्ति की बुराई, दोष निकालना या तारीफ करना नही होता था वरन् सहज स्वाभाविक रूप से मन मे महसूस की गई प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति मात्र होता था।

'कमलनयन के बारे म एक और विशेष बात मैंने यह महसूस की कि वह लीक से हटकर चलने वाला व्यक्ति था। इस सन्दर्भ मे मुझे अच्छी तरह याद है कि उन दिनों टोपी पहनने का रिवाज था। सभी लोगों की भांति मैं भी टोपी पहनता था। मगर कमलनयन-- उसने कभी टोपी नही पहनी। हमने एक साथ जो फोटो खिंचवायी उसम भी वह बिना टोपी के ही है। एक बात और, आँखें उनकी शुरू से कमजोर थी मगर तब वे चश्मा नहीं लगाते थ।'

क्या कमलनयन जी ने अपने जीवन का कोई ध्येय निश्चित किया था? यानी वे अपने जीवन में क्या बनाना चाहते थे?

इस प्रश्न के उत्तर में श्री छगनलाल ने कहा कभी कुछ बनने की उन्होंने सोची ही नही। वे तो सदा धारा के साथ बहते रहे जो उन्हें बहाकर कभी इधर ले आती है तो कभी उधर। कोई महत्त्वाकांक्षा उन्होंने कभी नही पाली।'

आपसे उनकी काफी घनिष्ठता थी आप उनके किस एक गुण से प्रभावित हैं व किस एक अवगुण को सबसे बुरा मानते थे?

"उनका सबमे बडा गुण मैंने पाया वह था—निभाना। वे भरोसेमद इन्सान थे। उन्होंने एक बार जो कह दिया वे उसे सदा जी जान से निभाने म कोई कसर नही छोडते थे। यह एक बहुत बडा गुण है। मुझे उनका सबसे बडा अवगुण लगा उनकी तुनकमिजाजी। वे छोटी छोटी बातों पर उत्तेजित हो जाते थे, जो अनेक बार झगडे मे परिवर्तित हो जाती थी। मगर जो व्यक्ति उनके स्वभाव को समझने लगे थे वे जानते थे कि यह तुनकमिजाजी और उत्तेजना क्षणिक है और थोडी देर फुर फुर कर वे पुन सामान्य हो जावेंगे। कई बार यह कबूल भी कर लेते थे कि व्यर्थ में ही आवेश आ गया। वास्तव मे गुस्से व आवेश के समय भी उनके मन मे किसी के प्रति कोई दुर्भावना नही होती थी। वह तो उनकी स्वाभाविक क्षणिक प्रतिक्रिया होती थी जिसे आज की सभ्यता का लबादा ओढने वाले मन मे दबाये रखते हैं।'

श्री छगनलाल से उनका सम्पर्क 1937 से 1939 तक रहा। 1939 में रोजगार व व्यवसाय के सिलसिले मे दोनो ही दोस्तो ने बीकानेर छोड दिया। श्री छगनलाल गुडगाव में अपने व्यापार में लग गये। बाद में विशेष अवसरो पर उनकी मुलाकात होती रही।

पिता की पुश्तैनी पडिताई व ज्योतिषी का माग न अपनाने की सजा नवयुवक कमलनयन को बेरोजगारी के रूप मे झेलनी पडी। काफी दौड धूप के बाद 1936 मे उन्हे श्री ओमप्रकाश आलमबन (रेल्वे कमचारी) की सिफारिश पर रेल्वे मे जमादार (कोयला ढोने वाले मजदूरो पर निरीक्षक) का अस्थाई काम मिला। कुछ माह बाद वह नौकरी भी छूट गई। बाद मे कई बार पेट भरने के लिए मजदूरी का काम भी करना पडा। चौबिस वष की अवस्था मे (अगस्त 1940 म) उन्होने सर्टिफिकेट इम्तहान पटवार नजरिया (दफ्तर साहब चीफ कमिश्नर बहादुर गगानगर डिवीजन राज श्री बीकानेर) पास कर पटवारी बनने की योग्यता प्राप्त की। सन् 1941 से 1945 तक उन्होंने नायब तहसीलदार केसरीसिहपुर व हिन्दूमल कोट मे अमीन के रूप मे काम किया। 1946 मे उनको नियुक्ति गगानगर म कमिश्नर आफिस मे अहलमद के रूप मे हो गई।

गगानगर मे उनकी नियुक्ति उनके जीवन मे एक नया मोड सिद्ध हुई। दूसर विश्व युद्ध के विनाश के बाद की कमरतोड महगाई से य तो सीमित आय वाले सभी सरकारी कमचारी पिस रहे थे मगर निरकुश राजा क सामने अपना मुँह खोलने की हिम्मत किसी को भी नही होती थी। आखिर बिल्ली के गले मे घटी कौन बाधे? तीस वर्षीय युवक कमलनयन ने कमचारियो की आर्थिक दुर्गति की आवाज राजा की सरकार तक पहुँचाने की ठानी तथा सरकारी कमचारियो को एक सघ के रूप मे गठित करने का बीडा उठाया। निभय व निडर होने के कारण उनमे नेतत्व की अद्भुत शक्ति थी। इसी के बल पर उन्होने कमचारियो के हितो के लिए लडने के लिए बीकानेर रियासत काल मे प्रथम कमचारी सगठन 'वकग यूनियन के नाम से 1946 मे गठित किया। वे उसके प्रधानमन्त्री थे। निरकुश राजशाही के जमाने मे यह बडा साहसी कदम था। यह यूनियन धीरे धीरे पूरी बीकानेर रियासत के सभी हिस्सो में फैली और इसे ही बाद म बीकानेर राज्य कमचारी मघ के नाम से जाना गया। इस सघ को मा यता दिलाने के सघष मे उन्होने 1946 मे करीब तीन माह तक कमचारियों का आन्दोलन चलाया जिसमें वे तथा उनके 38 साथी नौकरी से बरखास्त हुए।

मगर कर्मचारियों के भारी समर्थन को देखकर बीकानेर सरकार को इन सबको न केवल बहाल करना पड़ा वरन् कर्मचारियों के वेतन में ग्रेड के अनुसार 3, 8 10 व 20 रुपय की वृद्धि हुई।

1949 में कर्मचारी संघर्ष का दूसरा दौर आरम्भ हुआ जो बड़ा ही संघर्षमय था। इस कर्मचारी आन्दोलन में उनके साथी 19 दिन की भूख हड़ताल व 14 दिन की आम हड़ताल पर रहे। अपने साथियों के साथ उन्होंने जेल भी काटी। इस आन्दोलन के परिणाम स्वरूप कर्मचारियों को एक बार फिर वेतन वृद्धि मिली मगर श्री कमलनयन को मिली नौकरी से बरखास्तगी। कर्मचारियों की हड़ताल से अलग होने के लिए उन्हें प्रलोभन व धमकियां दोनों दी गई, मगर वे विचलित नहीं हुए। अन्त में सरकार ने अपनी धमकी को कार्यान्वित कर दिखाया। नौकरी छूटने से उनके सामने घोर आर्थिक संकट आ गया मगर उन्हें सदा यह आत्मिक संतोष रहा कि उन्होंने कर्मचारियों के हितों के लिए पूरी ईमानदारी व दृढ़ता से संघर्ष किया, अपने हितों की बलि चढ़ाकर। श्री कमलनयन को इस बात की भी प्रसन्नता थी कि उनके द्वारा लगाये गये बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ रूपी पौधे ने 'राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ' के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरकारी नौकरी से बरखास्तगी के बाद बेरोजगारी का विकल्प वे तलाश नहीं पाये। अलबत्ता सरकारी नौकरी से अलग होने से वे सोशलिस्ट पार्टी के लिए खुले रूप से काम करने के लिए स्वतन्त्र हो गये। नौकरी में रहते हुए भी उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी के लिए काम करने का जोखिम उठाया था। विशेष रूप से 1948 में बीकानेर में आयोजित होने वाले सोशलिस्ट पार्टी के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन में उन्होंने प्रचार कर भीड़ जुटाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री जानकीप्रसाद बगरहट्टा तब बीकानेर में सोशलिस्ट पार्टी के प्रान्तीय मन्त्री (राजपूताना प्रोविंस) थे। श्री बगरहट्टा के निर्देशन में श्री कमलनयन शर्मा ने समाजवादी विचार के कुछ साथियों के साथ गंगानगर में (1949) में सोशलिस्ट पार्टी की शाखा की स्थापना की। तब राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ताओं को बड़े-बड़े व्यापारियों व उद्योगपतियों से भारी भरकम चन्दा नहीं मिलता था कि पार्टी अपने मुख्यालय से शाखाओं को चलाने के लिए आर्थिक मदद सुलभ करवा सके। अपनी आजीविका के साथ पार्टी कर्त्ताओं (एक तरह से पदाधिकारी भी) को पार्टी कार्यालय चलाने के खर्च का बंदोबस्त भी करना पड़ता था। पार्टी के लिए चन्दा मांगना तब आज से भी मुश्किल काम था। पैसे वाले भला सोशलिस्ट पार्टी को चन्दा क्या दें क्योंकि वह तो पैसे व साधनों के समान वितरण की पक्षपाती थी और इस प्रकार उनके हितों के विरुद्ध काम करने वाली पार्टी थी ? ऐसी विषम परिस्थितियों में श्री कमलनयन ने नई जगह में पार्टी शाखा स्थापित करने की ठानी। इस काल के अनुभवों को उन्होंने अपनी डायरी में संकलित किया है। एक ओर सेठ लोग बिना पैसा लिये पार्टी कार्यकर्त्ता पर पैसा खाने का लांछन लगाते थे तो दूसरी ओर पार्टी के अपने ही साथी उसकी टांग खींचने से बाज नहीं आते थे ताकि वह अपने का[illegible] पर उनसे आगे न निकल जाए। जब इन दोनों पक्षों में साठ गांठ हो [illegible] निष्ठ काय-कर्त्ता की क्या दुर्गति होती है यह बात तो श्री कमल[illegible] मता पेट काटकर परिवार के बजाय पार्टी को जिन्दा रखे [illegible] उछाला जाय तो उसका मरण ही हो जाता है। श्री

था, यहा तक कि वे आत्म हत्या करने तक की सोचने लगे थे। अनेक बार उन्हे भूखे पेट ही सोना पड़ा। उनकी डायरी गवाह है। वे ऐसे तोड़ कर रख देने वाले वातावरण को इसीलिए झेल पाये क्योंकि उनके मन मे आदशवाद का यह विश्वास बडा दृढ था कि सघर्ष के बाद जीत आखिरकार सच की ही होगी। कष्ट से मुकाबला करना ही जीवन है।

नौकरी छूटने के बाद अपने परिवार की रोटी के लिए उन्होंने 27 जी जी चुनावढ (गगानगर शहर के करीब) म स्कूल खोला। भवन के अभाव म वे बच्चो को तालाब के किनारे पेडो के नीचे बठा कर पढाते थे। मगर यह व्यवस्था थोडे समय ही चली। कुछ माह बाद वे परिवार सहित बलगाडी द्वारा 27 जी०जी० से केसरीसिहपुर आ गये। परिवार को केसरीसिहपुर छोड कर श्री कमलनयन स्वय गगानगर मे आ गये। किराये के मकान के लिए पैसे नही थे अत नवयुवक सावजनिक पुस्तकालय में ही उन्हे डेरा डालना पडा। यह सयोग ही था कि जिस सस्था (पुस्तकालय) से उन्हें बचपन से ही लगाव था, परिस्थितियो ने उन्हें पुस्तकालय मे ही रहने को मजबूर किया। पुस्तकें पढने के शौक को एक बार फिर पूरा करने का अवसर मिला—पुस्तकालय की आर्थिक दशा ऐसी नहीं थी कि वह कमचारी को वेतन दे सके। अत पुस्तकालय के समीप श्री गौरीशकर आचाय के मकान के नीचे के कमरे म गाधी शिक्षा सदन के नाम से उन्होने एक स्कूल आरम्भ किया जिसमे पजाब विश्वविद्यालय की रत्न भूषण व प्रभाकर स्तर की शिक्षा देने और परीक्षाएँ दिलवाने का प्रबन्ध था। यह भी आजीविका का सबल आधार नहीं बन सका।

आर्थिक अभावो के कारण कमलनयन जी न तो अपने परिवार को गगानगर मे रखने के लिए मकान किराये पर लेने की स्थिति मे थे और न ही गगानगर मे अलग स्वय खाना बनाने या होटल मे खाना खाने का प्रबन्ध कर पाये। रोटी प्रतिदिन प्रात टिफन मे रेलगाडी द्वारा केसरीसिहपुर से गगानगर पहुचती थी। कई बार गाडी छूटने पर भूखे भी रहना पडता था। खाना लेकर जाते थे उनके बडे सुपुत्र व्रजभूषण। तब उनकी आयु मुश्किल से 7–8 वष थी। रेल टिकट खरीदने की हैसियत ही नही थी और टिकट चैकर भी अच्छा समझकर कुछ कहते नही होगे या बरखास्त कमचारी साथी के नाते हमदर्दी रखत होगे।

बेकारी के दौर म श्री कमलनयन ने गगानगर रेल्वे स्टेशन के सामने स्थित शर्मा ब्रदर्स नाम की न्यूज पेपर एजेन्सी पर अखबार बाटने का काम भी किया था।

सोमा सन्देश का जन्म

आजिविका का कोई साधन जब उन्हे नही मिला तो उन्होने गगानगर से एक समाचार पत्र निकालने की सोची। बरखास्तगी के बाद उन्होने बीकानेर के साप्ताहिक 'लोकमत' को समाचार भेजने व ग्राहक बनाने का काम भी किया था। अनेक राष्ट्रीय समाचार पत्रो को समाचार भेजने की भी उनमे इच्छा रहती थी। इसी अनुभव से शायद उन्होंने अपना अखबार निकालने की सोची।

अपने नजदीकी साथियों—श्री कन्हैया लाल कावर, मुन्ना लाल गायन—आदि से विचार विमर्श किया। सभी दोस्तों ने एक ही राय दी। यह इलाका पानी के लिहाज से नहर आने के बाद ऊसर न रहा हो मगर शिक्षा व जागरूकता के लिहाज से अभी भी ऊसर है। इसी वजह जमीन में कलम की हल चलाने से कुछ मिलने वाला नहीं है। फिर अखबार के लिए कागज व छपाई के पैसे भी कहाँ से आयेंगे? अभी तो रोटी तक के लाले पड़े हैं।

दोस्तों व शुभचिन्तकों की विपरीत राय के बावजूद सन् 1951 में दशहरे के दिन 10.10.51 को उन्होंने सीमान्त दूत की स्थापना साप्ताहिक के रूप में कर दी। अखबार गोल बाजार स्थित मयूर प्रिंटिंग प्रेस से छपना आरम्भ हुआ और फिर जनता प्रिंटिंग प्रेस में छपने लगा। समाचार पत्र के सामने आर्थिक साधन जुटाने व समाचार संकलन की समस्या तो थी ही शिक्षा का प्रसार न होने के कारण पाठक व ग्राहक बनाना भी कम गम्भीर मसला न था। संस्कारों और कुरीतियों में जकड़े समाज में धार्मिक कट्टरता भी थी और जनजागरण करने वाले समाचार पत्रों को लोग धर्म के लिए खतरा समझते थे। शासक दल के नेता यद्यपि चुने हुए जनप्रतिनिधि थे मगर तो भी समाचार पत्र की सही आलोचना उन्हें जरा भी बरदाश्त नही थी। सरकारी अफसरो के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करना या उनके कार्यों में दोष निकालना तब एक बड़ा अपराध माना जाता था और उन्हें अपनी प्रशासनिक शक्ति से दण्डित करने में अफसर माहिर थे। धनी व सम्पन्न लोग समाज पर तब भी हावी थे। उनकी कालाबाजारी, तस्करी (गंगानगर सीमान्त जिला होने के नाते) व अन्य समाज विरोधी गतिविधियों के बारे में लिखना जान हथेली पर रखने जैसा काम था। समाज के गुण्डाई तत्वों को धनवानों और सत्ताधारियों का तब खुले रूप में आशीर्वाद प्राप्त होता था।

ये परिस्थितियां काल्पनिक नही थी। इन स्थितियों से कमलनयन जी गुजरे है और उन्होंने इसके परिणाम भी भुगते थे। पत्रकारिता के आरम्भिक 5 वर्षों में उन पर शारीरिक हमले हुए जिनमें दो तो प्राण लेवा हमले थे जिसके फलस्वरूप इलाज के लिए उन्हें अस्पताल में भर्ती रहना पड़ा। अस्पताल में भी उच्च अधिकारी ने उनकी चोटों को गम्भीर न मानकर मेडिकल रिपोर्ट बहुत कमजोर कर दी और इलाज में भी भेदभाव बरता गया। पुलिस रिपोर्ट कमलनयन जी के पक्ष में जाने का प्रश्न ही नही था। मगर एक कांग्रेसी नेता द्वारा उनसे मारपीट करने के मुकदमे में जज ने उल्टे इस कांग्रेसी नेता को ही डांट पिलाई और उसके पिछले काले कारनामों के हवाले दिये। इससे पत्रकार पर मुकदमों की झड़ी लग गई। भ्रष्ट व निकम्मे अफसरों व कर्मचारियों के सरकारी भ्रष्टाचार के विरुद्ध लिखने में वे कभी नही चूके। अनेक अफसरों ने उन्हें विकसित हो रहे नहरी क्षेत्र (भाखड़ा व राजस्थान नहर क्षेत्र) में मुरब्बे (कृषि भूमि) अलाट करने का प्रलोभन भी दिया मगर वे टस से मस नही हुए जबकि उनके पास एक बीघा जमीन भी नहीं थी। मकान भी मध्यम वर्ग को दिये जाने वाले भूखण्ड व ऋण से बना जिसका कर्ज वे लम्बे समय तक चुकाते रहे। सरकारी भ्रष्टाचार के विरुद्ध जेहाद में उन्होंने राजस्थान की ही नही भारत की सबसे बड़ी नहर परियोजना-राजस्थान नहर निर्माण में घटिया माल लगाने के मुद्दे को बड़ी प्रमुखता से उठाया। नहर जनसम्पर्क के कारण उनकी जानकारी भी इस मामले में काफी तथ्यपरक थी अतः उस पर चर्चा स्वाभाविक थी। इस भण्डाफोड़ से तत्कालीन राजस्थान नहर परियोजना के चीफ इंजीनियर श्री रामनारायण चौधरी

नौजवान कमलनयन (बिना टोपी के) अपने दोस्त श्री छगनलाल के साथ।

इनसे बडे खफा हुए और उन्होंने राज्य सरकार की ओर से सीमा सदेश के प्रकाशक सम्पादक श्री कमलनयन पर मुक्दमा दायर कर दिया जो जयपुर की अदालत म चला। कई वर्षों तक उन्होंने जयपुर मे पेशिया भुगती। जयपुर आना जाना होटलो मे ठहरना, अदालती खर्चा-एक छोटे समाचार पत्र के लिए कमर तोड देने वाला था। इनके साथी अनेक गवाहा जिनमे विरोधी पार्टी के विधायक भी थे ने बयान टालम टोली के दिये ताकि मुख्य अभियन्ता उनसे नाराज न हो जायें।

अदालत मे जज ने और बाहर मित्रो ने भी यही राय दी 'क्यो खराब होते हो, माफी मागकर पीछा छुडाओ। मगर जिद के पक्के कमलनयन जी को झूठ के सामने घुटने टेकना मन्जूर नही था। उन्हे टूटना मन्जूर था झुकना नही। मुकदमा लम्बा चला तो इस दौरान चीफ इजीनियर श्री चौधरी भी राजकीय सेवा से रिटायर हो गये। राज्य सरकार को भी इस मुकदमें मे विशेष रुचि नही रही। अत उसन कमलनयन जी पर मुकदमा वापस ले लिया। राजस्थान नहर में भ्रष्टाचार की जो आवाज श्री कमलनयन जी न पहली बार उठाई उसकी पुष्टि स्वय राज्य सरकार द्वारा बिठाये गये कमीशन से हो चुकी है। यह बात दूसरी है कि राजनीतिक प्रशासनिक कमजोरियो के कारण सरकार भी इस बार में कोई कठोर कायवाही नहीं करपाई है। सही बात के लिए लडने और उस पर अडने की यह क्षमता उनके चरित्र की प्रमुख विशेपता थी।

विद्रोह व सघप उनके जीवन के पयाय थे मगर इसका अथ यह कदापि नही कि उन्होंने अच्छाई को बढावा देने के लिए कोई रचनात्मक भूमिका न निभाई हो। एक जागरूक पत्रकार के रूप मे अपने क्षेत्र की समस्याओ के बारे मे वे जिले के जनप्रतिनिधियो व प्रशासको से चर्चा करते थे व अपने सुझाव व अनुभवो का लाभ भी उन्हें देत थे। कर्तव्यनिष्ठ व ईमानदार अफसरो को वे सदा बढावा देते थे और कई बार राजनीतिज्ञो द्वारा खडी की गई मुश्किलो से निकालने मे उनकी मदद भी करते थे।

वे राज्य के वरिष्ठ पत्रकारो मे से थे और इस नाते राजस्थान म पत्रकारो के लिए राज्य स्तर पर गठित होने वाली समितियो म उनकी सेवायें भी ली गयी थी। 1965 मे भारत पाक युद्ध के समय जब राजस्थान सरकार न राज्य मे राजस्थान नागरिक परिषद् (सकटकालीन स्थिति) गठित की तो इसकी जन सम्पक समिति म श्री कमलनयन शर्मा को भी शामिल किया गया।

सत्तर वर्ष के हो जाने पर भी कमलनयन जी की सेहत ठीक थी। वे अपना सब काम अपने हाथ से करते थे। प्रात आठ बजे पदल जो घर से निकलते तो रात आठ वजे ही लौटते थे। दिन भर म वे 10–15 कि० मी० पैदल घूम लेते थे। इस बीच वे अपने गोल बाजार स्थित सीमा सन्देश कार्यालय मे बैठकर काम देखते, अखबार पढते, कोट कचहरी जाते वहा अधिकारियो कर्मचारियो वकीलो व अनेक तरह के लोगो से मिलते। सारे दिन मे उनका जन सम्पर्क इतना हो जाता था जो उन्हें नगर की मुख्य घटनाओ लोगो के दुख दद अत्याचार आदि से परिचित करा जाता। कन्टीन पर चाय पान कचौरी खाना और दोस्तो जानकारो से गप्पें लगाना। शाम को प्रेस पर आने वालो से मिलना। यह उनकी दिन चर्या थी। अनेक पारिवारिक आर्थिक व व्यावसायिक

कठिनाइयां होते हुए भी सदा मस्ती से रहते और दोस्तों के बीच हंसी ठट्ठा करते। कष्टों और समस्याओं में वे कभी विचलित नहीं हुए क्योंकि इनका सामना वे जीवन के आरम्भ से ही करते आये थे।

मगर 1982 में एक ऐसा हादसा हुआ जिसने उन्हें हिलाकर रख दिया। उनका चौथा युवा पुत्र महेश, जो उनके साथ अखबार का काम देखता था, अप्रैल 1982 में गंगानगर में सड़क दुर्घटना में गम्भीर रूप से घायल हो गया। सिर में गम्भीर चोट लगी। दिल्ली के सहगल नर्सिंग होम में उसका इलाज हुआ। वह बच तो गया मगर दिमागी रूप से पूरा ठीक न हो सका।

दिमागी संतुलन खोने की अवस्था में उसने 19 दिसम्बर 1982 को आत्म हत्या कर ली। इस सदमे को कमलनयन जी ने बर्दाश्त तो किया मगर इस हादसे से वे अन्दर से टूट गये। जवान बेटे की मौत का गम उन्हें भीतर ही भीतर घुन की भांति खोखला करता गया। उनकी डायरी के पन्नों में अनेक बार इस टीस का अन्दाज लगता है। 1983 के नव वर्ष प्रारम्भ होने पर उन्होंने अपनी डायरी में लिखा था—'वर्ष का आरम्भ ही क्या जीवन की सध्या अन्धकारमय हो गई। पिता यूं तो अपनी सभी सन्तानों को चाहता है मगर जो सन्तान किसी समस्या से ग्रस्त हो उसके प्रति मोह अधिक ही होता है और उसके कष्टों को दूर करने में वह कोई कसर उठा नहीं रखता। अखबार के काम में भी उसका साथ था।' दिन हो या रात जब भी अकेलापन होता वह स्मृतियों के सागर में गोते लगाते और उनकी व्यथा बढ जाती। इसके अलावा उनके जो दो पुत्र नौकरी में नहीं थे उनकी आजिविका व आर्थिक स्थिति के बारे में वे भी चिंतित रहते थे। अपने समाचार पत्र सीमा-सन्देश के आर्थिक पक्ष से भी वे सदा चिन्ताग्रस्त रहते थे।

इस भावनात्मक व मानसिक टूटन का प्रभाव उनके शरीर पर भी पड़ा। उनकी डायरी के अनुसार साय अचानक स्वास्थ्य खराब हो गया रात्रि को सारे शरीर अंग प्रत्यंग में दर्द रहा, थकावट इतनी महसूस हुई कि शायद जीवन से हाथ धोना पड़े रात भर बेचैनी रही, जी घबराता रहा, जी कच्चा-उल्टी अब आयी अब आयी। (10 10 85)

खाने में बदपरहेजी वे सदा करते थे तथा पेट खराब रहने की शिकायत भी रहती थी, मगर इसके बावजूद भी दवा नहीं लेने का प्रयास करते थे। कोई जब उनसे पूछता कि इस उम्र में भी आप परहेज नहीं रखते है, मिठाई भी नहीं छोड़ते, तो उनका उत्तर होता मैं तो अपने शरीर को ही अपना डाक्टर मानता हूँ, जब कोई चीज खाने से कोई तकलीफ होती है तो मैं कुछ दिन नहीं खाता। तब कम से कम खाने का प्रयास करता हूँ। जब ठीक महसूस करता हूं तो फिर खाने लगता हूँ।

परिवार जनों के बार-बार कहने पर भी वे डाक्टर के पास नहीं जाना चाहते थे। शरीर के छोटे मोटे कष्टों की वह परवाह नहीं करते थे। परिवार के लोग जब उनकी उम्र व स्वास्थ्य को देखते हुए आराम करने की सलाह देते तो वे हंसकर टाल देते जब तक चलता है, चलने दो। घर बैठ कर क्या करूंगा? अपनी डायरी में उन्होंने लिखा भी है "अधिक गर्मी के कारण स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता मगर चले फिरे बिना जी नहीं लगता। (23-6 83)

16 अक्टूबर 1986 को भयकर पेट दद के कारण उन्होंने जो खाट पकडी, तो वे कभी न उठ पाये दो तीन दिन घर पर इलाज करने पर भी जब आराम न पहुँचा तो उन्हें गगानगर के सरकारी अस्पताल मे भर्ती करवाया गया। दो दिन वहा पर रह कर भी लाभ नही हुआ तो अस्पताल के मुख्य चिकित्सक स्वास्थ्य अधिकारी डा० मुरली मनोहर माथुर व कमलनयन जी के डाक्टर मित्र श्री जगतबन्धु जोशी ने उन्हें दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान मे भर्ती करवाने की राय दी, जहा पट के रोगो मे उपचार की विशेष व्यवस्था थी और उदर चिकित्सा के प्रमुख विशेषज्ञ प्रो० बी० एन० टण्डन की सेवा उपलब्ध थी। इन डाक्टरों के अनुसार पेट मे पाचक पहुँचाने वाली नली म कुछ रुकावट है जिसके कारण का पता वे गगानगर म उपलब्ध साधनो से नही लगा सकते। उन्हें किसी गम्भीर बीमारी की आशका भी थी। रातो रात एम्बुलेंस से दिल्ली ले जाया गया। यह उनका भाग्य ही था कि अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान जसे विख्यात अस्पताल मे उन्हे तुरन्त व बिना किसी सिफारिश के दाखिला मिल गया। यद्यपि इस बारे म परिवार जन आशकायें लेकर चले थे और उनके उपाय भी सोच लिये गये थे। कमरा, डाक्टर, स्टाफ व इलाज सभी बहुत अच्छे थे। आम आदमी कभी भी इन सुविधाओ को प्राप्त कर सकता है। यह देखकर कमलनयन जी को बहुत सतोष हुआ। डाक्टरो के व्यवहार व मेहनत से वे गदगद हो गये। लेडी डाक्टर मनीषा ने उन्ह पिता तुल्य आदर दिया और कमलनयन जी ने बेटी मानकर उस स्नेह दिया। दक्षिण भारत के डाक्टर नागभूषण से भी वे प्रभावित थे। प्रो० टण्डन ने अपनी टीम के साथ आधुनिक मशीनो के साथ अनेक परीक्षण करीब 10 दिन तक किये। मगर किसी नतीजे पर न पहुँच सके। मगर इन 10 दिनो म उनके स्वास्थ्य मे पर्याप्त सुधार हो गया था और वे दीवाली के अवसर पर एक नवम्बर को वापस गगानगर आ गये।

पूरी जाच के लिए दिल्ली वापस जाना तय था, मगर इन्तजार था कि स्वास्थ्य मे और सुधार हो जाय तो चलें। मगर, गगानगर म आने पर स्वास्थ्य गिरता गया। पूरे शरीर मे भयकर दद के साथ ही भूख लगनी बन्द हो गयी। मजबूरन इसी हालत मे उन्हे नवम्बर के मध्य मे दिल्ली ले जाना पडा। पाच सात दिनो की जाच के बाद प्रो० टण्डन ने जो परिणाम सुनाया तो उनके लडको के पैरो तले की जमीन खिसक गई। उन्हें लीवर कैंसर हो गया था जो अब पूरे शरीर मे फल चुका था। कैंसर का नाम सुनकर वज्रपात तो हो चुका था मगर तसल्ली के लिए विकीरण इलाज के लिए बम्बई के टाटा अस्पताल मे जाने की राय मागी तो बताया गया, वह स्टेज तो निकल गई और फिर लीवर जम कोमल अग पर तो उसका प्रयोग हो भी नही सकता था।

विधि का विधान मानकर कमलनयन जी को फिर घर लाया गया। झूठी उम्मीद के सहारे आयुर्वेदिक इलाज भी कराया गया और होम्योपथिक भी। एक दो दिन मामूली सुधार नजर आया। अतिम दिनो उन्होन अपने पुत्र ललित व अपन दोस्तो से खूब बातें की—अपने अतीत की अपने गाव की। मगर वह बुझते दिये की अन्तिम भभक साबित हुई। 8 दिसम्बर की रात को करीब 3 30 बजे उनक प्राण उनकी देह से अलग हो गये और फिर सघर्षों से जूझी उनकी देह भी अग्नि के माध्यम से पचभूतो मे विलीन हो गई। सैंकडो शोकाकुल लोग ऐसे कमठ जुझारू व हिम्मती

कमलनयन के लिए आंसू बहाने और आहें भरने से अधिक कुछ न कर पाये। हां, उनके नाम और उनके व्यक्तित्व की छाप उनके जानकारों के दिल में अवश्य छूट गई थी।

यह मौत से शायद और भी संघर्ष करते मगर 7 व 8 दिसम्बर की रात को जब उनके पुत्र ललित से उनकी यह करुण हालत देखी न गई तो उसने हिम्मत बांध कर पिता से कह दिया, पिताजी यह दुनिया अब आपके लायक नहीं रह गई है। यहां बहुत घटिया लोग रह गये हैं। वहां आपको यहां से अच्छे लोग मिलेंगे। यह सुनने के कुछ ही मिनटों के भीतर उन्होंने दूसरे लोक जाने का निर्णय ले लिया। वैसे वाणी को छोड़कर उनमें पूरी चेतना अन्तिम समय तक बनी रही। मानों मौत से संघर्ष के लिए वह अभी भी तैयार हों। बीमारी की पीड़ा और मौत का मुकाबला साहस से किया उसी बहादुरी से जिस बहादुरी से उन्होंने जीवन संग्राम लड़ा। डाक्टर बताते हैं कि कैंसर के मरीज को ऐसी असहनीय वेदना होती है कि उसकी चीखें निकल जाती हैं और वह तड़फड़ा उठता है। मगर वे ऐसी वेदना भी पी गये। अन्तिम दिनों में हाम्योवेयिक दवा के कारण सभी दर्द नाशक दवायें भी बन्द कर दी गई थी ऐसे में उस वेदना व उनकी सहन शक्ति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

अन्तिम तीन दिनों में मौत ने तीन बार उनको दस्तक दी। मगर उनकी जीवन शक्ति व संघर्ष ने उस मौत को भी पीछे धकेल दिया। उस समय उनके जो करीब थे वे इस संघर्ष को देखकर घबरा गये थे। उनके धार्मिक भावना वाले भाई श्री वेदनिधि ने उनके परलोक कल्याण हेतु मन्त्रोच्चारण भी आरम्भ कर दिये। मगर श्री कमलनयन दोनों हाथ के इशारे से उन्हें मना करते रहे क्योंकि संघर्ष के अन्तिम चार पांच दिन पूर्व उनकी वाणी ने भी उनका साथ छोड़ दिया था। वे होंठ हिलाते मगर पास खड़े लोग समझ न पाते। कई बार सोचते शायद उनकी कोई अन्तिम इच्छा अभी तक पूरी नहीं हुई। काफी बाद जाकर पता चला कि वे बार बार पानी मांग रहे थे। अपनी बेबसी पर कभी उन्हें क्रोध आता तो कभी आंखों में पानी छलछला आता। परिवार जन भी स्वयं को असहाय पाते व असमंजस व तनाव में रहते।

कमलनयन जी को अपनी मौत का पूर्व अनुमान हो गया था। धार्मिक कट्टरता के विरोधी होते हुए भी अपने ज्योतिषी पिता से पंचांग और ज्योतिष का कुछ ज्ञान उनके पल्ले पड़ गया था। इसके सहारे वे अपने दिनमान देखते रहते और कई बार अपनी सन्तानों को भी आगाह करते रहते थे। इसी के आधार पर उन्होंने अपनी मित्र मण्डली को कह दिया था "1986 के साल में सूर्य की दशा इतनी भयंकर है कि मैं नहीं बच सकता। विद्वान ज्योतिषी से उसकी पुष्टि भी उन्होंने करा ली। उनके स्वास्थ्य को देखकर उनकी मण्डली का प्रमुख साथी मदन कोचर कहा करता गुरु तेरे को कुछ नहीं होगा आधा 1986 तो चला ही गया अब इतनी जल्दी और क्या हो जायेगा? मगर साल का अन्तिम महीना खाली नहीं गया और कमलनयन जी की अपने बारे में भविष्यवाणी सच सिद्ध हो कर रही।

यह भी एक विचित्र संयोग था कि 1986 के प्रारम्भ में सर्दियों की समाप्ति पर इस वर्ष उनके गर्म कपड़े ट्रंकों में सदा की भांति सुरक्षित रखे गये तो अक्टूबर में साबुत नहीं मिले।

सारे गम कपडे कीडो ने काट कर छलनी कर दिये थे। प्रकृति को भी शायद यह अन्दाज हो गया था कि अब इन कपडो की जरूरत नही रहेगी।

श्री कमलनयन ने शायद ही कभी होली खेली हो। मगर दीपावली पर पूजन वे सदा यथासभव अपने पूरे परिवार के साथ किया करते थे। वे बीमारी मे दीपावली पूजन के लिए दिल्ली से आये भी मगर अपने पुत्र श्रीधर से कहा "इस बार तुम दीपावली पूजन अपने ही घर कर लेना।" यद्यपि वाद मे परिवार के दूसरे सदस्यो के कहने पर उन्होंने श्रीधर के परिवार को पूजन पर बुला लिया था मगर उन्होने यह सकेत अवश्य कर दिया था कि बेटे, अब दीपावली तुम्हे अलग अकेले मेरे बिना ही मनानी होगी क्योकि मेरी तो यह अतिम दीपावली है। दीपावली की इसी रात को उन्होने अपने छोटे पुत्र विनीत व उसकी पत्नी से बार-बार जोर देकर कहा "तुम दोनो खूब पटाखे चलाओ" ऐसा उन्होने पहले किसी भी दीपावली पर अपने किसी पुत्र या पुत्रवधू को नही कहा था। यह शायद इसीलिए कहा कि अगले वर्ष मेरे बाद शायद इतने उत्साह के साथ पटाखे न चला सको। इसलिए अभी मना लो खुशी का यह त्योहार।

बीमारी की हालत मे उन्होंने अपने प्रिय भाई श्री वेद निधि व अपने समधी (जिनके परिवार को वे पीढियो से जानते थे) श्री भानु प्रकाश शर्मा को याद किया और बहुत आग्रह कर उन्हें बुलवाया। सम्भवत वे इनको बहुत विश्वास पात्र समझते थे और उनसे कुछ जरूरी बात पर मशवरा करना चाहते थे। 5–7 दिन रहने के बाद जब उन्होंने जाने की इजाजत मागी तो उन्होंने आग्रहपूर्वक कहा मेरे कहने से कुछ दिन और रुक जाओ। शायद उन्हें पूर्वानुमान हो गया था कि ये चले गये तो उन्हें शीघ्र वापस आने मे कष्ट होगा। अन्तिम दिनो मे वे अपने कनिष्ठ जनो को हाथ उठाकर आशीर्वाद भी देने लगे थे। ऐसा उन्होंने पहले कभी नही किया था।

व्यक्तित्व

परम्परा विरोधी समाज सुधारक

जब हम श्री कमलनयन के सम्पूर्ण जीवन पर दृष्टिपात करते हैं तो उनकी कुछ चारित्रिक विशेषताएं उभर कर आती हैं।

वे विचारों से परम्परा के विरोधी थे। परम्परावादी ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के बावजूद उन्होंने न केवल पंडिताई का व्यवसाय अपनाने से इन्कार किया वरन् धर्म के नाम पर उसे जनता का शोषण करने वाला बताया। परम्परागत स्कूली शिक्षा उन्होंने नहीं ली मगर स्वाध्याय व ज्ञान के मार्ग को कभी नहीं छोड़ा। यों उन्होंने प्रभाकर की उपाधि प्राप्त की। सरकार की नौकरी करने के बावजूद अपने हक के लिए लड़ने का अधिकार उन्होंने नहीं छोड़ा चाहे इसके लिए उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड़ा हो।

हरिजनों के प्रति छूआछूत के वे घोर विरोधी थे। 40 वर्ष पूर्व उन्होंने हरिजनों को मन्दिर में सार्वजनिक रूप से प्रवेश करवाया। उनकी इस घोषणा का पंडितों ने घोर विरोध किया और वे लाठियां लेकर मन्दिर के द्वार पर आ गये। मगर कमलनयन ने अपने भाषण से हरिजनों में सम्मान व साहस की ऐसी भावना जगाई कि धर्म के ठेकेदार खड़े देखते ही रह गये और कुछ न कर पाये।

लडके लडकी की समानता मे उनका कितना विश्वास था, यह एक घटना से स्पष्ट होता है । जब अस्पताल मे उनकी पुत्रवधू ने लडकी को जन्म दिया तो लेडी डॉक्टर ने कमलनयन जी से कहा 'आप की श्रीमती तो बहुत दु खी होकर रो रही थीं, पोती होने पर ।" कमलनयन जी का उत्तर था 'वह तो पागल है । लडके लडकी मे क्या फर्क है ? तुम भी लडकी हो और डॉक्टर हो । वह स्वय भी लडकी ही पैदा हुई थी । बात योग्यता की है लडके लडकी की नही ।"

सामाजिक चेतना जगाने के लिए लोगो को शिक्षित करना जरूरी है । अशिक्षा का अभिशाप गावो म अधिक गम्भीर है । अत वे अपने साथी शिवदत्त शर्मा कुछ उत्साही युवको—कन्हैया लाल कोचर व मुन्नालाल गोयल के साथ गावो मे जाते और छोटे बडे सभी को रोजमर्रा के जीवन से सम्बन्धित सामान्य जानकारी देते । आज से 35 वर्ष पूर्व गावो मे न तो बिजली थी और न शिक्षा प्रसार के आधुनिक ऑडिओ विजुअल साधन । उस जमाने की याद ताजा करते हुए श्री कन्हैयालाल कोचर ने बताया कि कमलनयन जी की अगुवाई मे लालटेन लिए हुए तब हम गावो मे जागृति फैलाने जाते थे और कई बार ऐसा भी हुआ कि तेज आधी मे लालटेन भी गुल हो जाती और हम अन्धेरे मे ही भटकते हुए गाव पहुँचते थे । उन दिनो बस सेवा नाम मात्र की ही थी । सो हम गावो तक अक्सर पैदल ही आना-जानापडता था । तब हम चित्रो की मदद से लोगो को शिक्षित करते थे । जसे मलेरिया के बारे मे गदे तालाब का चित्र दिखाकर कहते मच्छर ऐसी जगहो मे पैदा होते हैं । मच्छर का चित्र दिखाकर कहते ऐसे मच्छर काटने से मलेरिया होता है । महाराणा प्रताप या नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की फोटो दिखाकर उनका नाम बताते और उनके देश भक्ति के कार्यों के बारे म बताते । ऐसा जन जागरण आज नही हो रहा जबकि अब गावो म बिजली है तथा आवाज व दृश्यो से समझाने वाले आधुनिक उपकरण हैं । मगर समर्पण व निस्वार्थ सेवा की यह भावना लुप्त हो गई है ।

भारत के स्वाधीन होने पर गगानगर के राजकीय महाविद्यालय मे पहली बार राष्ट्रीय तिरगा ध्वज भी कमलनयन जी की प्रेरणा मे फहराया गया और मई दिवस जलूस निकालने की परम्परा भी उन्होने श्री मुल्कराज व श्री कोचर जसे साथियो से मिलकर आरम्भ करवाई ।

स्पष्टवादी—

वे जो कुछ सोचते और महसूस करते थे उसे निर्भीक रूप से व्यक्त करने म कभी नही चूकते थे । उनके अनेक दोस्त व शुभ चिन्तक उन्हें कई बार समझाते 'कमलनयन जी अब पुराना जमाना नही रहा । साफ-साफ बात आजकल किसी को पसन्द नही । क्यो बेकार मे ही लोगो को नाराज करते हो दुश्मनी पालते हो ? मगर उन पर कोई असर नही होता और वे कहते मुझे बनावटी बात पसन्द नही है । ऐसा करके मैं अपने दिल और दिमाग पर बोझ नही रखना चाहता । अफसर तो क्या मुख्यमन्त्री सुखाडिया जसे व्यक्ति से भी वे विस्तार स यह कहने मे नही चूके तुम्हारी सरकार मे भ्रष्टाचार बढ रहा है ।' सुखाडिया जसे विशाल हृदय व्यक्ति ने तो मुस्कुरा कर उन्हें टाल दिया मगर सभी ऐसा नही कर पाते । अपनी स्पष्टवादिता की कीमत भी उन्होंने चुकाई ।

पढ़ा श्री दशरथ शर्मा व शिव शकर अग्निहोत्री से, मगर परीक्षा नही दी । लघु कौमुदी सस्कृत में पढ़ी, गुण प्रकाशक सज्जनालय, जैन लाईब्रेरी, नागरी भण्डार आदि मे अनेक विषयो की पुस्तकें पढ़ी, दनिक समाचार पत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक, सरस्वती, विशाल भारत, उपन्यास आदि अनेक विषयो पर साला पढा ।' (30 7 85) समाजवादी साहित्य म वे श्री एम एन राय से बहुत प्रभावित थे ।

अपने पत्र के माध्यम से उन्होंने तथ्यो व विचारो के सुन्दर समन्वय से जिन मुद्दो और समस्याओ को उठाया उन्हे पढ कर नही लगता कि यह सब किसी अल्प शिक्षित व्यक्ति ने लिखा है । अपनी सम्पादकीय टिप्पणियो म सामाजिक घटनाओ व समस्याओ पर जिस शालीनता व निर्भीकता म अपने विचार प्रकट करते थे, उसे राज्य स्तर के समाचार पत्रो मे उद्धृत किया जाता था । केवल लिखने के स्तर पर ही नही आपसी बातचीत व वार्तालाप तथा सावजनिक भाषणों म भी यह विचारशीलता झलकती थी । उनके परिपक्व विचारो को सुनकर महसूस होता था कि इस व्यक्ति के पास कहने को कुछ है । उनकी डायरी के पन्ने इस बात के गवाह हैं कि वे एक विचारशील व्यक्ति थे । उदाहरणाथ, 'जीवन क्या है ? यह प्रश्न आज तक उलझा ही हुआ है । दशन शास्त्र मे भी जो व्याख्या पढने को मिलती है वह निर्विवाद या सवसम्मत नही । इतिहासकार भी इसका सही स्वरूप वर्णन करने मे सफल नही रहे । जीवन विसगतियो को सगत बनाय जाने का सतत प्रयास ही कहा जा सकता है" (10 11 75) ।

उनके लेखन की व अभिव्यक्ति की सबसे बडी विशेषता यह थी कि वह उनके जीवन के अनुभवो से होकर गुजरी थी । राजनीति मे उनके अनुभव का निचोड था । मैं क्या हूँ ? समाज क्या है ? पहले मैं केवल धम को पाखड मानता रहा । जब राजनीति म सक्रिय भाग लिया तो ज्ञान हुआ कि राजनीति मे जितना पाखड, आडम्बर, अनाचार, आतिकता और पाशविकता है वह अन्य किसी क्षेत्र मे नहीं है । (18 3 86)

अध्ययन के प्रति उनका लगाव जीवन पयन्त रहा । डायरी म उन्होने एक स्थान पर लिखा है मैं पुन अध्ययन करना चाहता हूँ, मैंने समय का दुरुपयोग किया है । अपने आप से उन्हें यह सदा शिकायत रहती थी कि वे पत्रकारिता के व्यस्त जीवन व आर्थिक समस्याओ से घिरे होने के कारण अध्ययन के लिए समय नही निकाल पाते । वे बीकानेर राज्य कमचारियो के आन्दोलन व गगानगर जिले मे समाजवादी आन्दोलन के इतिहास पर विस्तार से लिखना चाहते थे मगर इन योजनाओं को मूतरूप देने से पूव ही उनकी जीवन यात्रा पर विराम लग गया ।

तीखी पसन्द व नापसन्द

कमलनयन जी एक तीखी पसन्द व नापसन्द वाले स्वभाव के व्यक्ति थे । जिनसे उनका स्वभाव व विचार मिल जाते थे उससे गहरी मित्रता रही और जिनस नही बनी तो कभी नही बनी । इस तीखी पसन्द व नापसन्द के परिणामस्वरूप उन्होने कष्ट भी झेले । किसी को पसन्द किया तो उसके लिए सभी प्रकार के जोखिम उठाने को तयार रहते थे । नापसन्द व्यक्ति को वे अपना नही सकते थे, चाहे वह व्यक्ति विधायक, सासद बडा अफसर या मन्त्री ही क्यो न हो । अनेक अवसरो पर परिस्थितिवश ऐसे कुछ व्यक्तियो ने समझौते के प्रयास किये मगर उन्हें जो जच गई सो जच गई ।

हर उम्र वाले के हमजोली

कमलनयन जी के दोस्तो मे 70 वष के बुजुग से लेकर 20 वष है तक के नौजवान थ। यह उनके स्वभाव की विशेषता थी कि उम्र का भेद भुलाकर वे अपने से उम्र मे बहुत छोटे व्यक्ति स भी तारतम्य बैठा लेते थे। बीकानेर राज्य कमचारी हडताल (1946-49) के समय उन्हें डूगर कालज (बीकानेर) के छात्रो का समथन था। तत्कालीन अनेक छात्र नेता श्री बुद्धदेव भारद्वाज, श्री कन्हैया लाल कोचर, मुन्ना लाल गोयल, श्री नान प्रकाश पिलानिया, जस छात्रो का उन्हें सदा सहयोग रहा। विशेषकर राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी का प्रथम अधिवेशन बीकानेर म आयोजित करवाने क समय से यह सम्बन्ध जीवन पयन्त जारी रहे। अपने जीवन म उन्होंने तीन बेसहारा बालको की परवरिश की, उन्हें पढाया लिखाया, कमाने योग्य बनाया और उनका परिवार बसाया। उनकी देखभाल व उनकी सुख-सुविधा का ख्याल उन्होंने अपनी सन्तानो से भी अधिक रखा।

अपनी उम्र से 20-40 वष कम उम्र के लोगो के साथ भी वे उसी प्रकार हिल मिल कर बात करते, मानो वे उन्ही की उम्र के हो। पत्रकार के रूप मे उन्हें कालेज क विद्यार्थियो व अन्य युवाओ का भरपूर सहयोग रहता था। 1950 के दशक के मध्य मे जब कुछ प्रभावशाली पैसे वाल राजनीतिज्ञो ने कमलनयन के अखबार के विरोध से परेशान होकर उन्हें पिटवाकर अस्पताल भिजवा दिया तो इस युवा वग ने श्री कमलनयन के साथ कधे स कधा मिलाकर काम किया। कन्हैया लाल कोचर मुन्ना लाल गोयल, भरपूर सिंह जस युवाओ न तब कहा—वे पिटवाने वाले सोचते हैं कि कमलनयन को अस्पताल भेजकर वे अखबार (सीमा सदेश) की आवाज बद कर देंगे—तो वे गलत फहमी म हैं। अखवार अब हम जारी रखेंग। अखबार निकालने की पूरी जिम्मेदारी युवा वग न बखूबी निभाई। इतना ही नहीं निर्भीक पत्रकार पर हमले के प्रति उनम इतना रोष था कि उन्होंन उन प्रभावशाली लोगो का आम जलसा ही नही होने दिया और उसके स्थान पर अपनी ओर स आम सभा की। इसम उन्होंने श्री कमलनयन पर इन्ही तत्वो द्वारा हमला करने की बात बताई। इस सभा मे जब सत्ताधारी नताओ व उनके समथको ने विघ्न डालने की कोशिश की तो युवाओ ने उनकी खूब पिटाई की। किसी भी उम्र का व्यक्ति उनसे सलाह या मदद मागने आता तो वे उसकी बात सुनते, अपन अनुभव व समझ के अनुसार राय भी देते। जहा सम्भव होता वे जरूरतमदो को नौकरी दिलान म मदद करते मगर बिना किसी आकाक्षा के। कोई अपनी कृतज्ञता व्यक्त करन आया तो ठीक नही आया तो ठीक। कई बार एसे व्यक्तियो से अचानक भेंट होती, तो वही याद दिलाते कि आपन मेरे लिए यह किया। इनम केरल स आया एक नवयुवक कुटप्पन भी था जिसे कुछ समय तक उन्होंने अपने घर मे भी रखा।

युवा वग की समस्यायें व उनके ही दृष्टिकोण से उन्हे समझने की उनम इच्छा थी। वे युवाओ की आकाक्षाओ और अभिलाषाओ को भी समझते थे। अत उन्हें अपने से कम उम्र के लोगो म घुलने मिलने म कभी सकोच नही होता था। वे उन्ही जसे हो जाते। रेलगाडी के सफर म या राह चलते अनजान युवको स मेल जोल हो जाने क कुछ प्रसग उन्होंने अपनी डायरी म भी अंकित किये हैं। ☐

पढ़ा श्री दशरथ शर्मा व शिव मक्र अग्निहोत्री से, मगर परीक्षा नही दी । लघु कौमुदी संस्कृत में पढ़ी, गुण प्रकाशक सज्जनालय, जैन लाईब्रेरी, नागरी भण्डार आदि मे अनेक विषयो की पुस्तकें पढ़ा, दनिक समाचार पत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक, सरस्वती, विशाल भारत, उपन्यास आदि अनेक विषया पर सालो पढा ।' (30 7 85) समाजवादी साहित्य मे वे श्री एम एन राय से बहुत प्रभावित थे।

अपने पत्र के माध्यम से उन्होंने तथ्या व विचारो के सुदर समन्वय से जिन मुद्दा और समस्याओ को उठाया उन्हें पढ कर नही लगता कि यह सब किसी अल्प शिक्षित व्यक्ति ने लिखा है । अपनी सम्पादकीय टिप्पणियो मे सामाजिक घटनाओ व समस्याओ पर जिस शालीनता व निर्भीकता मे अपने विचार प्रकट करते थे, उसे राज्य स्तर के समाचार पत्रो म उद्धृत किया जाता था । केवल लिखने के स्तर पर ही नही, आपसी बातचीत व वार्तालाप तथा सावजनिक भाषणो मे भी यह विचारशीलता झलकती थी । उनके परिपक्व विचारो को सुनकर महसूस होता था कि इस व्यक्ति के पास कहने को कुछ है । उनकी डायरी के पन्ने इस बात के गवाह हैं कि वे एक विचारशील व्यक्ति थे । उदाहरणाथ "जीवन क्या है ? यह प्रश्न आज तक उलझा ही हुआ है । दशन शास्त्र मे भी जो व्याख्या पढने को मिलती है वह निर्विवाद या सवसम्मत नही । इतिहासकार भी इसका सही स्वरूप वणन करने मे सफल नही रहे । जीवन विसंगतियो को सगत बनाये जाने का सतत प्रयास ही कहा जा सकता है" (10 11 75) ।

उनके लेखन की व अभिव्यक्ति की सबसे बडी विशेषता यह थी कि वह उनके जीवन के अनुभवा से होकर गुजरी थी । राजनीति मे उनके अनुभव का निचोड था । मैं क्या हूँ ? समाज क्या है ? पहले मैं केवल धम को पाखड मानता रहा । जब राजनीति मे सक्रिय भाग लिया तो ज्ञान हुआ कि राजनीति म जितना पाखड, आडम्बर अनाचार, अनैतिकता और पाशविकता है, वह अन्य किसी क्षेत्र मे नही है । (18 3 86)

अध्ययन के प्रति उनका लगाव जीवन पयन्त रहा । डायरी मे उन्होने एक स्थान पर लिखा है मैं पुन अध्ययन करना चाहता हूँ मैंने समय का दुरुपयोग किया है ।' अपने आप स उन्हें यह सदा शिकायत रहती थी कि वे पत्रकारिता के व्यस्त जीवन व आर्थिक समस्याओ से घिरे होने के कारण अध्ययन के लिए समय नही निकाल पाते । वे बीकानेर राज्य कमचारियो के आन्दोलन व गगानगर जिले मे समाजवादी आन्दोलन के इतिहास पर विस्तार से लिखना चाहते थे मगर इन योजनाओ को मूतरूप देने मे पूव ही उनकी जीवन यात्रा पर विराम लग गया ।

तीखी पसन्द व नापसन्द

कमलनयन जी एक तीखी पसन्द व नापसन्द वाले स्वभाव के व्यक्ति थे । जिससे उनका स्वभाव व विचार मिल जाते थे, उनसे गहरी मित्रता रही और जिनमे नहीं बनी तो कभी नही बनी । इस तीखी पसन्द व नापसन्द के परिणामस्वरूप उन्होने कष्ट भी झेले । किसी को पसन्द किया तो उसके लिए सभी प्रकार के जोखिम उठाने को तैयार रहते थे । नापसन्द व्यक्ति को वे अपना नही सकते थे चाहे वह व्यक्ति विधायक, सासद, बडा अफसर या मन्त्री ही क्यो न हो । अनेक अवसरों पर परिस्थितिवश ऐसे कुछ व्यक्तियो ने समझौते के प्रयास किये मगर उन्हें जो जच गई सो जच गई ।

जीवन क्या है ?

प्रश्न जटिल है, छोटा सा होते हुए भी बड़ा महत्त्वपूर्ण और अन्वेषणात्मक है । गम्भीरता और विवेक अपेक्षित है । चिन्तन के लिए मानव इतिहास से हमे इस विषय मे सहायता मिलती है । परिवर्तनशीलता और प्रगतिशीलता निर्विवाद मत स्थिर नहीं करने देती ।

मैं 1936 से जनसेवा के चक्र मे पड़ा हू । सफलता के निकट पहुच नहीं पाया, पढ़ने की सदव उत्कट अभिलाषा होते हुए भी साधनों के अभाव में कृतकाय न हो सका ।

वास्तविकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति भिन्न परिस्थिति मे पलता है । जिस प्रकार ससग एव सम्पक मे विकास पाता है, वसा ही उसका सस्कार तथा स्वभाव बनता है । समाज का प्रत्येक अवयव अब तक विकास के सिद्धान्तानुसार अपरिपक्व है । इसलिए प्रत्येक मानव सभी दृष्टिकोणो से वस्तुस्थिति का विश्लेषण करने मे प्राय असफल रहता है ।

स्वावलम्बन एव जीविकोपाजन का कितना महत्व है इसकी मार्मिकता का ज्ञान मुक्त भोगियों से अधिक स्पष्ट किसे होता है ? द्वन्द्ववाद क्या है ?

मार्क्स—यही एक मात्र सांगोपांग सर्वांगीण तथा सर्वोच्च चिन्तन प्रणाली है । ढाई हजार वष पूव इस प्रणाली के उत्पन्न करने वाले ग्रीस मे सुकरात, प्लेटो, हेराक्लिटस, अरस्तू थे । जीवित रखने का श्रेय देकार्त, स्पीनोजा, आदि को है । गम्भीर अध्ययन कान्ट ने किया, द्वन्द्ववाद का वास्तविक चरमोत्कष हीगल के तक शास्त्र मे है । तकशास्त्र और द्वन्दशास्त्र दोनों ही प्रकृति, समाज तथा व्यक्ति के जीवन के सत्यों को व्यक्त करते हैं । तकशास्त्र साधारण और सरल सत्यो को स्थापित करता है, द्व दशास्त्र जटिल, गम्भीर एव सूक्ष्म सत्यो की अभिव्यक्ति करता है ।

देश के पूरे आर्थिक और सामाजिक जीवन का, उसके खेतो, कारखानो विद्यालयो और मनोरजन गृहों का नये सिरे से सगठन करना समाजवाद का प्रमुख अग है । (27–8–49)

समाजवाद सत्ता प्राप्त किये बगर नहीं लाया जा सकता । शासन का स्थायित्व, जनता के सहयोग एव शक्ति पर निभर है । और अवसर मे समानता होना उसके लिए जरूरी है ।

यदि हम स्वय को उदार विशाल और निष्पक्षता का समथक समझते हैं तब मुझ आश्चय होता है कि मुसलमानों पर किस प्रकार लूट, हत्या और अत्याचार किये गये । (28–8–49)

मैं स्वय अपनी जीवन दिशा को मोड़ना चाहता हू । कहा तक सफल हुआ, विश्वासपूवक अभी नहीं कह सकता । किन्तु, प्रयत्न से सभी काय सुसाध्य हो जाते हैं, ऐसा अनुभव बतलाता है ।

समाजवाद को गम्भीरता से पढा, मनन किया और देखा । अपने कमचारी सघ के गत सघष से मिलान करके देखा । हो सकता है मैं व्यावहारिकता मे अब भी त्रुटि कर रहा हू । परन्तु जो काय पार्टी ने किया, मैं समथन नहीं करता आत्मा से । अनुशासन के नाम पर साथ हू ही ।(6–9–49)

मुझ पर जनता मे 200/– रु० नानक चन्द से प्राप्त करने का मिथ्या आरोप है । खर चरित्रवान को ही दुश्चरित्र कहा जाता रहा है इस समाज मे हमेशा ।

डायरी के पन्नों से

नियमित रूप से डायरी लिखना कमलनयन का शौक था, एक आदत थी। उनकी सबसे प्राचीन डायरी जो हमे उपलब्ध हुई, वह 1949 के मध्य से आरम्भ होकर 1951 के मध्य तक चलती है। यही उनके जीवन का सबसे संघर्षशील काल था, जब वे कर्मचारी संघ के आन्दोलन को नेतृत्व देने के कारण सरकारी नौकरी से बरखास्त हो चुके थे। बेरोजगारी व गरीबी में पिसते हुए उन्होंने पुस्तकालय कर्मचारी, शिक्षक, समाचार पत्र बांटने जैसे अनेक काम पेट की रोटी के लिये किये। यह डायरी उनकी सबसे महत्वपूर्ण डायरी थी, ऐसा आभास स्वयं कमलनयनजी को भी था। अतः उसे उन्होंने अपनी मेज की दराज मे सुरक्षित रूप से रखा हुआ था। अन्य डायरियों के बारे मे यह बात नहीं थी। उन डायरियों के महत्त्व से परिचित न होने के कारण वे इधर उधर हो गई। 1951 के बाद 1958, 1973, 1975 व 1978 की डायरियां ही हमें उपलब्ध हो पाई। इसके बाद 1980 से 1986 तक की सभी डायरियां सुरक्षित मिल गई।

डायरी वे करीब हर रोज लिखते थे। कभी समयाभाव या मन स्थिति ठीक न होने के कारण चाहे वे एक दो लाइन ही उसमें लिखें। जीवन के अंतिम दिनों में जब वे दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्वेदिक संस्थान मे इलाज के लिए भर्ती थे तो उनकी डायरी गंगानगर मे ही छूट गई। अस्पताल के बिस्तर पर गम्भीर हालत में भी उन्होंने पूछा 'मेरी डायरी कहाँ है। जब उन्हें बताया गया कि गंगानगर ही रह गई, तो उन्होंने कहा जल्दी मगवाओ। डायरी तो मगवाली गई मगर वे इसमे लिखने की स्थिति में नहीं थे। यह एक संयोग ही है कि 9 अक्तूबर 1986 को अपनी डायरी मे उन्होंने जो अन्तिम शब्द लिखे वे थे 'प्रस्थान कर गया'' ।

जीवन क्या है ?

प्रश्न जटिल है, छोटा सा होते हुए भी बड़ा महत्त्वपूर्ण और अन्वेषणात्मक है। गम्भीरता और विवेक अपेक्षित है। चिन्तन के लिए मानव इतिहास से हमे इस विषय मे सहायता मिलती है । परिवतनशीलता और प्रगतिशीलता निर्विवाद मत स्थिर नहीं करने देती।

मैं 1936 से जनसेवा के चक्र मे पडा हू। सफलता के निकट पहुच नहीं पाया, पढ़ने की सदव उत्कट अभिलाषा होते हुए भी साधनों के अभाव मे कृतकाय न हो सका।

वास्तविकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति भिन्न परिस्थिति में पलता है। जिस प्रकार ससग एव सम्पक मे विकास पाता है, वैसा ही उसका सस्कार तथा स्वभाव बनता है। समाज का प्रत्येक अवयव अब तक विकास के सिद्धान्तानुसार अपरिपक्व है। इसलिए प्रत्येक मानव सभी दृष्टिकोणों से वस्तुस्थिति का विश्लेषण करने मे प्राय असफल रहता है।

स्वावलम्बन एव जीविकोपाजन का कितना महत्व है इसकी मार्मिकता का ज्ञान भुक्त भोगियों से अधिक स्पष्ट किसे होता है ? द्वन्द्ववाद क्या है ?

मावस—यही एक मात्र सांगोपांग सर्वांगीण तथा सर्वोच्च चिन्तन प्रणाली है। ढाई हजार वष पूव इस प्रणाली के उत्पन्न करने वाले ग्रीस मे सुकरात, प्लेटो, हेराक्लिटस, अरस्तू थे। जीवित रखने का श्रेय बेकन स्पीनोजा, आदि को है। गम्भीर अध्ययन कान्ट ने किया, द्वन्दवाद का वास्तविक चरमोत्कष हीगल के तक शास्त्र मे है। तकशास्त्र और द्वन्दशास्त्र दोनों ही प्रकृति, समाज तथा व्यक्ति के जीवन के सत्यों को व्यक्त करते हैं। तकशास्त्र साधारण और सरल सत्यो को रूपायित करता है, द्वन्दशास्त्र जटिल, गम्भीर एव सूक्ष्म सत्यो की अभिव्यक्ति करता है।

देश के पूरे आर्थिक और सामाजिक जीवन का, उसके खेतो, कारखानो, विद्यालयो और मनोरंजन गृहो का नये सिरे से सगठन करना समाजवाद का प्रमुख अग है। (27–8–49)

समाजवाद सत्ता प्राप्त किये बगर नहीं लाया जा सकता। शासन का स्थायित्व जनता के सहयोग एव शक्ति पर निभर है। और अवसर मे समानता होना उसके लिए जरूरी है।

यदि हम स्वय को उदार विशाल और निष्पक्षता का समथक समझते हैं तब मुझ आश्चय होता है कि मुसलमानो पर किस प्रकार लूट, हत्या और अत्याचार किये गये। (28–8–49)

मैं स्वय अपनी जीवन दिशा को मोडना चाहता हू। कहां तक सफल हूगा, विश्वासपूवक अभी नहीं कह सकता। किन्तु, प्रयत्न से सभी काय सुसाध्य हो जाते हैं, ऐसा अनुभव बतलाता है।

समाजवाद को गम्भीरता से पढ़ा, मनन किया और देखा। अपने कमचारी सघ के गत सघष से मिलान करके देखा। हो सकता है मैं व्यावहारिकता मे अब भी त्रुटि कर रहा हू। परन्तु जो काय पार्टी ने किया, मैं समथन नहीं करता आत्मा से। अनुशासन के नाम पर साथ हू ही।(6–9–49)

मुझ पर जनता मे 200/– रु० मानक चन्द से प्राप्त करने का मिथ्या आरोप है। खर चरित्रवान को ही दुश्चरित्र कहा जाता रहा है इस समाज मे हमेशा।

डायरी के पन्नों से

जीवन मे निराशा जब अधिकार जमा लेती है तो सफलता कोसो दूर भाग जाती है।

एक विचित्र बात सुनने को मिली कि कलक्टर साहब ने धनिकों के समक्ष मेरी अप्रासगिक निन्दा की। रात्रि को ए० एल० माथुर (कलक्टर) से मिलने गया। धनिक अपनी कहानी प्रशसा के रूप मे गा रहे थे। कीचड उछाल रहे थे उन देश सेवको पर जो आज भी कष्टो से युद्ध कर जीने का साहस करते हैं। (30-1-50)

पार्टी की आर्थिक दशा शोचनीय हो गई है। इसका प्रमुख कारण कार्यकर्ताओ का पारस्परिक सन्देह अविश्वास और वमनस्य हैं। सभी दिशाओं मे अन्धकार गोचर होता है। क्या यही सावजनिक जीवन है? क्या इस जनता पर गव करू जो उपकार को अपकार समझें? (8-2-50)

रविवार को बाजार मे अवकाश मनाना शुरू हो गया। प्रसन्नता है एक प्रयत्न सफल होने की। कारखानों मे मजदूरों की छुट्टियां नहीं की गई, ऐसा मैंने स्वय जाकर देखा। व्यापारी वग सन्तुष्ट न था। मध्यम वग सन्तुष्ट था। (26-2-50)

आज त्यौहार है। (होली) हिन्दू विशेषकर धूमधाम से मनाते हैं। गत साल इसी दिन मैं कारागृह मे था, आज आर्थिक कद मे। गत वष शारीरिक बधन की पीडा थी आज गरीबी का दद है।

मैं प्रण लेता हू कि सवस्व खोकर भी समाजवाद लाना है। (3-3-50)

आज लोहिया जी के आगमन का दिवस है। शहर मे उत्साह है। वे नहीं पहुचे। तार से पता चला है कि आप बीकानेर पहुच गये। केसरीसिंहपुर पहुचा। स्वागत की तयारियां जोरो पर थीं। निराशा हुई। जनता से क्षमा याचना करते हुए बताया, लोहिया जी ने कल आने की सूचना दी है। (2-4-50)

प्रात गगानगर को प्रस्थान किया। मध्याह्न गाडी से लोहिया जी पधारे। भव्य स्वागत हुआ। यही दशा केसरीसिंहपुर मे रही। सभा मे उपस्थिति अच्छी थी। एक हजार रुपये भेंट किये गये। (3-4-50)

निणय यही है कि पार्टी का पदाधिकारी किसी भी अवस्था मे नहीं रहना है। (15-4-50)

यह निर्विवाद है कि पू जीवादी मनोवृत्ति के व्यक्ति प्रगतिशील व्यक्तियो को अपने चातुय से परस्पर लडाते हैं। नवभारत इण्डस्ट्रीज के मजदूर अचानक बेकार कर दिये गये। पद से मुक्त होने के निणय को दोहराया। परिवार के निर्वाह की चिन्ता बढती जा रही है। कमचारी वग को त्यागकर अच्छा नहीं किया। स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। (16-6-50)

यद्यपि मैंने जो माग चुना है गम्भीरता विवेक और बुद्धिमत्ता के साथ शान्तचित्तता से चुना था किन्तु आज जो परिस्थिति बन गई है उसका उत्तरदायित्व आशिक रूप से मुझ पर है। मैंने सहयोगी बनाने मे जो उपेक्षा एव उदासीनता रखी है उसी का परिणाम आज भोगना पड रहा है।

दशहरे का मेला देखा। कभी गरीब अमीर का सम्मिलन रहा होगा, मगर आज तो प्रतिद्वंद्विता का जनक है। (1-10-49)

सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को समाज इतनी उपेक्षा और अवहेलना की दृष्टि से क्यों देखता है? अनेकानेक मिथ्या लांछन लगाकर क्या भद्र समाज के प्राणी अपने कुकृत्यों को सदा निर्वाध रूप से चलाने में समर्थ होंगे? (2-10-49)

एकांतवास आत्मा को तुष्टि पहुंचाता है। (3-10-49)

समाज के प्रत्येक व्यक्ति के प्रति मैं जागरूक हूँ। स्वयं की सन्तान एव धर्मपत्नी के प्रति मेरा व्यवहार अनाधिकार है। संस्कारों से विवश हूँ। (26-10-49)

सन 1939 से एक भावना ने मुझे विवश कर रखा है जनसेवा के लिए। मैं प्रत्यक्ष राजनीति के आधुनिक विकृत स्वरूप को इससे पूर्व न देख पाया था। आजादी से पूर्व बलिदान ही लक्ष्य था। (27-10-49)

मैं विचित्र स्थिति में उलझ गया हूँ। मुक्त कैसे होऊ—समझ नहीं आता। सार्वजनिक जीवन कितना अधम, नारकीय और हेय बन गया है, मानव के लिए कल्पनातीत है। (14-11-49)

जब सब शास्त्र बेकार हो जाते हैं तो चालाक आदमी ईश्वर की दुहाई देता है।

मानव स्वभावतः कामचोर है इसलिए जिस व्यक्ति से लाभ की आकांक्षा होती है उसी का पक्ष लेता है। (15-11-49)

आत्मा की पुकार है लगन से, तत्परता के साथ सतत प्रयत्न और साहस के साथ लगे रहो। सफलता तुम्हारी ही है। इतिहास इसका साक्षी है। महान बनने के हेतु महान कष्टों को सहना अनिवार्य है। (9-12-49)

मैं भी आर्थिक दशा हीन होने से ऋणी होकर, गृहणी को परिवार वालों की दशा पर छोड़ जी नहीं पा रहा हूं। क्या समाज सेवियों को यही पुरस्कार मिलना चाहिए? तो क्या इस कार्य को अधूरा छोड़ दिया जावे? तो क्या बलिदान होने वाले शहीदों को भुला दें? तो क्या हमने सही प्रतिज्ञा की है ऐसी तपस्या करने की या हमको उन्माद ने दबा लिया है? नहीं तो यह समाज हमको उपेक्षा, घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से ही क्यों देखता है? (3-1-50)

"प्रहरी साप्ताहिक की स्वीकृति के लिए प्रयत्न किया। (16-1-50)

मैं नई दुनिया, नये निर्माण को स्थापित करने का साहस रखता हू। (13-2-50)

लोग कहते हैं कि देश सेवा धनी कर सकता है किन्तु बलिदान के इतिहास में ऐसी घटनाएं अपवाद में ही प्राप्त हो सकती हैं। (18-2-50)

मैं आश्चर्य नहीं करता—संसार के महापुरुषों को भी लांछित किया गया है। त्याग ही मानव को देवत्व प्रदान करता है। (25-2-50)

जीवन मे निराशा जब अधिकार जमा लेती है तो सफलता कोसो दूर भाग जाती है।

एक विचित्र बात सुनने को मिली कि कलक्टर साहब ने धनिको के समक्ष मेरी अप्रासगिक निन्दा की। रात्रि को ए० एल० माथुर (कलक्टर) से मिलने गया। धनिक अपनी कहानी प्रशसा के रूप मे गा रहे थे। कीचड उछाल रहे थे उन देश सेवको पर जो आज भी कष्टो से युद्ध कर जीने का साहस करते हैं। (30–1–50)

पार्टी की आर्थिक दशा शोचनीय हो गई है। इसका प्रमुख कारण कार्यकर्ताओ का पारस्परिक सन्देह, अविश्वास और वमनस्य हैं। सभी दिशाओ मे अन्धकार गोचर होता है। क्या यही सावजनिक जीवन है? क्या इस जनता पर गव करू जो उपकार को अपकार समझे? (8–2–50)

रविवार को बाजार मे अवकाश मनाना शुरू हो गया। प्रसन्नता है एक प्रयत्न सफल होने की। कारखानों मे मजदूरों की छुट्टिया नहीं की गई, ऐसा मैंने स्वय जाकर देखा। व्यापारी वग सन्तुष्ट न था। मध्यम वग सन्तुष्ट था। (26–2–50)

आज त्यौहार है। (होली) हिन्दू विशेषकर धूमधाम से मनाते हैं। गत साल इसी दिन मैं कारागृह मे था, आज आर्थिक कद मे। गत वष शारीरिक बधन की पीडा थी आज गरीबी का दव है।

मैं प्रण लेता हू कि सवस्व खोकर भी समाजवाद लाना है। (3–3–50)

आज लोहिया जी के आगमन का दिवस है। शहर मे उत्साह है। वे नहीं पहुचे। तार से पता चला है कि आप बीकानेर पहुच गये। केसरीसिंहपुर पहुचा। स्वागत की तयारिया जोरो पर थीं। निराशा हुई। जनता से क्षमा याचना करते हुए बताया, लोहिया जी ने कल आने की सूचना दी है। (2–4–50)

प्रात गगानगर को प्रस्थान किया। मध्याह्न गाडी से लोहिया जी पधारे। भव्य स्वागत हुआ। यही दशा केसरीसिंहपुर मे रही। सभा मे उपस्थिति अच्छी थी। एक हजार रुपये भेंट किये गये। (3–4–50)

निणय यही है कि पार्टी का पदाधिकारी किसी भी अवस्था मे नहीं रहना है।
(15–4–50)

यह निर्विवाद है कि पूजीवादी मनोवृत्ति के व्यक्ति प्रगतिशील व्यक्तियों को अपने चातुय से परस्पर लडाते हैं। नवभारत इण्डस्ट्रीज के मजदूर अचानक बेकार कर दिये गये। पद से मुक्त होने के निणय को दोहराया। परिवार के निर्वाह की चिन्ता बढती जा रही है। कमचारी वग को त्यागकर अच्छा नहीं किया। स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। (16–6–50)

यद्यपि मैंने जो माग चुना है गम्भीरता विवेक और बुद्धिमत्ता के साथ शान्तचित्तता से चुना था किन्तु आज जो परिस्थिति बन गई है उसका उत्तरदायित्व आंशिक रूप से मुझ पर है। मैंने सहयोगी बनाने मे जो उपेक्षा एव उदासीनता रखी है उसी का परिणाम आज भोगना पड रहा है।

मानव स्वभावत दूसरों पर अरोप लगान का अभ्यासी है, स्वय के दोषों के प्रति वह अधिक सहानुभूति से और सस्कारवश कम सोचता है।

शोषण मानवता का सबसे बडा अभिशाप है। लोगो मे जहां स्वाधीनता बढ़ती जा रही है वहीं चेतना का संचार भी बढ़ रहा है, अ तर्राष्ट्रीयता क प्रभाव में। (24-7-50)

वतमान युग मे हमने दूसरो पर आरोप लगाने की प्रवृत्ति को प्रश्रय दिया है। अपनी त्रुटि, निर्बलता और अयोग्यता पर निय त्रण पाने मे सदव शिथिलता दिखाई है। यही असफलता का रहस्य है।

ग्रामीण के व्यवहार को समझना, उसे समाज हित की बातों को समझाना मेरा प्रथम क्तव्य है। (30-7-50)

प्रात साथी देशासिंह जी को जनआ दोलन मे सत्याग्रही बनाकर एक जत्था लेकर गगानगर पहुचा। सौभाग्यवश ताराच द, हनुमान एव मुझे भी अकारण ही ब दी बना लिया। केदारजी आदि ब दी गृह मे पहले से ही उपस्थित थे। (26-10-50)

22-10-50 से 3-11-50 तक लगभग निर तर पेशी होती रही। अमरसिंह, मोतीराम और ज्ञानीरामजी को गिरफ्तार अवश्य किया गया, मगर आज 3 दिन पश्चात रिहा कर दिया। इसका प्रभाव मेरी राय में जनता पर अच्छा न पडेगा। (3-11-50)

आज 20 दिनों का कारावास का निणय घोषित कर दिया गया। ्यायाधीश का पक्षपातपूण व्यवहार असहनीय था। (4-11-50)

दोपहर की गाडी से केसरीसिंहपुर गया। गृहणी अत्य त अस तुष्ट थी। बच्चे भी असहयोग किए हुए थे। घर डसने को आ रहा था। तत्काल रात्रि को लौटने की आवाज देकर बाहर चला गया। कनक या आटा नहीं था। न रुपये थे और न उधार का जरिया। मानवता की कसी विडम्बना थी।

रात्रि को पत्नी ने आत्म हत्या कर लेने की विवशता प्रकट की। स तान की दुदशा वस्तुत उपेक्षणीय नहीं है। गृहिणी मजदूरी करने को प्रस्तुत है। रात्रि को ज्वर हो गया। चि ता में निमग्न रहा। मने गलतिया कम नहीं कीं। और अब भी बाज नहीं आ रहा हू। (14-1-51)

गत दिनो एक समय भोजन करने तथा अनियमितता के कारण अस्वस्थ रहने लगा हू। अब केवल चाय, चने, रेवडी और मूगफली आहार बन गई है। सीने मे दर्द, बदन मे पीडा व चित्त मे व्यग्रता बढ़ती जा रही है। दो दिनो से आत्महत्या करने के विचार आ रहे हैं। यह तो मानने को अब भी तयार नहीं हू कि धन सर्वोपरि है किन्तु भौतिक युग में ये किसी अ य साधनों स अधिक महत्वपूर्ण अवश्य है। (15-1-51)

मने "एन० आर० वाई०" (नत्थूराम योगी) से एक सबक जाना जब तक व्यक्ति स्वय की आर्थिक दशा पर निय त्रण नहीं कर पाता तब तक वह समाज मे अपनी स्थिति कायम करन मे समथ हो ही नहीं सकता।

प्रात 10 30 बजे जयपुर पहुचा। राजस्थान सक्रेटेरियट ऑफिस पहुचा। दो घण्टे प्रतीक्षा करने पर लक्ष्मीधर जी मिले। बोरा साहब और गणपतिसिंह से भेंट की। साय को मिलने का तय रहा। भोजन की व्यवस्था न हो सकी। रात को 8 बजे सघ कार्यालय मे सेवा काय सम्भालने पर विचार किया। तत्काल 100/-रुपये वेतन उचित समझा गया। एक दो मास के बाद बढाया जावेग। जयपुर रहना स्वीकृत करते हुए पार्टी में सक्रिय कार्य न करने का भी निर्णय। (15-3-51)

स्वय का जब निरीक्षण सूक्ष्म दृष्टिकोण से निष्पक्ष होकर करता हू, तो स्वय को सबसे बडा अपराधी पाता हू। परिवार से उदासीनता समाज सेवा के लिए और समाज की सेवा कर नहीं पा रहा। माना, हो नहीं पा रही है, किन्तु क्षमता नहीं है तो ढोंग क्यो?

के०आर० गोयल, अम्बालाल माथुर, चम्पालाल राका, सत्यपाल गोयल, एन०आर० शर्मा से वार्तालाप किया। दिनभर साथियो से परामश करने मे व्यस्तरहा। विद्यार्थियों से मेल प्राप्त किया। वातावरण उपयुक्त जच रहा था। रात्रि को बापना, मोहन, कश्मीरी, घेवर, आदि कई साथी स्टेशन पर मिले। पार्टी के विषय मे वार्तालाप होता रहा। (26-3-51)

जीवन सघष एव कष्ट पर विजय पाने का नाम है। यातनाएँ जीवन की सफलता की मोड हैं। सहनशीलता विवेक, साहस एव श्रम का समन्वय ही सहज योग्यता है। (13-1-58)

आर्थिक रूप से स्थिति चिन्ताजनक होती जा रही है। ऋण भी अभिवद्धि पर है। प्रेस का काय सफलतापूवक नहीं चल रहा है। (1-2-58)

में विवेकशील व बुद्धिमान नहीं हूँ। मैं अपने विचारों को पहले व्यक्त करके उन्हे कार्यान्वित होने मे बाधाएँ डाल देता हूँ। (15-2-58)

पत्र की नीति से जहा अधिकारी दुखी हैं सत्तारूढ दल के नेता अधिक परेशान है। *यह भी सत्य है कि सत्य कटु होता है। कभी ऐसा मन होता है कि बुराइयों का डटकर सगठित* होकर मुकाबला किया जाए। जब मैदान मे सहयोगी ढूढता हूँ तो केवल निराशा हाथ लगती है। (24-5-73)

जीवन एक समस्या है। धन मे सुख है किन्तु मन के सुख के सामने धन का सुख महासागर की बूद के बराबर भी नहीं। (5-1-75)

आज प्रसगवश श्री वी डी अरोडा एव श्री एम एल कोचर की दनन्दिनी पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री अरोडा एव कोचर के सकलन एव मौलिक विचारो से मुझे प्रेरणा एव स्फूर्ति मिली। उक्त दोनो युवक अपनी लगन और ध्येय के प्रति काफी जागरूक लगे।

ऐसा प्रतीत होता है कि समाज मे आज भी आदश एव कमठता जीवित है। (25-1-75)

आज गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष मे कई मित्रो से आधुनिक राजनीति व प्रशासनिक कार्यों के सम्बन्ध मे विचार विनिमय करने का अवसर हुआ।

समाज मे सत्तारूढ दल तथा विपक्षी दलो के नेताओ के आचरण के प्रति निराशा का वातावरण पनपता जा रहा है। (26-1-75)

देश एक नाजुक दौर से गुजर रहा है। (27-1-75)

प्रात 10 बजे श्री गौडे मुराहरि (उपाध्यक्ष राज्य सभा) का स्टेशन पर स्वागत किया। उनके सामीप्य व सानिध्य मे रहने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री मुराहरि से स्व० राममनोहर लोहिया के माध्यम से परिचय हुआ था। साय 4 30 बजे दनिक सीमा स देश कार्यालय के सामने आपका अभिनन्दन किया। एच० के० व्यास भी शामिल थे। (9-11-75)

मै गत 10-15 दिनो से गम्भीरतापूवक अध्ययन करके इस निणय पर पहुचा कि मेरे जीवन मे निष्क्रियता समाप्त करना अत्यावश्यक है। अन्यथा, जीवन जड होकर रह जावेगा। (21-12-78)

मैं गत दिनो से उदासीनता का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। मेरी यह मान्यता रही है कि 65 वष के बाद वानप्रस्थ का जीवन होना चाहिए। यह वण व्यवस्था अत्य त प्राचीन कालीन है। अब इस युग मे इसका व्यावहारिक रूप प्राय समाप्त हो चुका है। सक्रिय रूप से अपनी वतमान विषम स्थिति का अध्ययन कर रहा हूँ। मैं जब राजनीति मे सक्रिय था तब और अब तो समाज में भारी परिवतन हुआ है। (7-1-81)

आज गुरुवार है। मैंने गुरुवार को सदव शुभ माना है। मेरी धारणा है कि बुद्धि विवेक का स्वामी गुरु है। मैंने अपना पत्र साप्ताहिक सीमा सन्देश 10-10-51 से प्रारम्भ किया था। इसे मैं अपने जीवन की एक उपलब्धि ही समझता हूँ। (8-1-81)

जीवन मे अनेक विषम एव जटिल परिस्थितियाँ आती है। सयमपूवक काम करना ही उचित रहता है। (5-9-81)

आज पुन यह सकल्प लिया कि प्रात उठकर पत्र के काय में सक्रिय हो जाऊ। न मालूम कितना लम्बा जीवन व्यतीत करना है। सन्तान योग्य, निष्ठावान एव ज्ञानवान होते हुए भी दो पीढियो का अन्तर तो समाना तर रेखाओ की भाँति बना ही रहता है जो स्वाभाविक है।

सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक एव नैतिक रूप से भी विचार भेद स्थिति भेद एव स्वभाव भेद के कारण सामजस्य स्थापित करने मे काफी श्रम करना पडता है। सहनशील बनना पडता है, अन्यथा परिणाम अनुकूल होना सम्भव नहीं है। (9-12-82)

गणतन्त्र दिवस समारोहों मे उत्साह, उमग या आस्था का अभाव था। सरकारी समारोह भी केवल औपचारिकता मात्र थे। जनता में उदासीनता थी। (26-1-83)

मैंने जीवन में कभी आराम नहीं पाया। मैं सघर्षरत ही रहा—परन्तु सफलता प्राप्त होने के उपरान्त भी—उसको सही रूप मैं अपनी शली मे ढाल न सका। (6-6-83)

आजकल सघष अधिक गतिशील होता जा रहा है। (14-6-83)

मैं कैसा व्यक्ति हू जिसका अपना कहा जाने वाला कोई नहीं है। यो मैं हजारो व्यक्तियो के व्यक्तिगत सम्पर्क मे आया। कोई समय था कि मेरी आवाज पर हजारो युवक सभी प्रकार का त्याग करने को तत्पर रहते थे। (13-7-83)

मैं अब तक अपने को समझने मे असफल रहा हू। जीवन जटिलता पूर्ण स्थिति से गुजरा है। 50 हजार व्यक्तियो के निजी सम्पर्क से यह ज्ञात हुआ कि ससार विचित्र है। (2-8-83)

मेरे पत्र के इस प्रकार चलने मे आशका है। (6-8-83)

मैंने जीवन को कभी गम्भीरता से नहीं लिया। आज की राजनीति को देखते ऐसा लगता है कि आज से 30-40 वर्ष पूर्व राजनीति का उद्देश्य जहाँ जनसाधारण के हितो की रक्षार्थ त्याग करना था वहा आज व्यक्ति ही समाज के हितो का दोहन करना चाहता है। (8-8-83)

गत दिनो से जिलाधीश महोदय मेरे से अप्रसन्न है। जब वे प्रसन्न थे तब क्या लाभ था मुझे ? (9-8-83)

जीवन क्या है इसका भेद तो ऋषि मुनि नहीं जान पाये। आज समाज की स्थिति राजनीति ने दूषित कर रखी है। पर्यावरण की चर्चा जोरो पर है। पर हम परस्पर कितना विषवमन करते हैं—इस पर नियन्त्रण नहीं है। (1-9-83)

मैं जानता हू कि मेरे पास कोई विशेष सम्पत्ति नहीं है। नगद तो न बैंक मे हैं और न कहीं किसी व्यक्ति के पास ही है। एक मात्र स्थान 81 एल ब्लाक है जो अल्प आय योजना मे मेरे स्वर्गीय मित्र आर० के० चतुर्वेदी जिलाधीश के आग्रह पर बनवाया था। इस निर्माण काल मे श्रीधर के 7-8 हजार रुपये लगे हैं। (12-9-83)

सन 1945 से 1953 तक मैं राजनीति मे सक्रिय रहा। 1951 से पत्र प्रकाशन किया। 1957 मे प्रेस प्राप्त हुआ। ये दिन जीवन के स्वर्णिम दिन कहे जा सकते है। (16-12-83)

मैं तो कष्ट को अभिशाप नहीं, अपितु वरदान मानता हू। (18-4-84)

मेरे को मेरे पिता से विरासत मिली है। मेरे पिता को भी उनके पिता से विरासत मिली थी।

स्वभाव दोष के कारण या अल्पज्ञान के कारण या अल्प शिक्षा के कारण या तुलनात्मक अध्ययन न होने के कारण—आदर्शों तक पहुच नहीं पाया। (28-4-85)

मेरा जीवन सदा अस्त व्यस्त रहा, क्योकि मैंने कभी नियमितता पूर्वक कार्य नहीं किया। स्वय के दोषो को न देखकर दूसरे के न्यूनतम अवगुण को बढा-चढा कर समझा जिसका फल भुगत रहा हू। मुझ मे सहन शक्ति कम है। (15-5-85)

गरीबी स्वाभिमान नहीं रहने देती। मै आर्थिक सकट से पूर्णत घिरा हुआ हू।
(25 व 27-5-85)

मैं आम नागरिक की भाति स्वय को ढालने में अक्षम हूँ। मेरा कोई सिद्धान्त है। यद्यपि मैं पूर्ण रूप से सिद्धान्त को नहीं निभा पाया किन्तु उसका मुझे घोर पश्चात्ताप है। (29-7-85)

मैं जो कि न शिक्षित हू, न योग्य हू, न परिश्रमी हू फिर भी समाज में मेरा स्थान है क्या यह कम उपलब्धि नहीं है? यह भिन्न है कि मैंने विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं की। पुस्तकालयों द्वारा सालों अध्ययन किया। अध्ययन ही नहीं उसकी कार्यान्विति भी। सिद्धान्त पर अडिग रहा। चाहे अब थक गया हू, ऊब गया हू। (3-8-85)

आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय होती जा रही है पत्र के सम्बन्ध मे केन्द्र की नीति समझ मे नहीं आ रही है। (25-8-85)

ऐसा प्रतीत होता है कि शासनतन्त्र कुशलता एव योग्यता रखता ही नहीं। इन्दिरा गांधी की मृत्यु के बाद शासन पर विश्वास करना—धोखा खाना ही है। (5-9-85)

मैं तो जीवन में असन्तोष लेकर उत्पन्न हुआ हू, और असन्तोष के साथ ही मरना चाहता हू। जीवन मे कोई सार नहीं। न चाहते हुए भी जी रहे हैं। मानवता का क्षण प्रतिक्षण ह्रास होता जा रहा है। (6-9-85)

यह ठीक है कि पुरानी-पुरानी परम्पराओं, जो समाज में रूढ़ि का रूप धारण कर गई हैं उनको तोड़ना या सुधरे रूप में लाने के लिए समाज का विरोध सहन करना पड़ता है। मैं अपने जीवन में ऐसा न्याय सगत, उचित और समाज के हित मे मानकर चलता हू।

आज गांधी जयन्ती है। सरकारी अवकाश है। बालकों को पाठशाला मे बुलाकर केवल प्रचार या समारोह करना हो उनके प्रति श्रद्धांजलि देना रह गया है। कांग्रेस (आई०) के शासक दल एव सगठन—उनकी समाधि पर पुष्प चढ़ाकर इतिश्री समझ लेते हैं। कई प्रान्तों मे हरिजनों को सुविधा की घोषणा कर देते हैं। (2 10-85)

मैं ऐसा अनुभव करता हू कि मैं व्यावहारिक कम हू और अपने विचारों और अपनी धुन को सर्वोपरि महत्व देता आया हू। आज अधिकांश व्यक्ति पाखंडी, स्वार्थान्ध एव इन्द्रिय लोलुप हो गये हैं। प्रजातन्त्र शासन प्रणाली मे ऐसा होना स्वाभाविक है। (31-10-85)

कार्य स्वय करना चाहिए। मन को सन्तोष होता है। मैंने लिखने, भ्रमण करने एव कार्य मे रूचि न लेकर भारी क्षति उठाई है। सक्रियता से आनन्द भी प्राप्त होता है और आर्थिक लाभ भी। (3-11-85)

जीवन मे अनेक सकट आये उनका मुकाबला किया। मैं सदैव सघर्ष मे जुटा रहा। मुझे आज तक कोई मित्र नहीं मिला। या, यू कहू कि मैं सही व्यक्ति को पहचानने मे असफल रहा। सिद्धान्तवाद का मार्ग कठिन है। (20-10-85)

अतीत का स्मरण कितना सुखद एव मोहक होता है। जीवन में अनेक उतार चढ़ाव देखे मगर मैं स्वय को बदलने मे असमर्थ रहा। (4-12-85)

म न तो पूर्ण आस्थावान, अध श्रद्धालु हू और न नास्तिक ही हू। जीवन मे भौतिकवाद का अतिरेक अभिवद्धि पर हैं। अध्यात्मवाद से स तुलन स्थापित हो सकता है। मानव जीवन मे सात्विक गुण श्रेष्ठ हैं। राजसी व तामसी प्रवृत्ति भी जीवन मे आवश्यक वत्ति हैं। (8-12-85)

मेरे पिताजी दो बातें प्रमुखता से कहा करते थे। दूसरे का खाकर प्रसन्न नहीं होना चाहिए अपितु खिलाकर (दान करके) प्रसन्न होना चाहिए। उनका यह भी कहना था कि गुणग्राही होना चाहिए न कि छिद्रा वेषी। छाज बनो छलनी नहीं। (9-12-85)

बचपन मे पिता से बागी बना। वे मुझे धार्मिक विचारा का नागरिक बनाना चाहते थे। म साम्यवादी साहित्य पढकर नास्तिक बनता गया।

जीवन मे सरलता लाना आवश्यक है। जनसम्पक भी जीवित रहने हेतु अनिवाय सा है। (1-3-86)

म कई बार यह सोचता हू कि मृत्यु से प्राणी इतना भयभीत रहता है कि उसका काल्पनिक चित्र अत्यन्त भयावह बना रखा है। (13-3-86)

म कई बार गम्भीरता से विचार करता हू कि मानव को यदि जीवित रहने का अधिकार है तो स्वेच्छा से मरने का अधिकार क्यों नहीं है ?

सभी धम मानवता को प्राथमिकता देने का सिद्धान्त प्रतिपादित करते हैं। शिक्षा का इतना अभाव है कि हम एक दूसरे को समझने का प्रयत्न तक नहीं करते। (29-3-86)

आज भारत में प्रमुख एव ज्वलत समस्या पजाब के आतकवाद की है। पाक, अमेरिका एव रूस की नीति पर गम्भीरता से सोचने पर अनेक विवाद सामने आते हैं। (30-3-86)

म आज तक विरोधाभास मे जीवित हू। आदश का पालन करते हुए युगकालीन व्यावहारिकता को व्यक्ति अपना नहीं सकता। जब वह व्यावहारिकता ग्रहण कर पाता है तभी स्वाभाविक रूप से आदश का प्रतिपादन सम्भव हो जाता है। (3-4-86)

प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत स्वत त्रता तो है किन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपने विचार दूसरे पर लादने का प्रयत्न करता है। दोनों पूण निष्पक्ष होकर आचरण नहीं करते। (17-4-86)

जीवन नीरस होता जा रहा है। कोई ध्येय नहीं न कोई आकर्षण है। मानव इतना बदल गया है जिसमे न कोई आदश रहा न मर्यादा रही और न ही नतिकता। अन्त मे इसका क्या परिणाम होगा ? विचारणीय प्रश्न है। (5-5-86)

म आजकल जीवन के भार से उकता गया हू। (6-5-86)

म पूण स्वतन्त्रता मे विश्वास रखते हुए भी आचरण में इसे बाधा मानता हू। सामाजिक धार्मिक एव राजनीतिक परम्पराएँ उक्त काय मे बाधक है। (17-8-86)

आज देश के प्रत्येक वर्ग में लूटने का कार्यक्रम सर्वोपरि है। कौन सफल होता है? जो समाज को अधिक धोखा दे सके। (18-8-86)

आज यह निर्णय लिया गया है कि नगर किरायेदार यूनियन का पुनर्गठन किया जाए। दूसरे बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ का इतिहास, संस्मरण लिखे जायें। (22-8-86)

कल जो घटना राजघाट दिल्ली में घटी प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी पर गोली चली। आज रिबेरो महानिदेशक पुलिस के साथ प्रातः गोली बारी हुई। क्या यह दण्ड प्रबंध का मजाक नहीं? सत्तारूढ़ पार्टी लुजपुज हो गई है। किन्तु विपक्षी दलों में भी क्या नैतिकता साहस विवेक एवं दूरदर्शिता का अभाव नहीं है? यह सब व्यक्तिगत स्वार्थों के वशीभूत ही तो हो रहा है। (3-10-86)

काम जो वे चाहते हुए भी न कर पाये

श्री कमलनयन में काम करने की अथक शक्ति थी और जीवन भर वे सक्रिय होकर किसी न किसी काम में सदा जुटे रहते थे। मगर इसके बावजूद वे जीवन में अनेक काम न कर पाये जो वे दिल से करना चाहते थे। उनमें से कुछ मुख्य थे —

1 उनकी सबसे बड़ी इच्छा बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ का इतिहास लिखने की थी जिसके लिए उन्होंने अखबार, इश्तिहार आदि संभाल कर रखे हुए थे क्योंकि यह संग्राम उन्होंने स्वयं लड़ा था।

2 समाजवादी विचार धारा व समाजवादी कार्यकर्ता होने के नाते वे जिले में समाजवादी आन्दोलन का इतिहास भी लिखने के इच्छुक थे।

3 राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्र के समाचारों को राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचने के लिए वे एक समाचार समिति बनाना चाहते थे। राजस्थान सीमान्त समाचार समिति का गठन उन्होंने इस उद्देश्य को लेकर किया भी था मगर साधनों के अभाव में वे उसे आगे न बढ़ा सके।

4 इस क्षेत्र में नवोदित लेखकों को बढ़ावा देने के लिए वे एक प्रकाशन संस्थान खोलने की इच्छा भी रखते थे। इसकी पूर्ति के लिए उन्होंने प्रेरणा प्रकाशन गृह के नाम से एक संस्था भी बनाई मगर अखबार के बोझ के काम के कारण यह काम आगे न बढ़ पाया।

5 जिले में पंजाबी भाषी पाठकों की संख्या देखते हुए वे सीमा संदेश का गुरमुखी भाषा में संस्करण निकालना चाहते थे। ऐसी घोषणा उन्होंने अपने समाचार पत्र में गुरमुखी लिपी में प्रकाशित भी करवाई थी। इस घोषणा के अनुरूप एक ही अंक तो निकले मगर इससे आगे नहीं।

6 किरायेदारों की दुर्दशा तथा अपने स्वयं के अनुभव के कारण वे किरायेदारों को संगठित कर उनकी मजबूत यूनियन बनाना चाहते थे। और कुछ समय तक उन्होंने ऐसी यूनियन चलाई भी। मगर वह वैसा स्वरूप न पा सकी जैसा वे चाहते थे।

सघर्ष के सेनानी

●

स्व० कमलनयन शर्मा अपने जीवनकाल मे ही कर्मचारी सघर्ष की इस गौरव-गाथा को कलमबद्ध करके अगली पीढी के लिए छोड जाना चाहते थे। इसके लिए उन्होने अपने सघर्ष के साथियो को कई पत्र भी 15 जुलाई 1986 को लिखे थे।

उनकी इस अपूर्ण अभिलाषा को, जैसा सभव हो सका, पूरा करने का प्रयास यहाँ किया गया है।

श्री कमल नयन का व्यक्तित्व बहुमुखी था और वे कई गुणो के धनी थे। किन्तु विहगावलोकन पर उनके व्यक्तित्व के तीन रूप प्रमुखत दृष्टि मे आते हैं–कर्मचारी नेता पत्रकार और समाजवादी। सयोग यह नहीं था कि वे कमचारी बने किन्तु यह कि वे नेतृत्व के लिए आगे बढे। उनकी विचारधारा प्रारम्भ से समाजवादी रही और कमचारी-पद से बर्खास्तगी के बाद वे पत्रकार बने।

अतएव क्रमश उनका कर्मचारी-नेता रूप यहां सबसे पहले प्रस्तुत है।

सम्पादक

बीकानेर राज्य कर्मचारी सघ की स्थापना

दूसरे विश्व युद्ध के बाद पूरा विश्व गम्भीर आर्थिक सकट से गुजर रहा था। युद्ध के दौरान पूरी मानव शक्ति विध्वसक कार्यों के लिए झोंक दी गई, जिसके फलस्वरूप मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताओ के उत्पादन की भारी अनदेखी हुई खेतो व मिलो मे उत्पादन घटने से पट की क्षुधा शान्त करने वाले सभी खाद्य पदार्थों की ही नही तन ढकने वाले कपडे की भी भारी कमी हो गई। चीजो की कमी का स्वाभाविक परिणाम होता है महगाई, कालाबाजारी व राशनिग। ऐसी स्थिति मे सबसे बुरी तरह प्रभावित हुए वेतन भोगी छोटे कमचारी। 40 वर्ष पूर्व 25–30 रुपये की तनख्वाह मे पहले तो काम चल जाता था लेकिन विश्व युद्ध की महगाई ने उनकी कमर तोड कर रख दी। कमचारी अपनी तनख्वाह से राशन व कपडा खरीदें या बच्चा को पढायें। कमचारी समझ नही पा रहा था। महगाई उसे बेरहमी से रौंदे जा रही थी। ऐसी सूरत मे सीमित साधनो वाले कमचारी को एक मात्र माग यही सूझा कि वह सगठित होकर अपने कष्ट राज्य के मुखिया–महाराज की सरकार के सामने रखे। मगर उस निरकुश शासन काल म ऐसा कदम उठाना

किसी राजद्रोह से कम नही माना जाता था। कर्मचारी महगाई व आतक के दो पाटो के बीच असमजस की स्थिति मे फस थे। ऐसी विषम सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियो म कर्मचारी सघ बनाना जसे असम्भव काय को सम्भव कर दिखाया उस समय क नौजवान कमचारियो न जिनका नतत्व करने वालो मे श्री कमल नयन शर्मा भी शामिल थे।

बीकानेर राज्य कमचारी सघ की स्थापना गगानगर मे 29 जून, 1946 को हुई। इस हेतु कमचारियो की एक बैठक पचायती धमशाला मे स्थित नवयुवक सार्वजनिक पुस्तकालय के प्रागण मे सम्पन्न हुई जिसमे श्री कबूलसिह सघ क प्रधान श्री कमल नयन शर्मा प्रधान मन्त्री व श्री फूलचन्द मन्त्री बनाये गये। इस बठक म जो व्यक्ति शामिल हुए उनम सवश्री मुन्शी लाल बजाज, मुलख राज राम प्रताप माली दौलत राम मनी राम व शिव दत्त शर्मा भी थे।

सघ के गठन के बाद इसका सबसे महत्त्वपूण काय था पूरी बीकानेर रियासत म इसकी शाखाए स्थापित करना। सघ का उद्देश्य था श्री जी साहब बहादुर की छत्र छाया मे रहकर अपने कत्तव्य को पूरा करते हुए तथा अफसरो की उचित आज्ञा का पालन करते हुए वेतन और महगाई की सविनय माग पेश करना। सघ की सदस्यता प्राप्ति के लिए पाच प्रवेश नियम बनाये गये। इसके अनुसार बीकानेर राज्य का कोई कमचारी जिसकी सघ मे श्रद्धा और आस्था हो इसका सदस्य बन सकता था। मासिक सदस्यता शुल्क मात्र एक आना था।

सकट के समय सघ न सदस्य कमचारियो के हितो की रक्षा का वादा किया था और सदस्यो से भी सघ ऐसी ही अपेक्षा करता था। सघ की मुख्य मागें थी—राशन मे दिये जाने वाले दो छटाक गेहू की मात्रा बढाई जाये। हिन्द सरकार के पे कमीशन के अनुसार वतन दिया जाये, कमचारियो के लिए राशन की अलग व्यवस्था हो दफ्तर का समय 10 स 5 के स्थान पर 10 स 4 हो देशी-परदेशी भेद भावना को खत्म किया जाये, आदि।

मगर तत्कालीन शासको को ऐसी नरम रीति वाले सगठन को भी सहन करने की हिम्मत नही थी। वह कमचारियो की इन गतिविधियो पर पूरी नजर रखे हुए थे तथा गुप्तचर सूचनाओ के आधार पर कमचारियो के उद्देश्यो को असफल करने की तरकीबें ढूढने मे लगे थे। सघ की गतिविधियो का आगे बढान और उसका विस्तार करन के उद्देश्य स सघ के अनेक कमठ कायकर्ता गगानगर जिले की तहसीलो को गये। वे कमचारियो को अपन यहा बीकानर राज्य कमचारी सघ की स्थापना के लिए प्रोत्साहित करते ताकि कमचारियो के सगठन के माध्यम से एक शक्ति बनायी जा सके। ऐसा ही एक प्रयास गगानगर के रेवेन्यू कमिश्नर आफिस के रिकार्ड कीपर श्री दौलत राम ने किया। श्री दौलत राम 13 अगस्त 1946 का प्रात 10 बजे रेलगाडी से अनूपगढ गया। वहा उसने तहसील व दूसरे विभागो क क्लर्कों तथा स्टाफ की मीटिंग गर्ल्स स्कूल भवन म कराई और सघ के सदस्यता फाम वितरित किए। श्री दौलत राम न अपने भाषण म कमचारियो को बताया कि गिरती आर्थिक दशा क कारण वे अल्प वेतन म अपने बच्चो का पेट नही भर पा रहे थे। यह स्थिति जारी रही ना भविष्य म और भी गम्भीर कठिनाइया होगी। इस स्थिति को महाराजा के सम्मुख रखा जाना चाहिए। श्री दौलत राम ने बताया कि गगानगर मे क्लर्कों की

यूनियन स्थापित हो चुकी है। उन्होंने अनूपगढ मे भी यूनियन की शाखा स्थापित करने की पुरजोर अपील की। मगर राजशाही के उस जमाने मे कमचारी यूनियन के मामले मे इतने भयभीत थे कि मीटिंग मे भाग लेने वालो ने इस बारे मे बाद म विस्तार मे विचार कर इस पर मानस बनाने का निणय लिया। कमचारी असमजस मे थे कि वे अपने अधिकारियो की नजरो मे भी न गिरें और वेतन वृद्धि का लाभ यदि यूनियन से मिलता है ता उससे भी महरूम न रह। श्री दौलत राम उसी दिन शाम 4 बजे की गाडी से वापस गगानगर आ गये मगर उनकी गतिविधि की सारी खबर तहसीलदार ने बीकानेर मे उच्च अधिकारियो के माध्यम से महाराजा तक पहुँचा दी।

सघ मे अधिक से अधिक कमचारी लाने के उद्देश्य से बीकानेर राज्य कमचारी सघ श्री गगानगर के मन्त्री द्वारा कमचारिया के नाम से एक अपील जारी की गई जिसमे कहा गया था "एक होकर अन्नदाता के सम्मुख पुकार करें कि वे वेतन, भत्ता व महगाई एलाउस बढाकर इस घोर विपदा से हमे व हमारे बच्चो को बचा लें। इसमे कमचारियो से कहा गया कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सघ की स्थापना गगानगर मे की गई है। इसम ज्यादा से ज्यादा लाग शामिल हो और अपने यहा उसकी शाखाए स्थापित करें। यह अपील इश्तहार के रूप मे शकर प्रिंटिंग प्रेस श्री गगानगर मे छपी।

बाद मे बीकानेर मे भी इस सघ की स्थापना हुई जिसकी प्रथम बठक 8 सितम्बर 1946 को सराफा के बाजार के पास रघुनाथ मन्दिर मे हुई। इसमे काफी सख्या मे कमचारी एकत्रित हुये और इस सभा मे बताया गया कि अब तक की सदस्य सख्या करीब 350 पहुँच चुकी ह। इस सभा को सम्बोधित करते हुये श्री कमल नयन ने कमचारियो को सूचित किया कि तनख्वाह बढाने के लिए क्लर्कों की यूनियन गगानगर मे स्थापित हो चुकी है। छोटे कमचारियो की तनख्वाह बढाने के बारे मे सरकार से काफी समय तक लिखा पढी की अफसरो के सामने अपना रोना रोया मगर कोई सुनवाई नही हुई अत कमचारिया की यूनियन बनाकर ये मागें रखने का कदम उठाया गया। पेट की भूख के लिए लडना किसी भी तरह से गर कानूनी नही। श्री कमल नयन ने माग की कि चपरासी व चौकीदार की तनख्वाह कम से कम तीस रुपये व 20 या 30 रु महगाई भत्ता तथा क्लर्कों की कम से कम 50 रुपये व 20 या 30 रुपये महगाई भत्ता मिले।

श्री प्रेम रतन आचाय न कहा कि अपने पेट के लिए लडने की हिम्मत नौजवानो म ही है। हम सरकार के खिलाफ नही अपने हक के लिए लड रहे हैं। मीटिंग की अध्यक्षता आडीटर जनरल कार्यालय बीकानेर के क्लक श्री देवी प्रसाद ने की जा जाने माने जन नेता प जयनारायण व्यास के दामाद थे। उन्होंने सघ के अधिक से अधिक सदस्य बनाने पर जोर दिया। यह मीटिंग शाम 5 बजे आरम्भ होकर रात 8 बजे तक निरन्तर चली। अगली मीटिंग 14 सितम्बर 1946 को बुलाने का निणय लिया गया जिसमे सदस्यता पर निणय लिया जाना तय हुआ।

सरकार का खुफिया विभाग निरन्तर कमचारियो की गतिविधियो पर नजर रखे हुआ था। गृह मन्त्रालय को भेजी गई एक ऐसी रिपोट मे कहा गया कि श्री देवी प्रसाद तथा श्री रामेश्वर ब्राह्मण (क्लक प्रधानमन्त्री कार्यालय) सभी महकमो मे घूम घूमकर कमचारियो का "बरगलाते हैं। बहुत से क्लक इसमे (सघ) शामिल हो रहे हैं। इस रिपोट मे सरकार को पूरी तरह सावधान

मीटिंग-यूनियन के बारे में सी आई डी की रिपोर्ट

कमलनयन स्वेयू मुंशी श्री गंगानगर ने कहा कि हमने गंगानगर में क्लर्क यूनियन का गठन किया है जिसका उद्देश्य यह है कि हम तनख्वाह बहुत कम मिलती है। इसके लिए पहले हमने काफी लिखा पढ़ी की पर कोई भी जवाब नहीं मिला। सन् 1913 में जो तनख्वाह थी अभी तक छोटे मुलाजमानों की वही तनख्वाहें हैं। बड़े-बड़े अहलकारों को अच्छी तरक्की मिल जाती है। वे लोग तो कुछ भी हमारे लिए नहीं करते। इतने दिनों तक तो हम चुप बैठे हुए थे क्योंकि लड़ाई के जमाने में हमारे श्री जी सा बहादुर में बहुत ज्यादा काम थे। अब आपको आराम मिला है। काम में किसी को नहीं सताना चाहिए। हमने लिखा पढ़ी भी की लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। परन्तु एक कौंसिल का हुक्म रेवेन्यु कमिश्नर साहब गंगानगर के पास पहुंचा उसमें था कि कन्डक्ट रूल से तुम यूनियन नहीं बना सकते। इस पर हमने कहा कि कन्डक्ट रूल पर किसी के भी हस्ताक्षर नहीं हैं और जबकि हमारे श्री जी सा बहादुर ने नागरिक अधिकार दे रखे हैं तो उस लिहाज से हम इकट्ठे भी हो सकते हैं और सभा सोसाइटी भी अटेन्ड कर सकते हैं। क्योंकि वह संस्था किसी राजनैतिक संस्था में शामिल नहीं है। न हम राज्य के खिलाफ कोई प्रोपेगेन्डा करते हैं। हमें तो श्री जी सा बहादुर दाम इकबाल हु की छत्रछाया में रहकर अपने पेट के लिए लड़ते हैं। सो कौन ऐसा शख्स होगा जो अपने पेट के लिए कुछ भी न करें। हमारे दौलतराम जो अनूपगढ़, करणपुर, रायसिंहनगर गये और वहां पर मैम्बर भी काफी बनाये, वापसी गंगानगर आने पर उनसे जवाब तलब किया गया कि तुम वहां क्या गये। उन्होंने कहा कि पेट की लड़ाई लड़ने। इस पर इनको मोत्तिल कर दिया गया। लेकिन हम सबको एका रखना है। ये अभी ऐसे

करते हुये कहा गया था यह यूनियन सब जोर पकड़ जाने पर एक दिन महकमा में स्ट्राइक की नौबत लायेगा।" इन क्लर्कों के साथ उचित कार्यवाही कराई जावे।

बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ की जनरल मीटिंग 16 सितम्बर, 1946 को बीकानेर के रघुनाथ जी मन्दिर के नोहरे में सम्पन्न हुई जिसमें उपस्थिति 250–300 के करीब थी। इस मीटिंग की विशेषता यह थी कि इसकी अध्यक्षता किसी व्यक्ति ने नहीं की वरन् अध्यक्ष के स्थान पर एक कुर्सी पर महाराजाधिराज की फोटो रखकर यह सभा हुई। इस सभा में गत 8 सितम्बर की मीटिंग की कार्यवाही को स्वीकृति प्रदान कर वेतनमानों व महंगाई भत्ता दर बढ़ाने की मांगों को दोहराया गया। अनेक वक्ताओं ने यह विचार रखा कि काम सुचारु रूप से चलाने के लिए पहले

ही दफ्तर आते है और काम करते है। इतना ही नही इनको काफी धमकाया भी गया। हमने साफ कह दिया कि आप भी रेवेन्यू कमिश्नर गगानगर है, आप हमारे लिए क्या नही लिखा पढी करते, जिस तरह म रेल्वे मैनेजर ने की थी? वो मजदूर है उनकी अच्छी तनख्वाह हो गई तो हम तो अहलकार है क्या उनकी तरह हमार बच्चे नही है? क्या हम अपने बच्चो को पैदा नही सकते? क्या कपडा पहना नही सकते है? क्या खा सकते है इस तनख्वाह से? इस पर इन्होने हमारे से कहा कि मैं तुम्हारे लिए लिखगा। साथ-साथ म इनको यह भी कहा कि चपरासी और चौकीदार की कम स कम ३०) रु० माहवार और २०) रु० या ३०) रु० महगाई भत्ता होनी चाहिए और अहलकार ५०) रु० या और २०) रु० या ३०) रु० महगाई कम से कम और जिसकी ५०) रु० से उपर तनख्वाह है उनको 40 प्रतिशत और बढाना चाहिए। साइकिल अलाऊन्स, घोडे व ऊटो का भी अलाउन्स और बढाना चाहिए। मौजूदा अलाऊन्स म बिल्कुल काम नही चलता। तारीख 13-8 46 को पडित दीक्षित जी सी आई डी इन्सपेक्टर मिले थे। उन्होने मेरे से पूछा कि भाई फाम हमे भी दो। हम भी शायद तुम्हारी यूनियन के चार हजार आदमी मैम्बर बन जायें अगर हमारी तनख्वाह न बढी तो। इस पर मैंने फाम दे दिये। इन्होने आई०जी०पी० सा दे दिये और साहब मौसूफ ने श्री जी सा बहादुर के पेश कर दिए। इस पर इनकी तनख्वाह बढ गई। अब ये क्या बोलने लगे और क्या मदद देने लगे?

[हैड कान्स्टेबिल (सी आई डी) मूलचन्द की उस रिपोट की प्रति लिपि जो कमलनयनजी के भाषण के बार मे सी आई डी इन्सपेक्टर लालगढ पलेस को 8-9 46 को भेजी गई। यह भाषण रघुनाथ मन्दिर बीकानेर म बीकानेर राज्य कमचारी सघ की स्थापना के उद्देश्य से बुलायी गयी सभा म दिया गया था।]

सघ को सरकार से मान्यता दिलाई जावे। मगर ओडिटर जनरल कार्यालय के टाईपिस्ट श्री देवी प्रसाद ने इस बारे मे खुलासा बयान करते हुए कहा कि महाराजाधिराज की नवीनतम अधिघोषणा (प्रोक्लेमेशन) (आईटम न 17) के तहत तथा सिविल लिबर्टी एक्ट के तहत इसकी जरूरत नही है।

इस सभा मे उपस्थित लोगो मे स कायकारिणी मे 41 सदस्यो को मनोनीत किया गया जिसमे हर महकमे मे दो सदस्य लिए गए। पुलिस विभाग के प्रतिनिधि के रूप मे एस आई श्री रेवती रमण (सी आई डी) चुने गये जो सभा स्थल पर मौजूद थे। सघ की कायकारिणी मे पुलिस का प्रतिनिधित्व एक उल्लेखनीय घटना मानी जानी चाहिए क्योकि आज भी पुलिस कमचारी सघो मे शामिल नही हैं। इस सम्बन्ध मे श्री रेवती रमण को सभा म उपस्थिति को तो सरकारी

गुप्तचर रिपोर्ट में कबूल किया गया साथ ही यह टिप्पणी भी दी गई कि रेवती रमण का चयन उसकी सहमति बिना ही किया गया और यह कि वह उस समय पुलिस का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा था।

(इस्पैक्टर जनरल ऑफ पुलिस की गृह मन्त्रालय को रिपोर्ट-दिनांक 17-9-46 आर आर 2860 सी दिनांक 18-9-46, 1807/1975/एस बी/18-9-46)

कार्यकारिणी सदस्यों की सूची

बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ की कार्यकारिणी के सदस्यों की सूची (17-9-46)

1	श्री कमल नयन शर्मा	आर सी जी ऑफिस
2	श्री हरि शरण	टाईपिस्ट हाई कोर्ट
3	श्री देवी प्रसाद आचार्य	टाईपिस्ट जनरल आडिट ऑफिस
4	श्री प्यारे लाल	द्वितीय क्लर्क, प्रधान मन्त्री कार्यालय
5	श्री रमेश शर्मा	अहलमद प्रधान मन्त्री कार्यालय
6	श्री बोधराज	हैड क्लर्क, जनरल आडिट ऑफिस
7	श्री राम लाल	कार्यकारी पी ए, आर सी सदर
8	श्री लोलेश्वर गोस्वामी	क्लर्क डी सी एस ऑफिस
9	श्री के वी आचार्य	पी ए, एम ई एच
10	श्री प्रेम रतन	टाईपिस्ट एम ई एच
11	श्री गौरी शंकर गोस्वामी	द्वितीय क्लर्क, पी डब्ल्यू एच कार्यालय
12	श्री राजेन्द्र प्रसाद गोस्वामी	हैड क्लर्क, एच एम आफिस
13	श्री बृज गोपाल गोस्वामी	द्वितीय क्लर्क, आर आर मिनिस्टर ऑफिस
14	श्री चम्पा लाल पुरोहित	क्लर्क मास्टर सेरेमनी
15	श्री मोती लाल पुरोहित	हैड क्लर्क, लेजिसलेटिव एसेम्बली
16	श्री शिव कुमार व्यास	सेक्रेटरी वार सोल्जर बोर्ड
17	श्री गिरधारी लाल	एफ एम आफिस
18	श्री गोकुल चन्द	क्लर्क आर्मी हैड क्वाटर
19	श्री शुभ राज	क्लर्क, ए जी ऑफिस
20	श्री एम अख्तर अली	क्लर्क, ए जी ऑफिस

21	श्री श्रीराम	इसपेक्टर स्कूल
22	श्री खाते खां	डिप्टी सुप्रिटेंडेंट कस्टम्स विभाग
23	श्री राम कुमार	हैड क्लर्क, कस्टम्स विभाग
24	श्री अखय राज	क्लर्क पी डब्ल्यू डी
25	श्री ईश्वर दास स्वामी	क्लर्क, पी डब्ल्यू डी
26	श्री शफी अहमद	अहलमद हाई कोट
27	श्री गौरी शकर	पेशकार हाई कोट
28	श्री रेवती रमण	सब ईसपेक्टर पुलिस
29	श्री देव दमन	हैड क्लर्क राशनिग ऑफिस
30	श्री राजे लाल	हैड क्लर्क जनरल रिकाड ऑफिस
31	श्री सूरज करण	पेरोकार राज, आर सी,
32	श्री लाल चद	हैड क्लर्क गाड ऑफिस
33	श्री प्रताप नारायण	क्लर्क, आर एम ऑफिस
34	श्री भीखम राम	पेरोकार, जनरल सैक्रेटरी ऑफिस
35	श्री राम सिंह	क्लर्क पी एम ओ ऑफिस
36	श्री राम सहाय	क्लर्क कट्रोलर हाउस होल्ड ऑफिस
37	श्री निवास	क्लर्क म्यूनिसिपल बोड
38	श्री भवर लाल	क्लर्क देवस्थान
39	श्री त्रिवेनी प्रसाद	क्लर्क, कट्रोलर ऑफिस
40	श्री बद्री प्रसाद	जनरल रिकाड ऑफिस
41	श्री ओम प्रकाश	आर एम ऑफिस

कमचारी सघ की गतिविधियों में बढ़ चढ कर हिस्सा लेने के आरोप मे जिन्हें 30 सितम्बर 1946 की सुबह सरकारी सेवा नियम के तहत नौकरी से निकाले जाने के आदेश 6363 दिनाक 27-9 46 द्वारा जारी हुए उनके नाम निम्न प्रकार हैं—

1 रमेश शर्मा
2 बोध राज
3 राम लाल
4 तोलेश्वर गोस्वामी
5 के बी आचाय
6 गौरी शकर गोस्वामी
7 राजेन्द्र गोस्वामी
8 बज गोपाल
9 शिव कुमार व्यास
10 चम्पालाल पुरोहित

11 गोकुल चन्द
12 शुभराज
13 श्रीराम
14 खाते खा
15 राम कवर
16 अखयराज
17 ईश्वर दास
18 हरि शरण
19 शफी अहमद
20 रेवती रमण
21 गौरी लाल
22 देव दमन
23 मोती लाल
24 राजे लाल
25 सूरज करण
26 लाल चन्द
27 भीष्म सिंह
28 राम सिंह
29 राम सहाय
30 शिम्भु दयाल
31 श्री निवास
32 जवाहर लाल
33 बद्री प्रसाद
34 मुरारी लाल
35 ओम प्रकाश
36 काबुल सिंह
37 फूल चन्द
38 दौलत राम
39 कमल नयन

बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ की इन बढ़ती हुई गतिविधियों को देखते हुए प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पनीकर ने 27 सितम्बर को यह अध्यादेश (नोटिफिकेशन) 72 जारी कर गवनमेंट सर्वेंट कण्डक्ट रूल के अनुसार No association of Government servants for the purposes of collection and representation of grievances or other similar action will be permitted इतना ही नहीं प्रधान मन्त्री ने राज्य सरकार का एक आदेश जारी कर गवनमेंट सर्वेंट कंडक्ट रूल के अन्तर्गत बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ की कार्यकारिणी के सभी सदस्यों को 30 सितम्बर से नौकरी से बरखास्त कर दिया। यूनियन को तोड़ने के लिए उन्होंने इस आदेश में यह भी जोड़ दिया कि यदि बर्खास्त होने वाले ये कर्मचारी यूनियन गतिविधियों में भाग लेने के लिए लिखित में क्षमा मांगें और यह वादा करें कि वे भविष्य में ऐसी गतिविधियों में भाग नहीं लेंगे तो उन्हें माफ किया जा सकता है। बर्खास्त होने वालों में श्री कमल नयन शर्मा सहित गंगानगर के 4 व बीकानेर से 35 कर्मचारी थे।

कर्मचारियों के बर्खास्त होने की खबर लेकर जब श्री कमल नयन शर्मा व श्री काबुल-सिंह बीकानेर से गंगानगर पहुँचे तो पुलिस विभाग को छोड़ कर बाकी सभी विभागों से 75 प्रतिशत कर्मचारी हड़ताल पर चले गये। हड़तालियों ने नारे लगाये "बर्खास्तशुदा लोग जिन्दाबाद' बेइंसाफी मुर्दाबाद बाद में पब्लिक पार्क में एक विशाल सभा हुई जिसकी अध्यक्षता सहकारिता विभाग के इन्सपेक्टर श्री सुखदयाल ने की। इस सभा में सर्व श्री कमल नयन शर्मा, काबुल सिंह प्रो चन्द्रधर राम धन देवी प्रसाद व नसीरुद्दीन ने संक्षिप्त भाषण देते हुये कहा कि यूनियन ने तो तनख्वाह बढ़ाने की मांग की थी मगर उन्होंने तो हमारे कुछ साथियों को बर्खास्त कर दिया। आशंका है कि 27 और कर्मचारी भी नौकरी से निकाले जावेंगे। ऐसे हालात में सबको दृढ़ रहना चाहिए और

अपनी मागें मनवाने के लिए अडे रहना चाहिए । जब तक सभा अध्यक्ष श्री सुख दयाल इजाजत नहीं देंगे कोई भी ड्यूटी पर वापस नही जावेगा ।

उधर रायसिंहनगर से भेजी गई एक सी० आई० डी० रिपोट के अनुसार 29 सितम्बर को ही कन्ट्रोल विभाग के क्लर्क श्री शिवराम ने कमचारियो की वर्खास्तगी का समाचार पूरी मण्डी मे फलाया जिसे सुनकर सभी कमचारी दफ्तर छोडकर हडताल पर आ गये । मगर सेटलमेन्ट विभाग के श्री रामेश्वर पटवारी ने परमिट वितरण का काम जारी रखा । उसकी इस हरकत पर हडताली कमचारी क्रुद्ध हो उठे और उनकी भीड ने पटवारी को जबरदस्ती वहा से हटा दिया ।

30 सितम्बर को तहसीलदार सूरतगढ ने भी राजस्व मन्त्री को तार भेज कर सूचित किया "निजामत, सटलमेन्ट मुन्सिफी रिकार्ड आफिस डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मे आज आशिक हडताल रही ।"

बीकानेर सरकार की 30-9 46 की रिपोट के मुताबिक 22 विभागो के कुल 814 कमचारियो मे से केवल 272 उपस्थित थे । 460 अनुपस्थित रहे 35 अवकाश पर थे । दो बर्खास्त थे व 45 स्थान रिक्त थे । यानी दो तिहाई से अधिक कमचारी काम पर नही थे । इन आकडो म महकमा खास शामिल नही है । पुलिस के दो गुमाश्ते भी अनुपस्थित थे । राज्य के अधिकाश स्कूलो के अध्यापको व विद्यार्थियो ने हडताल रखी । बीकानेर के महारानी सुदर्शना कालेज की प्राध्यापिकाएँ भी हडताल म शामिल हुई । मगर डूगर कॉलेज बीकानेर के प्राध्यापक ड्यूटी पर थे ।

अनेक कमचारियो की बर्खास्तगी व उनके समथन म कमचारी वग द्वारा पूण हडताल की विषम स्थिति मे बीकानेर राज्य कमचारी सघ की कायकारिणी की एक बैठक म 29 सितम्बर को दोपहर ढाई बजे श्री प्यारे लाल के निवास व उन्ही की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई । बठक मे उपस्थित 37 कायकारिणी सदस्यो को व्यक्तिगत रूप म सघ के प्रति वफादारी की शपथ लेनी थी जिसका कुछ साथियो ने विरोध किया । सब श्री बोधराज शुभराज व मुरारी लाल हडताल के पक्ष म नही थे । श्री आचाय न इस विचार को सघ द्रोही बताया । श्री बोधराज ने यह सुझाव भी दिया कि सघ की ओर से एक मिशन ऑफ गुडविल" (सद्भावना मण्डल) सरकार से बातचीत करने जावे मगर कमेटी ने इसे यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि अब ऐसी पहल सीधे सरकार की तरफ से होनी चाहिए।

श्री प्यारे लाल ने बठक को सूचित किया कि श्री रघुवर दयाल (प्रजा परिषद/कांग्रेस) ने उन्हे मिल कर आर्थिक सहायता का भरोसा दिलाया है मगर सभा में उपस्थित सभी कमचारियो ने उसे यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि वे किसी भी राजनीतिक दल से गठबन्धन नहीं रखेंगे । सहायता का ऐसा अन्य प्रस्ताव मुस्लिम लीग की ओर से भी आया था जिसे उसी आधार पर नामजूर कर दिया गया । श्री रघुवर दयाल ने बार एसोशियेशन की ओर से कमचारियो की हडताल के बारे मे महाराजा को पत्र भी लिखा, जिस पर किसी को क्या ऐतराज हो सकता था ?

इस बैठक में कर्मचारियों ने अपनी तनख्वाह व भत्ते की राशि बढ़ाने की माग के साथ ही बर्खास्त शुदा कमचारियों को पुन बहाल करने की माग भी जोडी । कमचारियों न यह भी माग की कि 'गवनमेन्ट सरवेन्ट कण्डक्ट रूल 32' को समाप्त कर "बीकानेर राज्य कमचारी सघ" को मान्यता प्रदान की जाये ।

बैठक मे यह बताया गया कि गगानगर से यह तार मिला है जिसम कमचारियों के साथ स्कूल व म्यूनिसिपलिटी द्वारा भी हडताल मे शामिल होने की पुष्टि की गई है । हडतालियों का यह निर्देश दिया गया कि कल की भाति वे आज भी (29-9-46) पब्लिक पार्क मे एकत्रित होंगे मगर शान्तिपूर्ण रहेंगे ।

श्री मोती लाल न बैठक म सूचना दी कि रेल कमचारियों न इस हडताल के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है मगर "टोकन स्ट्राईक" करने के मुद्दे पर वे अभी विचार करेंगे । बीकानेर बैंक कमचारी कल 30-6-46 को हडताली कमचारियों की सहानुभूति म हडताल रखेंगे, जिसम स्कूल व कॉलिज उनका साथ देंगे । बैठक म कायकारिणी सदस्यों को सलाह दी गई कि वे मौखिक या लिखित रूप म म्यूनिसपेलिटिज, बिजली विभाग व रेल्वे विभाग के कमचारियों से सम्पर्क बनाये रखें । जल वितरण न होने की आशका से नागरिकों म दहशत फल गई और इस डर के कारण कि कहीं बाद मे प्यासे न मरना पडे लोगों ने धडाधड पानी स्टॉक करना शुरू कर दिया ।

अगले दिन 30-9-46 का राज्य कमचारी सघ की जनरल मीटिंग पुराने रेल्वे स्टेज के परिसर म यूनियन अध्यक्ष श्री प्यारे लाल की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई । इसम उपस्थिति एक हजार से भी अधिक की थी । श्री मोती लाल व त्रिवेणी प्रसाद ने सक्षिप्त भाषण दिये । सभा मे वक्ताओं ने कहा कि उनका आन्दोलन अब तक शान्ति पूर्ण और राजनतिक व साम्प्रदायिक ताकतों स मुक्त रहा है और भविष्य मे भी इसका यही स्वरूप बनाये रखने का प्रयास किया जावेगा । कमचारी सदा सरकार क प्रति वफादार रहे है और अन्नदाता (महाराजा) के प्रति श्रद्धा व सम्मान दिखाते रहे हैं ।

इस सभा म कमचारियों की चार प्रमुख मागें रखी गई—

1 कमचारियों की यूनियन बीकानेर राज्य कमचारी 'सघ को मान्यता प्रदान की जाये ।
2 बर्खास्तशुदा कमचारियों का बिना दण्डित किये हुये नौकरी पर बहाल किया जाये ।
3 गवनमन्ट सर्वेंट कन्डक्ट रूल (सक्शन 32) को समाप्त किया जाये ।
4 हडताल के सम्बन्ध मे सरकार ने जो भी अध्यादेश (नोटिफिकेशन) जारी किये हो, उन्हें वापिस लिया जाये ।

कमचारी नेताओं ने इस सभा के अन्त म उन सभी सस्थाओं के प्रति आभार व कृतज्ञता व्यक्त की, जिन्होंने कमचारी आन्दोलन को अपना सहयोग व समर्थन दिया । इनमे शिक्षक (महिला शिक्षकों सहित) विद्यार्थियों, प्रजासेवक सघ, बार एसोसियेशन व म्यूनिसपलिटी शामिल थी ।

वीकानेर राज्य कमचारियो की ऐतिहासिक हडताल के दौरान
आन्दोलन के नेता साथी कमलनयन और साथी
सत्यपाल शर्मा का तूफानी दौरे पर रेल
से गगानगर आगमन और स्वागत
कनाओ की भीड।

समाजवाद की अलख जमाते हुए श्री कमलनयन

इस आन्दोलन की गर्मी के बीच राज्य सरकार ने कमचारियो को डराने व धमकाने के उद्देश्य से एक और हुकमनामा जारी कर यह आदेश दिया कि जिन कमचारियो ने काम नही किया उन्हे आगामी आदेशो तक सितम्बर 1946 माह का वेतन न दिया जाये। अल्प वेतन भोगी कमचारियो के लिए यह एक बडा आघात था।

30 सितम्बर की जनरल मीटिंग के बाद कायकारिणी की एक गुप्त बठक हुई जिसमे बताया गया कि सरकार न कमचारियो की मागों पर विचार करने के लिए न्यायिक मन्त्री श्री मुशरन को नियुक्त किया है। कमचारी नेताओ के बीच इस पर गर्मा-गरम बहस हुई और अन्त मे यह निणय लिया गया कि 7 व्यक्तियों का एक कमचारी प्रतिनिधि मण्डल श्री मुशरन से वार्ता करे। इस प्रतिनिधि मण्डल मे सवश्री प्यारे लाल, अख्तर अली शिव कुमार राजे लाल व 2 अन्य शामिल थे। इन्हे अगले दिन प्रात 10 बजे तक किसी निणय पर पहुँचने का अधिकार दिया गया। प्रतिनिधि मण्डल को यह स्पष्ट कह दिया गया कि कमचारी यूनियन बनाने का अधिकार हर हालत मे बनाये रखना है चाहे वह गैर सरकारी रूप से ही हो।

कमचारी नेताओ की यह मीटिंग यद्यपि गुप्त थी, मगर इन्स्पक्टर जनरल ऑफ पुलिस को गुप्तचरो से इस कायवाही की सूचना मिल गई जो उन्होंने 1 अक्टूबर 1946 के गुप्त पत्र मे सरकार को भेजी।

इस बीच नहरी क्षेत्र (गगानगर) से गडबडी से समाचार प्राप्त हुए। लगता है कि श्री कमल नयन शर्मा व उनके दूसर साथी नता कमचारी आन्दोलन को और तीव्र बनाना चाहते थे। मगर गडबडी बढने की आशका को देखते हुए स्थिति को नियन्त्रण म रखन के लिए श्री देवी प्रसाद को इस क्षेत्र मे भेजा गया और वातावरण शान्त हुआ।

कमचारियो की एकता व दढता को देखते हुए सरकार न समझौतावादी रुख अपनाया तथा प्रधानमन्त्री श्री के० एम० पन्नीकर न 2–10–46 को एक आदेश (सख्या 6463) जारी किया जिसके मुताबिक बीकानेर राज्य कमचारी सघ (जिसे भग किया जा चुका है) की कायकारिणी के जिन 39 सदस्यो की नोकरी के बर्खास्तगी के आदेश जो इस कार्यालय आदेश सख्या 63 3 दिनाक 27 सितम्बर 1946 को जारी हुए थे, को रद्द किया जाता है तथा इन व्यक्तियो को अब ड्यूटी सभालने की स्वीकृति प्रदान की जाती है उनकी अनुपस्थिति के काल को माफ (कन्डोन) कर दिया गया है। हडताल मे शामिल होने वाले कमचारियो की तनख्वाह न देने के आदेश भी निरस्त कर दिये गये।

इसके साथ ही कमचारियो के आन्दोलन का प्रथम चरण समाप्त हुआ। बाद मे कमचारियो को वेतन वृद्धि भी मिली जिसके फलस्वरूप सरकार पर लगभग आठ लाख रुपये सालाना का भार पडा। मगर इसकी सबसे बडी उपलब्धि कमचारियो को सगठित कर बीकानेर सघ की स्थापना करना था जिसने आगे चलकर एक विशाल आन्दोलन का सचालन किया।

कर्मचारी संघ का ऐतिहासिक आन्दोलन

कड़े संघर्ष के बाद जब कर्मचारी 'बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ' के तहत संगठित हो गये तो उनका अगला कदम था संघ के माध्यम से अपनी न्यायोचित मांगें रियासती सरकार से मनवाना जिन्हें वे 1946 के संघर्ष में पूर्णतः नहीं मनवा पाये थे।

1947 व 1948 के वर्षों में देश को आजादी मिलने, देश के विभाजन, साम्प्रदायिक दंगों, महात्मा गांधी की हत्या व देशी रियासतों के विलय की योजना को मूल रूप देने की ऐतिहासिक घटनाओं का चक्र इस तेजी से घूमा कि कर्मचारी आन्दोलन को आगे बढ़ने का अवसर ही नहीं मिला। 1948 के अन्तिम महीनों में ही कर्मचारी संघ की गतिविधियां सामने आना शुरू हुई। आन्दोलन की दृष्टि से यह बहुत गलत समय था क्योंकि देश स्वतन्त्र हो चुका था और रियासती सरकार का अस्तित्व समाप्ति पर था। नये प्रशासन के हाथ में अभी जिम्मेदारी सौंपी नहीं गई थी। इस अफरातफरी में कर्मचारियों की समस्याओं व आन्दोलन के लिए किसके पास समय था? क्योंकि कर्मचारी अपने आन्दोलन की रूप रेखा पहले ही तैयार कर चुके थे अतः आन्दोलन से पीछे हटने का अर्थ होता आन्दोलन का आरम्भ में ही विफल होना।

मांगें पूरी न होने पर राज-कर्मचारी हड़ताल करेंगे

नवम्बर 1948 के मध्य में गंगानगर में डिविजन भर के राज कर्मचारियों का एक विराट सम्मेलन हुआ जिसमें विभिन्न तहसीलों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ के अध्यक्ष श्री हरि शरणजी, बी. रा. रेल्वे कर्मचारी संघ के मंत्री श्री महेश प्रकाश जी, जयपुर राज्य कर्मचारी संघ के मन्त्री श्री चन्द्र शेखर जी ने भी भाग लिया। आर्य समाज हाल में प्रतिनिधि सभा हुई और रात्रि को गांधी वाटिका में सम्मेलन का खुला अधिवेशन श्री हरिशरण जी के सभापतित्व में हुआ। इस सम्मेलन में वेतन वृद्धि, अनाज और वस्त्र समस्या, पब्लिक सर्विस कमीशन की अव्यवस्था, दफ्तरों में समय की कमी करना, सैनिक शिक्षा, प्राईवेट प्रोविडेन्ट फंड, सीधी भर्ती और रियासत में पटवारियों की अवस्था के संबंध में महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत किये गये। बी. रा. रेल्वे कर्मचारी संघ के मन्त्री श्री महेश प्रकाश जी के सुझाव पर राज्य कर्मचारियों के तीनों संघों—राज्य-कर्मचारी संघ, रेल्वे कर्मचारी संघ और पावर हाउस यूनियन को मिलाकर एक फेडरेशन बनाने की योजना पर भी विचार हुआ। उपरोक्त प्रस्तावों पर एक महीने तक कुछ कार्यवाही न होने की अवस्था में श्री कमलनयन जी और श्री सत्यपाल जी ने भूख हड़ताल करने के निश्चय की घोषणा की। कर्मचारियों में बड़ा जोश दिखलाई देता था।

तत्कालीन समाचार पत्र 'साप्ताहिक युगारम्भ (सम्पादक जे. पारीवाल)' चूरू ने 8 सितम्बर 1948 के अंक में मुखपृष्ठ पर "भारी छटनी, कम वेतन तथा अन्य असुविधाओं का सामना करना हो तो कर्मचारियों का एक मजबूत संगठन बना लेना चाहिए" के शीर्षक से इस आन्दोलन के बारे में महत्वपूर्ण टिप्पणी की थी जिसके कुछ अंश नीचे अंकित किये जा रहे हैं

"इसमे कोई सशय नही कि जिस प्रकार की प्रगति यह गगानगर डिविजन मे कर रही है उससे इसके काफी उज्ज्वल भविष्य की आशा की जानी चाहिए किन्तु इधर सदर व चूरू आदि स्थानो मे तो इसकी शाखाए ही नही हैं और यदि सदर म है ता भी न होने के समान है । ऐसा प्रतीत होता है केन्द्र स्थित इसकी शाखा को तो लकवा मार गया है । गगानगर मे हाल ही मे हुई इनकी मिटिंग व उसमे किये गये उत्साहपूण काय को देखकर प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति को प्रशसा करनी पडती है । किन्तु इधर देखो, सदर व चूरू कमिश्नरी मे आये दिन कमचारियो के अधिकारो पर हमले होते हैं । उनकी नौकरी की कोई सुरक्षा नही । उनको न जाने कब किस समय निकाला जा सकता है । कही तनख्वाहे देरी मे मिलती हैं, कही चपरासियो मे बेगार ली जाती है किन्तु यहा के कायकर्ता चुप हैं ।

"बीकानेर राज्य कमचारियो का सगठन इतनी कोशिशो के बाद भी क्यो प्रबल और शक्तिशाली न बन सका ' इस पर विचार करने से मालूम होता है ऐसे स्वार्थी कमचारी जिनके पास रिश्वतखोरी जैसे आमदनी के जरिये होते हैं और जो अपने अफसरो की खुशामद करने और हाजिरी बजाने पर अपनी योग्यता से अधिक विश्वास करते हैं, ऐसे व्यक्ति सबसे बडे बाधक के रूप मे सामने आते है । ये लोग सघ की क्रियाशीलता से तटस्थ रह तो भी किसी हद तक क्षम्य है किन्तु ये लोग तो अपनी कायवाहियो द्वारा सघ को समाप्त करने की कोशिश म है । इनकी यह गद्दारी स्वय इनके विनाश का ही कारण भविष्य मे बन जायेगी । आज कमचारियो के सम्मुख भीषण समस्याए आ रही हैं । एक और छटनी की तैयारिया हो रही हैं दूसरी और विलीनीकरण होने पर और भी भयकर बेकारी की समस्या सामने खडी है । इन समस्याओ के सम्मुख यदि कमचारी सगठित न हुए तो उन्हें करारी हार खानी पडेगी ।

25 11 48 को बीकानेर राज्य कमचारी सघ की केन्द्रीय समिति की बठक गगानगर मे हुई जिसमें गगानगर करणपुर रायसिह नगर, पदमपुर नोहर आदि शाखाओ के प्रतिनिधि उपस्थित थे । बीकानेर के प्रतिनिधि कायवश मीटिंग म न आ सके ।

इस बठक म —मुरारी लाल सहल, प्रधान कमलनयन शर्मा मत्री, सरदार काबुल सिंह कोषाध्यक्ष अजु न देव गोदारा उपमन्त्री चुने गये ।

चुनाव के बाद की समस्या हल करने के लिए एक प्रस्ताव स्वीकृत किया गया जिसमे 26 11 48 को राज्य की समस्त शाखाओ मे एक एक तार कणक समस्या हल करवान का प्रधान मन्त्री बीकानेर राज्य को दिया जाने व विरोध स्वरूप 1 12 48 मे 7 12 48 तक काले बिल्ले लगाये जाने का सकल्प था जिसमे साथ ही तारीख 8 12 48 को एक बजे तक काम रोको हडताल किये जान का निर्णय भी लिया गया । इसमे समस्त शाखाओ के कमचारी भाग लेना था ।

साथी कमलनयन व सत्यपाल को भूख हडताल 20 12 48 से करने की अनुमति दे दी गई ।

एक आम सभा म चन्दे की अपील पर 851/- रुपये इकट्ठे हुए। शाखा पदमपुर में करीब 3000/ रुपये एकत्रित किये गये। कर्मचारियों म उत्साह बढ़ रहा था।

30 नवम्बर 1948 को शाम 4 बजे यूनियन द्वारा महकमावार हर अहलकार (कर्मचारी) को कपडे पर छपे काले बिल्ले बांटे गये जिन पर लिखा था —

बीकानेर राज्य क भूखे कर्मचारी"

कर्मचारियों को यह निर्देश दिये गये कि वे 1 से 7 दिसम्बर 1948 तक ये बिल्ले अपने अपने बाजुओ पर लगाकर दफ्तर जायें। कार्यक्रम के अनुसार सभी कर्मचारी 1 दिसम्बर को यह बिल्ले लगाकर आये। मगर उसी दिन बीकानेर से यूनियन के सक्रेटरी का तार आया कि बिल्ले लगाने का कार्यक्रम रद्द किया जाता है। इस पर सभी कर्मचारियो ने दोपहर 3 बजे तक बिल्ले उतार दिये।

गगानगर म 7 दिसम्बर को कर्मचारियों की एक आम सभा हुई जिसमे यह सर्वसम्मत निर्णय लिया गया कि 8 दिसम्बर 1948 को ठीक एक बजते ही प्रत्येक कर्मचारी अपने दफ्तर को तत्काल छोडकर कचहरी के सामने के मदान मे उपस्थित हो जावेगा। सारा कार्यक्रम पूर्णत अहिंसक हो यह भी निर्णय हुआ। कर्मचारियों से यह अपील भी की गई कि वे स्थान-स्थान पर यूनियन की शाखाए स्थापित करें और सगठित हो, ताकि प्राइम मिनिस्टर से यथाशीघ्र वेतन वद्धि आदि विषयो पर वार्तालाप करने के लिए परिस्थितिया बनाइ जा सके।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कार्यक्रम पूर्णत सफल रहा। गगानगर से सरकार को भेजी गई एक विशेष रिपोर्ट के अनुसार लगभग सभी कर्मचारियो ने हडताल मे भाग लिया। इस दौरान कोई मीटिंग नही हुई। इस प्रकार की रिपोर्ट रायसिंहनगर आदि अन्य स्थानो से भी भेजी गई।

यूनियन के नोटिस के बावजूद जब रियासती सरकार ने जोधपुर, जयपुर ग्रेड देने की क्रियान्विति की घोषणा की एक विज्ञप्ति निर्देशक प्रसार वी० आर० कुमार के नाम से जारी करने के अलावा कुछ नही किया, तो कर्मचारियों ने अपने पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार 3 फरवरी 1949 को प्रात 9 30 बजे रतन बिहारी मन्दिर से कर्मचारियों का एक जुलूस निकाला जो महकमा खास की ओर बढा। इस जुलुस के आगे एक तागा चल रहा था जिस पर लाउडस्पीकर लगा हुआ था। उस तागे मे श्री कमल नयन और सत्यपाल बठे कर्मचारी एकता के नारे लगा रहे थे। उधर रियासती सरकार भी पूरी तरह तयार थी। जैसे ही जुलुस ऐसेम्बली हाल के निकट पहुचा उसे रोक दिया गया तथा सर्व श्री कमल नयन सत्यपाल, देवीप्रसाद व मुरारीलाल बीकानेर पब्लिक सेफ्टी एक्ट के तहत सशस्त्र पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। गिरफ्तारों को चीफ सैक्रेट्री के पास ले जाया गया तथा जुलुस निकालने वाले पब्लिक पार्क लौट आये और सरकारी कार्यालय के सामने जमा हो गये।

कमचारी साथियो को पकडने का समाचार दूसरे कमचारियो के कानो मे ज्यो ही पहुँचा, वे अपने दफ्तरो से दन-दनाते हुए बाहर निकल आये और देखते ही देखते सभी दफ्तरो मे सन्नाटा छा गया। कमचारियो ने सभा मे एक मत से यह निणय लिया कि जब तक उनके चार साथियो को रिहा नही किया जाता और उनकी शिकायतें दूर नहीं की जाती वे हडताल पर रहेंगे। हाईकोट के कमचारी श्री हरिशरण ने कमचारियो के समूह को सूचित किया कि केनाल कॉलोनी (गगानगर जिला) तथा रतनगढ म यूनियन के सचिवो को यह तार भेज दिये गये कि जब तक वे अपने उद्देश्य मे कामयाब नहीं हो जाते, वे गिरफ्तार कमचारी साथियो की सहानुभूति मे हडताल पर रहें।

कमचारियो की इस अभूतपूव एकता व सगठन को देखकर सरकार घबरा गई। उन्होंने यह महसूस किया कि यदि यह मामला तूल पकडा गया तो सारी सरकारी मशीनरी ठप्प हो सकती है। अत चीफ सक्रेट्री ने चारो गिरफ्तार कमचारी नेताओ को तुरन्त छोडने के आदेश दिये। अपनी इज्जत बचाने के लिये सरकार ने यह बात प्रचारित की कि गिरफ्तार कमचारियो को इस आश्वासन पर छोडा गया कि वें भविष्य मे कोई जुलूस नही निकालेंगे। मगर कमचारी यूनियन के प्रधान ने इस आरोप का स्पष्ट खण्डन किया कि कमचारी माफी मागकर रिहा हुए हैं।

जनता मे अपनी छवि बनाये रखने के लिए सरकार के जनसम्पक विभाग ने एक लम्बी विज्ञप्ति निकालकर यह सफाई दी कि सरकार इस विषय मे उत्सुक है कि उसके उच्च वेतन भोगी कमचारी जितना आराम पा सकें, पायें और वे कोई कदम न उठायें। मगर कमचारी खूब जानते थे कि हजार बारह सौ वेतन हजम करने वाले अफसर आराम पाते हैं या 30 40 या 50 रुपल्ली से अपने परिवार का पेट पालने वाले भूखे कमचारी।

पुलिस ने गिरफ्तार कमचारियो को दोपहर एक बजे सरकारी दफ्तरो के पास लाकर छोड दिया जहा हडताली कमचारी एकत्रित हुये थे। छूट कर आये सभी कमचारियो ने उपस्थित श्रोताओ को चीफ सेक्रेट्री से हुई उनकी वार्ता का ब्योरा दिया और कमचारियो से अपील की कि वे वतमान परिस्थितियो मे हडताल पर न जायें। मगर आन्दोलन का जो स्वरूप वे पहले तय कर चुके हैं, वह जारी रखा जावेगा। उन्होने कर्मचारियो को बताया कि उन्होंने केनाल कॉलोनी व रतनगढ के सचिवो को तार भेज कर अपनी रिहाई की सूचना दे दी है और हडताल पर जाने के अपने कायक्रम को स्थगित करने को कहा है। उन्होने कमचारियो को अपने कार्यालयो म वापस काम पर जाने की सलाह दी और इस सकट की घडी मे उन्होने जो सहानुभूति व सहयोग दिखाया उसके लिए उन्हे धन्यवाद दिया। उन्होने कमचारियो को यह भी बताया कि अब कोई सामान्य सभा नहीं होगी अगर प्रतिनिधि कोटगेट के निकट स्थित उनके कार्यालय मे साय 7 30 बजे मिलें। उस मीटिंग की कायवाही गुप्त रखी जावेगी तथा पुलिस भी इसे नही जान पाएगी। उसके बाद कर्मचारी व सभा म मौजूद दूसरे लोग विसर्जित हो गये। कोटगेट स्थित यूनियन के कार्यालय मे उसी दिन रात आठ बजे यूनियन की कायकारिणी की मीटिंग हुई और इसकी कायवाही की सूचना सरकार को सी आई डी द्वारा मिल गई। इसके अनुसार इसम सवश्री हरि शरण, कमल नयन खुदाबख्श कृष्ण बल्लभ तुलसीराम मुरारीलाल व रमेश ने भाग लिया।

पूर्व कायक्रम के अनुसार उसी दिन (3 फरवरी, 1949) दोपहर करीब 2 15 श्री सत्यपाल को उसी तागे मे महकमा खास की ओर लाया गया जिसमे लाउडस्पीकर लगा हुआ था और जिसम चार व्यक्ति सवश्री कमल नयन मुरारीलाल देवी प्रसाद व तुलसीराम बठे थे। युवक सत्यपाल को महकमा खास के सामने भूख हडताल पर बैठना था और धरना देना था। इस बार महकमा खास की ओर जाते हुए वे नारे नही लगा रहे थ। श्री सत्यपाल को दरी पर बैठाया गया और उसके पास एक टैंट लगा दिया गया। भूखहडताल आरम्भ होने पर वे चले गये और जाते-जाते उन्होने निम्नलिखित नारे लगाये

कमचारी यूनियन	—	जिन्दाबाद
सत्यपाल	—	जिन्दाबाद
उनकी मागें वेतन आयोग के अनुसार पूरी हो		
चीफ सेक्रेटरी	—	नही चाहिये
जसवतशाही और प्रताप शाही	—	मुरदाबाद
महात्मा गाधी की	—	जय हो
पटेल जी की	—	जय हो
जवाहरलाल जी की	—	जय हो

पूव कायक्रम के अनुसार श्री कमल नयन शर्मा को भी भूख हडताल पर बठना था मगर बाद मे उन्हे इसलिए नही बैठने दिया गया कि बीकानेर राज्य कमचारी सघ के प्रधान मन्त्री पद का दायित्व वे सक्रिय रूप से निभा सकें। श्री सत्यपाल के साथ बीकानेर मे चल रही गतिविधियो से अवगत कराने के लिये बाद मे श्री कमल नयन अपने साथियो के साथ गगानगर आ गये। श्री सत्यपाल के साथ बाद म सवश्री देवी प्रसाद हमीरचन्द शिवदतराय, शकरलाल, चान्दराम, लालचन्द खाजूबक्स रतनलाल और शिवचरण भी भूख हडताल पर बैठे।

कमचारियो की भूख हडताल से भी रियासती सरकार का कठोर हृदय नही पसीजा। अत पूव घोषित कायक्रम के अनुसार कमचारी सघ का 8 फरवरी से पूरी रियासत मे हडताल करनी पडी। महकमा खास, कचहरी जकात राशनिग दफ्तर, स्कूल और कॉलज सभी जगह सुनसान थी। सिफ बडे बडे सक्रेट्री या इक्का दुक्का सरकार के परमभक्त डरपोक कमचारी थे जिनम अपने हक के लिए लडने का साहस नही था। मगर वे भी खाली बठे मक्खी मारने के अलावा क्या कर सकते थे? साप्ताहिक ललकार (13-2-49) के अनुसार चूरू रतनगढ, राजगढ, सरदारशहर, सुजानगढ, गगानगर हनुमानगढ नोहर भादरा करणपुर गजसिहपुर रायसिह नगर, पदमपुर, सूरतगढ, देशनोक सभी जगह 8 फरवरी से मुकम्मल हडताल है और जनता की तरफ से कमचारियो की मागों को पूरी सहानुभूति प्राप्त है। गगाशहर और भीनासर म भी हडताल हुई।

सफाई कमचारी भी इस हडताल म शामिल हुए जिससे पूरी रियासत के नगरो म कूडे के ढेर लग गये मच्छर बढ गये और अनेक बीमारिया फैलने की आशका पैदा हो गई। बीकानेर शहर मे कुछ सामाजिक व राजनीतिक कायकर्ताओ ने 'बीकानेर सेवा समाज' के माध्यम से सफाई कमचारियो को समझा कर काम पर लाना चाहा क्योकि सफाई कमचारी हडताल का तात्कालिक व जबरदस्त प्रभाव सफाई न होने से होता है। मगर सफाई कमचारी नहीं माने। हडताल के प्रति उनकी सहानुभूति इसलिए भी अधिक थी, क्योकि भूख हडताल पर बैठने वालो मे उनका एक साथी चान्दाराम भी था। कर्मचारी सघ ने अपनी हडताल के आरम्भिक चरण मे सफाई कमचारियो को हडताल से अलग रहने की छूट दी थी ताकि जनता को कष्ट न हो। मगर वे 8 फरवरी से ही शामिल हो गये। तब कमचारी सघ के नेताओ ने अपनी ओर से सफाई काय के लिए स्वय सेवक भेजने का वायदा किया मगर वे तुरत अपना वायदा न निभा सके। सफाई की बिगडती दशा को देखते हुए सेवा समाज के 50 कायकर्ताओ ने जाति पाति का भेद छोडकर 16 फरवरी को सफाई का काम आरम्भ किया। सेवा समाज ने यह स्पष्ट कर दिया कि उनका उद्देश्य (जैसा कि प्रचारित किया जा रहा था) हडतालियो के काय मे बाधा पहुँचाना कदापि नही। यह कदम केवल बीकानेर नगर की जनता के प्रति अपना कत्तव्य निभाने और जनता के स्वास्थ्य के हित म उठाया गया है। उसने एक प्रस्ताव पास कर बीकानेर राज्य कमचारी सघ के उद्देश्यो के साथ पूण सहानुभूति प्रकट की और बीकानेर सरकार से अनुरोध किया कि वह उनकी उचित मागो को शीघ्र से शीघ्र मानकर हडताल को समाप्त करवाय ताकि इसके कारण जनता को जो सकट हो गया है उसका अत हो और इससे होने वाले अत्यन्त भयकर परिणामो को रोका जा सके।

सेवा समाज ने इस काम मे लोगो का अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त करने के लिए पैम्फलेट्स (इश्तहार) छपवाकर भी बटवाये। ऐसे ही पैम्फलेट्स म्यूनिसिपैलिटी की ओर से भी बटवाये गये। म्यूनिसिपलिटी के इश्तहार म लिखा था 'जाओ काम करो' जबकि सेवा समाज वाले मे लिखा था। 'आओ काम करें।' स्वाभाविक है सेवा समाज के लोगो को सहयोग मिला और सफाई का काम हुआ। म्यूनिसिपैलिटी के अधिकारियो ने भी इसमे सहयोग दिया। एक दिन कुछ फौजी भी आए और कुछ क्षेत्रो मे सफाई काय किया। मोहता चौक मे कुछ नासमझ व्यक्तियो ने सफाई काय को गलत समझकर सफाई करने वालो को गालिया दी और धूल और पत्थर भी फैंके।

20 फरवरी से कमचारी सघ के 150 200 स्वय सेवक सफाई के काम के लिए पहुँच गये और सफाई की समस्या काफी हद तक सुलझ गई। गगानगर म भी सफाई कमचारी हडताल पर थे। वहा क कांग्रेसी कायकर्ताओ, छात्र सघो के कायकर्त्ताओ ने शहर की सफाई के लिए उत्साह दिखाया। उनका मकसद हडतालियो को बाधा पहुँचाना नही था। चूरू म कमचारी सघ ने केवल दो दिन के लिए हरिजनो की सहानुभूति हडताल करवाई थी।

सफाई कमचारियो को हडताल पर जाना चाहिये या नही यह एक विवादपूण मुद्दा था। कमचारी सघ का भाग होने के नाते तथा कमचारी एकता व बल प्रदशन की दृष्टि से उन्ह अवश्य ही हडताल मे शामिल होना चाहिए था। मगर सफाई का मामला इतना सवेदनशील था कि इसके

अभाव म पूरे नागरिको का स्वास्थ्य दाव पर लग जाता। अत सफाई कमचारियो के हडताल मे शामिल होने से जनता सीधे-सीधे बुरी तरह प्रभावित होती है। जनता को कष्ट हो तो उन्हें हडताली कमचारियो से सहानुभूति कैसे हो सकती थी ?

कोई भी आन्दोलन बिना जन समथन के सफल नही हो सकता लगता है। कमचारी सघ के नेता इसी पशोपेश मे फसकर सफाई कमचारियो के हडताल पर जाने के बारे मे कोई निश्चित नीति नही बना पाये। इसी का परिणाम था कि कही वे पूण हडताल पर थे कही कुछ दिनो के लिए और कही-कही बिल्कुल भी नही। ऐसे भी सकेत हैं कि कुछ स्थानों पर पुलिस के कई उच्च अधिकारी हरिजनो को जबरदस्ती काम पर जाने के लिए हरिजनो मे फूट डालने का प्रयत्न करते थे।

कमचारियो की हडताल को बुद्धिजीवी वग का प्रबल समथन प्राप्त था। अधिकाश स्कूलो व कॉलेजो ने हडताल रखकर आन्दोलन का साथ दिया। डूगर कॉलेज मे भी केवल प्रिंसिपल व स्टाफ के व्यक्ति ही आन्दोलन का साथ नही दे रहे थे। इस कॉलेज के कुछ विद्यार्थियो ने तो कमचारियो को खुला समथन दिया जिनमे समाजवादी छात्र नेता श्री सत्यनारायण पारीख प्रमुख थे। इस आन्दोलन का समर्थन करने के लिए डूगर कालेज के प्रिंसिपल श्री जुगलसिंह खीची ने श्री पारीक के कॉलेज म प्रवेश पर रोक लगा दी थी। प्रिंसिपल के इस कदम से छात्रो मे काफी रोष पैदा हो गया। छात्रो का मत था कि आज का राजनीतिक कायकर्ता सभा मे बोलने की पूरी स्वतन्त्रता रखता है। फिर यदि वह छात्र भी है तो कालेज मे छात्र का व्यक्तित्व अलग है। छात्रो ने हडताल कर प्रिंसिपल को ही हटाने की माग रखी और जुलूस निकाला। अतत श्री सत्यनारायण पारीक को कालेज मे आने की इजाजत दे दी गई। इसमे डूगर कॉलेज के छात्रो ने 9 फरवरी को कमचारियो की हडताल की सहानुभूति म हडताल रखी।

इससे भी अधिक साहस पूण घटना महारानी सुदशना कॉलेज की प्राध्यापिका ने कर दिखाई, जिसने आज से 40 वष पूव के रजवाडे व पर्दा प्रथा वाले समाज मे पुरुष कमचारियो की सभा को सम्बोधित कर न केवल हडताल को पूण समथन दिया वरन् उन डरपोक कमचारियो को ललकारा व चूडिया पहनने को कहा, जो डर के मारे हडताल म शामिल नही हो रहे थे। यह बग महिला थी नौजवान प्राध्यापिका वेद कुमारी जो भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से आकर यहा बसी थी। उस समय के आन्दोलनकारी कमचारी वेद कुमारी की दिलेरी को आज भी याद करते हैं। डूगर कालेज के प्राध्यापक कमचारियो की हडताल के बावजूद बदस्तूर ड्यूटी पर डटे हुए थे। उन्हें समझाने के लिए वेद कुमारी अपनी दो प्राध्यापिकाओं के साथ डूगर कॉलेज गई। प्रिंसिपल महोदय को जब यह मालूम पडा तो वे हडबडाये। उनका विचार था कि ये महिलायें पिकेटिंग करने आई हैं। प्रिंसिपल ने महिलाओं से पूछा आप लोग यहा क्यो आई हैं' महिलाओ ने उत्तर दिया कि व्यक्तिगत काम से आई हैं तो प्रिंसिपल ने झल्लाकर उन्हें वहा से जाने का आदेश दिया। प्रिंसिपल के इस अशिष्ट व्यवहार की चर्चा कमचारी सघ की सभा मे श्री कमल नयन व वेद कुमारी जी दोनों ने की और प्रिंसिपल को ऐसे व्यवहार के लिए हटाने की माग की।

बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ की हड़ताल के समय गंगानगर मे कर्मचारियो की आम सभा का दृश्य

चूडिया

मेरा झुकाव राजनैतिक गतिविधियो की ओर प्रारम्भ से ही हो गया था। 1947 मे जब बीकानेर स्टेट के राज्य कमचारियो ने अयाय के विरुद्ध हडताल की और उनकी मागें सवथा यायोचित थी तो मैं भी उस आदोलन मे कूद पडी।

मेरे हडताली भाइयो ने भूख हडताल की थी और काफी कमजोर हो गये थे। उनकी इस दशा ने मुझे विचलित कर दिया और मैंने सोचा कि अधिक से अधिक लोगो के सहयोग के बिना सरकार ध्यान नही देगी। स्टेट कमचारी नौकरी के कारण सहयोग देने मे भय खाते थे। एक दिन मैंने बीकानेर के पब्लिक पाक मे कुछ लोगो के समक्ष जोशीला भाषण दे डाला और यहा तक कह दिया कि यदि भाई लोग सहयोग नही करेंगे तो कल इहे घर घर जाकर चूडिया पहना दूगी। उस जमाने मे और खुले मच पर मेरे भाषण ने जनता को उत्साहित किया और दूसरे दिन बहुत बडी सख्या मे जनता हडताल मे सम्मिलित हो गई।

परतु सरकार क्रोधित हुई। 19 भाइया को और मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। मुझ म उस समय बहुत जोश था। कुछ करने की तमन्ना थी। अत जेल मे भी महिला कदी जो कि विभिन्न प्रकार के अपराधी थी उन्हें इक्ट्ठा करती, उनसे उनकी व्यथा को पूछती। अधिक तो क्या कर सकती थी? मैं क्योकि राजनैतिक कदी थी, अत अच्छा भोजन मिलता था। मैं अपने भोजन मे से उन्हें दे देती थी। कभी-कभी हम इक्ट्ठे होकर देश प्रेम के गीत गाते, माच पास्ट करते थे। इस प्रकार जेल का 1 सप्ताह का सक्षिप्त जीवन भी प्रसन्नता से हम व्यतीत कर सके। हमारी मागें मान ली गई और हमे 7 दिनो के बाद छोड दिया गया। परतु जेल की साथी स्त्रिया बडी दु खी हुए और मुझे भी उन्हें छोडते समय पीडा का अनुभव हुआ। मानव को प्रभु ने हृदय देकर विशाल बना दिया है।

—श्रीमती वेद कुमारी नारग

श्रीमती वेद कुमारी नारग जन्म 9 अप्रेल, 1924 लायलपुर जिले मे, पिता श्री गुरमुख चद किनरा वकील गाधीवादी व स्वतत्रता सेनानी। शिक्षा बी ए। मेधावी छात्रा। विभाजन के बाद 21-9-47 से महारानी सुदर्शना कॉलेज (बीकानेर स्टेट) मे द्वितीय श्रेणी शिक्षिका। बाद मे बी एड एम ए व एम एड की। 1955 में शादी। 2 अप्रेल, 1980 मे सयुक्त निदेशिका, महिला शिक्षा विभाग (राजस्थान सरकार) पद से राजकीय सेवा से अवकाश। बीकानेर राज्य कमचारी सघ की हडताल मे 1949 मे प्रेरणादायक भूमिका निभाई।

कर्मचारियों को जनता का समर्थन प्राप्त था, यह तथ्य साप्ताहिक ललकार (20-2-49) के निम्नलिखित समाचार से स्पष्ट होता है —

चन्दे की भरमार

"बीकानेर राज्य कर्मचारी सघ को जनता की ओर से जो सहानुभूति मिली है, वह अपने ढग की अनूठी है। हडताल के दिनो म आये दिन लोग कर्मचारियो की सहानुभूति म चन्दा देते जा रहे हैं। इस तरह जो चन्दा इकट्ठा हो रहा है, वह दूसरे चन्दो से भिन्न है। अकसर दूसरी सस्थाओ मे मठो से पैसा इकट्ठा होता है, लकिन कर्मचारी सघ को हर वग से चन्दा मिला है और इस तरह मिला है कि वह कर्मचारियो के उत्साह को दिनों दिन बढ़ा रहा है।"

"चूरू मे 8 फरवरी (1949) को पूर्ण हडताल के बाद कर्मचारी सघ की ओर से प शिव प्रसादजी शास्त्री के सभापतित्व म एक सावजनिक सभा हुई, जिसम सघ के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त प बद्रीप्रसाद आचार्य तथा नगर काग्रेस कमेटी के सभापति श्री भागीरथ प्रसाद मर्दा के कर्मचारियों की सहानुभूति मे भाषण हुए। 9 फरवरी को साथा मदन की ओर से एक सावजनिक सभा हुई जिस म राज्य कर्मचारियो की हडताल के प्रति जनता की सहानुभूति प्रकट की गई। छात्र सघ विद्यार्थी परिषद व हरिजनो न सहानुभूति मे हडताल रखी।"

राज्य कर्मचारियो की हडताल आशा से अधिक सफल रही। साप्ताहिक ललकार (13 2-49) के अनुसार "हडतालियो के अभूतपूर्व सगठन को देखकर सभी दग रह गय हैं। बीकानेर राज्य में कर्मचारियो के आन्दोलन का इतना शानदार प्रदशन पहले कभी नही हुआ था। सरकार को डर है कि कही पुलिस भी कर्मचारियो की सहानुभूति मे हडताल न कर दे।"

बीकानेर पावर हाऊस कर्मचारियो ने 9 फरवरी को एक सभा की और इसमे लिये गये निर्णय के अनुसार उन्होने राज्य कर्मचारियो की सहानुभूति मे 10 फरवरी को उपवास रखा। बिजली कर्मचारियो के साथ रेल्वे कर्मचारी सघ भी सहयोगी रुख दिखा रहा था। कर्मचारी सघ के कर्मचारियो ने तो अपन भूख हडताली साथियो के साथ 5 फरवरी व 12 फरवरी को उपवास रख कर सरकार को सद्बुद्धि दिलाने का प्रयास किया था।

राजनीतिक पार्टिया मे से काग्रेस का इस बारे मे कोई वक्तव्य तो नही आया मगर व्यक्तिगत रूप से वे मार्गें जायज मानते थे। बीकानेर जिला समाजवादी पार्टी के मन्त्री ने एक वक्तव्य निकाला जिसम हडताली कर्मचारियो के साथ पूरी सहानुभूति प्रकट की गई थी। वक्तव्य मे सरकार की आलोचना करते हुए कहा गया था 'उत्तरदायित्व के सिंहासन पर बैठकर भूखे कर्मचारियो के साथ इस प्रकार खिलवाड करना अत्यन्त ही अप्रगतिशील और लज्जास्पद है।' आगे यह अपील की गई कि सरकार कर्मचारियो की मागो को मानकर अपने उत्तरदायित्व का परिचय दे। उन्होंने राज्य कर्मचारियों को उनकी दृढता के लिए बधाई दी और भूख हडतालियों की हालत पर चिन्ता प्रकट की।

बीकानेर राज्य छात्र सघ के सभापति ने एक वक्तव्य निकाल कर "रोटी रोजी और जीवन निर्वाह' के लिए चलने वाले इस आन्दोलन के साथ पूरी सहानुभूति प्रकट की और सरकार से इनकी मागें अविलम्ब मजूर करने की अपील की।

प्रधानमन्त्री को रियासत के कोने-कोने से कर्मचारियो की मागें मजूर करने के लिए तार दिये गये। सरकार का रुख हडताल के प्रति आरम्भ म काफी कडा रहा। उसने हडतालियो को धमकिया, प्रलोभन व उनमे आपसी फूट डलवा कर हडताल तुडवानी चाही, मगर उसे कामयाबी नही मिली।

सरकार ने धीरा कर यह प्रचार आरम्भ कर दिया कि सरकार तो बात-चीत कर कर्मचारियो की समस्या सुलझाना चाहती है मगर कर्मचारी वार्ता मे रुचि नही ले रहे हैं। इस भ्रातिपूर्ण प्रचार के उत्तर म कर्मचारी सघ की केन्द्रीय समिति ने सात सदस्यो की एक वार्ता समिति निर्वाचित की जिसमे कमलनयन जी शामिल थे। जन जन तक इस बात को पहुँचाने के लिए सघ के प्रधानमन्त्री श्री कमलनयन शर्मा के नाम से 9-2-49 को एक सूचना (इश्तहार) छपवाकर बाटी गई। इस इश्तहार के अगले दिन 10 फरवरी को बीकानेर सरकार ने कर्मचारी सघ के प्रधानमन्त्री एव आन्दोलन सचालक पर अनेक आरोप लगाये जिसे मिथ्या व प्रमाणरहित बताते हुए सघ के प्रधानमन्त्री ने ब्योरेवार उतर 11 फरवरी को एक विज्ञप्ति के द्वारा दिये। कर्मचारी टस से मस नहीं हुए अत सरकार के पास अब कोई बहाना न रहा। अत उसने 11 फरवरी को वार्ता शुरू की। वार्ता मे सघ का प्रतिनिधित्व 7 सदस्यीय वार्ता समिति ने किया और सरकारी पक्ष की परवी चीफ सैक्रेट्री श्री एडिगे ने की। कर्मचारी सघ ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि सम्मानपूर्वक सभाओ व समझौते के साथ उनकी मागें मानी गई तभी वे हडताल समाप्त करेंगे अन्यथा उनका निर्णय था कि भूखो मर जायेंगे पर भूखे रहकर जिन्दगी को न घसीटेंगे।

प्रधानमन्त्री से श्री मुरारी लाल सहल मे हुई वार्ता असफल रही। सघ ने 11 फरवरी को ही एक इश्तहार जारी कर वार्ता विफल होने की सूचना कर्मचारियो व जनता तक पहुँचाई। इस इश्तहार मे बताया गया कि सघ की कम से कम मागें जिन पर सघ का समझौता हो सकता है सरकार के सामने रखी गइ परन्तु दु ख के साथ कहना पडता है कि सरकार ने वार्तालाप समिति को बिना बतलाये और अपनी मर्जी से ही अपना धमकी पूर्ण निर्णय ता 12-2 49 को राजपत्र द्वारा प्रकाशित कर दिया।

ऐसी दशा मे वार्तालाप समिति का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह भी सघ की मागें जो सरकार के सामने ता 11-2-49 को रखी गई थी, प्रकाशित कर दे जिससे कि किसी भाई के हृदय मे सन्देह उत्पन्न होने की सम्भावना न रहे।

इन मागो के सम्बन्ध मे सघ के प्रधान ने एक कोरीजेण्डम निकाला।

बीकानेर सरकार ने 12 फरवरी को कर्मचारी सघ से वार्ता के बाद एक तरफा निर्णय को राजपत्र मे प्रकाशित कर कर्मचारियो को यह धमकी भी दी कि वे तीन दिन के भीतर अपनी

ड्यूटी पर आ जायें वरना इसके दुष्परिणाम भुगतने होगे। मगर कमचारियों पर इस नोटिफिकेशन का रत्ती भर भी असर न पडा। 15 फरवरी तक एक भी कमचारी काम पर न पहुँचा।

इस बीच सघ की 13 व 14 फरवरी को गाधी चौक मे सभाएँ हुई और यह निणय हुआ कि जब तक मागें मजूर न होगी कमचारी काम पर जाने को कतई तैयार नही। 16 फरवरी को कोचरो के मोहल्लें म सघ की सभा हुई जिसमे कमचारियो के आदोलन पर शुरू से अन्त तक की स्थिति पर प्रकाश डाला गया। प्रतिदिन पब्लिक पाक म भी सघ की सभाएँ होती थी। इसके अलावा सघ की ओर से कोई कठोर कदम नही उठाया गया।

15 फरवरी को करीब 15 व्यक्तियो के एक और जत्थे को भूख हडताल पर बैठा दिया गया, जिसमे भूख हडताल पर बैठने वालों की कुल सख्या 25 हो, गई। पहले से बैठे भूख हडतालियो की हालत चिताजनक हो रही थी।

पहला मोर्चा, कुर्सियो का

बीकानेर रियासत मे ऐतिहासिक कमचारी सघ की हडताल के सिलसिले मे जब श्री कमलनयन सहित हडताली कमचारी नेता सरकार से वार्ता करने पहुचे तो कुछ लोग उस कमरे से कुर्सियां उठा कर बाहर ले जा रहे थे। वार्ता करने वाले सरकारी प्रतिनिधि कुर्सियो पर जमे हुए थे और कमचारी नेता खडे थे। यह देखकर श्री कमलनयन अपने साथियों को वार्ता स्थल से बाहर ले जाने लगे। अफसरों ने पूछा यह क्या कर रहे हो? इस पर श्री कमलनयन ने उत्तर दिया 'हमें वार्ता नहीं करनी है, आत्म सम्मान खोकर।

'क्या क्या हुआ ?' सरकारी प्रतिनिधि ने पूछा।

आप कुर्सी पर बठें और हम खडे होकर आपसे बात करें, यह हमें मजूर नहीं। हम जानते हैं, आपने हमारे आने पर ये कुर्सिया जान-बूझ कर इस कमरे से उठवाई हैं, महज हमे यह जताने के लिए कि वार्ता मे आपका दर्जा कुर्सी पर बठने का है और हमारा आपके सामने खडे होकर मागने वाले का। हम अपने आत्म सम्मान को गिरवी रखकर वार्ता नहीं करेंगे। इसलिए हम जा रहे हैं।"

सरकारी पक्ष के अधिकारियो को जब बात बिगडती हुई नजर आई तो उन्होंने कमचारी प्रतिनिधियो के लिए वापस कुर्सियां लगाई और वार्ता तभी आरम्भ हो पाई।

कमचारियों की ठोस एकता देखते हुए सरकार के सामने एक बार इसके सिवा फिर कोई विकल्प नही रहा कि वह कमचारियो मे वार्ता का सिलसिला आरम्भ करे। 18 फरवरी को बीकानेर के प्रधानमन्त्री श्री सी० एस० वेंकटाचारी दिल्ली से लौटे। तभी उसी दिन से वार्ता आरम्भ हो गई। बीकानेर राज्य कमचारी सघ के प्रतिनिधियो से चार दिन की समझौता वार्ता के बाद 21 फरवरी को बीकानेर के प्रधानमन्त्री श्री वेंकटाचारी ने जो निणय दिया, उसकी विशेषतायें निम्न प्रकार से हैं—

1 15 अगस्त, 1948 से ग्रेड्स मे सशोधन होगा।

2 निम्न वेतन भोगी कमचारियो मे 200/–रुपये तक वेतन पाने वाले सभी कमचारी इसमे शामिल होंगे।

3 फ्लैट रेट का वही सिद्धान्त लागू किया जावेगा जो 1947 के दिसम्बर म वेतन सशोधन के सम्बन्ध मे माना गया था। इस तरह मे सशोधित ग्रेड वतमान समय मे जोधपुर के ग्रेडो के प्राय निकट पहुँचा दिये जायेंगे।

4 हडतालियो के काम पर आ जाने के बाद एक सप्ताह के अन्दर परा न 3 के वेतन सशोधन सम्बन्धी हिसाब को पूरा करने का सरकार का विचार है। उस पर अन्तिम निणय होने से पूव तयार किया हुआ वक्तव्य (स्टेटमेट) कमचारी सघ के प्रतिनिधियो को दिया जावेगा।

5 इस सम्बन्ध मे तैयार होने वाले आर्थिक आकडे भारत सरकार को भेजे जायेंगे।

6 इस बात का लिखित आवश्यक आश्वासन देने पर कि हडताल बिना शत के वापस ली गई है और हडताली बिना किसी देरी के काम पर वापस आ जायेंगे 12 फरवरी को नोटिफिकेशन मे बताई गई दण्डधारा को सरकार वापस ले लेगी।

प्रधानमन्त्री श्री वेंकटाचारी के इन निणयो के फलस्वरूप 22 फरवरी, 1949 को हडताली काम पर लौट आये। इस पर बीकानेर राजपत्र के गर मामूली अक मे सरकार ने उस पर दण्डधारा (15 फरवरी 1949 को नौकरी पर वापस न लौटन की दशा म) को वापस लेने की घोषणा कर दी।

इस प्रकार 19 दिन (3 फरवरी से 21 फरवरी, 1949) की भूख हडताल व 14 दिन (8 से 21 फरवरी, 1949) की आम हडताल के बाद सम्मानपूण समझौता होन पर बीकानेर सरकार के दफ्तरो मे काम पुन आरम्भ हो गया।

प्रधानमन्त्री की घोषणा से कमचारी काम पर लौट आये मगर 21 फरवरी को प्रधान मन्त्री ने लिखित आज्ञा पत्र मे बीकानेर के कमचारियों की ग्रेडें जोधपुर की ग्रेडो के बराबर एक सप्ताह मे करने का जो आश्वासन दिया था उस पर कमचारियो को यकीन नही हुआ। इस आशका

को सघ के प्रधानमन्त्री श्री कमलनयन ने एक प्रकाशित इश्तहार मे व्यक्त करते हुए लिखा था 'ध्यान रहे, इसी प्रकार के आश्वासन सन् 46 मे पन्नीकर और मुशरा साहब ने भी दिये परन्तु व पूरे नही हुए।'

कमलनयन जी की यह आशका सही थी क्योकि सरकार वायदे के अनुसार एक सप्ताह के भीतर वेतन सशोधन के आदेश जारी नही कर पाई। 16 दिना की लम्बी प्रतीक्षा के बाद सरकार ने 9–3–49 को एक नाटिफिकेशन द्वारा 200/–रु० तक के वेतन भोगी कमचारियो को 15 अगस्त, 1948 के आधार पर 5, 7, 10 व 15 रुपयो की वृद्धि देना स्वीकार किया। ये वृद्धिया 25, 88, 160 और 200 रुपयो तक के वेतन पाने वाले कमचारियो की चार टोलियो मे बाटी जावेंगी।

इस नोटिफिकेशन (घोषणा) की प्रतिक्रिया के रूप मे कमचारी सघ के प्रधानमन्त्री श्री कमलनयन शर्मा ने अपने स्वभावानुसार विज्ञप्ति जारी कर इस नोटिफिकेशन को "अपूर्ण और अस्पष्ट' बताया।

बीकानेर राज्य कमचारी सघ ने इस वृद्धि को कम बताकर लेने से इन्कार कर दिया। सरकार द्वारा नाटिफिकेशन द्वारा कमचारियो को जो कुछ दिया गया था और जो वायदे सरकार और उसके उच्चाधिकारी कमचारियो से करते आ रहे थे उसे सव साधारण के सामने रखकर उनकी राय जानने के लिए अगले दिन 10 मार्च, 49 को एक आम सभा का आयोजन करने का निणय सघ ने लिया। मगर सरकार ने कमचारी सघ पर बीकानेर एमर्जेंसी ऑर्डिनेंस धारा न 6 लगाकर कमचारियो के मुह बन्द कर दिये। सरकार की इस हरकत पर सघ के प्रधानमन्त्री कमलनयन ने 'रोटी मागने वालो पर कानून का ताला क्या?' शीर्षक से प्रकाशित एक इश्तहार के अन्त मे सरकार को चुनौती दी 'इस प्रकार सरकार ने हमारे नागरिक अधिकारो पर कुठाराघात किया है। अगर अपने हक की रोटी मागने वालो के साथ सरकार इसी प्रकार का व्यवहार करती रही तो इसके कारण उत्पन्न होने वाली प्रत्येक स्थिति के लिए सरकार ही जिम्मेदार होगी।' श्री कमलनयन द्वारा उठाई गई आपत्ति के बारे म सरकार का क्या विचार था इसकी झलक तत्कालीन साप्ताहिक ललकार (बीकानेर) के सवाददाता से हुई बात चीत मे मिलती है जो ललकार म निम्न रूप से प्रकाशित हुई—

बीकानेर सरकार के प्रधानमन्त्री ने यह पूछने पर कि कमचारी सघ पर इमरजेंसी आर्डिनेन्स लगाना क्या अधिकारो पर कुठाराघात नही है, जवाब दिया कि कमचारियों के नागरिक अधिकारो का प्रश्न ही नही उठता। कोई भी सरकार इस प्रकार की अनुशासनहीनता को बर्दाश्त नहीं कर सकती। कमचारी सघ कोई ट्रेड यूनियन नही है इसे तो अनुशासन मे रहना चाहिए। हमारी योजना के अनुसार समस्त कमचारियो को अनुमानत दस लाख रुपया मिलेगा और गत बार उन्ह आठ लाख रुपया मिल ही चुका है। आठ महीना मे सरकार ने दो बार तरक्की दे दी है। उससे अधिक नही दी जा सकती। हरिजनो और लोकल बोर्डों के कमचारियो को कुछ मिलेगा अथवा नहीं, इस प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रधानमन्त्री ने कहा कि यदि पिछली बार उनको भी मिला था तो इस बार भी अवश्य मिलना चाहिए। हमने सब प्रकार से जोधपुर के ग्रेडो को देने की कोशिश

की है। किन्तु कही-कही यहा की ओर वहा की पोस्ट्स मिली ही नही। इस विषय म सरकार का निणय कैसा रहेगा इस प्रश्न पर आपने कोई प्रकाश नही डाला। सरकार का रवैया दमनकारी ही रहा जिसकी आशका पहले से ही थी। 12 माच को प्रात काल कमचारी सघ के प्रधान श्री मुरारी सहल जनरल सेक्रेट्री श्री कमलनयन शर्मा तथा सब श्री पाबा राम, चादा राम, पचानन अखेराज तथा लालचन्द (पदमपुर) को सोते हुए उनके घरो से पुलिस ने बिना वारट गिरफ्तार कर लिया। इन प्रमुख कमचारी नेताओ की गिरफ्तारी के बाद श्री हरिशरण ने सघ के प्रधान का पद सम्भाला और 12 फरवरी को विज्ञप्ति (इश्तहार) जारी कर कमचारियो से अपील की कि "अब हमारी माग हमारे गिरफ्तार किये गये कायकर्ताओ को छुडवाना, अपनी रोटी मागना और हमारी गत वष की फ्लैट रेट मे दुगना फ्लेट रेट मागना है। जिसके लिए अपने काय मे दढ रहना है और सघ के निणय के अनुसार शान्तिपूवक अहिंसात्मक ढग से अपनी मागो को मनवाना है जिससे अपनी सगठन शक्ति और भी मजबूत बन सके और हमारी मागें पूरी करवाई जा सकें।"

सघ का भावी कायक्रम तय करने के लिए 12 माच को ही प्रात 11 बजे पब्लिक पाक मे सभी कमचारियो की एक सभा बुलाई गई है।

आम सभा को अवध घोषित करना ही अवैध था

बीकानेर राज्य कमचारी सघ का आन्दोलन पूरे जोरो पर था और इस बारे मे कमचारियो की एक आम सभा बीकानेर के पब्लिक पाक मे कुछ घण्टो मे बुलाई गई थी। कमचारी आन्दोलन को कुचलने के लिए प्रतिबद्ध रियासती सरकार ने अन्तिम क्षणो मे सरकारी आदेश जारी कर इस आम सभा को गैर कानूनी घोषित कर दिया और उस पर रोक लगा दी। हडताली कमचारी बडे धम सकट मे थे। सभा करते हैं तो सरकारी हुक्म की खिलाफर्जी होती है और नही करते तो कमचारी आन्दोलन को बहुत बडी ठेस लगती है।

ऐमे कठिन समय मे मैं अपने कुछ साथियो को लेकर तत्कालीन विधि सचिव (लॉ सेक्रेट्री) श्री दुर्गाशकर आचाय जो बाद म वर्षों तक राजस्थान सरकार मे भी विधि सचिव रहे के पास गया जो मुझसे मित्रता भाव रखते थे। उन्हें अपनी उलझन बताई और इससे निकलने का रास्ता पूछा। कुछ सोचकर श्री आचाय बोले "तुम यह मीटिंग कर लो। यह अवध नही है।'

"पर कैसे हमने पूछा।

'क्योकि आम सभा पर पाबदी लगाने का सरकारी आदेश मुख्य सचिव या गृह सचिव द्वारा जारी किया गया है। यह आदेश जारी करने म वे सक्षम नही हैं। अत यह आदेश ही अवैध है। सभा पर पाबदी का आदेश तो मजिस्ट्रेट ही निकाल सकता है। लगता है हडबडी मे सरकार का इस नुक्ते पर ध्यान ही नही गया और उसका लाभ तुम लोग उठा सकते हो। यदि सरकार ने अब ध्यान दिया तो भी मजिस्ट्रेट के आदेश निकालने की प्रक्रिया में कुछ घण्टे तो लग ही जायेंगे और तब तक तुम लोगो की सभा हो चुकी होगी।

श्री आचाय के विधि सम्मत तक से हम बड़े प्रभावित व आश्वस्त हुए। पूरे जोर शोर से सभा की और सरकार हमारा कुछ न बिगाड़ सकी। हमारी कानूनी स्थिति मजबूत थी।

उन घटनाओं को अब मैं जब याद करता हूँ तो पाता हूँ कि एक कमचारी को दूसरे कमचारी की सहानुभूति तो होती ही है चाहे वह एक बड़े ओहदे का अफसर ही क्यों न हो। आचाय जैसे कुछ नेक दिल अफसरों की गुपचुप मदद ने भी आन्दोलन को अप्रत्यक्ष रूप से बहुत मदद पहुँचाई थी।

श्री लोकेश्वर गोस्वामी—बीकानेर राज्य कमचारी सघ की पहली कायकारिणी (1794) के उपमन्त्री, कमलनयन जी के साथ सघष म साथी। एकीकृत राजस्थान म आप जन सम्पक निदेशालय की सेवा मे आये और अवकाश ग्रहण कर जयपुर म निवास।

सघ के कायकर्ताओ को बिना वजह गिरफ्तार करने के विरोध मे 12 माच से आम हड़ताल हो गई। मगर आवश्यक सेवाओ के कारण हरिजन कमचारियो को 15 माच तक इस हड़ताल से मुक्त रखा गया। सघ के प्रधान के०बी० शर्मा की विज्ञप्ति के अनुसार— यदि ता 15-3-49 तक सघ के कमचारियो को मुक्त नही कर दिया जाता है, तो आगे के लिए भी हड़ताल आरम्भ कर देंगे।'

कान्फ्रेंस के लिए बाहर से आये प्रतिनिधियो का स्वागत करने एव 15 हजार कमचारियो के गिरफ्तार नेताओ के प्रति एकमत से समथन व्यक्त करने के लिए सघ ने 16 माच को दोपहर 1 बजे सुनारो की पचायती (जेल सदर के पास) एक आम सभा का आयोजन किया जिसमे कमचारियो ने तन, मन व धन से आन्दोलन को सफल बनाने का वायदा किया। उन्होने प्रलोभनो, बहकावे व धमकियो म फसकर अपने कदम पीछे न हटाने का वायदा किया। इस एकता का सरकार व बाहर के प्रतिनिधियो दोनो पर असर पड़ा।

इधर कमचारियो की हड़ताल भी हो रही थी, तो उधर सरकार का दमन चक्र कमचारियो की नई गिरफ्तारियो के रूप म जारी था। कमचारियो ने जनसाधारण मे इसकी जानकारी देने के लिए एक प्रोफोर्मा बना लिया था जो निम्न प्रकार था—

आज———को रात, दिन के————बजे बीकानेर राज्य कमचारी सघ के————सदस्य और गिरफ्तार————अब तक की कुल गिरफ्तारी————"

16 माच 1949 को 7 सदस्यो की गिरफ्तारी के साथ ही कुल गिरफ्तारो की सख्या 19 तक पहुँच गई।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश म देशी रियासतो को मिलाकर राज्यो के निर्माण की प्रक्रिया चल रही थी। इसके साथ ही साथ रियासतो के कमचारी सघो को मिलाकर एक प्रान्तीय स्तर पर सगठन बनाने का विचार भी कमचारियो के दिमाग में था। नवगठित होने वाले राजस्थान या राजपूताना मे भी रियासती कमचारी सघो के कमचारी राजपूताना राज्य कमचारी फेडरेशन

बनाने का सपना काफी समय से देख रहे थे । इस प्रस्तावित सगठन के लिए राजस्थान के विभिन्न भागो के कमचारी सघो ने 17 व 18 माच को बीकानेर मे प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन किया । बीकानेर से बाहर से आने वाले कर्मचारी प्रतिनिधियो का ऐसा अनुमान था कि बीकानेर के कमचारियो की हडताल समानपूण समझौते द्वारा पूव मे ही समाप्त हो चुकी थी, किन्तु जब सम्मेलन के निश्चित कायक्रम के अनुसार 16 माच को प्रात काल प्रतिनिधिगण बीकानेर नगर मे पहुँचे तो विदित हुआ कि वहा का वातावरण विपाक्त हो चुका है तथा अनेक उत्साही एव प्रमुख कायकर्ता जेल के अन्दर थे । प्रतिनिधिगण को इससे निराशा नही हुई वरन् उन्हें अपने काय का श्री गणेश करने का अवसर प्राप्त हुआ और उन्होने कमचारीगण तथा सरकार के बीच उत्पन्न हुई कटुता को शान्तिपूण ढग से दूर कर सौमनस्य की स्थापना के प्रयत्न किये जो काफी हद तक सफल रहे ।

18 माच को रात 9 बजे सचिव गृह मन्त्रालय का उसी दिन का एक पत्र सुप्रिटेंडेन्ट सैंट्रलजेल बीकानेर को प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप श्री कमलनयन सहित सभी 19 बन्दी कमचारियो को 19 माच को प्रात 8 30 रिहा कर दिया गया ।

कमलनयन जी की बरखास्तगी—

हडताल तो समाप्त हो गई मगर सरकार ने मानस बना लिया था और हडताल के दौरान ज्यादा उग्ररूप दिखाने वालो को सबक सिखाने की मन मे ठान ली थी । यह योजना 1946 की हडताल के बाद से ही चल रही थी जिसके अन्तगत श्री कमलनयन को सरकार ने एक गम्भीर नोटिस दिनाक 16-5-48 दिया और उनसे स्पष्टीकरण मागा गया था । श्री कनलनयन ने इसका उत्तर निम्न प्रकार से दिया था—

माननीय महोदय,

आपके 16 5-48 के नोटिस के उत्तर मे सानुनय निवेदन है कि मैं बीकानेर राज्य कमचारी सघ का प्रधानमन्त्री होने के नाते सघ की सावजनिक सभाओ मे भाग लेता हूँ, और भाषण भी देता हूँ, क्योकि सघ नोटिफिकेशन 30 माच, 47 के अनुसार सरकार द्वारा स्वीकृत है । सघ की आज तक की समस्त कायवाहिया पूणतया वधानिक अहिंसात्मक और शातिपूण तरीके से होती रही है अत इस प्रकार की कायवाहियो को जिनका सम्बन्ध केवल मात्र राजकीय कमचारियो से ही है, राजनीतिक कोटि का कहना उपयुक्त प्रतीत नही होता । जहा तक मेरे व्यक्तिगत विचारो का सम्बन्ध है, मैं पूणतया राष्ट्रीयता का पोषक हू तथा अपने जीवन को आदश बनाने के लिए पूज्य महात्मागाधी के बताये हुए माग पर उनके पदचिन्ह का अनुसरण करते हुये यथाशक्य प्रयास करता हूँ ।

साम्यवादी विचारधारा को मैं भारत के लिए पूणतया घातक समझता हूँ । अतएव मेरे भाषणो के सम्बन्ध मे कोई साम्यवादी प्रवृत्ति की पोषक करने वाली कोई भ्रमपूण रिपोट हैं तो मैं दृढता के साथ यह कह सकता हूँ कि वह पूणतया निराधार सवथा निमल और एव नितान्त मिथ्या है ।

मगर सरकार उनके उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हुई और उन्हें (जून 1949) नौकरी से बरखास्त करने के सरकारी आदेश हो गये, उनके साथी श्री सत्यपाल शर्मा भी सरकारी सेवा से मुक्त कर दिये गये।

विजय की दुखान्तिका गढ़ जीता, सिंह खोया

बीकानेर सरकार को जब कर्मचारियों की हड़ताल टूटती नजर नहीं आई तो उन्होंने धमकियों दमन व प्रलोभन के सारे हथकंडे अपनाये। हड़ताल को असफल करने के लिए संघ के प्रधानमंत्री होने के नाते कमलनयन जी द्वारा ही सरकार ने कर्मचारियों की हड़ताल तोड़ने की कोशिश की। सरकार के एक अति वरिष्ठ अफसर ने उन्हें अलग बुलाकर समझाया 'क्या मिलेगा तुमको इस हड़ताल से ? ज्यादा से ज्यादा 15-20 रुपये की तरक्की। क्या होगा इतनी सी बढ़ोतरी से ? हम तुम्हें 20 हजार रुपये नकद देने को तैयार हैं और तरक्की देकर तुम्हें नायब तहसीलदार बना देते हैं। तुम्हारी व तुम्हारे बच्चों की जिन्दगी बन जावेगी।

मेरे बच्चो की जिन्दगी बन जायेगी सो तो ठीक है पर जो आठ हजार कर्मचारी मुझ पर विश्वास करके हड़ताल मे मेरे पीछे खड़े हैं, उनके बच्चो का क्या होगा ? यह नहीं सोचा आपने ? आप चाहते हैं कि व्यक्तिगत लाभ के प्रलोभन मे फंसकर मैं अपने हजारो साथियो के साथ गद्दारी करूं ? ऐसा कभी नहीं हो सकता। आपने मुझे समझने मे शायद भूल की है। कमलनयन का जवाब था।

'मगर तुम यह क्यों भूल जाते हो कि तुम सरकार के नौकर हो। सरकार यदि तुम्हें नौकरी पर रख सकती है तो बरखास्त भी कर सकती है।' अधिकारी की धमकी थी।

"यह अधिकार अवश्य ही आपके पास है और इसका उपयोग आप कर सकते हैं। मगर इस दशा में मैं अकेला ही बरबाद होऊंगा, मेरे हजारो कर्मचारी साथी नहीं।' कमलनयन ने बेधड़क होकर उत्तर दिया।

सरकार ने अपनी धमकी पर अमल किया। समझौते के बाद हड़ताल समाप्त होने पर कर्मचारियों को तो वेतन वृद्धि मिली मगर श्री कमलनयन को नौकरी से बरखास्तगी।

बीकानेर राज्य कमचारी सघ की हडतालो को क्या सफल कहा जावेगा ? इस बार मे मतभेद हो सकत हैं । 1946 व 1949 की दोनो हडतालो के फनस्वरूप कमचारियो की तनख्वाह बढी । आठ म दस लाख रुपये के खच से उस समय की परिस्थितियो को देखते हुए ये उपलब्धिया किसी प्रकार से गौण नही कही जा सकती । मगर 1946 के आन्दालन को एक तयारी कहना उचित होगा क्योकि कमचारी सघ बनना और सरकार से टक्कर लेने का वह पहला अवसर था, जब गुलाम भारत की रियासती सरकारें कमचारी सघ बनाना ही अवैध मानती थी । पहली हडताल मुख्यत सरकार द्वारा कमचारी सघ को मान्यता प्राप्त करन की लडाई ही कही जा सकती हैं । 1948–49 के सघष मे तनख्वाह बढी मगर जोधपुर सरकार के कमचारियो के ग्रेड का लक्ष्य भी प्राप्त नही करपाई । श्री कमलनयन शर्मा जैसे, अक्खड, कमचारी नेता तो अपन लक्ष्य जोधपुर ग्रेड से कम पर आने को तैयार नही थे मगर कुछ ऐसे कमचारी भी थे जो परिस्थितियो से समझौता कर लेना चाहते थे ताकि नौकरी से निकाल जाने की जोखिम ही न उठानी पडे । इस माने म सरकार की 'फूट डालो और राज करा ' की नीति आन्दोलन के अन्तिम भाग को विफल करने म सफल रही ।

कमचारी आन्दालन की विफलता का सबस बडा कारण सम्भवत हडताल का गलत समय था । आजादी प्राप्त होने के बाद देशी रियासतो के अस्तित्व का प्रश्न सबसे अहम मुद्दा बन गया था और इस सदभ म कमचारियो की हडताल उस माहौल म महत्वपूण होते हुए भी गौण बन गई थी । राजा अपनी जायदाद, प्रिवी पस व अधिकारो क लिए फिक्रमद था । राजा की सरकार के अलावा प्रधानमन्त्री व चीफ सकेट्री सहित सभी आला अफसर भी अपनी पोजीशन व भविष्य के बारे मे चिन्तत थे । ऐस मे कमचारी आन्दोलन के मुद्दा पर विचार करने की किसे फुरसत व फिक्र थी ? बीकानेर राज्य मे लोकप्रिय शासन सम्भालन के लिए काग्रेस पार्टी आगे आ रही थी । ऐसे म कमचारी आन्दोलन के बार मे काग्रेसियो की राय कमचारी सघ या उसके आन्दोलन के पक्ष मे बनने का प्रश्न ही पैदा नही होता । उसे तो यही महसूस हुआ कि कमचारी सघ आन्दोलन चला कर उनको सत्ता हस्तातरण के माग म रोडे अटका रहा है । उनकी सरकार को धक्का पहुँचाने के उद्देश्य से यह हडताल की गई है । कमचारी आन्दोलन के आरम्भ मे तो उसने तटस्थ सा रख रखा । मगर अतिम दिनो म काग्रेसिया न कमचारियो के विरोध का रुख ही अपनाया । इसका एक कारण यह भी हो सकना है कि वे सोशलिस्ट व कम्यूनिस्ट पार्टी को इस आन्दोलन का जबरदस्त हिमायती समझते थे । बीकानर जिला काग्रेस की काय समिति की बीकानेर मे की गई 12 3 49 की बठक मे इस आशय का प्रस्ताव स्वीकार हुआ कि बीकानेर राज्य कमचारियो के वेतन किसी हद तक कम हैं लेकिन इसे बढवाने के लिए जो समय कदम तथा जिन तत्त्वो का साथ लेना पसन्द किया गया है उस वह अवाछनीय मानती है ।

हडताली इस बात से इन्कार करते हैं कि यह समय उन्होने जानकर चुना था उसकी मशा नई राजस्थान सरकार को धक्का पहुँचाने की थी । हडताल की तारीख सघ की पहले ही घोषित की हुई योजना के अनुसार उस समय आ पडी । यह आन्दोलन 1946 से ही चल रहा था । कर्मचारी सघ के इस आन्दोलन की उपलब्धिया व कमिया की चर्चा सा० ललकार (बीकानेर) ने अपने 27-2-49 के अक में ' हडताल का लेखा जोखा शीपक से की हैं तो सामयिक थी और यहा प्रस्तुत है—

बीकानेर रियासत के कर्मचारियों ने पिछली हड़ताल मे यह पहली बार सिद्ध किया है कि यहा का कर्मचारी भी आज जाग्रत हो चुका है और उसने अपने न्यायोचित अधिकारों के लिए अपना फौलादी सगठन कायम कर लिया है। साथ ही इसम भी कोई दो मत नहीं हो सकते कि उस समय तत्कालीन सरकार ने साधारण सी बुद्धि भी खो दी और जनता के जीवन को व्यथ में ही खतरे मे डाला।

यह तो सभी भाई मानेंगे कि हड़ताल जिस सफलता और सुन्दर ढङ्ग से शुरू हुई थी, उसका अत उस सु दर ढङ्ग से न हुआ और इसलिए हमे उन पनपे हुए कारणो पर सोचना है जिनके कारण अतिम दिनों मे कुछ हड़तालियो मे हतोत्साह और मुर्दनी दिखलाई पड़ी।

पहली तीन कमिया, जो हम स्पष्टतया दिखलाई पड़ी, वे थी—(1) भावावेग (Sentiments) की अधिकता (2) अदूरदर्शिता (3) अनुभव का नितान्त अभाव।

किसी भी हड़ताल की शुरूआत के पूव उसके सचालको को अपनी सही मागें पूरे विवरण के साथ जनता के सम्मुख रखनी होती हैं, अपनी ताकत को और सरकार की ताकत को आक कर हड़ताल सचालन की निश्चित योजना बनानी पड़ती है और निश्चित योजना बनाने के बाद काय सचालन के लिए विभिन्न कमेटिया बनानी होती हैं। लेकिन बीकानेर राज्य कमचारी सघ ने प्रारम्भ मे इन बातो को अनदेखा कर अपने भावावेश का स्पष्ट परिचय दिया था।

इसी तरह हड़ताल के सचालकों ने प्रारम्भ मे यह सोच कर कि दो एक दिन की हड़ताल से ही हम सरकार को झुका लेंगे कोई निश्चित योजना न बनाई। इसी कमी के कारण पैसे इकट्ठे करने का काय प्रकाशन का काम रियासत के दूसरे शहरो क हड़तालियो तक सन्देश पहुँचाने का काय और स्टेज पर विभिन्न बातो का अनुत्तरदायित्व के साथ आना आदि स्पष्ट करते थे कि अनुभव की कमी के साथ किस तरह भावावेश काम कर गया। ये सब बातें कुछ सम्हली, तो केवल कुछ सच्चे कायकर्ताओ के अथक श्रम के कारण, परन्तु फिर भी जिनके परिणाम भुलाये नहीं जा सकते।

इन सब बातो के साथ ही अदूरदर्शिता व अनिश्चित योजना किस प्रकार विरोधियो के लिए अवसर दे रही थी व आन्दोलन को धक्के पहुँचा रही थी, वे भी स्पष्ट हैं।

प्रथम, आम हड़ताल शुरू होने पर भूख-हड़ताल का अन्त करने की सूचना दी गई थी, किन्तु बाद मे भूख-हड़ताल को बिना किसी परिवतन के ज्यो का त्यों चालू रखना अदूरदर्शिता की निशानी थी। माना कि भूख-हड़ताल आमहड़ताल की जड थी, किन्तु यह चीज भी भुलाई नही जा सकती कि योजना गलत ढग से और अनिश्चित रूप से चलाई गई थी। इसी कारण आन्दोलन के बीच मे सचालकों मे घबड़ाहट और बेमौके की जल्दबाजी नजर आ रही थी।

दूसरे, हरिजनों के सम्बन्ध मे कोई निश्चित नीति न अपनाकर कमचारियो के आन्दोलन को एक धक्का लगाया गया। ता 8 की बजाय राजधानी मे ता 11 से हरिजनो की हडताल कराना, चूरू मे केवल दो दिन के लिए हरिजना की सहानुभूतिक हडताल होना, गगानगर मे शीघ्र ही हरिजनो की हडताल समाप्त होना और सरदार शहर आदि मे हडताल का न होना बता रहा था कि सघ हरिजनों के सम्बन्ध मे निश्चित नीति अपनाए हुए नही है। राजधानी के शहर म सघ ने देरी से कई दिनों बाद अपने स्वय सेवक भेज कर शहर की सफाई करवाई थी। आखिर शहर मे क्या कमचारी नही रहते थे? खैर, इसके साथ ही जनता की सहानुभूति को अधिक रूप मे प्राप्त करने के लिए और बीकानेर सरकार के जिम्मेवार अधिकारी व केन्द्रीय सरकार (जिसके प्रति राजस्थान की बनने वाली नई सरकार जिम्मेवार होगी, ऐसी घोषणा हो चुकी थी) के सम्मुख आन्दोलन शुरू होने के बाद कमचारी सघ की ओर से उचित ढङ्ग से मागें नही रखी गई। लोगा म फलने वाली शकाओं का निराकरण सघ ने अधिकृत सूचना पत्रो द्वारा नही किया, जिससे भ्रम व शकाए बढ़ती गई।

हडताल के सचालको ने अपनी ताकत को बहुत बडे रूप मे आक कर यह समझने की कोशिश नहीं की मालूम होती कि बीकानेर का कमचारी आन्दोलन प्रारम्भिक रूप का ट्रेड यूनियन आन्दोलन था, न कि विकसित रूप का। यही कारण था कि अत मे कई सचालको के मुह पर उदासी नजर आई। साथ ही सघ का राजनैतिक रूप न होने पर भी सघ के मच से राजनीतिक शब्दजाल लम्बे-चौडे ढङ्ग से रखे जाते थे, जैसे राजनीतिक दल किया करते हैं इससे यह स्पष्ट मालूम होता था कि सघ के पास सैद्धान्तिक योजनाओं (Theoretical plans) को कायरूप मे परिणित करने वालो की कितनी कमी थी।

अन्त मे समझौते के अनुसार जो कुछ मिला उसको भी सही ढङ्ग से न रख कर सघ के सचालको ने अपने अनुभव की गहरी कमी का दुबारा परिचय दिया।

राजस्थान राज्य कमचारी की स्थापना मे बीकानेर सघ का योगदान

देशी रियासतो मे तनख्वाह बढ़ाने व अन्य सुविधाओ के लिए दो बार कमचारी हडताल करवाना तो बीकानेर राज्य कमचारी सघ की प्रमुख उपलब्धि थी ही मगर राजस्थान स्तर पर कर्मचारी सघ की स्थापना मे भी इसकी महत्वपूण भूमिका रही है।

दूसरे विश्व युद्ध से उत्पन्न महगाई से यू तो सभी लोग परेशान थे मगर सीमित आय वाले कमचारी उसम बुरी तरह से पिस गये थे। कमचारियो ने अपनी तनख्वाह व अन्य सुविधाओ के लिए लडाई लडने के लिए विभिन्न रियासतो मे अपने कमचारी सघ बनाये। इस कडी मे अलवर क्षेत्र मे सयुक्त मत्स्य कमचारी सघ, उदयपुर मे मेवाड कमचारी सघ तथा बीकानेर मे बीकानेर राज्य कमचारी सघ की स्थापना 1946 व 1948 के बीच हो चुकी थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद

जब देशी रियासतों को मिलाकर राजस्थान व राजपूताना राज्य के निर्माण की बात चल रही थी तो अधिकांश कर्मचारियों के दिमाग में "राजपूताना कर्मचारी फेडरेशन" के निर्माण का सपना सजा जिसे मूर्त रूप देने के लिए 31 जुलाई 1948 को उदयपुर में राजस्थान कर्मचारी संघ का सम्मेलन हुआ। इसमें राजपूताना की प्राय सभी रियासतों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में प्रथम बार फेडरेशन स्थापित करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। इसके लिए सात सदस्यों की एक समिति का निर्माण किया गया जिसका काम फेडरेशन का अस्थाई विधान बनाना और समस्त राजपूताना के कर्मचारी संघ के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित कर सम्मेलन का आयोजन करना था। इस समिति के संयोजक श्री लक्ष्मीधर बनाए गये। फेडरेशन समिति की एक बैठक 28-11-48 को जयपुर में हुई।

संघों के प्रस्तावित फेडरेशन के विचार को मूर्तरूप देने के लिए एक सम्मेलन आयोजित करने का सौभाग्य बीकानेर को मिला। सम्मेलन 17 व 18 मार्च, 1949 को रखा गया था मगर आन्दोलन के सिलसिले में बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ के प्रमुख नेता जेल में होने के कारण यह सम्मेलन इन कर्मचारियों के छूटने के दिन 19 मार्च को आरम्भ हो सका। इस सम्मेलन में संयुक्त राजस्थान कर्मचारी संघ (जिसमें 11 रियासतें थी) बीकानेर जोधपुर तथा मत्स्य (अलवर) कर्मचारी संघों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। जयपुर में कर्फ्यू के कारण प्रतिनिधि न आ सके मगर उनकी सद्भावना का तार आ गया था।

सम्मेलन में संयुक्त राजस्थान, मत्स्य जोधपुर और बीकानेर राज्य कर्मचारी संघों का फेडरेशन में सम्मिलित किया जाना सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ। अस्थाई विधान पेशकर उसे कुछ संशोधन के साथ स्वीकार कर लिया गया। स्थाई विधान बनाने का कार्य बीकानेर कर्मचारी संघ को सौंपा गया। इसके लिये नियुक्त उपसमिति का संयोजक श्री तोलेश्वर गोस्वामी को बनाया गया। पांच संघों की 21 सदस्यीय कार्यसमिति में 5 सदस्य बीकानेर संघ के थे। सुश्री वेदकुमारी को शिक्षा प्रकोष्ठ का प्रभारी बनाया गया।

19 मार्च को शाम को कर्मचारियों की आम सभा श्री गजेन्द्रराय पोटा (उदयपुर) के सभापतित्व में हुई जिसमें उपस्थिति लगभग 5 हजार की थी। सुश्री वेदकुमारी द्वारा मंगलाचरण के बाद स्वागताध्यक्ष श्री मुरारीलाल का भाषण हुआ और फिर श्री लक्ष्मीधर संयोजक ने देर रात तक रिपोर्ट पढ़ी। सम्बद्ध संघों की रिपोर्ट उनके प्रधानमन्त्री या अन्य प्रतिनिधि द्वारा सुनाई गई और सर्वश्री लक्ष्मीधर शर्मा उगमलाल कोठारी सुश्री वेदकुमारी और श्री नन्दकिशोर मिश्र के भाषण हुये। अन्त में सभापति श्री पोटा का भाषण हुआ और स्वागत मंत्री श्री कमल नयन द्वारा धन्यवाद दिये जाने के बाद सभा की कार्यवाही समाप्त हो गई।

इस अवसर पर राजस्थान स्तर की एक कार्य समिति बनाई गई जिसमें श्री कमल नयन शर्मा उप प्रधान मन्त्री बनाये गये।

पूरी कार्यसमिति के पदाधिकारी व सदस्य इस प्रकार थे —

अध्यक्ष	श्री गजेन्द्रराय पोटा (उदयपुर)
उपाध्यक्ष	1 श्री अम्बालाल कल्ला (जोधपुर)
	2 श्री नन्दकिशोर मिश्रा (मत्स्य)
	3 सुश्री वेदकुमारी (बीकानेर)
प्रधानमन्त्री	श्री लक्ष्मीधर शर्मा (मत्स्य)
उपप्रधान मन्त्री	श्री कमलनयन शर्मा (बीकानेर)
प्रकाशन मन्त्री	श्री श्याम सुन्दर शर्मा (उदयपुर)
प्रचार मन्त्री	श्री उभयलाल काठारी (उदयपुर)
गृह मन्त्री	श्री जगमोहनलाल (मत्स्य)
अर्थ मन्त्री	श्री हरिशरण (बीकानेर)
सदस्य	सर्वश्री मोहनलाल चेचाणी (उदयपुर)
	,, कृष्ण मुरारी सक्सेना (कोटा)
	,, भगवतीलाल (उदयपुर)
	,, सोमनाथजी बियाणी (मत्स्य)
	,, रमेशचन्द्र (बीकानेर)
	, तोलेश्वर (बीकानेर)
	,, मनमोहननाथ माथुर (जयपुर)
	,, चन्द्रमणि (जयपुर)
	,, शम्भु दयाल (जयपुर)
	2 रिक्त स्थान (जोधपुर)

24 सितम्बर 1949 को जयपुर मे फेडरेशन की प्रतिनिधि सभा द्वारा सघ के स्थाई विधान को स्वीकृत किया जाकर कतिपय आवश्यक प्रस्ताव स्वीकृत कर सरकार की सेवा मे प्रेषित किये गये और वृहद राजस्थान का निर्माण हो जाने से फडरेशन के स्थान पर सघ का नाम "राजस्थान राज्य कर्मचारी सघ" रखा जाकर इसका केन्द्रीय कार्यालय जयपुर रखना निश्चित हुआ जिसका विस्तृत विवरण विज्ञप्ति 1 तथा 2 दिनाक 19–3–49 तथा 24–9–49 द्वारा प्रकाशित किया गया। फडरेशन का अस्थायी विधान 4–7–49 को तथा स्थायी विधान 15–12–49 को राजस्थान सरकार की सेवा मे मान्यता प्राप्ति के लिए प्रेषित किया गया। राजस्थान सरकार ने सघ को "राजस्थान मिनिस्ट्रीयल सर्विसेज ऐसोसियेशन के नाम से 16 जनवरी 1951 को मान्यता प्रदान कर दी। जो आज राज्य कर्मचारियो का मुख्य सगठन है।

इस प्रकार आज कर्मचारियों का जो प्रदेश सघ बना है उसकी नीव रखने वालों म श्री कमलनयन जैसे साहसी जुझारू व्यक्ति थे जिन्होंने कमचारी के हितो के लिए और कमचारी सघ के उद्देश्यो के लिये अपनी नौकरी भी दाव पर लगा दी।

बीकानेर अधिवेशन म चुने गये पदाधिकारियो और विशेषकर बीकानेर क्षेत्र से इसमे शामिल कमचारी नेताओ ने अनेक वर्षों तक राजस्थान राज्य कर्मचारी सघ मे विभिन्न पदो पर रहते हुये महत्वपूण भूमिका निभाई। राजकीय सेवाओ से बर्खास्त होने के कारण स्वय श्री कमल नयन शर्मा तो कमचारी सगठन म सीधी भूमिका नही निभा सके मगर उन्हें इस बात पर प्रसन्नता व सतोष था कि कमचारी सघ की जो पौध उन्होने लगाई थी वह बडे रूप मे फलफूल रही है। अपने समाचार पत्र के माध्यम से उन्होनें समाचारो, सम्पादकीय व लेखो के माध्यम से कमचारी हितो व उनके सगठन को आगे बढाने मे कोई कसर नही छोडी।

संघर्ष के साथी
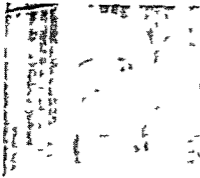
साथी सत्यपाल शर्मा

साथी वेदकुमारी नाग

साथी तोलेश्वर गोस्वाम

कर्मचारी आन्दोलन के आधार स्तम्भ कमल नयन

☐ गिरधारी लाल व्यास

उन्नीसवी सदी के पाचवें दशक मे मजदूर-आन्दोलन की जो लहर यूरोप मे चली उसने मार्क्स के घोषणापत्र को जन्म दिया और इसी सदी के आठवें दशक के आरम्भ मे फ्रास के पेरिस-कम्यून ने घोषणा पत्र पर प्रामाणिकता की मुहर लगा दी। फिर अक्टूबर-क्रान्ति ने तो विश्व को अभूतपूर्व ऊर्जा से तेजस्वित कर दिया। भारत मे इस प्रवाह को उस समय महसूस किया गया जब सन् 1920 ई० मे 'आल इण्डिया ट्रेड यूनियन काग्रेस' का जन्म हुआ। यह मजदूरो का पहला क्रातिकारी सगठन था, जिसने देश के हर कोने को इन्कलाबी नारो से गुजा दिया जिसके फलस्वरूप सब जगह मजदूर सगठनो की स्थापना और उनके क्रिया-कलापो की शुरूआत की आधारशिला रखी जाने लगी।

भारत मे अग्रेजी राज्य और रियासतो मे उस राज्य के दलाल राजाओ और सामतो के दमनकारी प्रशासन की विभीपिका की काली छाया मे मजदूरो किसानों अध्यापको और कर्मचारियों

के सगठन विविध रूपो मे न केवल स्थापित ही हुए अपितु वे अपने-अपने तरीको से क्रियाशील भी थे। अर्थात् तत्कालीन परिस्थितियो के अनुसार सचालित किए जा सकने वाले सघर्ष रूपो को विकसित भी कर रहे थे। अनेक साथियो को सगठन की स्थापना करते ही सेवाओ से निष्कासित होना पडा और अनेक साथियो को सघर्ष का प्रथम कदम रखते ही दमन का शिकार होना पडा। वे जो उस समय सगठनो को बनाने और सघर्ष के विकास को स्तर-दर-स्तर आगे बढाने मे नीव के पत्थरो की तरह दबे—उनके न नामो का पता है और न ही उनकी सही सख्या का पता है, किन्तु निश्चय ही वे आगे के नामी गरामी नेताओ से अधिक महत्त्वपूर्ण थे क्योकि हमारे इस गौरवपूर्ण इतिहास के वे प्रस्थान बिन्दु रहे हैं।

मजदूर आन्दोलन की लहर का प्रभाव राजस्थान की तत्कालीन रियासतो के मजदूरों और कर्मचारियो पर भी पडना स्वाभाविक ही था। पहला प्रभाव रेल और डाक के केन्द्रीय कर्मचारियो पर पडा और वे जयपुर, जोधपुर और बीकानेर आदि सभी रजवाडो मे आन्दोलित होने की प्रक्रिया मे चल पडे। सन् 1920 के आगे की कडी मे यदि जयपुर मे सन् 1926 में अध्यापन कर्मचारियो के सगठन की नीव पडी सन् 1930 से 1935 के बीच मे जोधपुर मे और सन् 1945 मे बीकानेर मे सगठन की भूमिका तैयार करली गई तो कोई आश्चर्य की बात नही समझी जानी चाहिए। स्वतन्त्रता प्राप्ति की देहलीज तक पहुँचते पहुँचते तो प्रार्थना पत्र देने, प्रस्ताव पारित करने, ज्ञापन देने 'भूखे कर्मचारी' का बिल्ला लगाकर रोष प्रकट करने तक के आन्दोलनो का स्वरूप आम हडतालो तक विकसित हो चला था।

सन् 1945 और 1946 मे रैल और डाक विभागो मे काम करने वाले वर्कशाप श्रमिको द्वारा बीकानेर और जोधपुर आदि क्षेत्रो मे किए गए आन्दोलनो ने रियासती कर्मचारियो को आन्दोलनात्मक रास्ता अपनाने को प्रेरित किया। बीकानेर वर्कशाप के नेता महबूब अली मिस्त्री महेशप्रकाश शर्मा विश्वनाथ और अब्दुल हमीद आदि आन्दोलन को प्रेरित करने वाले व्यक्ति थे। सन् 1946 मे बीकानेर मे पहली बार राज्य कर्मचारियो की एक जोरदार हडताल हुई जिसका मुख्य मुद्दा कर्मचारियो के वेतन भत्ते मे अन्य रियासतो के कर्मचारियो के समान बढोतरी करना था। उसका प्रभाव बीकानेर के अलावा गगानगर और चूरू क्षेत्र के सुदूर अचलो तक फैल गया। सघर्ष के इसी दौर मे राज्य कर्मचारियो की एक यूनियन बनी जो राजस्थान व्यापी पहली यूनियन के रूप मे उभर कर सामने आई। इसके कार्यकर्ताओ मे सर्वश्री प्यारेलाल कमलनयन शर्मा सरदार करतारसिंह, रमेश शर्मा बोधराज रामलाल तोलेश्वर गोस्वामी, के वी आचार्य प्रेमरतन, गौरीशकर गोस्वामी राजेन्द्र प्रसाद गोस्वामी व्रजगोपाल गोस्वामी चम्पालाल पुरोहित मोतीलाल पुरोहित शिवकुमार व्यास गिरधारीलाल गोकुलचन्द शोभराज अख्तर अली हरिशकर आदि प्रमुख थे। अध्यक्ष श्री प्यारेलाल थे। गगानगर मे श्री कमल नयन और श्री दौलतराम की भूमिका महत्वपूर्ण थी। बीकानेर डिविजन भर के कर्मचारियो के आन्दोलन के सफलतापूर्वक सचालन का श्रेय भी जहा श्री कमलनयन शर्मा और श्री दौलतराम का है वहा राजस्थान कर्मचारियो की यूनियन के निर्माण मे भी उनकी भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही थी। यही कारण था कि उन्हें सरकारी नौकरी से हटा दिया गया।

स्वतन्त्र भारत मे सन् 1948 और सन् 1949 म कमचारियो का आन्दोलन और अधिक तीव्र गति से बढा। इधर कमचारियो की ओर से ज्ञापन जुलूस भूख हडताल और आम हडताल के साधनो को अपनाया गया तो दूसरी ओर सरकारी स्तर पर धारा 144 लगाने गिरफ्तारियां करन अश्रुगैस छोडने, लाठी चाज करने और सवा से हटान जैस दमनकारी हथियार काम मे लिए गये। इस आन्दोलन के मुख्य नारे थे—'इन्कलाब जिन्दाबाद! 'कमचारी यूनियन जिन्दाबाद!', पूरा वेतन पूरा काम और पुलिस राज —खत्म करो खत्म करो! तथा निम्नांकित कविता पंक्तियां हर कमचारी की जबान पर थी —

आज सडक पर बात सुणी
थोडी सी काना भणक पडी
दो लादाआला कैहता हा!
क्या न ओर्जूं ठा कोनी
आ काल कमेटी क्यारी ही ?
दो लादाआला कैहता हा!

और फिर 'इन्कलाब जिन्दाबाद! तथा कमचारी यूनियन जिन्दाबाद' की अनुगूज के साथ हजारो कमचारियो का कारवा आगे बढना था। यद्यपि आन्दोलन की गति को तेज करने म सरदार करतारसिंह, सुश्री वेद कुमारी पचानन शर्मा और चन्द्रदेव शर्मा ने बहुत महत्त्वपूण योग दिया, किन्तु आन्दोलन की धुरी यदि किसी कहा जा सकता है तो वे थ यूनियन के महामन्त्री श्री कमल-नयन शर्मा जो अपने कुछ कमचारी साथियो के साथ बर्खास्त तो हुए लेकिन फिर कभी बहाल नही किए गए। यही से उन्होंने सीमा सन्देश निकालकर पत्रकारिता का माग अपना लिया

इसी आन्दोलन और कमचारी सगठन का एक विकास सन् 1952 मे राजस्थान शिक्षक सघ की स्थापना के रूप मे हुआ जिसका प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन बीकानेर मे हुआ और इसी प्रकार का विकास अखिल राजस्थान राज्य कमचारी सयुक्त महासघ के रूप मे हुआ—जिसके नेतृत्व मे पिछले दो दशको म अनेक राष्ट्रीय स्तर की ऐतिहासिक हडतालें हुई। इन सब सगठना और कमचारी आन्दोलनो का जब कभी पूरा इतिहास लिखा जायगा—उस समय श्री कमल नयन शर्मा जसे जुझारू, कमठ और बलिदानी साथियो को अत्यन्त गौरव के साथ अंकित किया जाएगा जिन्होंने सुदृढ आधार स्तम्भ की भूमिका अदा की।

श्री गिरधारीलाल व्यास—1948 से ही कमचारी आन्दोलन से जुडे रहे और राजस्थान शिक्षक सघ (शेखावत) के अध्यक्ष रहे। प्रधानाध्यापक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की डूगरगढ के पद स अवकाश ग्रहण। राज्य के साम्यवादी आन्दोलन हुए और अब श्री याज्ञवल्क्य गुरु के स्थान पर राजस्थान साम्यवादी दल के शिक्षा प्रकाष्ठ के सयोजक हैं।

हडताल : एक मानवीय पहलू

☐ सत्यपाल शर्मा

आज तो मानवता का नामोनिशान ही मिट रहा है तब सामन्ती युग मे भी मानवीय मूल्यो मे इतनी गिरावट नही आई थी। बीकानेर राज्य कर्मचारियो की भूख हडताल के साथ साथ ही कर्मचारियो की राज्य व्यापी हडताल भी अपने पूरे यौवन पर थी। सरकार द्वारा हर दिन नित नई धमकी दी जाती कि कर्मचारी अपने अपने काम पर वापिस लौट आए परन्तु इन धमकियो का कोई नतीजा नही निकल रहा था। ठीक एक फौजी की तरह सभी कर्मचारी पूरी शक्ति के साथ मैदान में डटे हुए थे। कोई टस से मस नही हो रहा था। सरकार जितनी शक्ति दिखाती कर्मचारियो में उतनी ही एक जुटता बढ जाती।

भूख हडताली कर्मचारियो का हाल जानने के लिये कैम्प में भी हर समय आने-जाने वालो का ताना लगा रहता। सभी जगहो की तरह गगानगर से भी हर रात्रि का ट्रेन से चलकर प्रात एक दो कर्मचारी आते। यह लोग अपने साथ हमारे मन बहलाने के लिये ताजा फूल भी लाते। सभी स्थानो से प्रतिदिन आने वाले यह सन्देशवाहक कर्मचारी सघ के नेताओ को अपने यहां के समाचार सुनाते और इधर से हमारा सदेश तथा समाचार ले जाकर वहा के उत्सुक कर्मचारियो को उनकी सभा में सुनाते। इस प्रकार पूरे राज्य के कर्मचारियो मे आपसी तारतम्य बधा हुआ था तथा सरकारी दमन और अफवाहो का उन पर कोई प्रभाव नही पड रहा था। गगानगर मे मैं अकेला ही रहता था। एक बार मेरी मुह बोली बहिन कमलेश भी किसी कर्मचारी के साथ मुझसे मिलने आई।

नगर पालिक के सफाई कमचारियों के भी आम हडताल मे कूद जाने से स्थिति बद से बदतर हो गई। सभी जगह कोहराम मच गया। भूख हडताली कमचारियो की स्थिति भी डावाडोल होने लगी। प्रभावशाली नागरिको तथा राजनतिक दला के नेताओ की ओर से भी समझौता वार्ता कराने के लिये दवाव पडने लगा। परन्तु दोनो ओर से झुकने को कोई भी तैयार नही था। समझौते के हस्ताक्षर करते और विगड जाते।

महाराजा बीकानेर को तो जसे इस सारी स्थिति से कुछ लेना देना ही नही था। वह अपनी मौज मस्ती मे निमग्न थे और पूरी तरह से रियासत के दीवान और चीफ मेक्रेटी के प्रभाव मे थे परन्तु महारानी की हडताली कमचारियो से पूरी हमदद थी।

हर दिन बहुत सवेरे ही महारानी का एक घुडसवार मदेशवाहक हमारी कुशल क्षेम पूछने आता। भूख हडताली कैम्प मे उम समय हमारी वडी अजीब स्थिति हो जाती, जब मुझ से कही वडी उम्र के कमचारी जिनमे शिक्षक महिला कमचारी भी होते मेरी 20 21 वष की आयु और दृढ निश्चय से प्रभावित होकर मेरे चरण स्पश कर मुझे आशीष देते। सच पूछो तो महारानी जी और कमचारियो की इन सद्भावनाओ ने ही मुझे आत्मबल शान्ति और प्रेरणा दी।

आज तो आये दिन डाक्टरो की लापरवाही के कारण रोगियो के मर जाने के समाचार अखबारो मे छपते रहते हैं परन्तु तब यह स्थिति नही थी। डाक्टरा की सोच कुछ और ही थी। ठीक से याद नही शायद मेरी भूख हडताल का 15वा/16वा दिन था। मेरी हालत ज्यादा बिगड गई। मेरे दद से सभी घवरा गये। टेलीफोन द्वारा डाक्टर से सम्पक किया गया डाक्टर से सम्पक करने वाले एक कमचारी—मोहनलाल उनका नाम था ने लौट कर कैम्प मे बताया कि डाक्टर ने टेलीफोन रिसीवर हाथ मे लिये लिये कहा कि देखो मैंने पेन्ट पहन लिया है और मै चल रहा हूँ। मोहनलाल अभी अपने सम्पक का ब्योरा सुना ही रहे थे कि मध्य रात्रि मे एम्बुलेन्स साथ लाये डाक्टर हमारे सामने खडे थ। प्राथमिक जाच उपचार के बाद मुझे तुरत ही पी वी एम अस्पताल ले जाना उचित समझा गया। अस्पताल मे मैं दद से तडफता हुआ ही पहुँचा। सुई लगी, इतना मुझे मालूम है किन्तु इसके बाद मुझ प्रात तभी होश आया जब डाक्टरो ने मेरी जाच करना शुरू किया। आज क्या स्थिति है मुझे नही मालूम किन्तु तब पी वी एम अस्पताल की बडी मशहूरी थी। लाहोर (पाकिस्तान) के लाइलाज रोगी भी तब यहा आकर स्वास्थ्य लाभ उठाते थे। कोई जमन चिकित्सक उन दिनो वहा पी एम एच ओ थे। उन डाक्टरो के बाद इन्होने भी मेरी जाच की और फीडिंग करने का निणय सुना दिया।

फीडिंग नाम सुनते ही मैं चिल्लाया कि 'नही नही। मैं फीडिंग नही लूगा मैं भूख हड ताल पर हूँ और अपनी भूख हडताल किसी भी हालत मे नही तोडूगा। जमन पी एम एच ओ ने बडे ही शान्त स्वभाव से और मधुर मुस्कान के साथ मुझे सहलाया और बहुत ही मीठे स्वर मे समझाने के लहजे मे कहा कि देखिये आप यहा अस्पताल मे आये हैं और अस्पताल मे आने वाला हर आदमी यहा जीवन पाने की लालसा लेकर ही आता है। अस्पताल मे आने वाले व्यक्ति को जीवन कसे मिलेगा यह सोचना समझना और करना हमारा काम है। अस्पताल से बाहर कौन मर गया इससे हमे

कुछ लेना देना नही लेकिन अस्पताल में आया व्यक्ति मेरा मर गया इसका हमें जवाब देना होता है–मरने वाले को भी और भगवान को भी । अब यह फैसला आप का करना है कि आप अस्पताल में रहना चाहते है या नही । अगर आप यहा रहेंगे तो आपके बचाव के लिए आपकी इच्छा हो या न हो, राजी बेराजी जबरदस्ती भी नली डालकर हम आपका फीडिंग देंगे । क्योंकि यह जरुरी है । मैंने कहा कि नही मुझे मेरा जीवन नही चाहिये मैं कर्मचारियों से विश्वासघात नही करूंगा । मैं मर जाऊंगा परन्तु अपनी भूख हडताल नही तोडूंगा । मुझे तुरन्त ही अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया और वापिस एम्बुलेन्स से ही भूख हडतालो कैम्प पर पहुचा दिया गया ।

इस घटना के दो तीन दिन बाद ही सरकार और राज्य कर्मचारी संघ में समझौता हो गया और आम हडताल के साथ साथ ही मेरी भूख हडताल भी टूट गई । बाद में इसी जमन पी एम एच ओ की सिफारिश पर मेरे परिश्रम के लिये राज्य सरकार ने 10 दिन के लिए मुझे सवेतन अवकाश देना स्वीकार किया ।

और कमलनयन

स्व० कमलनयन शर्मा म सगठन की चुम्बकीय शक्ति थी । वह जितने साहसी थे उससे कही अधिक विनम्र भी थे । जहा तक बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ के आन्दोलन का सम्बन्ध है स्व० कमलनयन शर्मा के बिना उसकी कल्पना ही नही की जा सकती ।

राज राजा का नही प्रजा का है । राजाशाही युग म यह नारा लगाना हर आदमी के बूते का नही था । विद्रोही स्वभाववश कभी भी चुप न रह सकने वाले कमलनयन बीकानेर राज्य म समाजवादी आन्दोलन के भी अगुआ रहे हैं । गगानगर की एक विशाल जनसभा को देख कर स्व० रामनन्दन मिश्र ने एक बार लिखा था कि कमलनयन शर्मा जसे साथियो के बल पर ही राजस्थान एव हिन्दुस्तान म समाजवादी व्यवस्था कायम होने की सभावना है। जिस राजस्थान प्रदेश के नागरिक होने का हमे आज गर्व है, इस एक राजस्थान ' के निर्माण म भी स्व० डा राममनोहर लोहिया के नेतृत्व मे उनका योगदान रहा है ।

मुझे सन् 1946–50 के दौरान ही उनके साथ काम करने का अवसर मिला । एक कर्मचारी होने के नाते बीकानेर के शाही खजाने से मिलने वाला हमारा राशन पूर्व बीकानेर सरकार ने हम दोनो का एक ही दिन, एक ही कलम से बन्द किया था ।

बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ (1946–49) के उपाध्यक्ष, 20 दिन की भूख हडताल मे शामिल । गगानगर मे सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य व शहर कमेटी मन्त्री । 1950 मे कामा(भरतपुर) मे सोशलिस्ट पार्टी के तहसील जिला व प्रान्तीय महामन्त्री की हैसियत से दौरे व आन्दोलन। काग्रेस विरोधी प्रदर्शन । सोशलिस्ट पत्रों का सम्पादन व समाचार समिति सवाददाता । 1982 मे जनता दल से विच्छेद । आठवी लोक सभा चुनाव मे राजीव के प्रति आस्था । 1985 मे विधान सभा चुनाव लडा । पराजित होकर अध्यात्म की ओर । आजीविका—पाकिस्तान मे छोडी जमीन के बदले 20 बीघा जमीन की काश्त ।

अद्भुत सगठन कर्ता और अपराजेय योद्धा

☐ पञ्चानन शर्मा

मैं उन दिना अर्थात् सन् 1949 के फरवरी माह म राशनिंग विभाग मे राशनिंग आफीसर के पद पर नियुक्त था। जब मेरी जानकारी मे आया कि 8 फरवरी से बीकानेर राज्य के समस्त कमचारियो की हडताल का आह्वान बीकानेर राज्य कमचारी सघ की ओर से किया गया है तब मैं यह निश्चय नही कर पाया था कि जिस पद पर मैं नियुक्त था उस पद वाला व्यक्ति इस हडताल मे शामिल हो सकता है या नही। बीकानर राज्य की जनता ने परम प्रतापी महाराजा गगासिह के राज्य का कठोर शासन देखा भोगा था और उनके देहावसान के बाद सारे देश म स्वतन्त्रता पूव के जनान्दोलन और सन् 1947 मे दिल्ली मे लाल किले पर तिरगे झण्डे को लहराते भी देखा था। साथ ही बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् की अगुवाई म चलने वाले उत्तरदायी सरकार की स्थापना और उसके साथ ही जननायका के साथ शासन की कठोरता और स्वतन्त्रता के प्रति राजाशाही की उपक्षा का प्रवृत्ति का भी आम आदमी को अहसास था।

ऐसी स्थिति मे पूरे बीकानेर राज्य मे कमचारियो को मुकम्मिल हडताल का आवाहन करना बहुत बडे हौसले का काम था। फिर भी 8 फरवरी सन् 1949 को सुबह 10 बज के बाद कोट और फोट के बीच म जहा पर महाराजा डूगर सिह की प्रतिमा है व बगल वाले मदान म धीरे

धीरे भविष्य के प्रति आशंकित कमचारियो के झुण्ड इकट्ठे होने लगे। अपने पद एव मानसिकता के कारण अनिश्चय की स्थिति मे होते हुए भी मैंने अपने कार्यालय के सभी कमचारियो को हडताल म सम्मिलित होने की राय के साथ अपने राशनिंग दफ्तर म ताला लगाया और कार्यालय के बाहर ही कुर्सी लगाकर बठ गया।

मुझे पता ही नही चला कि कब कस और क्यो दूसरे दिन मेरे कदम स्वय उस जगह पहुँच गये, जहा हजारो राज्य कमचारी इकट्ठे थे और अपनी मागो के लिए नारे बुलन्द किये हुए थे। वहा मैंने देखा साधारण से दिखने वाले उस आदमी को जिसकी आवाज बिजली की तरह कौंधती हुई अन्दर तक उतरती चली गई। और उस दिन से जो मैंने हडताल म शामिल होने वाले कमचारियो के सामूहिक सभा स्थल पर माइक को पकडा तो पकडे ही रह गया। वही आदमी थे कमलनयन शर्मा जिनके बारे मे मैंने सुना था परन्तु देखा उसी दिन था।

पूरी रियासत के आफिस सुपरिटेंडेंट से लेकर चपरासी तक सारे कमचारी हडताल पर। कमलनयन पूरे राज्य के प्रमुख स्थानो पर दौरा करते रहे आकडे इकट्ठे करते रहे कमचारियो के कमजोर मनोबल को सम्बल प्रदान करते रहे। मैंने अपने यौवनकाल के उस प्रथम प्रहर तक ऐसा अनोखा सगठन एव कमचारियो का अद्भुत मनोबल नही देखा था। निश्चय किया गया कि हडताल मे उन्ही लोगो को सम्मिलित माना जावेगा जो ठीक दस बजे कोट और फोट के बीच के मैदान पर हाजिर होगे और शाम आफिस के नियत समय तक वहीं रहेगे।

उस कमचारी आन्दोलन ने धोकलसिंह जसे कितने ओजस्वी कवि और सुश्री वेदकुमारी जैसे वक्ता पैदा किए, इसका कोई हिसाब नही है। निश्चय था कि जब तक कमलनयन आवाज न दें तब तक कोई कमचारी ड्यूटी पर नही जायगा। अदालत मे पीठासीन अधिकारियो एव कार्यालयो म अफसरो के अलावा सभी हडताल पर। शहर म, गाव मे गली मे देहात मे, सभी जगह एक ही चर्चा–हडताल। बीकानेर रियासत के नागरिको ने अपनी याददाश्त म पहली बार इतना बडा जुलूस इतनी लम्बी हडताल इतना बडा और लम्बा अनशन देखा और सुना। देश क स्वत त्र होने पर भी रियासत मे चूकि राजाशाही थी और विरोध करने वालो पर दमन चक्र चलने की पूरी आशका थी, ऐसी स्थिति म भी श्री कमलनयन शर्मा द्वारा अकेले अपने बल पर चलाया गया कमचारी आन्दोलन अपने आप मे अभूतपूर्व था।

अदभुत सगठन क्षमता कमठता और अपराजेय योद्धा प्रकृति के धनी श्री कमलनयन शर्मा को मेरा शत शत नमन।

पञ्चानन शर्मा – बीकानेर राज्य कमचारी सघ म सक्रिय भूमिका निभाने के साथ ही श्री कमलनयन के बाद सघ के महामन्त्री बने। एकीकृत राजस्थान म वे कुछ दिनो कोटा म प्रासीक्यूटिंग इस्पक्टर सिविल सपलाईज रहे और नौकरी छोडकर कुछ दिनो वकालत की। अब कलम चलाना छोडकर हल चला रहे हैं—अटरू (जि० कोटा) के पास अपने कृषि फाम म।

बीकानेर में रियासत कालीन कर्मचारी आन्दोलन

☐ डॉ० गिरिजाशकर शर्मा

बीकानेर राज्य राजस्थान के अ य राज्यो की अपेक्षा राजनतिक जागरूकता की दृष्टि से काफी पिछडा क्षेत्र रहा है। इसका एक मुख्य कारण अ य बाता के अलावा यहा के तत्कालीन महाराजा गगासिह का निरकुश शासन भी था। उनके शासन-काल मे राजनतिक गतिविधिया को कठोरता से दबा दिया जाना एक साधारण बात थी। इस कारण दूसरे भाग मे जो मजदूर आ दोलन होते थे, उनकी जानकारी यहा के कमचारियो या मजदूरो तक पहुच पाना सम्भव नही था। इसी कारण सन् 1943 तक जब तक कि महाराजा गगासिह विद्यमान रहे, बीकानेर राज्य म कोई मजदूर अथवा कमचारी आ दोलन नही हुआ, यद्यपि यहा के कमचारियो के वेतन एव अन्या य सुविधाएँ भी अ य राज्यो की अपेक्षा कम थी। हा, यह सही है कि इस समय राज्य म समाजवादी विचारधारा का धीरे-धीरे प्रचार होना प्रारम्भ हो गया था और इसकी घुसपठ कमचारियो मे भी शुरू हो गई। इस कारण कमचारियो मे अपने अधिकारो के प्रति कुछ जागरूकता नजर आने लगी थी। फिर भी 1945 तक कोई विशेप आ दोलन आदि नही हुए कि तु 1946 ई० महाराजा शादू लसिह के शासन काल मे राज्य मे कमचारी आ दोलन प्रारम्भ हो गय जो 1949 तक चलते

रहे। यहा हम अंग्रेज सरकार व राज्य सरकार के अधीन दोनो स्तर के कर्मचारियो के आंदोलनो पर प्रकाश डालेंगे।

बीकानेर पोस्टल कर्मचारी आन्दोलन— आल इण्डिया पोस्टल यूनियन के 25 व 26 दिसम्बर 1945 को मैमनसिंह मे होने वाले 20 वें अधिवेशन मे प्रस्ताव पास करके यह तय किया गया कि पोस्ट आफिस में विभिन्न सवर्गों के कर्मचारियो, जिसमे क्लर्क, सोटस, बी०पी०एम० और आवरसियर पी मैन और बी० पी० मैन, वॉच मैमेन्जर और रनर सम्मिलित थे, के वेतनो की बढोतरी की माग की जाय। इस माग को न मानने पर 15 फरवरी, 1946 से कर्मचारी कम से कम कपडे पहनकर तथा एक बैज, जिस पर भूखे कर्मचारी लिखा होगा, लगाकर कार्यालयो मे जायेंगे। साथ ही हडताल होने पर कर्मचारियो को मदद देने हेतु हर कर्मचारी अपने वेतन का दस प्रतिशत कर्मचारी यूनियन मे जमा करवाकर फण्ड बनायेंगे।

इसी सिलसिले मे बीकानेर डिस्ट्रिक्ट पोस्टल यूनियन की 3 फरवरी, 1946 को श्री काशीराम जौहर, पोस्ट मास्टर बीकानेर के सभापतित्व मे एक मीटिंग हुई और एक मत से मैमनसिंह प्रस्ताव के अनुसार कार्यवाही करने का सकल्प लिया गया। इसी क्रम मे 20 फरवरी के दिन से "भूखे डाक कर्मचारी लिखे बैज सभी कर्मचारियो ने लगाने प्रारम्भ कर दिये। 11 मार्च 1946 से प्रारम्भ होने वाली हडताल मे अधिक से अधिक कर्मचारी भाग लें इस हेतु यूनियन के सचिव मोहनलाल गुप्ता और कोषाध्यक्ष श्री अब्दुल सयद कुरेशी ने चूरू और सरदार शहर जाकर मीटिंग की। 23 फरवरी को स्थानीय पोस्ट आफिस मे मीटिंग बुलाकर बीकानेर के समस्त डाक कर्मचारियो से आगामी हडताल मे शामिल होने का अनुरोध किया गया तथा साथ ही फण्ड एकत्र किया गया। इसके अतिरिक्त बीकानेर शासक को भी अपनी मागो के सबध मे एक ममोरेण्डम देने का निश्चय किया गया।

इसी बीच केन्द्रीय पोस्टल यूनियन और अंग्रेज सरकार के बीच एक समझौता हो गया जिसके तहत बम्बई हाईकोर्ट के एक जज को डाक कर्मचारियो की मागो का अध्ययन कर अपनी रिपोर्ट देने को कहा गया। फलस्वरूप हडताल स्थगित कर दी गई। इसके बावजूद बीकानेर सरकार ने हडताल से निपटने के लिये व्यापक प्रबन्ध किये थे।

रेल हडताल—पोस्टल कर्मचारियों की हडताल की भाति रेल्वे के कर्मचारी भी अपनी वेतन-वृद्धि तथा अन्य सुविधाओ के लिए आन्दोलन पर रहे थे। सरकार उनकी मागें नही मान रही थी। बीकानेर रेल्वे के कर्मचारी भी जोधपुर रेल्वे के कर्मचारियो की भाति वेतन-भत्ते की माग कर रहे थे किन्तु बीकानेर सरकार इस पर विचार करने को तैयार नही थी। 27 जून 1946 को रेल्वे मे आम हडताल का निश्चय किया गया। बीकानेर कर्मचारियो ने 26 जून की रात के बारह बजे से हडताल पर जाने का निश्चय किया। यात्रियो को तकलीफ न हो इस लिये रात को चली गाडिया अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँचा देने का भी तय किया गया। बीकानेर रेल्वे वर्कशाप के कर्मचारियो की यूनियन के तत्कालीन अध्यक्ष महबूब अली मिस्त्री (लाको-वर्कशाप) महेश प्रसा"

(सचिव) विश्वनाथ, सदस्य (वक्मन करेज शाप), राना (वक्मेन रनिंग शेड), अब्दुल हाकिम (करेज शाप) अब्दुल हमीद (रनिंग शेड) सदस्य थे।

बीकानेर मे नियत समय 26 जून की रात बारह बजे रेल हडताल प्रारम्भ हो गई। 27 की सुबह चौलो जक्शन की ओर से आने वाली गाडी बीकानेर पहुँची कि तु बीकानेर से जोधपुर जाने वाली गाडी नही चली। इसी भाति भटिण्डा की ओर से आने वाली गाडी सुबह तो बीकानेर पहुच गई। बीकानेर से सुबह जाने वाली वकमेन ट्रेन भी वक्शाप के लिये रवाना नही हुई। 27 जून को प्रात 7–45 से 9–45 तक वक्शाप व लाइन के लभभग आठ सौ कमचारियो की एक विशाल मीटिंग हुई। इसमे यूनियन के सचिव महेश प्रसाद (क्लक करेज शाप) ने सभा को सम्बोधित करत हुए कहा कि अगर सरकार हमारी जोधपुर रेल्वे के समान वेतन करने की बात मान ले तो हडताल समाप्त कर दी जायेगी। इनके अतिरिक्त अ य अनेक वक्ताओ ने हडताल के दौरान एकता रखने की अपील की। हडताल का सबसे अधिक प्रभाव बीकानेर पावर हाउस मे कोयले की सप्लाई पर पडा। सरकार ने भी इस हडताल से निटपने के लिये सभी आवश्यक प्रब ध किये। अन्त म दिनाक 28 जून को रेल्वे हडताल समाप्त कर दी गई।

बीकानेर राज्य कर्मचारी हडताल—1946 मे बीकानेर पोस्टल कमचारी व रेल्वे कमचारियो की हडतालें देख कर राज्य कमचारी भी आन्दोलन करने मे पीछे नही रह। राज्य कर्मचारियो मे अपने अल्प वेतन–भत्तो के कारण काफी असतोष था। वे राजस्थान के अ य राज्यो के कमचारियो के वेतन की भाति अपना वेतन चाहते थे। राज्य सरकार से अनेक बार अनुरोध किया गया किन्तु सरकार ने इस पर कोई ध्यान नही दिया। इस कारण राज्य कमचारियो ने बीकानेर गगानगर, व चूरू क्षेत्र के विभिन्न विभागो मे कायरत कमचरियो को मिलाकर यूनियन बनाई। यहा यह उल्लेखनीय हैं कि बीकानेर मे बनी राज्य कमचारियो की यूनियन राजस्थान के कमचरियो की पहली यूनियन थी।

इस यूनियन के अध्यक्ष श्री प्यारे लाल बनाये गये थे तथा—40 कमचारी इसकी काय-कारिणी म शामिल किये गये। इससे पूव गगानगर मे यहा के कमचरियो ने अपनी यूनियन बनाली थी। इस यूनियन मे श्री कमलनयन शर्मा व श्री दौलत राम, रिकाड कीपर, रेव यू कमिश्नर गगानगर की महत्वपूण भूमिका रही। श्री दौलतराम को काफी समय तक रेव यू कमिश्नर ने मुअत्तिल भी रखा।

काफी जोर देने पर भी जब रियासती सरकार ने कमचारियो की मागें नही मानी तो कमचारी सघ के आह्वान पर राज्य कमचारी 29 सितम्बर 1946 को हडताल पर आ गये। सरकार ने बदले मे अनेक कमचारियो को बरखास्त कर दिया। सरकार ने यूनियन को मा यता नहीं दी। सरकार व राज्य कमचारी सघ के प्रतिनिधियो के बीच वार्ता के बाद 2 10 46 को कमचारियो की हडताल बरखास्ती के आदेश की वापसी व यूनियन के मा यता देन के आश्वासन पर समाप्त की गई।

तो था ही साथ ही ये कमचारी आन्दोलन उस समय हुए जब एक ओर तो अग्रेज भारत स विदा ले रहे थे और भारत स्वतन्त्र होने जा रहा था तथा दूसरी ओर रियासतें अपने भविष्य के लिये चिन्तित थी। इसलिये सरकारें कमचारियो की मागो पर ठोस निणय लेने से कतरा रही थी। फिर भी एक बात स्पष्ट है कि रियासतकालीन कमचारी आन्दोलन आज भी राजस्थान के कमचारी आन्दोलनो के प्रेरणा स्रोत हैं। बीकानेर राज्य की कमचारी हडताल तो राजस्थान के राज्य कमचारियो के आन्दोलनो मे एक मील का पत्थर साबित हुई।

डॉ० गिरिजा शकर शर्मा—पुरालेखागार, बीकानेर म उपनिदेशक। अभिलेखागार मे उपलब्ध सामग्री के आधार पर तैयार किया गया उनका यह लेख प्रामाणिकता लिये हुए है।

बीकानेर राज्य कमचारियो के आन्दोलन के इस प्रथम दौर के बाद कमचारी आन्दोलन एक बार तो शान्त पड गया और सन् 1948 के अन्त मे पुन कमचारी यूनियन सक्रिय हुई। करीब डेढ माह (फरवरी मध्य माच 1949) की हडताल, भूख हडताल, सभाओं, जलूसो, व गिरफ्तारियों के बडे सघष पूण दौर के बाद कमचारियो को वेतन व भत्ता वृद्धि का कुछ लाभ मिला।

हडताल के दौरान सुश्री वेद कुमारी, पचानन शर्मा, चन्द्र देव शर्मा आदि कमचारी नेताओ ने भी आन्दोलन को तेज करने मे महत्वपूण भूमिका निभाई। किन्तु श्री कमलनयन शर्मा (महामन्त्री) बरखास्त होने के बाद नौकरी म बहाल नही हुये।

यहा यह उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार के कमचारी 1947 व 1948 तक शान्त रहे किन्तु उन्ही के साथी बीकानेर पावर हाउस के कमचारी उस समय भी आन्दोलनरत थे। उन्होंने अपनी मागो को मनवाने हेतु यूनियन का गठन कर लिया था। समाजवादी विचारो का इस यूनियन पर अच्छा प्रभाव था, इस कारण यहा का मजदूर वर्ग अपनी मागो के प्रति काफी जागरूक था। दिनाक 21 4 48 को बीकानेर पावर हाउस मजदूर यूनियन की एक सभा अलख सागर कुए पर हुई। इसमे बीकानेर के समाजवादी नेताओ के अतिरिक्त काग्रेस के श्री रघुवर दयाल ने भी भाषण दिया। इस मीटिंग मे पावर हाउस कमचारी जिन अस्वास्थ्यकारी परिस्थितियो म काय करते थे, उनका शीघ्र निराकरण करने के लिये सरकार को चेतावनी दी गई। कमचारी अपने वेतना मे भी सुधार चाहते थे, इसके बावजूद सरकार ने कमचारियो की मागो पर कोई ध्यान नहीं दिया। इस पर दिनाक 7 7 48 को बीकानेर, गगानगर व अन्य स्थानो के पावर हाउस कमचारियो ने एक दिन की भूख-हडताल रखी और अपने काय मे किसी तरह का व्यवधान नही आने दिया। इस पर सरकार चौकन्नी तो हो गई किन्तु मागो की तरफ फिर भी ध्यान नही दिया।

इस पर दिनाक 14 7 48 को पावर हाउस कमचारी यूनियन की एक मीटिंग मे यूनियन के अध्यक्ष श्री नरेन्द्रपाल न घोषणा की कि दिनाक 16 7 48 के दिन पावर हाउस के कमचारी हडताल पर रहेगे और अगर सरकार की ओर से इसम किसी प्रकार का अडगा डाला गया तो कमचारी इस हडताल को आगे बढा सकते है। सरकार ने दिनाक 17 7 48 को प्रात यूनियन के नेता सब श्री नरेन्द्रपाल, गोपाल गोपालसिंह, सुरजाराम व श्री मदनलाल को पब्लिक सेफ्टी एक्ट के तहत गिरफ्तार कर लिया। इस पर कमचारियो ने अपनी हडताल दिनाक 24 जुलाई तक जारी रखने का निश्चय किया। इसके पीछे एक कारण यह भी था कि दिनाक 23 व 24 जुलाई को अखिल भारतीय सोशलिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय कायकारिणी की मीटिंग भी बीकानेर मे होने वाली थी। इस बीच सरकार भी कमचारियो की मागो पर विचार करने को तत्पर हुई और उसने कमचारियो के वेतनो पर विचार करने हेतु सरकारी कमचारियो की राय जानने हेतु एक परिपत्र जारी किया। हडताल 3 अगस्त को समाप्त कर दी गई और सरकार ने गिरफ्तार नेताओ को भी उसी दिन छोड दिया।

इन कमचारी आन्दोलनो के अध्ययन स एक बात स्पष्ट होती है कि अधिकाश कमचारी आन्दोलन अपनी मागें मनवाने म असफल रह। इसके पीछे उनमे सगठन एव सफल नेतृत्व का अभाव

तो था ही साथ ही ये कमचारी आन्दोलन उस समय हुए जब एक ओर तो अग्रेज भारत स विदा ले रहे थे और भारत स्वतन्त्र होने जा रहा था तथा दूसरी ओर रियासतें अपने भविष्य के लिये चितित थी। इसलिये सरकारें कमचारियो की मागो पर ठोस निणय लेने से कतरा रही थी। फिर भी एक बात स्पष्ट है कि रियासतकालीन कमचारी आन्दोलन आज भी राजस्थान के कमचारी आन्दोलनो के प्रेरणा स्रोत हैं। बीकानेर राज्य की कमचारी हडताल तो राजस्थान के राज्य कमचारियो के आन्दोलनो मे एक मील का पत्थर साबित हुई।

डॉ० गिरिजा शकर शर्मा—पुरालेखागार, बीकानेर मे उपनिदेशक। अभिलेखागार मे उपलब्ध सामग्री के आधार पर तयार किया गया उनका यह लेख प्रामाणिकता लिये हुए है।

गंगानगर में पत्रकारिता के पितामह श्री कमलनयन शर्मा

कमलनयन जी द्वारा 37 वर्ष पूर्व गंगानगर में पत्रकारिता के युग का सूत्रपात हुआ था। तब इस क्षेत्र के निवासी दिल्ली से आने वाले समाचार पत्रों को ही पढ़ कर संतोष करते थे। इन पत्रों में गंगानगर क्षेत्र की घटनाओं की चर्चा न के समान थी। सीमा संदेश का प्रकाशन शुरू करके उन्होंने इस क्षेत्र के वासियों को यह अनुभव प्रदान किया कि अपने क्षेत्र के समाचारों को पढ़कर कैसा लगता है। उससे अपने क्षेत्र का ज्ञान भी बढ़ता है। अखबार में अपना, अपने दोस्त रिश्तेदारों का, अपने क्षेत्र के नेता का नाम छपा देखकर या उनकी तस्वीर देखकर कितनी प्रसन्नता होती है। ऐसी सार्वजनिक समस्या को जिनका सामना नागरिक हर रोज करता है यदि अखबार के माध्यम से उठाया जाता है तो नागरिकों के मन में अखबार के प्रति अपनेपन का भाव जाग्रत होता है। अपने नाम से भी वह अखबार में अपनी समस्या उठा सकता है—यह पाठक के लिए नई अनुभूति थी।

संक्षेप में कहें तो उन्होंने पत्रकारिता का पौधा रोप कर इस क्षेत्र में एक फसल की शुरुआत की। इस क्षेत्र के अनेक युवाओं ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पत्रकार बनने की प्रेरणा सीमा संदेश से ही प्राप्त की। स्कूल व कालेज के अनेक विद्यार्थी समय समय पर उन घटनाओं की जानकारी देने सीमा संदेश कार्यालय आ जाते थे जो उनके सामने होती। ... ने उनमें यह

आजाद कलम का पत्रकार

इस राष्ट्रीय सीमान्त क्षेत्र को 'सीमा-सन्देश' के माध्यम से पत्रकारिता से आप्लावित करने वाले कमल नयन जी का एक सपना अधूरा ही रह गया–वे एक 'राजस्थान सीमान्त समाचार समिति' का निर्माण करना चाहते थे ताकि इस क्षेत्र के समाचारो का राष्ट्रीय स्तर तक प्रसार हो सके। समिति बनी तो, पर चली नही।

अपनी आजाद कलम के कारण पत्रकार के रूप मे भी उनका सघर्ष उसी दुर्धर्षता से चलता ही रहा।

दृष्टिकोण विकसित किया था कि घटना देखना ही महत्वपूर्ण नही, उसे लोगो मे प्रसारित करना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। जिन विद्यार्थियो ने इस तथ्य को समझा, वे बाद म सफल पत्रकार भी बने। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नही होगा कि आज जिले म करीब एक दजन दनिक पत्र व अनगिनत साप्ताहिक/पाक्षिक आदि जो प्रकाशित हो रहे हैं उस माहौल को विकसित करन का मुख्य श्रेय श्री कमलनयन के द्वारा आरम्भ पत्र सीमा स देश को जाता है।

इस सम्बन्ध मे एक दिलचस्प व प्रेरणादायक उदाहरण गगानगर से दनिक नवज्योति के सवाददाता श्री राजेन्द्र सारस्वत का है, जिन्होने अपना जीवन एक कम्पाजिटर के रूप म सीमा सदेश से ही आरम्भ किया था। सीमा सदेश मे सेवा के अनुभव व प्रेरणा तथा अपनी मेहनत व लगन के बल पर श्री राजेन्द्र सारस्वत कम्पोजिटर से पत्रकार की मन्जिल तक पहुँचे, इतना ही नही उनके दो छोटे भाइयो श्री जगदीश व श्री राकेश शर्मा ने भी अपने भाई का अनुसरण कर पत्रकारिता के क्षेत्र म प्रवेश किया। श्री राकेश शर्मा ने व्यग लेखन मे अपना विशेष स्थान गगानगर मे बनाया है तथा वे कई समाचार पत्रो के लिए नियमित स्तम्भकार हैं। गगानगर से प्रकाशित दनिक सीमा किरण के प्रकाशक व प्रधान सम्पादक श्री योगराज सोबती ने 22 वष तक सीमा सदेश के साथ काम करने के बाद ही सात वष पूव स्वत त्र प्रकाशन के क्षेत्र मे प्रवेश किया। पत्रकारिता के क्षेत्र मे कदम रखन के लिए प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से श्री कमलनयन शर्मा व सीमा सदश से प्रेरणा प्राप्त करने वालो की स्पष्ट सख्या बता पाना सभव नही है।

गगानगर जिले से निकलने वाले समाचार पत्रो की सख्या गवाह है कि पत्रकारिता म यह क्षेत्र आज अग्रणी है। जितने दैनिक पत्र यहा से प्रकाशित होते हैं, उतने राजधानी जयपुर को छोडकर सभवत राजस्थान मे किसी स्थान से नही निकलते। यद्यपि इन पत्रो म निखार की काफी गुजाइश है। गगानगर के लिए यह गौरव की बात है कि यहा के कुछ पत्रकार राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचे हैं। श्री लोकपाल सेठी हिन्दुस्तान समाचार के बाद अब पी टी आई (प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया) म वरिष्ठ पत्रकार के रूप मे काम कर रहे हैं। इतना ही नही श्री सेठी विख्यात थोम्पसन स्कालर शिप के तहत इग्लण्ड में पत्रकारिता का प्रशिक्षण भी प्राप्त कर चुके हैं और अब पत्रकारिता के क्षेत्र मे अमरीका के विश्वविद्यालय मे अध्ययन करने के लिए उन्हें एक वष की रोटरी इटरनशनल फलोशिप मिली है।

श्री आई एम सोनी गगानगर म राष्ट्रीय अग्रेजी दनिक के सवाददाता रहने के बाद पजाब विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष पद पर काय कर रहे है। स्वतन्त्र रूप से वे इतना अधिक लिखत हैं कि अग्रेजी के समाचार पत्रो व पत्रिकाओ म उनकी अनगिनत रचनायें छप चुकी हैं।

वसे नवभारत टाइम्स जयपुर के सम्पादक श्री श्याम आचाय भी कुछ अर्सा गगानगर रहे हैं। पूव म श्री आचाय हिन्दुस्तान समाचार समिति व जनसत्ता मे वरिष्ठ पदो पर रह चुके हैं।

ये तो कुछ नमूने हैं। इसके अलावा कुछ और प्रतिभाएँ भी होंगी जो हमारी नजरों तक नहीं आ पाईं।

श्री कमलनयन पत्रकारिता के क्षेत्र में इस इलाके के वटवृक्ष थे जिसके साये में यहां पत्रकारिता खूब फली फूली है। उनकी सदा यह हार्दिक इच्छा रही कि इस क्षेत्र में पत्रकारिकता का विकास हो। उसके लिए उन्होंने युवा पीढ़ी के पत्रकारों को सदा प्रोत्साहित किया और सही मार्गदर्शन देने का प्रयास किया।

प्रथम आम चुनाव में जनचेतना को सचार

श्री कमलनयन जी हठी व धुन के कितने पक्के थे उसका सबूत है अखबार का प्रकाशन शुरू करना। 1951 में जब वे पेट भरने का इन्तजाम तक न कर पाते थे, दोस्तों की राय के विपरीत जाकर उन्होंने अक्टूबर 1951 की विजय दशमी के दिन साप्ताहिक सीमा सन्देश का प्रकाशन शुरूकर दिया। उन्होंने इस पर गम्भीरता से सोचा ही नहीं कि इसके कागज खरीदने, छपवाने व बटवाने पर जो पैसे खर्च होंगे, वो कहां से आयेंगे। वे ऐसा तभी सोचते यदि वे इस पर व्यावसायिक दृष्टिकोण से सोचते। यह दृष्टिकोण तो वे 35 वर्ष अखबार चलाने के बावजूद भी न बना पाये। इसी का परिणाम रहा कि अखबार का दफ्तर जीवन भर सदा किराये की दुकानों में चला और अखबार के लिए न तो सुदृढ़ ढांचा तैयार हो सका और न ही प्रेस का आधुनिकीकरण हो पाया। उनके लिए यह एक मिशन था, एक "धर्म" था। वे इसके द्वारा अपने विद्रोह की अभिव्यक्ति भी करना चाहते थे और जन-जन की आकांक्षाओं को आवाज भी प्रदान करना चाहते थे। गुलाम देश में राजाशाही के जमाने में जिसने महाराजा की सरकार के विरुद्ध बिगुल बजाया वह, स्वतन्त्र व प्रजातान्त्रिक भारत में भला कैसे चुप बैठ सकता था?

अखबार को प्रजातन्त्र का चौथा पाया कहा जाता है। सीमा सन्देश का प्रकाशन भी तभी आरम्भ हुआ था जब देश में प्रथम आम चुनाव करवाकर भारतीय प्रजातन्त्र की नींव रखी जा रही थी। शताब्दियों से गुलाम भारतवासी यह समझ नहीं पा रहे थे कि वे अपनी इच्छा की सरकार कैसे बना पायेंगे। क्या सत्ताधारी कांग्रेस व इसका प्रशासनिक ढांचा स्वतन्त्र व निष्पक्ष चुनाव करा सकेगा? अपने आरम्भिक अंकों में श्री कमलनयन ने ऐसी आशंकाओं की अभिव्यक्ति देते हुए लिखा था—

"यहां के अधिकारी चुनाव में अनुचित हस्तक्षेप करने लगे हैं। चुनाव जीतने की गरज से दूर-दूर से अधिकारियों के तबादले किये जा रहे हैं। इसके साथ-साथ अपने लोगों को तरक्की भी दी जा रही है। बड़े अधिकारियों का तो कहना ही क्या, यहां के कांग्रेसी नेताओं के दबाव में पटवारियों के भी नाजायज तबादले किये गये हैं क्या इस प्रकार की कार्यवाहियां किसी सरकार के लिए सम्मान की व शोभनीय बात है?' इसी विषय पर सीमा सन्देश में तब "गंगानगर के अधिकारी वर्ग के नाम खुला पत्र' शीर्षक से श्री केदार नाथ, एम०ए०एल० एल०बी० का एक लेख भी प्रकाशित हुआ था। (9–11–51)

काग्रेस द्वारा इस क्षेत्र मे जिस प्रकार और जिन व्यक्तियो को टिकट दिये गये उसके प्रति अखबार ने अपना रोष प्रकट करते हुए लिखा "काग्रेस टिकटो की आम नीलामी-अपनी जेब टटोलिये। ये 1942 नही, 1952 के क्राति दूत हैं। इस आरोप मे दम था क्योकि काग्रेस टिकट मुख्यत बडे जमीदारो या पूजीपतियो को दिये गये। एक ही उदाहरण काफी है। यहा के लोक सभाई क्षेत्र में श्री केदार जैसे शिक्षित व स्वतन्त्रता सग्राम म भाग लेने वाले युवक मौजूद थे। मगर टिकट मिला देश के बडे उद्योगपति श्री आर० आर० मोरारका को जिनका गगानगर म कोई लेन-देन ही नही था इतना ही नही मतदान के समय भारी गडबडी हुई। मतदाताओ को यहा तक घर घर गुमराह किया गया कि यदि काग्रेस को वोट दोगे तो जमीन मिलेगी और नही दोगे तो मौजूदा जमीन भी छीन ली जावेगी। मतदान की गोपनीयता की भी पुख्ता व्यवस्था नही थी।

लोक सभा क्षेत्र के चुनाव का मतगणना काय 2 दिन के स्थान पर 10 दिन मे पूरा हुआ और इस दौरान 5 दिन तक तो मतगणना बिल्कुल बद रही। इसका कारण था—अनेक मत पेटियो की सीलें टूटी हुई मिली, सौ से अधिक बक्सो म निशानो म व नम्बरो म गडबड थी। सीमा सन्देश के 14 फरवरी 1952 का सम्पादकीय 'गगानगर म चुनाव दोबारा हो पूरे तीखेपन म लिखा गया और इसके अन्त मे लिखा था "गगानगर जनता की यह माग है कि इस इलाके म जो पक्षपात, अवधता और अनियमितता हुई है, उसकी जाच की जावे और चुनाव दोबारा किया जावे।' चुनाव परिणाम के बाद विजयी उम्मीदवारा के व्यवहार पर उन्होने लिखा विजयोन्माद मे अहिंसा के पुजारियो का जलूस—बन्दूको की आवाज से आतकित करने का प्रयास विफल।

क्योकि स्वतन्त्र देश का यह पहला आम चुनाव था अत "मतदाताओ के लिए ज्ञातव्य कुछ बातें—मतदान क्या है और कसे होगा' शीर्षक से सीमा सन्देश म कई किश्तो म छपी। सीमा सन्देश द्वारा मतदाताओ को शिक्षित करने की भूमिका बखूबी निभायी गयी। ऐसा करना तब बहुत आवश्यक था—एक तो पहला चुनाव, दूसरे चुनाव शिक्षण के कोई और साधन भी तब उपलब्ध न थे। इस मायने मे उस काल मे श्री कमलनयन जसे विद्रोही व्यक्ति की यह एक रचनात्मक भूमिका थी। चुनाव के बाद जन प्रतिनिधियो व उनकी सरकार की कारगुजारी दखकर श्री कमलनयन को भारी निराशा हुई जिसे उन्होने अपने अखबार म व्यक्त करते हुए लिखा, 'ये पूजीपतियो की कठपुतली सरकार नही तो क्या है———अपने वायदे अभी भूल गये। आगे चुनावो मे भी इनका यही रुख रहा।

मजदूरो के पक्षधर

कमलनयन जी ने अपने अखबार म सदा मजदूरो का पक्ष लिया फिर चाहे वे खेतीहर मजदूर हो या कल-कारखानो मे काम करने वाले।

आजादी के बाद खेतीहर मजदूरो को यह आशा बधी थी कि बडे जमीदारो की सीमा स अधिक खेती भूमि सरकार स्वय लेकर उन्हे दे देगी। इसी के अनुरूप राजस्थान सरकार ने 1949 म बेदखली का एक कानून पास किया जिसके अनुसार 1948 से जो काश्तकार भूमि पर

आश्रित है या उसी पर जीवन निर्वाह करता है उसे बेदखल नहीं किया जा सकता। मगर इसकी क्रियान्विति का परिणाम उल्टा ही हुआ। जमीदार कृषि मजदूरों (जो अब तक उनकी खेती करते थे) के स्थान पर ट्रैक्टर ले आये और मजदूरों को बेदखल कर दिया। केवल गंगानगर में तब एक माह में 200–300 ट्रैक्टर खरीदे गये। इसका उद्देश्य था बड़े क्षेत्र में फैली अपनी भूमि पर खुद का काश्तकार साबित कर सकना। खेतीहर मजदूरों को इससे जमीन तो न मिल सकी उल्टे पहले के काम से भी निकाल दिये गये। इस स्थिति पर टिप्पणी करते हुए सीमा संदेश के 20 जून, 1952 के अंक में "क्या यह ट्रैक्टर रूपी राक्षस किसानों को निगलना चाहता है" शीर्षक से एक लेख लिखा था। इस लेख में उन्होंने किसानों के लिए लिखा 'आज सत्ता रूढ़ जन सरकार है, उस सरकार ने किसानों के हित में कुछ आज्ञाएं जारी की हैं किन्तु क्या सरकार पहले स्वीकृत नियमों का पालन किस प्रकार हो रहा है या नहीं—इस ओर ध्यान देगी? यदि इस जिले में जाच की जाय तो हजारों की तादाद में मुजारे (खेतीहर मजदूर) बेदखल हो चुके, नियमों की अवहेलना स्पष्ट होती रही। यही कांग्रेसी नेता जो किसानों की वफादारी की डींगे हांकते आये हैं—क्या कर रहे हैं किसी से छिपा नहीं है।' ऐसे व्यक्तियों के बाकायदा नाम प्रकाशित करते हुए उन्होंने लिखा "—जो कल तक एकतन्त्र के समर्थक थे, जिन्होंने कल तक आजादी की लड़ाई में रोड़े अटकाये, जो कल तक देश भक्तों के खिलाफ अपने स्वार्थों से वशीभूत होकर राजाओं की जय बोला करते थे वे आज ट्रैक्टरों द्वारा खेती कर किसानों को बेदखल कर रहे हैं सरकारी आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं।——'

राज्य सरकार ने यह कानून भी बनाया था कि जिन जमीदारों की जमीन खेती के लिए भूमिहीन किसानों को दी जावेगी उन्हें जमीदारों को फसल की उपज का छटा हिस्सा देना होगा। इस बारे में अपने सम्पादकीय (22 मार्च, 1952)— पैदावार के छटे हिस्से का हकदार कौन? में कमलनयन जी ने पूछा कि जिनके पास कारखानों, व्यापार, अच्छी नौकरी से अच्छी आमदनी है वे, या वे जिनके पास सिर्फ 10-20 मुरब्बा जमीन ही रह गई हो?

21 जून, 1952 के सम्पादकीय 'किसान समस्या' के अन्तर्गत आरजी काश्त तकसीम (खेती के लिए भूमि का अस्थाई वितरण) के बारे में उन्होंने लिखा था 'आरजी काश्त में प्रमुखता भूमिहीन को मिलनी चाहिये। इसकी जाच पड़ताल बड़ी गम्भीरता से होनी चाहिए।—— 'आरजी काश्त बटवारा बंद हो ऐसी माग न थी, बल्कि अन्यायपूर्ण तकसीम न हो ऐसा वांछनीय था। सरकारी अधिकारियों ने अपने स्वार्थ के अनुकूल उस माग की व्याख्या की है। हम उन्हें विनम्र शब्दों में निवेदन करना चाहते हैं कि समय की गतिविधि को समझें। इसी में उनका और देश का कल्याण है।'

एक अन्य स्थान पर उन्होंने लिखा 'सरकार भी बड़ा पक्षपात पूर्ण रवैया अपनाये हुए है। वितरण कमेटी में उन्हीं के भक्त जमे हुए हैं। सही ढंग से जमीन का बटवारा होना असंभव है।' अनियमित भूमि वितरण के अनेक उदाहरण उन्होंने नाम व भूमि की मात्रा देकर अखबार में प्रकाशित भी किये। इसलिए उन्होंने किसानों से संगठित होकर संयुक्त मोर्चा बनाने की अपील की।

जिस समर्पित भावना व आक्रोश के साथ वे खेतीहर मजदूरो के लिए लडे, उसी उग्रता म वे कारखानो के मजदूरो के लिए लडे। गगानगर कोई औद्योगिक क्षेत्र नही, तो भी 1951-52 तक यहा छोटे मोटे कारखानो के अलावा कृषि उपज पर आधारित कपडा मिल व चीनी मिल स्थापित हो चुकी थी। तब मजदूर सगठित नही थे और कारखाने के मालिक मनमानी कर उनका शोषण करत थे। माच 1952 म कपडा मिल के लिए मजदूर मद्रास से प्रलोभन देकर लाये गये। मालिक का वायदा पूरा न होने पर उन्होन मिल व्यवस्थापक को 8 सूत्री माग पत्र दिया, जिस एक अधिकारी ने उनके सामने फाडकर फेंक दिया। 3 अप्रेल 1952 के सीमा सन्देश के मुख पृष्ठ पर छपा था "उद्योगपति का तानाशाही रवैया। पुलिस के बल पर मजदूरो पर लाठी और गालिया चलाने की धमकिया। क्या यह लोकतन्त्र है?"

मिल मालिक ने मिल बद कर मजदूरो की छटनी आरम्भ कर दी। इस पर सीमा सन्देश की प्रतिक्रिया थी "क्या यह राजस्थान सरकार मजदूरो की दुश्मन है? अधिकारियो की अदूरदर्शिता एव अनुभवहीनता मजदूरो की मौत कर देगी।"

इसी दौरान चीनी मे मदी आने के कारण चीनी मिल के मालिक (तब यह प्राइवेट थी) ने किसानो से मिल मे गन्ना लेना बद कर चीनी मिल भी बद कर दी जिसस इसके मजदर भी बेकार हो गये।

मई दिवस

'गगानगर 1 5-52 साढे पाच बजे स्थानीय रोशनी घर स मजदूरो का जलूस श्री गापाल दास, महा मन्त्री पावर हाउस यूनियन एव कमलनयन सीमा सन्देश के सम्पादक के नेतृत्व मे निकला जो नगर के प्रमुख स्थानो से होते हुए गाधी वाटिका मे पहुँचकर सभा के रूप म परिवर्तित हो गया।" (सा सीमा सन्देश 8 मई 1952)

मजदूरा के दुघटना मे घायल हाने या मर जाने, छटनी साप्ताहिक अवकाश ओवर टाइम आदि मजदूरा की अनेक समस्याओ को उन्होंने अपने अखबार म उठाया। इसकी झलक हम उनके उस सम्पादकीय से मिल सकती है जिसमे उन्होने सभी श्रेणी के मजदूरो से सगठित होकर एक मजबूत सघ बनाने की सलाह दी थी।

(सम्पादकीय 1 मई, 1952)

जन समस्याओ के लिए लडने वाले

स्थानीय चीनी मिल के शीरे (मोलासस) से निकलने वाली दुगन्ध के प्रति हम सहनशील हो गये लगते हैं मगर इस समस्या को लेकर 1952 के आस पास के वर्षों म आन्दोलन व सभाए हुई। 29 अप्रेल, 1952 क अक मे मुख पृष्ठ पर सीमा सन्देश मे लिखा था खाड मिल स फलने वाली बदबू के खिलाफ प्रगतिशील फ्रट का मोचा 19 अप्रेल की सभा मे बताया गया कि हम

आश्रित है या उसी पर जीवन निर्वाह करता है उसे बेदखल नहीं किया जा सकता। मगर इसकी क्रियान्विति का परिणाम उल्टा ही हुआ। जमींदार कृषि मजदूरों (जो अब तक उनकी खेती करते थे) के स्थान पर ट्रैक्टर ले आये और मजदूरों को बेदखल कर दिया। केवल गंगानगर में तब एक माह में 200–300 ट्रैक्टर खरीदे गये। इसका उद्देश्य था बड़े क्षेत्र में फैली अपनी भूमि पर खुद को काश्तकार साबित कर सकना। खेतीहर मजदूरों को इससे जमीन तो न मिल सकी उल्टे पहले के काम से भी निकाल दिये गये। इस स्थिति पर टिप्पणी करते हुए सीमा सन्देश के 20 जून, 1952 के अंक में क्या यह ट्रैक्टर रूपी राक्षस किसानों को निगलना चाहता है शीर्षक से एक लेख लिखा था। इस लेख में उन्होंने किसानों के लिए लिखा आज सत्ता रूढ़ जन सरकार है, उस सरकार ने किसानों के हित में कुछ आज्ञाएं जारी की हैं किन्तु क्या सरकार पहले स्वीकृत नियमों का पालन किस प्रकार हो रहा है या नहीं—इस ओर ध्यान देती? यदि इस जिले में जांच की जाय तो हजारों की तादाद में मुजारे (खेतीहर मजदूर) बेदखल हो चुके नियमों की अवहेलना स्पष्ट होती रही। यही कांग्रेसी नेता जो किसानों की वफादारी की डींगें हांकते आये हैं—क्या कर रहे हैं, किसी से छिपा नहीं है।' ऐसे व्यक्तियों के बाकायदा नाम प्रकाशित करते हुए उन्होंने लिखा "—जो कल तक एकतन्त्र के समर्थक थे, जिन्होंने कल तक आजादी की लड़ाई में रोड़े अटकाये, जो कल तक देश भक्तों के खिलाफ अपने स्वार्थों से वशीभूत होकर राजाओं की जय बोला करते थे, वे आज ट्रैक्टरों द्वारा खेती कर किसानों को बेदखल कर रहे हैं, सरकारी आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं।——

राज्य सरकार ने यह कानून भी बनाया था कि जिन जमींदारों की जमीन खेती के लिए भूमिहीन किसानों को दी जावेगी उन्हें जमींदारों को फसल की उपज का छटा हिस्सा देना होगा। इस बारे में अपने सम्पादकीय (22 मार्च, 1952)— पैदावार के छटे हिस्से का हकदार कौन? में कमलनयन जी ने पूछा कि जिनके पास कारखानों, व्यापार अच्छी नौकरी से अच्छी आमदनी है वे, या वे जिनके पास सिर्फ 10 20 मुरब्बा जमीन ही रह गई हो?

21 जून, 1952 के सम्पादकीय किसान समस्या के अन्तर्गत आरजी काश्त तकसीम (खेती के लिए भूमि का अस्थाई वितरण) के बारे में उन्होंने लिखा था आरजी काश्त में प्रमुखता भूमिहीन को मिलनी चाहिये। इसकी जांच पड़ताल बड़ी गम्भीरता से होनी चाहिए।—— आरजी काश्त बटवारा बंद हो ऐसी मांग न थी, बल्कि अन्यायपूर्ण तकसीम न हो ऐसा वांछनीय था। सरकारी अधिकारियों ने अपने स्वार्थ के अनुकूल उस मांग की व्याख्या की है। हम उन्हें विनम्र शब्दों में निवेदन करना चाहते हैं कि समय की गतिविधि को समझें। इसी में उनका और देश का कल्याण है।"

एक अन्य स्थान पर उन्होंने लिखा सरकार भी बड़ा पक्षपात पूर्ण रवैया अपनाये हुए है। वितरण कमेटी में उन्हीं के भक्त जमे हुए हैं। सही ढंग से जमीन का बटवारा होना असंभव है।' अनियमित भूमि वितरण के अनेक उदाहरण उन्होंने नाम व भूमि की मात्रा देकर अखबार में प्रकाशित भी किये। इसलिए उन्होंने किसानों से संगठित होकर संयुक्त मोर्चा बनाने की अपील की।

जिस समर्पित भावना व आक्रोश के साथ वे खेतीहर मजदूरो के लिए लडे, उसी उग्रता से वे कारखानो के मजदूरो के लिए लडे। गगानगर कोई औद्योगिक क्षेत्र नही, तो भी 1951-52 तक यहा छोटे मोटे कारखानो के अलावा कृषि उपज पर आधारित कपडा मिल व चीनी मिल स्थापित हो चुकी थी। तब मजदूर सगठित नही थे और कारखाने के मालिक मनमानी कर उनका शोषण करते थे। मार्च 1952 म कपडा मिल के लिए मजदूर मद्रास स प्रलोभन देकर लाये गये। मालिक का वायदा पूरा न होन पर उन्होन मिल व्यवस्थापका को 8 सूत्री माग पत्र दिया, जिसे एक अधिकारी ने उनके सामने फाडकर फेंक दिया। 3 अप्रेल, 1952 के सीमा स देश क मुख पृष्ठ पर छपा था "उद्योगपति का तानाशाही रवया। पुलिस के बल पर मजदूरा पर लाठी और गोलिया चलान की धमकिया। क्या यह लोकतन्त्र है?'

मिल मालिक ने मिल बद कर मजदूरो की छटनी आरम्भ कर दी। इस पर सीमा सन्देश की प्रतिक्रिया थी 'क्या यह राजस्थान सरकार मजदूरो की दुश्मन है? अधिकारियो की अदूरदर्शिता एव अनुभवहीनता मजदूरो की मौत कर देगी।"

इसी दौरान चीनी मे मदी आने के कारण चीनी मिल के मालिक (तब यह प्राइवेट थी) ने किसानो से मिल मे गन्ना लेना बद कर चीनी मिल भी बद कर दी जिसस इसके मजदूर भी बेकार हो गये।

मई दिवस

'गगानगर, 1 5-52 साढे पाच बजे स्थानीय रोशनी घर से मजदूरो का जलूस श्री गोपाल दास, महा मन्त्री पावर हाउस यूनियन एव कमलनयन सीमा सन्देश क सम्पादक के नेतृत्व मे निकला जो नगर के प्रमुख स्थाना से होते हुए गाधी वाटिका मे पहुँचकर सभा के रूप म परिवर्तित हो गया।' (सा सीमा सन्देश 8 मई, 1952)

मजदूरो के दुघटना मे घायल होने या मर जाने, छटनी साप्ताहिक अवकाश ओवर टाइम आदि मजदूरो की अनेक समस्याओ को उन्होंने अपने अखबार म उठाया। इसकी झलक हमे उनके उस सम्पादकीय से मिल सकती है जिसमे उन्होने सभी श्रेणी के मजदूरो से सगठित होकर एक मजबूत सघ बनाने की सलाह दी थी।

(सम्पादकीय 1 मई, 1952)

जन समस्याओ के लिए लडने वाले

स्थानीय चीनी मिल के शीरे (मोलासस) से निकलने वाली दुगन्ध के प्रति हम सहनशील हो गये लगते हैं मगर इस समस्या को लेकर 1952 के आस पास के वर्षों मे आन्दोलन व सभाए हुई। 29 अप्रेल, 1952 क अक मे मुख पृष्ठ पर सीमा सन्देश म लिखा था खाड मिल से फलने वाली बदबू के खिलाफ प्रगतिशील फ्रन्ट का मोर्चा 19 अप्रेल की सभा म बताया गया कि 'हम

तीन साल से लगातार इस कोशिश म रहे हैं कि कदयू को हमेशा क लिए मिटा दें, हमने आन्दोलन भी जड़े यहां के अधिकारियो ने सदा मिल मालिको का पक्ष लिया, जन साधारण क स्वास्थ्य की चिन्ता कभी नही की।"

मार्च, अप्रेल, मई 1952 म यहा सास्कृतिक मनोरजन के नाम पर लड़कियों द्वारा जिन्दा डास का कार्यक्रम चला जिसका आयोजन बाहर म आय 'डायमड करायटी शो' के मालिको ने किया था। इसम 'गेम ऑफ स्किल' की आड़ मे 'गेम ऑफ चास' यानि खुला जुआ और युवतियो के नाच चलते थे। श्री कमलनयन सहित गगानगर के नागरिको न इसके विरुद्ध एक मोर्चा गठित कर इसका विरोध किया। नागरिका की माग देखते हुए कलेक्टर महादय ने एक बार इस पर रोक भी लगा दी थी मगर यह पुन आरम्भ हो गया था। फिर 22 मई, 1952 मे जागरूक नागरिक इस कार्निवल शो क विरुद्ध पिकेटिंग करने पहुँचे। यहा दोनों पक्षो म मारपीट हुई व पुलिस बुलानी पड़ी। पिकेटिंग अगले तीन रोज भी जारी रही। जन आक्रोश को देखते हुए कलेक्टर को आखिर यह शो बद करवाना पड़ा। सीमा सन्देश ने लगातार 3 माह तक इस जुए व अश्लील नत्यो के विरुद्ध आवाज उठाकर नागरिको म चेतना जगाने का काय किया। ऐसे कुछ समाचारो के शीर्षक "ये गन्धर्व कन्याए जुए घर की शोभा हैं।' 'कार्निवल के विरुद्ध पिकेटिंग प्रारम्भ' जुए जैसा कुकृत्य शीघ्र बद हो' और सम्पादकीय था कला के नाम पर लूट।

जन समस्यायें उठाना पत्रकार का पहला दायित्व है और इसे श्री कमलनयन ने पूरी निष्ठा व लगन से निभाया जिसका आभास विभिन्न समस्याओ पर छपे समाचारो के शीर्षको से हो सकता है। "गगानगर शहर म चोरियो का ताता' पाक मे चोरो का आतक, "खाड मिल म किसानो को परेशान किया जाता है, "वाटर वक्स की आवश्यकता (सम्पादकीय) गरीब दुकानदार और सरकार', "सड़क के अभाव म यात्रियो को असुविधा "नोहर भादरा के अकाल पीड़ित गाव छोड़कर जाने लगे' नगर पालिका की अव्यवस्था' 'स्वास्थ्य विभाग ध्यान दें" 'तहबाजारी वालो के साथ इन्साफ हो', 'किसानों पर जमीदारो का अत्याचार 'गरीब चपरासी आज भी गुलामी म जकड़ा हुआ है', "पोस्ट आफिस की दयनीय स्थिति, "क्या सप्लाई विभाग अकाल को बढ़ावा देने का है", 'कृषि विभाग की धाधले बाजी, 'लोहे का कोटा सरे आम ब्लैक' "वाटर वक्स का काय शीघ्र आरम्भ' राजस्थान मे शिक्षा का अभाव" महकमा नहर या लूट घर", '12 पाकिस्तानी भारत म दिन दहाड़े कत्ल 'क्या पुलिस अधिकारी डाकुओ के सरक्षक हैं' इन्टरव्यू म पक्षपात व आपाधापी का जोर 'डाक्टर की धाधलेबाजी" 'बिजली घर की अव्यवस्था' 'रेलवे टिकट घर म अव्यवस्था", "महकमा जकात व आबकारी मे जन-शोषण', 'स्थानीय अस्पताल म गरीबो का कोई नही 'शिक्षा विभाग रसातल की ओर, 'छात्रों द्वारा डिग्री कालेज की माग', "गगानगर म मकानों की समस्या" 'आखिर ट्राफिक इस्पेक्टर किस मज की दवा है", "कारखाना म छुट्टी मजाक, 'रेल विभाग म अधेर 'सफाई के प्रति उपेक्षा क्यो, को ओपरेटिव विभाग तानाशाही की ओर।"

राष्ट्रीय सकट मे सीमान्त पत्रकार की भूमिका

चीनी आक्रमण के समय सीमा सन्देश ने अपने दायित्व को भली प्रकार निभाया। इस बारे मे लेख, सम्पादकीय व समाचार छापकर ही नहीं बल्कि इस सकट की घडी म देश के लिए बढ चढ कर करने का आह्वान भी किया। 15 नवम्बर 1962 के अक मे प्रथम पृष्ठ पर मुख्य समाचार का शीर्षक था "जिला गगानगर स 2 लाख रुपये राष्ट्रीय सुरक्षा कोष मे जमा। सम्पन्न एव समृद्धिशील क्षेत्र मे ये आकडे उत्साह पूर्ण नहीं। 22 नवम्बर, 1962 के अक म प्रथम समाचार का शीर्षक था "राजस्थान के भामाशाह आज कृपण क्यो ? तथा कथित दानवीरो का पजाब ने पछाड दिया। इस क्षेत्र मे भ्रष्ट अधिकारी, व्यापारी, बडे जमीदार, ठेकेदार और तथाकथित नेता मौन क्यो।' ऐसी चुभती बात कहकर वे स्थानीय नागरिको को राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के लिए अधिक धन राशि जुटाने की प्रेरणा देते थे। उन्होने राष्ट्रीय सुरक्षा कोष व मुख्य मन्त्री सैनिक कल्याण कोष मे दान देने वालो के नाम प्रकाशित कर उन्हे प्रोत्साहित किया। अनेक दानियो के फोटो प्रकाशित कर दूसरो को प्रेरित किया। दो-तीन अवसरो पर जिले से 5-5, 7-7 लाख रुपये सुरक्षा कोष व सैनिक कल्याण कोष के लिए मुख्य मन्त्री को भेंट किये गये और दानदाताओ के नाम सीमा सन्देश मे प्रकाशित हुए। उन्होने देश वासियो को लेखो के माध्यम से बताया—आखिर यह लडाई हम क्यो लड रहे हैं ? इस प्रश्न के उत्तर मे उन्होने लिखा—"राष्ट्रीय सम्मान, आत्मरक्षा, प्रजातन्त्र को जीवित रखने, धर्म सस्कृति की रक्षार्थ एव आर्थिक विकास के लिए हम लड रहे हैं।'

अपने एक सम्पादकीय (22 नवम्बर 1962) 'आक्रमणकारी चीन" के अतर्गत उन्होंने हतोत्साहित होने वाले वातावरण मे भी देशवासियो को धीरज बधाते हुए लिखा था 'सरकार को सुरक्षा नीति मे दृढता अपनानी चाहिए।

सोने के तीन तीन तुलादान

"चीनी आक्रमण के सकट काल मे सीमा सन्देश ने समय-समय पर गगानगर क्षेत्र के वासियो को जो आह्वान किया उसका परिणाम बहुत ही उत्साहजनक रहा। इतना उत्साहजनक कि शायद पूरे भारत मे इस आकार मे इसने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस जिले का यह गौरव रहा कि उसने तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू और उनकी बेटी व पूर्व काग्रेस अध्यक्षा श्रीमती इन्दिरा गाधी तथा केन्द्रीय वित्त मन्त्री मोरार जी भाई देसाई को तीन अलग समारोहो मे उनके भार के बराबर सोने से तोला। इसके अलावा लाखो रुपये भी दिये। इस सम्बन्ध मे सीमा सन्देश (17 जनवरी, 1963) ने अपने मुख पृष्ठ पर 'राष्ट्रीय रक्षा कोष मे दान की होड मे गगानगर का गौरवपूर्ण स्थान" के अन्तर्गत प्रकाश डाला गया था।

सीमा सन्देश पाक सीमान्त क जिले गगानगर के जागृत, दानी और राष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत जनमन की छलकती राष्ट्रीयता की भूरि-भूरि प्रशसा श्रीमती इदिरा गाधी क समक्ष करने को विवश है।

'ऐसा महसूस होता है कि जसे गगानगर के नागरिक डके की चोट पर यह प्रमाणित कर देना चाहते है, कि देश पहले है शेष बाद मे। हमारा रोम रोम देश के लिए है देश की शान के लिए है देश की आजादी के लिए है, गगानगर जिले स अब तक लगभग 21 लाख रुपया मनो सोना और अन्य सामान दिया जा चुका है और अभी 51 लाख रुपये का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।" [17-1-1963]

1965 म सितम्बर माह म पाकिस्तानी हमले के समय सीमा सन्देश के 9 सितम्बर, 1965 के अक मे मुख्य पृष्ठ पर कमलनयन जी ने सीमा क्षेत्र के नागरिको का हौसला बुलन्द करते हुए पहला समाचार छपा था।

'सीमा क्षेत्र निवासियो का मनोबल दृढ पाक हमलावारो का मुह तोड जवाब दिया जावेगा।' इसके अन्तगत उन्होने लिखा 'सीमा क्षेत्र के विभिन्न स्थानो से प्राप्त समाचारो से ज्ञात हुआ है कि सीमा स्थित ग्राम निवासियो का मनोबल दृढ है।" इस अवसर पर सम्पादकीय म उन्होने लिखा 'आज हमारी ही दया पर जन्म, हमारे ही द्वारा निर्मित राष्ट्र ने हमसे सशस्त्र शत्रुता मोल ले ली है—हमे पराभूत करने, हमे अपमानित करने, हमे समाप्त करने की उसने सारी दुनिया के सामने शपथ ले ली है। शत्रु छली, कपटी और विश्वासघाती है। एस शत्रु का सामना हम पूर्ण सावधानी, साहस एव शक्ति से करना है। (9 सितम्बर, 1965) आज हम गम्भीर स्थिति से गुजर रहे हैं। हमारे जल, स्थल एव नभ के सनिक बहादुरी से साहस के साथ युद्ध मे जूझ रहे हैं। उनकी वीरता पर देशवासियो का कत्तव्य हो जाता है कि हम इस सकट काल म भारत सरकार का पूर्ण समर्थन ही नही करें, अपितु देश रक्षा क प्रत्येक काय मे तन, मन एव धन स सक्रिय सहयोग दें, ताकि हमारे सनिक अधिक उत्साह एव वीरता स अपने कत्तव्य मे जुटे रह।" (16 सितम्बर 1965) इतना ही नही, इस दौरान उन्होने गगानगर क्षेत्र म काम कर रहे पाक जासूसो का भी भडा फोड किया। 2 सितम्बर, 1965 क अक म प्रमुखता स छपा था पाक गुप्तचर खान मुहम्मद के षड्यन्त्र का पर्दाफाश———तिरगे झडे की आड म शिक्षा सस्था के नाम पर सुन्दर युवतियो एव पाक समाचार भेजने क केन्द्र पर पुलिस का सफल छापा। अनेक रहस्य खुलने की सम्भावना। दूसरी ओर उन्होने इस क्षेत्र के उन नागरिको की पीठ थपथपाई जिन्होने देश की सुरक्षा म ठोस योगदान दिया। 16 सितम्बर 1965 के सीमा सन्देश मे पहले समाचार का शीर्षक था 2 पाक लुटेरे गिरफ्तार श्री गुरदयाल मजहबी का अभूतपूर्व साहस। विद्यार्थियो के योगदान की चर्चा करते हुए अखबार म छपा था कालेज छात्र छात्राओ द्वारा पाक आक्रमण के विरुद्ध विशाल प्रदशन अपने अखबार मे उन्होने उन डरपोक सामाजिको को भी लताडा जो युद्ध काल म यहा स भाग गये थे या कालाबाजारी करते थे। उन्होने लिखा था 'गगानगर स भागने वालो एव काला बाजार करने वालो का सामाजिक व आर्थिक बहिष्कार किया जावे।

युद्ध काल मे उनकी प्रेरणादायक भूमिका को देखते हुए राजस्थान सरकार ने उन्हे राजस्थान नागरिक परिषद की जन सम्पर्क समिति का सदस्य बनाया।

पूरी सरकार से दस वर्ष तक अकेले लडे

सरकारी भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपनी तीखी लेखनी के माध्यम से उन्होंने सदा ही उस पर तीव्र प्रहार किया। पुलिस, सीमा पुलिस प्रशासन सिस्टम, अस्पताल पोस्ट आफिस, रेल आदि जिनका सीधा सम्बन्ध जन सेवाओ से है म व्याप्त कमियो, लोगो की शिकायतो व भ्रष्टाचार को उन्होंने सदा उजागर किया। 1951 से 1970 के दो दशको तक तो पत्रकारिता के क्षेत्र म कमल नयन के सीमा सन्देश का एकाधिकार व एकछत्र राज्य था। वे चाहते तो भ्रष्ट तत्वो से साठ गाठ कर मालामाल हो सकते थे—जमीन जायदाद का अम्बार लगा सकते थे। मगर इन सब प्रलोभनो का त्याग करते हुए उन्होने फटेहाली व सघर्ष का मार्ग ही चुना। भ्रष्टाचार के विरुद्ध य तो उन्होने अनेक युद्ध लडे मगर राजस्थान नहर परियोजना के मुख्य अभियन्ता से उनका सघर्ष न केवल पूरे एक दशक से अधिक समय तक जारी रहा वरन् यह लडाई अदालत तक भी पहुँची।

गगानगर को विकास की ओर ले जाने वाली भाखडा नहर व बाद म राजस्थान नहर के निर्माण का सीमा सन्देश न स्वागत किया तथा शिलान्यास से उद्घाटन तक की अवधि तक उसके सम्बन्ध म प्रमुखता से समाचार दिए। प्रगति का ब्योरा दिया तो उसमे होने वाली कमियो को भी उजागर किया। मगर राजस्थान नहर के चीफ इजीनियर श्री राम नारायण चौधरी को उनकी आलोचना जरा भी न भाई। यद्यपि कमलनयन शर्मा ने सबसे अधिक तथ्य पूर्ण सामग्री इस विषय मे एकत्रित कर प्रकाशित की। उनकी उठ बठ चपरासी से लेकर बडे-बडे अधिकारियो व मन्त्रियो तक थी और पूर्व कर्मचारी नेता होने के कारण सर्विस पेशा लोगो मे उनका विशेष सम्मान व इज्जत थी। इसी के आधार पर उन्हें राजस्थान नहर निर्माण म होने वाली गडबडियो की सूचनाए तथ्यो सहित मिल जाती थी। अपनी खोजपूर्ण खबरो म उन्होने नहर के आर डी नम्बर का हवाला देते हुए लिखा कि क्षेत्र म खुदाई व कम्पेक्शन काय मे गडबड हुई, कहा सबसे खराब इटें लगी, कहा सीमट का मसाला 1/8 के स्थान पर 1/20 का लगा, कहा साईफन टूटा और कहा निर्माण के बाद नहर का किनारा या पुल टूटा। किस प्रकार इस विभाग म केवल चहेते ठेकेदारो (जो एक जाति विशेष व क्षेत्र विशेष के थे) को ठेका देने के लिए निविदाए जानबूझ कर देरी से भेजी जाती थी। मशीन की जरूरत न होते हुए भी केवल कमीशन के लोभ मे मगवाना कसे निर्माण की सामग्री सीमट, लोहा लकडी, पाइप आदि दिल्ली तक भी काले बाजार मे बिकती थी जो एक आध बार पकडी भी गई। अपन लडके के नाम 14 मुरब्बा जमीन हडपने उस पर सरकारी बुलडोजर ट्रक, ट्रक्टर आदि का इस्तेमाल व जमीन की सिंचाई के लिए अवध सख्या मे व आकार मे मोघे लेन के भी चीफ इजीनियर पर स्पष्ट आरोप थे।

ऐसे तथ्य पूर्ण समाचारो के प्रकाशन स भ्रष्ट तत्वो म खलबली मच गयी। उन्होंने सबसे बडे हथियार—विज्ञापन यानि टेन्डर नोटिस का सहारा लिया और धमकाने के लिए चीफ इजीनियर ने

सीमा सन्देश को प्रकाशन के लिए टेन्डर नोटिस भेजने पर विभागीय पाबंदी लगा दी। यद्यपि सरकारी नियमो के अनुसार जिस इलाके मे काम हो रहा हो उसी क्षेत्र के समाचार पत्र म ऐसा प्रकाशन जरूरी है। अनुमान यह लगाया कि छोटा सा पत्र है विज्ञापन न मिलने से भूखो मर जावेगा और गिडगिडा कर माफी माग लेगा और फिर विज्ञापन का अहसान जताकर उसका मुह बद कर दिया जावेगा। मगर ऐसा हुआ नही। नियमानुसार विज्ञापन न मिलने की शिकायत सरकार मे श्री कमलनयन ने अवश्य की मगर इससे अधिक कुछ नहीं। समाचार पत्र म राजस्थान नहर निर्माण म होने वाले भ्रष्टाचार की रिपोर्ट पहले स भी अधिक तीखी हो गई। विज्ञापन बदी का वार खाली जाने लगा तो चीफ इंजिनीयर ने राजस्थान सरकार के माध्यम से सीमा सन्देश के प्रकाशक व प्रधान सम्पादक श्री कमलनयन पर मान हानि व कुछ अन्य धाराओ के तहत मुकदमा जयपुर म दायर किया। अनुमान यही रहा होगा कि जयपुर जाने आने के किराये, होटलो के बिलो, वकीलो की फीस व अदालती खर्च, आने जाने की परेशानी से हताश होकर श्री कमलनयन घुटने टेक देंगे और अदालत से माफी माग कर अपना पीछा छुडा लेंगे। चीफ के पास तो सभी सरकारी साधन व सुविधाए मौजूद थी। मगर उनका यह तीर भी निशाने पर नही बठा। जिद्दी व अपने धुन के पक्के श्री कमलनयन का यह दढ विश्वास था कि व अपने समाचार पत्र म जो लिख रहे हैं व्यक्तिगत जानकारी व तथ्यो के आधार पर लिख रह है और वे सही लिख रहे हैं। फिर पीछे क्यो हटें? पत्रकार क नाते वे जानते थे कि सावजनिक हित के लिए कभी कभी पत्रकारो को इन परिस्थितियो स भी गुजरना पडता है जब अखबार व परिवार भी दाव पर लगाना पडता है। वर्षों तक वे मुकदमा लडते रहे। यद्यपि इस दौरान ऐसे निराशा के क्षण भी आये जब कई जिम्मेदार लोग जिनमे जिले के कुछ विधायक भी थे वायदा करने के बाद भी उनके पक्ष मे या तो पेशी पर अदालत मे पेश नही हुए और यदि पेश हुए भी तो टाल मटोल उत्तर दिए कि उसमे कमलनयन जी का पक्ष जरा भी मजबूत नही होता था। केन्द्र मे लेकर राज्य तक के मन्त्रियो को रजिस्ट्री से आरोप पत्र भेजे मगर उनकी प्राप्ति की सूचना तक नही मिली। राज्य के बारे म तो कारण स्पष्ट था। उच्चतम अफसर, प्रभावशाली जाति का और ऊचे सम्बन्ध और इसके अलावा करीब सभी मन्त्रियो, उच्च अधिकारियो ने अवध रूप से इस नहर क्षेत्र मे जमीन ली हुई थी, जिसकी सिंचाई चीफ साहब की मेहरबानी के बिना नही हो सकती थी।

ऐसी घोर विपरीत परिस्थितियो म भी उन्होने हार नही मानी। उन्हे झुकना मजूर नही था, टूट सकते थे। कुछ शुभ चिन्तक अफसरो के समझाने पर भी नही माने वे। मुकदमा इतना लम्बा हो गया कि इस बीच 1 जुलाई 1967 को चीफ इंजीनियर श्री चौधरी रिटायर हो गये। कमल नयन जी तो भी अडे रहे और बाद तक भ्रष्टाचार के आरोपो का सिलसिला जारी रखा। सा सीमा सन्देश के 7 दिसम्बर 1967 के अक मे प्रकाशित निम्नलिखित समाचार से इस केस की जानकारी मिलती है और पूरे प्रकरण पर भी इससे प्रकाश पडता है

भूतपूव चीफ आर सी पी के———

14 मुरब्बो की जाच हो !

साधनहीन भूमिहीनो के पास बुलडोजर, ट्रैक्टर व मशीनें कहा से ?

सूरतगढ शाखा को प्राथमिकता से पानी कसे मिला

क्या सिचाई, गृह एव मुख्य सचिव ध्यान देंगे ?

(हमारे प्रतिनिधि द्वारा)

सूरतगढ—

सीमा सन्देश इन कालमा द्वारा गत 1958 स राज्य एव भारत सरकार का ध्यान 'राजस्थान नहर परियोजना के निमाण विकास एव दोष पूण कार्यों की ओर निरन्तर दिलाता आ रहा है। स्व पत के शिलान्यास उद्घाटन समारोह से लेकर आज तक (11 अक्टूबर 1961) जब तत्कालीन उपराष्ट्रपति सर्वे पल्ली श्री राधाकृष्णन ने सव प्रथम नौरंगदेशर शाखा का जलप्रवाह किया तव एक वृहत 'राजस्थान नहर' विशेषाक भी प्रकाशित किया गया।

आपके पत्र मे 1963 से लेकर अव तक अनेक विषयो पर प्रकाश डाला गया है। यथा भू पू चीफ इजीनियर श्री रामनारायण चौधरी के सेवाकाल म भ्रष्टाचार, पक्षपात एव अनियमितताओ की अनेक शिकायतें रही हैं। जनलेखा समिति, प्राक्कलन समिति एव सम्बधित आडिट रिपोट के अध्ययन से अनेक तथ्यो का रहस्योद्घाटन होता है। विधानसभा म भी भू पू चीफ के काय कलापा एव सावजनिक कार्यों की आलोचना की गई है। भारी मशीनो को अनावश्यक खरीदने और उनका उपयोग तक न होने के आरोप है। निर्माण कार्यों को दोषपूण बनाने और शिकायतो के बावजूद जाच तक न करने के आरोप भी है। आप पर अपन पद का दुरुपयोग करने के आराप भी हैं। आपने 14 मुरब्बे सिंचित भूमि कसे फर्जी एलाट कराई गई है इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है—

इस सम्बन्ध मे केन्द्रीय सरकार के गृह मन्त्री, सिचाई मन्त्री, सतर्कता आयोग राजस्थान प्रदेश के मुख्य मन्त्री, जन अभियोग निराकरण, अध्यक्ष राजस्थान केनाल बोड आदि सबके रजिस्टड पत्रो द्वारा आरोप पत्र भेजने के उपरान्त कोई प्राप्ति सूचना तक उपलब्ध नही है।

श्री आर एन चौधरी भू पू चीफ आर सी पी के बडे सुपुत्र की गाव ढाबा के एक धनी, प्रतिष्ठित एव प्रसिद्ध चाधरी के यहा शादी हुई है। उस जमीदार न 4 मुरब्बे भूमि भी अपनी पुत्री (या दामाद) के नाम धमाथ दिये है जो अन कमाँडेड थे बाद मे ठाकर लगा कर अधिक पानी लगने लगा। गाव वाला ने, जिनके खेत अन्त म (टेल पर) थे जि है पहल स कम पानी मिलता था विराध किया पर कौन सुनता था ? तत्कालीन एक्स ई एन श्री माधाराम थ। आज तक जाच नही हुई।

यहा तक ही नही उक्त जमीदार उस समय ढाबा ग्राम पचायत (हनुमानगढ) का सरपच भी था। सुअवसर देख कर, जोधपुर के निवासी है या फर्जी हैं, कौन जाने, अपने सगे (आर एन चौधरी) के दबाव मे 7–8 व्यक्तियो को ढाबा का पुराना भूमिहीन होने का फर्जी प्रमाण पत्र दे डाला। और अवैध कृषि योग्य भूमि अलाट की गई। वे निम्न व्यक्ति हैं—

(1) कालाराम वल्द हेमाराम जाट साकिन ढाबा त हनुमानगढ भूमिहीन। मु न 236/391(25) 237/291/25) कुल 50 बीघा।

(2) मागीलाल वल्द गोकुलदास जाट सा ढाबा त हनुमानगढ भूमिहीन। मु न 236/392/25), 237/392/24।।) कुल 49।।) बीघा।

(3) श्री भवरसिंह वल्द उम्मेद सिंह जाट सा ढाबा ते हनुमानगढ भूमिहीन। मु न 236/391/25) 237/391/24।।) कुल 49।। बीघा।

(4) रामचन्द्र वल्द सूरजमल जाट साकिन ढाबा त हनुमानगढ भूमिहीन। मु न 238/391/14) 239/391/24।। 236/394/10 कुल 48।।) बीघा।

(5) गनपतसिंह वल्द उम्मेदसिंह जाट सा ढाबा तहसील हनुमानगढ भूमिहीन मु न 238/392/25) 239/392/24।।) कुल 49।।) बीघा।

(6) भोपालसिंह वल्द बलदेवसिंह जाट सा ढाबा ते हनुमानगढ भूमिहीन मु न 238/239/25), 293/293/24।। कुल 49।। बीघा।

(7) किशारसिंह वल्द बलदेवसिंह जाट सा ढाबा ते हनुमानगढ भूमिहीन मु न 236/294/7।)3 238/294/20) 236/394/12) कुल 49)3 बीघा।

इस प्रकार कुल 14 मुरब्बा पर आर एन चौधरी का कब्जा बताया जाता है। जिसकी जाच चिरकाल से अपेक्षित है।

ये भूमि कुल 14 मुरब्बे बताई जाती है। ये चक 8 ए पी डी (अनुपगढ सूरतगढ आर सी पी पर स्थित है)।

इसका प्रबन्ध श्री आर एन चौधरी भू पू चीफ आर सी पी के सुपुत्र श्री अजीतसिंह की देख रेख म खेती होती है। आश्चय तो यह है इन 14 मुरब्बो के लिए जो 8 ए पी डी माया है, अपगाढ़त बडा है। इन मुरब्बा म आर सी पी के बुलडोजर ट्रेक्टर एव अन्य मशीनें काम करती रही हैं। इन मशीना की मरम्मत करने वाले वकशाप सूरतगढ आदि से आते रहे है। आर सी पी सूरतगढ माया पक्की होनी चाहिए थी। यह माया वष म 3–4 बार टूटती रही है। राममरा का पक्का पुल 2-3 बार टूट चुका है।

इन 14 मुरब्बा को जब राजस्थान उपनिवेश विभाग मे उक्त तथाकथित फर्जी भूमिहीन के नाम अब अलाट किये गये, स्व श्री मोहयमसिंह असि डाइरेक्टर अवकाश प्राप्त कर असि सूरजकरण हुप ने मिमल पर रिमार्क भी दिया। ईमानदार, योग्य एव कुशल प्रशासक अधिकारी श्री एन सी भटनागर ने न मालूम त्रुटिपूर्ण कागजो के बावजूद कैसे 14 मुरब्बे अलाट कर दिय।

आर एन चौधरी जब इस क्षेत्र मे पधारे तो यहा अवश्य विराजते रहे हैं।

उक्त चक 8 ए पी डी के 14 मुरब्बो की समतल एव उपजाऊ भूमि क्यो बन गई है ? भूमिहीन उपरोक्त 7 व्यक्ति बुलडोजर ट्रेक्टर एव अन्य मशीनें वहा से लाये ? क्या आर सी पी विभाग ने किराये पर दी ? यदि ऐसा नही तो उक्त मूल्यवान मशीनो का लगातार प्रयोग कम होता रहा ? [7 तिसम्बर, 1957]

चौधरी के अवकाश प्राप्त करने के बाद टेंडर नोटिस प्रकाशन की रोक भी खत्म हो गयी तो भी उन्होने अपना सघर्ष जारी रखा। अपनी सूचनाओ की सच्चाई पर उन्ह पूरा विश्वास था। फिर चाहे नतीजा जो भी हो। अखबार व परिवार दोनो के लिए सक्रमण काल था। श्री चौधरी की सेवा निवृत्ति के बाद सरकार भी इस मुकदमे से अपनी जान छुडाना चाहती थी। शायद यह सोच कर कि श्री कमल नयन के पास जानकारी तथ्यपूर्ण है और वह तो पीछे हटेगा नही सरकार ने यह कहकर मुकदमा वापस लिया कि श्री चौधरी की सेवा निवति के बाद सरकार अब इस मुकदमे को जारी रखने को उत्सुक नही है। सघर्षशील पत्रकार श्री कमल नयन का सभवत यह सबसे लम्बा व सबसे कठिन सघर्ष था जिसमे वे अतत कसौटी पर खरे उतरे। वे सरकार से भ्रष्टाचार खत्म तो शायद नही करवा पाये मगर पूरी सरकार के सामने एक अकेले साधनहीन व्यक्ति का इतने समय तक सम्मानपूर्वक डटे रहना एक ऐसी उपलब्धि है जिस पर किसी भी व्यक्ति का नाज हो सकता है। किसी भी पत्रकार को गर्व हो सकता है। उल्लेखनीय है कि मुकदमा वापस लेने के बाद भी उन्होंने इस विभाग (उपनिवेशन सहित) व अन्य विभागो मे फली अव्यवस्था अनियमितता व भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपना जेहाद जारी रखा। सेवा निवति के बाद श्री चौधरी द्वारा भी व्यक्तिगत रूप से श्री कमल नयन पर मानहानि का दावा न करना भी यही प्रमाणित करता है कि वे श्री कमल नयन द्वारा लगाये गये आरोपो का जवाब देने की स्थिति मे नही थे।

लडाई अन्तिम सास तक

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों तक भी उन्होने गलत कामो के विरुद्ध लडने की भावना को तिलाजलि नही दी। नगर विकास न्यास के विकास कार्यों को उन्होने सराहा तो मगर इसके पीछे छिपे भ्रष्टाचार को वे सहन न कर सके। न्यास ने गरीब लोगो को रियायती दर पर जो रिहायशी भूखण्ड उपलब्ध करवाये उनके पट्टो पर न्यास अध्यक्ष (जो इस क्षेत्र के शक्तिशाली

विधायक भी थे) ने प्रधान मन्त्री, राज्य के मुख्य मन्त्री व स्वायत्त शासन मन्त्री के साथ अपना फोटो भी छपवाया जो उनकी सामन्ती मनोवृत्ति का परिचायक था। प्रजातन्त्र म ऐसे व्यवहार को कोई भी स्वाभिमानी नागरिक स्वीकार नहीं करेगा। सीमा सन्देश के माध्यम से श्री कमल नयन ने इसका विरोध किया। इस प्रकरण की चर्चा राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं म भी हुई। विधान सभा व राजस्थान हाईकोर्ट म भी इन न्यास अध्यक्ष व सरकार की अच्छी खिंचाई हुई।

जिस निर्माण कार्य का उद्देश्य नगर का विकास न होकर व्यक्तिगत लाभ हो जाता है, तो उसे कभी भी जनहित का काम नहीं कहा जा सकता। विधायक होने का लाभ उठाते हुए न्यास अध्यक्ष न विभिन्न सरकारी एजेंसियो के माध्यम स न्यास के लिए भारी मात्रा म ऋण लिये मगर इन्हें ड्रेनेज वाटर वर्क्स जैसे उपयोगी कार्यों पर लगाने के स्थान पर नगर मे चौराहा पर व मूर्तियां लगाने जैसे दिखावटी कार्यों पर खर्च किया। 'यू आई टी गंगानगर द्वारा आत्मघात के प्रयास जारी दुकानो का खरीददार नहीं लाखो रुपया का घाटा' (8 3 84) इसका अर्थ यह नहीं कि न्यास के विकास कार्यो को सीमा सन्देश ने प्रचारित नहीं किया। उदाहरणार्थ इस वर्ष न्यास विकास कार्यों पर दो करोड रु खर्च करेगा। '(12-6 1984) समाचार न्यास के पक्ष मे था।

क्षेत्र का धन गन्दी बस्तियों के सुधार पर न लगाकर दूसरे कामो पर लगाया गया। बिजली व मरकरी सोडियम लाईट लम्प के खम्बे जरूरत स ज्यादा संख्या मे लगाने के लिए बहुत पास-पास लगाये गये, जिससे स्पष्ट होता है कि इसका उद्देश्य अंधेरा मिटाने से अधिक कमीशन पकाना था। यह खरीद बहुत महंगी दरो पर विवादास्पद परिस्थितियों म हुई थी। इसकी निरर्थकता अब स्पष्ट हो गई क्योंकि 3 मे से एक खम्बे का बल्ब ही जलता है। न्यास द्वारा जो निर्माण कार्य कराये गये वे बहुत घटिया स्तर के थे इसलिये उनकी टूट फूट अक्सर होती रहती है। न्यास द्वारा निर्मित नाला व उस पर बनी नवाज दुकानें बरसात मे बह कर ढेर हो गई। ऐसे स्तरहीन निर्माण कार्यों व न्यास की अनियमितता के बारे म उन्होंने दसियों बार बहुत स्पष्ट रूप से लिखा जैसे—लूट खसोट स यू आई टी दिवालिया (6 2-84) यू आई टी पर भ्रष्टाचार का मुकदमा टाल मटोल के बावजूद रिकार्ड तलबी के आदेश (7 3 84) आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों को नाम मात्र कीमत पर जो मकान दिये गये थे नी उनके असली हकदारो को न देकर अध्यक्ष न अपने चहेते न्यास कर्मचारियो व राजनीतिक रूप स करीबी लोगो को फर्जी नामो स दिये। पुरानी आबादी म बिना टेंडर के ही जब डिग्गी पूर्ति का काम न्यास न शुरू कराया तो उस अवैध बताते हुए श्री कमलनयन ने न केवल अपने अखबार म इसका विरोध किया वरन् लोगो के दर्दपूर्ण की शिकायत अपनी डायरी मे भी यू दर्ज की 'आज मैं डिग्गी पूर्ति पुरानी आबादी के सम्बन्ध म एस पी ए टी एम से मिला। दूसरे कांग्रेसी नेताओं म से कोई भी इस बात के लिए संघर्ष ना क्या बात करने मे घबराते है। बड़ा अजीब समय आ गया (26 9-1983) यह स्वाभाविक ही था कि शक्तिशाली विधायक अध्यक्ष न आलोचना का मुंह बंद करने के लिए सीमा सन्देश को विज्ञापनो स यथा सम्भव वंचित रखा। अध्यक्ष महोदय अपने प्रति व्यक्तिगत निष्ठा व जी हुजूरी की आकांक्षा रखते थे जिसकी अपेक्षा कमल नयन जैसे अक्खड व स्पष्टवादी व्यक्ति स नहीं की सकती थी। 1981 स मरते दम तक उन्होंने न्यास म बहुत कम विज्ञापन मिलने के घाटे को भुगता। अपने अधिकारों के

ी इन्दिरा गांधी के गंगानगर जिले की यात्रा के दौरान दायीं ओर श्री कमलनयन शर्मा तथा बायीं ओर

जयपुर मे सीमा स देश कार्यालय स्थापना (1966) के अवसर पर आयोजित समारोह मे मुख्य अतिथि मुख्यमत्री मोहनलाल सुखाडिया का स्वागत करते हुए श्री कमलनयन शर्मा ।
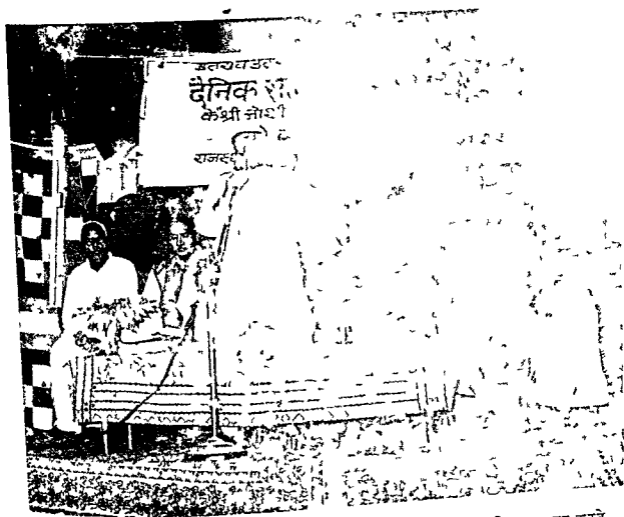
दैनिक सीमा संदेश के विशेषांक के विमोचन समारोह (1976) में अपने विचार प्रकट करते हुए मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी। मंच पर बायी ओर श्री कमलनयन शर्मा।

बारे मे उन्होंने सरकार से शिकायत अवश्य की मगर प्रशासन व शासन राजनीतिक दबावो के आगे पगु बन जाता है। न्यास मे होने वाले घोटालो की शिकायतें उन्होने सरकार को अपने अखबार की कटिंग के साथ मन्त्री व सचिव स्तर पर भेजी मगर वे दबा दी ग०। मगर बाद मे जो जाच हुई उनसे कमलनयन जी द्वारा लगाये गये आरोप सरकारी जाच मे सही साबित हुए क्योकि तब आप विधायक न रहे और बाद मे अध्यक्ष के पद से भी हटा दिये गये। जाच मे शामिल अशोक नगर के करीब सभी मकानो का आवटन फर्जी पाया गया। विधान सभा चुनाव हारने म सीमा सन्देश की काफी भूमिका रही क्योकि सीमा सन्देश द्वारा मतदाता उनकी कारगुजारियो व निरकुश व्यवहार स भली भाति परिचित हो चुके थे। जनता मे उनकी खराब छवि को देखते हुए सरकार न भा केन्द्र मे भारी राजनीतिक दबाव के बावजूद उन्हे अध्यक्ष पद पर बने रहन की आज्ञा नही दी। यह सघर्ष भी लम्बा चला और समाचार पत्र को काफी आर्थिक हानि उठानी पडी मगर अन्तत वे जनमत को जागृत कर अपना उद्देश्य प्राप्त करने मे सफल रहे।

तस्करी, उग्रवाद और सीमान्त पत्रकारिता

अपने समाचार पत्र "सीमा सन्देश के नाम के अनुरूप सीमान्त पत्रकार के रूप म अपन उत्तरदायित्व को कमलनयन जी ने पूरी निष्ठा व ईमानदारी से निभाया।

आरम्भ मे अन्त तक उन्होंने तस्करी की घटनाओ को प्रकाश मे लाकर प्रशासन व जनता का ध्यान राष्ट्र विरोधी गतिविधिया की ओर आकृष्ट किया। सीमा सदेश के कुछ समाचार शीर्षक— 'कपडे की स्मगलिंग जोरो पर', 'पाक चोरो का उत्पात—अनेक पशु चुराय जाने लगे" दस सेर अफीम बरामद डी सी का सराहनीय काय" "राजस्थान व पाकिस्तानी सीमा पर हत्याए— तस्कर व्यापार—लूट खसोट, चौरी डकैती मूल कारण पुलिस की अकमण्यता, पाक सीमा पर अफीम व सोने का अवध-आयात आर० ए० सी०, पुलिस एव केन्द्रीय अधिकारी मौन क्यो कुख्यात पाक तस्कर व्यापारी गिरफ्तार तीस हजार रु० की अफीम बरामद रहस्योद्घाटन की सभावना' रहस्यमय मकान को खोदा जा रहा है। एक लाख के सोन अफीम व असलो की बरामदगी कई रहस्यपूर्ण व्यक्तियो के हाथ की सम्भावना ' आदि।

समाचारो के अलावा श्री कमलनयन ने सम्पादकीयो, अग्रलेखो द्वारा भी इस मुद्दे को प्रमुखता स उठाया। ' तस्कर व्यापार और नागरिक ' सम्पादकीय (22 5 58) मे तस्करी के विषय म लिखा जिले म इनके सैकडो केन्द्र हैं। अब तक जो गिरफ्तारिया हुइ उनके आधार पर काफी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कुछ ऐसे तत्व है जो उच्च स्तरीय नेताओ स सम्बधित हैं। इस विषय म कई तस्कर व्यापारिया के बयान काम के हैं, चाहे वे पजाब सरकार के रिकार्ड म हो चाहे राजस्थान सरकार के। यहा तो केन्द्रीय गुप्तचर विभाग भी इस कुकृत्य से मुक्त नही। इस विचार की पुष्टि भी जल्द ही हो गई। अगस्त 1958 को सीमा सन्देश मे मुख पृष्ठ पर यह समाचार छपा "दो अधिकारी, तस्कर व्यापार के अपराध मे गिरफ्तार।

13 जून, 1957 के अक मे मुख पृष्ठ पर स्थानीय लोक सभा सदस्य श्री पन्ना लाल बारु पाल के ससद म वक्तव्य के आधार पर उन्होने लिखा था "राजस्थान के पाकिस्तान से निकट इलाके के भिन्न भिन्न क्षेत्रो मे पाकिस्तानी लुटेरो व भारत मे रहने वाले दलालो का जोर बढता जा रहा है जिसका मुख्य कारण पुलिस विभाग की कर्तव्य हीनता, लोभवत्तिवश पाकिस्तानी एजेन्टो एव राष्ट्रद्रोही व समाज विरोधी हरकतो से साठ-गाठ होना है। ये हरकतें मुख्यत बीकानेर डिवीजन के गगानगर जिले की तहसील—करनपुर, रायसिहनगर अनूपगढ और सूरतगढ तथा पूगल, बसलपुर, बल्लर फूलडा, छतरगढ, सियासर, रोजडी तथा इसी प्रकार जसलमेर, बाडमेर जिले के सीमा स्थित गावो मे होती है।"————

"————जिन पुलिस अधिकारियो द्वारा सरकार उक्त राष्ट्रद्रोही कार्यों का रुकवाने का प्रयत्न कर रही है—वे पाकिस्तानी लुटेरो तथा भारत म रहने वाले एजेन्टो से मिलकर ऐसे घणित काय करवाते हैं अथवा करने के बाद मिल जाते है जिसके फलस्वरूप आये दिन सकडा मवेशी भारतीय सीमा से पार किये जाते हैं और वहा से सोना ऊन, नमक आदि का तस्कर व्यापार होता है। कभी-कभी उनका सौदा ठीक न पटने क कारण उनका पकड भी लिया जाता है तो स्वाथ सिद्धि होने पर उनका वसे ही छाड दिया जाता है———— तस्करी राकन के लिए सीमा पर मे आर०ए०सी० (राजस्थान आम्ड कास्टेबुलरी) को हटाकर वहा फौज तैनात कर दी जावे और वहा के सदेहास्पद नागरिको को वहा से हटाया जावें।

बाद के वर्षों मे भी श्री कमलनयन ने तस्करी विरोधी अभियान सीमा स देश क माध्यम से जारी रखा। उल्लेखनीय है गत 5-7 वर्षों म इस क्षेत्र (विशेषकर अनूपगढ तहसील) म नशीले पदार्थों सोने व हथियार की तस्करी क कुछ केस पकडे जाने सम्बधी समाचार राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित व प्रसारित हुए। पजाब के आतकवादियो को पाकिस्तानी हथियार भी गगानगर की सीमा से जाते थे, यह तथ्य ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार के बाद हुई जाच रिपोट से स्पष्ट हो गया। मगर सीमा स देश के पुरान अको पर नजर डाल तो पता चलता है कि इन गतिविधियो के प्रति इसके प्रधान सम्पादक श्री कमलनयन ने सरकार व जनता का पहले ही आगाह कर दिया था। इसकी प्रमाणिकता के लिए पेश है एक उदाहरण—

जिले मे उग्रवादी

गगानगर जिले मे उग्रवादियो की गतिविधिया किसी प्रभावी नियत्रण के अभाव म अपनी चरम सीमा पर हैं। गत कुछ दिनो मे पाकिस्तान से आई 200 देसी पिस्तालें व 2 000 कारतूस तथा 1 800 तलवारें सक्रिय उग्रवादियो मे वितरित होने के चर्चे आम हैं। एक उच्च स्तरीय अधिकारी जिस पर पाकिस्तान से हथियार तस्करी द्वारा पजाब के उग्रवादियो को सप्लाइ करने का आराप था उसका तबादला या अन्य कार्यवाही दिल्ली के बडे आदमियो द्वारा रोकने की अफवाहें गम है। यह अफसर सीमा पर तनात है। पुलिस को उस मेटाडोर की तलाश है जा यह हथियार लेने आती है।

एच० माईनर के एक चक मे सक्रिय उग्रवादियो के रहन की खबरें ह। उग्रवादियो के केन्द्र कौन कौन से हैं यह जिले का बच्चा-बच्चा जानता है सरकार व प्रशासन हो सकता है न जानत हो।"

(दनिक सीमा सदेश दि० 21 अप्रेल, 1984 प्रथम पृष्ठ)

जो बात सरकार को ब्ल्यू स्टार ऑपरेशन के बाद जाच कमीशन बठा कर मालूम पडी वह तथ्य सीमान्त पत्रकार श्री कमलनयन शर्मा ने अपनी पैनी दष्टि से परखकर अपने अखबार के माध्यम से जनता व सरकार को बता दिया था, यदि सरकार फिर भी न चेते ता सरकार की मर्जी।

इस सदभ मे घटी एक घटना उल्लेखनीय है।

सीमा पर होने वाली सभी गतिविधियो पर नजर रखन के लिए सरकार की कइ एजन्सिया गगानगर म कई वर्षों से कायरत रही हैं और अब भी काय कर रही हैं। इस क्षेत्र व लोगो की व्यापक जानकारी रखने वाले श्री कमलनयन से इन एजेसियो के अधिकारी सम्पक रखते थे और उन पर विचार विमश करते थे। कमलनयन जी से उन्हें काफी जानकारी मिल जाती थी।

एक बार कमलनयन जी किसी दूसरे मूड मे बठे थे ता एक छोटे अधिकारी ने बडे अधिकारी का हवाला देकर कुछ सूचना प्राप्त करनी चाही तो कमलनयन न उन्हे बडी तीखी बात कही, "तुम लोग सदा मुझ से ही सूचनाए लेकर जाते हो। अपनी काई सूचना मुझे नही देते। कभी तो मुझे भी अपनी उपलब्धियो की जानकारी दिया करो। तुम लोगो को सरकार मोटा तनख्वाहें देती है और सभी प्रकार के सरकारी साधन तुम्हारे पास हैं। मेरे पास तो यह कुछ भी नही। मजाक मे उ हाने आगे कहा "लगता है कि तुम सब कुछ मुझ से पूछ कर अपनी रिपोट सरकार का भेज देत हो। मेहनत मैं करता हूँ तनख्वाह तुम उठाते हो।

विरोध करने पर जान लेवा हमला

13 जून, 1953 का दिन था। सीमा सदेश के सम्पादक श्री कमलनयन शर्मा रिक्शे पर बठे माइक द्वारा शाम 6 बजे हाने वाली एक आम सभा की घोषणा कर रहे थे, जिसम म्यूनिसिपल बोड गगानगर की अव्यवस्था एव शिथिलता पर रोष प्रकट किया जाना था। उनका रिक्शा जब धान मण्डी की दुकान न० 6 के आगे आया तो यकायक उन पर 4 5 लोगो ने लाठियो व हाकियो स हमला कर दिया। निशाना उनका सिर था ताकि उनका काम तमाम कर दिया जाय मगर रिक्शे के नीचे घुसने व सिर पर हाथ रख लेने के कारण सिर का बचाव हो गया। हमलावरा ने वह गुस्सा उनकी टाग तोड कर पूरा किया। पिटवाने वाले थे शहर के नामी सठ जो म्यूनिसिपल बोड के अध्यक्ष भी थे और जिन्हे सत्ताधारी काग्रेस पार्टी का भी आशीर्वाद था।

श्री कमलनयन का कसूर यह था कि उन्होंने अपने समाचार पत्र के 17 मई, 1953 के अक म मुख पृष्ठ पर "नगरपालिका अध्यक्ष के नाम खुला पत्र" प्रकाशित किया था जिसम आरोप लगाया गया था कि यहा मण्डी म भयकर मदा आने के बावजूद तहबाजारी की दुकानो का किराया इसलिए नही घटाया गया ताकि 'आपका कटला आबाद हो जाय और आपको हजारो रुपये की आय बढे।' नगर मे पीने के पानी के अभाव के सम्बन्ध म भी पत्र म लिखा था—"नगर पालिका के अध्यक्ष गाढी निद्रा मे इस घटना के विरोध म श्री कमलनयन न एस डी एम गगानगर की अदालत म नगरपालिका सेठ, दो नगर पार्षदो (एक समर्थक व दूसरा अध्यक्ष द्वारा मनोनीत) व पाच हमलावरो जो (म्यूनिसिपल बोर्ड के सफाई कर्मचारियो मे से थे) के विरुद्ध मुकदमा दर्ज करवाया। इसम आरोप लगाया गया था कि म्यूनिसिपल बोर्ड की बदइन्तजामी, अकर्मण्यता और भ्रष्टाचार के खिलाफ जनता मे गहरा असतोष है और जनता की इस आवाज को और विरोधी दल के सदस्यो को आयन्दा रहबरी के लिए मुस्तगीस ने एक मीटिंग पब्लिक पार्क, श्री गगानगर म रात 9 बजे तारीख 13 जून 1953 को बुलाई और उसी रोज दिन के 12 बजे पर्चे बाट गये। मुलजिम सेठ (अध्यक्ष) को जब इसका पता चला तो उन्होंने अपने भरोसे के दो नगर पार्षदो को बुलाया। आपसी सलाह मश्वरे के बाद यह तय पाया गया कि म्यूनिसिपैलिटी के पाच भगियो (जिनम एक को 1 जून 1953 मे ही सेठ अध्यक्ष ने नौकरी पर लगाया था) से मुस्तगीस (कमलनयन शर्मा) को आज जान स मरवा दें ताकि आयन्दा के लिए उनकी पोल न खुले। इस इस्तगासे मे आगे कहा गया कि सेठ (अध्यक्ष) ने वाकये के 3 रोज पहले भी मुस्तगीस को बुलाकर धमकी दी थी "तू हमारे खिलाफ रोला करता है। मैं तुझे कमेटी के भगियो से मरवा दूगा। यह इस्तगासा जुर्म जेर दफा 307, 325,147,109 आई पी सी के तहत पेश हुआ।

इस इस्तगासे पर पुलिस कोई कार्यवाही करती इसकी तो आशा ही नही थी क्योकि कमलनयन जी ने सभी भ्रष्ट अधिकारियो के विरुद्ध एक जेहाद छेड रखा था। पुलिस अधिकारियो के विरुद्ध वे लगभग हर अक मे लिखते थे। गुडाई तत्वो द्वारा पिटाई से कुछ सप्ताह पूर्व ही उन्होने ए सी (अति० कलेक्टर), एस पी व सी ओ के विरुद्ध जमकर अखबार म लिखा था कि इन्होंने शराब के नशे मे नहर के किनारे तीन नागरिकों की जम कर पिटाई की। पिटने वालो मे सरकारी पटवारी भी था। सीमा सदेश मे इस समाचार का शीर्षक था 'दस हजार जनता द्वारा गुडागर्दी का विरोध। शराबी अधिकारियो द्वारा की गई गुण्डागर्दी के खिलाफ विशाल प्रदर्शन। 'गुण्डागर्दी खत्म करो शराबी अफसर नही चाहिए' के नारो से आकाश गूज उठा। इस शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित समाचार म श्री कमलनयन न लिखा था आज जब कि देश आजाद है शासन प्रजातन्त्र के सिद्धान्त को मानता है--ऐसी अवस्था मे निर्दोष नागरिको के साथ उच्चाधिकारियो का तानाशाही रवैया कहा तक दुरुस्त है--इसका निर्णय जनता स्वय करेगी।

इतना ही नही श्री कमलनयन के सयोजन म इस घटना के विरोध म 10 हजार लोगो की एक विशाल सभा भी हुई जिसमे कमलनयन के साथ सव श्री नत्थूराम योगी हरभजनलाल शास्त्री जीवनदत्त शास्त्री, कुलदीप बेदी आदि ने भी अपने विचार प्रकट किये और इस घटना की तीव्र निन्दा की। बाद मे सव श्री कमलनयन हरभजन शास्त्री व सम्पूर्णसिंह के नेतृत्व म सभा की भीड ने जलूस की शक्ल मे गोल बाजार से होकर कलेक्टर, एस पी और नाजिम की कोठी पर नारे

लगाकर अपना विरोध प्रदशन किया। उनकी माग थी नागरिक अधिकारो पर कुठाराघात करन वाले अफसरो की निप्पक्ष जाच हो और उनको तत्काल सजा दी जावे।

इस विरोध से घबराकर सीमा स देश के जवाब म तत्कालीन एस पी न जयपुर से अपने जानकार कुछ पत्रकारो को बुलवाया मगर वे लाभ उठाकर 2–3 माह बाद ही यहा स चल दिये क्याकि वे जनता मे पठ नही जमा सके। सरकारी प्रशासन चाहे इस नागरिक स्वत त्रता पर हमल पर मौन रहा हो मगर जन साधारण मे इसकी तीखी प्रतिक्रिया हुई। लाग यह सोचने पर मजबूर हा गये कि पैसा व सत्ता वाले सेठ अध्यक्ष को क्या लोगो की अभिव्यक्ति की स्वत न्त्रता का कुचलन की छूट है? लोगो ने यह तय कर लिया जिस आम सभा को रुकवान के लिए पालिका अध्यक्ष न श्री कमलनयन को मारपीट कर अस्पताल म भर्ती करवाया, वह सभा रुकनी नही चाहिए। आखिरकार सभा हुई, विशाल उपस्थिति के साथ पब्लिक पाक मे। प्रो० केदार नाथ की अध्यक्षता म आयोजित इस सभा मे सव श्री करनलसिंह नगर पापद, नत्थूराम योगी, कुलदीप बेदी, जीवनदत्त, कर्तारसिंह परदेसी आदि ने न केवल श्री कमलनयन शर्मा पर हुए हमले को प्रजातन्त्र की हत्या बतलाया वरन् नगरपालिका मे हो रही बदइतजामी व भ्रष्टाचार पर भी खुली चर्चा हुई। लागा ने अच्छा पानी, अच्छी सडकें व अच्छे चुने हुए लागो की माग की। श्री केदार ने लोगो को शा त रहन की अपील करते हुए उ हे आवाहन दिया कि वे जन आ दोलन द्वारा सरकार के कानो तक इस गुण्डागर्दी के विरोध की आवाज को पहुँचाये।

सभा को सम्पन्न न होने देने के लिए सेठ अध्यक्ष के पापद व पालिका सफाई कमचारी भी भेजे गये। मगर सभा को विशाल जन समूह का समथन देखकर वे कुछ करपाने की स्थिति मे नही थे। तो भी सठ जी की काग्रेस पार्टी के जिला म त्री जबरदस्ती स्टेज पर आकर बोलने का प्रयास करने लगे कि यह जनता का मच है और उ हे यहा बोलने का अधिकार है। जनता श्री कमलनयन पर हमले से उत्तेजित थी मगर सभा आयोजको ने धय स उन सठ समथको को समझाने का प्रयास किया कि इस माहौल मे उनका बोलना ठीक नही और फिर भी बोलना चाहें तो स्टेज सेक्रेटरी या प्रधान को अपना नाम दे दें। इस मीटिंग का भग करना अशोभनीय है। मगर शराब के नशे म चूर ये महोदय नही माने। सभवत सभा के अ त मे उनकी कुछ लोगों से हाथापाई हो गई जिनम उ ह तथा कुछ अ य को मामूली चोटें लगी।

जिला म त्री की इन चाटो का पूरा लाभ उठाते हुए जिला काग्रेस कमेटी न एक मुकदमा 207 व 148 आई पी सी के तहत दज कराया जिसमे इस सभा के एक वक्ता श्री कुलदीप बेदी (सवाददाता उदू मिलाप दिल्ली) पर यह आरोप लगाया कि सभा के दो साथियो की मदद स श्री बेदी ने उन पर प्राणघाती हमला किया। अदालत को बताया कि क्योंकि उ हाने उदू मिलाप अखबार मे म त्री जिला काग्रेस कमेटी, प्रधान नगर काग्रस व चयरमन म्यूनिसिपल बोड, एम एल ए व एक अ य प्रमुख काग्रेसी चौधरी के खिलाफ खबरें सवदादाता की हैसियत स प्रकाशित करवाई

की और जिला चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी के विरुद्ध भी समाचार छपवाये है, इसीलिए उन्हें (वेदी) इस मुकदमे मे फसाया गया है। उन्होंने अखबार की कटिंग भी पेश की। श्री वेदी न अपने बयान म यह भी कहा कि मन्त्री जिला काग्रेस कमेटी ने उन्हें एक बार बुला कर धमकी भी दी थी कि खबरें देने से बाज आ जाओ वरना किसी मुकदम म फसा देंगे। श्री वेदी ने अपने बयान म आगे भी कहा कि एस पी, एस डी एम आदि द्वारा शराब पीकर हुल्लडबाजी मचाने पर उन्होंने व श्री कमलनयन (सम्पादक सीमा सन्देश साप्ताहिक) दस हजार नागरिकों द्वारा उनके विरुद्ध प्रदर्शन करा कर उनके तबादले की माग की थी। इसीलिए पुलिस ने पक्षपात से काम लिया। यदि इस समय श्री कमलनयन जी अस्पताल मे भर्ती न होते तो उन्ह भी इस मुकदमे बाजी म जरूर घसीटा जाता) प्रो० केदारनाथ, स करनलसिंह, व श्री कवरचन्द एडवोकेट न श्री वेदी की ओर से बयान दिये। निचली अदालत ने श्री वेदी पर 200) र जुर्माना किया जिसकी अपील श्री वेदी न सेशन जज की अदालत मे की। सेशन जज ने अपील मजूर करते हुए लिखा कि अपीलान्ट पर जो मुकदमा बनाया गया वह मिथ्या निराधार और द्वेषपूर्ण है। उल्टे सेशन जज ने मुस्तगीस मन्त्री जिला काग्रेस कमेटी को उसके अतीत का स्मरण कराते हुए लिखा कि वह सरकारी नहर विभाग का बरखास्त शुदा क्लर्क है और पारीक बैंक गबन केस मे उसे एक हजार रुपये जूर्माना तथा ताइजनाम कैद की सजा हुई जिसको वह स्वय अपने बयान मे स्वीकार करता है।

इसी फसले म सेशन जज ने जिला चिकित्सक व स्वास्थ्य अधिकारी के बारे म भी गम्भीर टिप्पणी करते हुए लिखा, ' अपीलान्ट ने जो रिकाड पेश किया उसे देखने से मामला सदेहजनक लगता है जिस पर मैंने स्वय रजिस्टरो का निरीक्षण किया तो काफी फोरजरी पाई। इसलिए डाक्टर के खिलाफ नोटिस जारी हो कि क्यो न उसके खिलाफ फोजरी व झूठी शहादत देने का मुकदमा चलाया जाय।'' श्री वेदी को बाइज्जत बरी कर दिया गया।

इसे दवी न्याय ही मानना होगा कि जो काम श्री कमलनयन अपने पर हुए हमले के आधार पर पुलिस रिपोट लिखवा कर करना चाहते थे वह पुलिस के भेदभाव पूर्ण रवये से तो पूरा न हो सका मगर वही काम विरोधी पक्ष द्वारा मुकदमा दायर करने से सम्पन्न हो गया। अदालत ने न केवल सेठ अध्यक्ष के पिट्ठुओ को बेनकाब किया वरन् पुलिस व डाक्टर के पक्षपाती रवैये को समझा और अपने फसले मे उसे उजागर किया। यह घटना बताती है कि निर्भीक पत्रकार कमलनयन को एक साथ पूजीपति, सत्ताधारी पार्टी, पुलिस, प्रशासन व डाक्टरो के विरोध का सामना करना पडा और अपनी जान पर खेल कर उन्होंने ऐसी गम्भीर स्थिति को झेला। उनका बल था सच्चाई व जनता का पूर्ण समर्थन। ऐसी परिस्थितियो से वे अनेक बार गुजरे।

कृतज्ञ रिश्वतखोर

पत्रकार की हैसियत से तब गगानगर क्षेत्र मे श्री कमलनयन का एक छत्र राज्य था। विद्रोही व आदशवादी स्वभाव का होने के कारण उन्होने जिसको गलत समझा उसके खिलाफ जमकर लिखा। इसी कारण से दो-तीन बार उन पर घातक हमले भी हुए मगर कुछ ऐसे अप्रत्याशित सुखद अनुभव भी हुए जो भुलाये नही भूलत।

यह घटना आज से करीब 30-35 वष पूव की है। उन्होने एक नायब तहसीलदार के खिलाफ रिश्वत के आरोपो को लेकर सोमा सदेश मे खुलकर लिखा। सौभाग्य या दुभाग्य से वह रगे हाथो पकडा गया और उनके विरुद्ध जाच आरम्भ हो गई। इस दौरान वह नायब तहसीलदार मिलने कमलनयन जी के पास आया और उनके सामने फलो का टोकरा व 200 रुपये रख दिये।

यह देखकर कमलनयन जी भडक उठ और बरस पडे 'तुम क्या समझत हो तुम रिश्वत देकर मेरा मुह बद कर दोगे? तुम्हारी यह हिम्मत कसे हुई? चले जाओ यहा स। मुझे खरीदने की कभी सोचना भी नही?'

यह सब सुनने के बाद नायब तहसीलदार साहब बोले, मैं तुम्हे रिश्वत देन नही आया और न ही तुम्हे खरीदने की सोचता हूँ। यह तो मैं तुम्हारे प्रति श्रद्धा होने के कारण लाया हू।

"श्रद्धा और मेरे प्रति जो तुम्हारे खिलाफ लिखने से कभी नही चूकता? यह तुम क्या मजाक कर रहे हो?' कमलनयन ने कटाक्ष करते हुए कहा।

मेरी बात सुनोगे तो शायद तुम्हे विश्वास हो जाये। जब से मैं रिश्वत लेने के आरोप म निलबित हुआ हूँ दोस्त और रिश्तेदार ही नही मेरी अपनी पत्नी व बच्चे भी मुझ से नफरत करने लगे हैं मुझे हिकारत की नजरो से दखते हैं। वे रिश्वत की बात तब भूल जात हैं जब मैं उन्हें महगी साडिया लाकर देता हू और महगे स्कूलो मे पढाता हैं। आज सकट की घडी म अपनो द्वारा इस प्रकार दुत्कार दिये जाने मे मेरे मन मे अपने रिश्तेदारो के प्रति नफरत पदा हो गई है। मैं सोचता हूँ कि उनसे अच्छे तो तुम्हीं हो जो जो कहते हो सच और स्पष्ट ही कहते हो। मैं रिश्वत लेता था मगर अब सोचता हूँ जिसके लिए लेता था वे ही मुझे गुनहगार समझते हैं तो मैं किसके लिए लू? तुम्हारी आर्थिक हालत मुझ मे छिपी नही है। तुम्हारे बीवी बच्चे भूखे मरते होगे और मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे जसे अच्छे आदमी के परिवार को तो भूखे नही मरना चाहिए। इसी सच्ची श्रद्धा से मैंने यहा आने का साहस किया है।

कमलनयन जी ने नायब तहसीलदार की मदद तो स्वीकार नहीं की मगर उस व्यक्ति की आप-बीती सुनकर और उसके विचारा का सुनकर चकित हो गय।

मुख्यमत्री को भी खरी-खरी सुनाने वाले

मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाडिया स श्री वमलनयन के व्यक्तिगत सम्बन्ध थे। ये सम्बन्ध तब शुरु हो गये थे जब श्री सुखाडिया की वडी लडकी कुमारी पुष्पा की शादी श्री मुनालाल गोयल से तय हो रही थी। यह शादी करवाने म श्री कमलनयन न महत्वपूण भूमिका निभाई थी क्योंकि श्री मुनालाल के अधिकाश सम्बन्धी इस शादी के लिए सहमत नहीं थे।

यह घटना शादी के काफी बाद की है। श्री वमलनयन सुखाडिया जी के साथ एव वमरे मे फुरसत से बैठे हुए थे। ऐसे अवसर पर कोई और होता तो व्यक्तिगत लाभ की आकाक्षा म चाटु-कारिता करता हुआ उनक गुणो व शासन की तारीफ के पुल वाधता। मगर कमलनयन जसे स्पष्ट वादी व अक्खड दिमाग के व्यक्ति ने तो उनसे उलटी बातें शुरु कर दी। "कसा राज है सुखाडिया

विरोध करने पर सम्मान

वमलनयन जी जब गगानगर से बाहर किसी दूसरे शहर मे गये तो उन्हें वहा एव व्यक्ति मिला जो उन्हें अनुरोध कर अपनी दुकान पर ले गया। अपनी दुकान पर उसने वमलनयन जी को आदर पूवक बैठाया और यह वह कर चला गया 'मैं थोडी देर मे आता हू आप कहीं जायें नहीं।

करीव आधा-पौन घण्टे बाद वह व्यक्ति वापस आया तो उसके साथ 10–15 और भी व्यक्ति थे जो दुकानदार लग रहे थे। उस व्यापारी ने अपने हाथो म पकडे शाल को खोला और कमलनयन जी को उढा दिया और उन्हें एक सौ एक रुपये की भेंट दी। कमलनयन जी बडे अचरज मे समझ नही पाये कि आखिर माजरा क्या है? इससे पहले कि वे कुछ पूछते उस व्यापारी ने अपने व्यापारी भाइयो को सम्बोधित करते हुए कहा मैं आप सब लोगो को यहा इकट्ठा करके इसलिए लाया हू ताकि मैं आपको उस व्यक्ति से मिलवा सकू जिसके कारण मैं आज यहा का एक सफल व्यापारी बन सका हूँ।

कमलनयन जी के पल्ले फिर भी कुछ नही पडा। स्थिति पहले से और भी उलझ गई। उस व्यापारी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा मैं पहले गगानगर मे व्यापार करता था। वहा इनके अखबार ने मेरे व्यापार की गडबडियो के बारे मे खूब छापा। मुझे मालूम था कि यह जिद्दी आदमी है और इसे किसी प्रकार मनाया नही जा सकता। मजबूर होकर मैंने गगानगर ही छोड दिया और यहा आकर नया व्यापार करने लगा। यहा मेरा व्यापार खूब चल निकला। मैं यहा प्रसन्न हू मैं सोचता हूँ न ये मेरे खिलाफ लिखते और न मैं यहा आता और न मेरा व्यापार चमकता। वसे इन्होंने जो लिखा ठीक ही लिखा था। मैं सोचता हू सच व साफ साफ लिखने वालो को भी समाज से प्रोत्साहन मिलना चाहिए। इसी श्रद्धा भाव के कारण मैं आप सबके सामने इनके प्रति आदर स्वरूप यह शाल व 101| रुपये की भेंट देना चाहता हू।'

कमलनयन जी का शायद याद भी नही था कि ऐसी कोई घटना घटी थी।

तरा ? यहा पैसे वालो के ही काम होते हैं। अफसर पसे खाये बिना काम नही करते हैं। गरीबो की कोई सुनवाई नही होती। वे तो बेचारे पिसे जा रहे हैं। सुखाडिया यह सब तुम्हारे राज म हो रहा है। लोग तुम्हारे बारे मे क्या सोचते होग ? मुख्यमन्त्री श्री सुखाडिया जी शात मन से चुपचाप सुनत रहे और मुस्कराते रहे। जब श्री कमलनयन ने बोलकर अपनी भँडास निकाल ली तो सुखाडिया न सहज मुस्कान बिखेरते हुए कहा 'कमलनयन जी कुछ और हो तो वह भी कह डालो मैं आज सुनन के मूड मे हूँ।"

"तुमको सुनाने मे कोई फायदा ? तुम पर तो मेरे कहने का कोई असर ही नही होता। तुम जरा भी गुस्सा नही हुए। मेरे सुनाने का लाभ क्या ?' कमलनयन ने निरुत्तर होकर कहा। यह सुखाडिया का बडप्पन ही था कि वे कटु आलोचना भी मुस्कराते हुए झेल जाते थे। चेहरे पर शिकन भी न पडती थी। ये तो कमलनयन जसे साहसी व मुहफट ही थे जो राज्य के मुख्यमन्त्री को खरी-खरी सुनाने की हिम्मत कर सकते थे।

एक और घटना 1967 की है। जिलाधीश गगानगर के पास सरकार का वायरलस सन्देश पहुँचा कि श्री कमलनयन को जयपुर भेजो। मुख्यमन्त्री श्री सुखाडिया ने बुलाया है।

शेर की सजा चूहे को नहीं

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी द्वारा गणतन्त्र दिवस को स्वतन्त्रता दिवस कहन की चर्चा देश भर म हुई। मगर ऐसी ही गलती 3–4 वष पूव गगानगर जिला प्रशासन से भी हो गई थी। इस गलती को श्री कमलनयन ने अपन समाचार पत्र सीमा सन्देश म 'कलेक्टर का सामान्य ज्ञान' शीपक से प्रकाशित किया। कलेक्टर महादय को अपने प्रशासन की गलती जग जाहिर होन पर क्रोध आना स्वाभाविक था। कलेक्टर महादय ने इस गलती के लिए अतिरिक्त जिलाधीश (प्रशासन) की खिचाई की। अतिरिक्त जिलाधीश ने सम्बन्धित बाबू को लताडा और उसका स्थानान्तरण न केवल अपने कार्यालय से वरन् गगानगर से बाहर कर दिया।

श्री कमलनयन को जब यह बात पता चली तो उन्ह बहुत दुख हुआ कि उनके समाचार के कारण एक कमचारी को भारी असुविधा हुई। श्री कमलनयन ने जिलाधीश स प्रश्न किया माना कि गलती कमचारी की थी। उसको आपने स्थानान्तरण की सजा भी दे दी। मगर उसकी लिखी टिप्पणी पर हस्ताक्षर करने वाले अफसर की भी कुछ जिम्मेदारी होती है। अफसर को ऊची तनख्वाह उसकी अधिक जिम्मेदारी के कारण दी जाती है। बाबू को तो आपने सजा दे दी क्या अधिकारी को भी इस की सजा मिलेगी या इसलिए नही मिलनी चाहिए कि वह आपका अन्तरग साथी है ? आप यदि सजा दें तो दोनो को, वरना केवल कमचारी को ही दण्डित करना कहा का न्याय है ? यदि यह अन्याय दूर नही हुआ तो इसके लिए मुझे लडना भी पड सकता है।

जिलाधीश को निरुत्तर होना पडा और बाद मे उस कमचारी का स्थानान्तरण रद्द हुआ।

श्री कमलनयन ने अनुमान तो लगा लिया कि कोई गड़बड़ है। वे टाल गये और जिलाधीश को उत्तर भिजवाया 'मेरी तबीयत ठीक नही है अत मैं नही आ सकता।" मगर एक दो दिन बाद ही जिला धीश के पास दूसरा वायरलैस सन्देश आया कि यदि उनकी तबीयत ठीक नहीं है तो उन्हें कार स भिजवाओ। इस पर श्री कमलनयन ने कहला भेजा कि यदि बहुत जरूरी है तो मैं आ रहा हूँ मगर सरकारी कार से नही वरन् रेलगाडी द्वारा अपने जनता क्लास म बैठकर। जयपुर मे जब वे श्री सुखाडिया से मिले तो उन्होने श्री कमलनयन से कहा 'आपसे जरूरी काम है। पहले वायदा करो कि उसे कर दोगे।" श्री कमलनयन बड़े आश्चर्य व पशोपेश मे पड गये। मुख्यमन्त्री यह बात कह रहा है तो अवश्य ही कोई गम्भीर बात है। उन्होंने उत्तर दिया "वायदा तो नही कर सकता मगर करने का भरसक प्रयत्न करूगा।' "आपको हनुमानगढ के विधान सभाई उप चुनाव मे श्री कुम्भाराम को जितवाना है। उनका समथन करना है", सुखाडिया जी ने कहा।

हनुमानगढ का यह उप चुनाव कामरेड श्यापत सिह का चुनाव अवध घोषित कर दिये जाने के कारण हो रहा था। श्री कमलनयन का सीमा सन्देश तब वहा का एक मात्र समाचार पत्र था जिसका जनता मे प्रभाव था। श्री कमलनयन जी को बहुत आश्चय हुआ और वे बोले "सुखाडिया जी, आप कुम्भाराम को जिताने के लिए कह रहे हैं और वो भी मुझ से ? आप तो जानते हैं कि यदि मुख्यमन्त्री पद के लिए आपके लिए कोई बडा खतरा है वह कुम्भाराम ही है। मैं सदा से उनका घोर विरोधी रहा हूँ। आप मुझ से यह कह रहे हैं !

'कमलजी परिस्थितिया ही ऐसी हैं और आपको मेरे लिए कुम्भाराम की मदद करनी ही है' सुखाडिया ने कहा।

'बुरा समझकर जिस व्यक्ति का मैंने जिन्दगी भर विरोध किया उसको अच्छा बता कर उसका समथन तो मैं नही कर सकता। मगर आपके लिए इतना कर सकता हूँ कि इस चुनाव में मैं उसका डटकर विरोध न करू। फिर भी मैं आपको चेतावनी दूगा कि आप कुम्भाराम को अपने समथन पर पुन विचार करें। आपको इसका परिणाम अन्तत अच्छा नही मिलेगा।

श्री कुम्भाराम उप चुनाव म जीते मगर बाद म श्री सुखाडिया के लिए बडे प्रतिद्वन्द्वी बने, मुसीबत बन।

2
सीमा सन्देश की विकास यात्रा

श्री कमलनयन शर्मा द्वारा संस्थापित सीमा सन्देश का प्रकाशन 10 अक्टूबर, (दशहरा) 1951 के दिन एक साप्ताहिक के रूप में आरम्भ किया गया। शकर प्रेस (गोल बाजार) गगानगर से प्रकाशित इस तीन कालम साइज के 8 पृष्ठ वाले अखबार की प्रति का मूल्य 2 आना था तथा वार्षिक शुल्क 6 रुपये (डाक द्वारा 7 रु) था। आरम्भ मे इसका कार्यालय शकर प्रेस व कमलनयन जी का निवास स्थान ही रहा। सहयोगी के रूप मे श्री कश्मीरी लाल मिड्ढा बी ए ने सहायक सम्पादक की भूमिका निभाई जो करीब 5 वर्ष तक जारी रही। श्री कश्मीरी लाल साथ ही साथ एम ए की परीक्षा पास कर स्कूली शिक्षण व बाद मे महाविद्यालय शिक्षण मे चले गये। वर्तमान मे डा कश्मीरी लाल स्थानीय खालसा कालेज मे हिन्दी के विभागाध्यक्ष हैं।

2 अक्टूबर, 1952 से सीमा सन्देश का प्रकाशन जनता प्रेस से आरम्भ हुआ और आज तक निरन्तर बना हुआ है। इस प्रेस का स्वामित्व श्री कमलनयन को 1957 मे प्राप्त हुआ जिसमे श्री देवनाथ विधायक का काफी योगदान रहा। (दरअसल चुनाव प्रचार सामग्री मुद्रित कराने के

लिए सुविधा को देखते हुए ही यह प्रेस खरीदा गया) यह प्रेस गोल बाजार (कोतवाली रोड) म दो बार किराये की दुकान मे चला। कुछ अर्से के लिए (1967-69) यह रविन्द्र पथ क पास छकडी म भी रहा। 1984 मे किराये की दुकान का हिस्सा खाली करने के फलस्वरूप प्रेस घर 81 एल ब्लॉक पर स्थानान्तरित करना पडा जहा अब भी सीमा सन्देश का मुद्रण जारी है।

प्रेस का स्वामित्व प्राप्त करने के पूर्व सीमा सन्देश का कार्यालय बी ब्लॉक मे रहा। एक बार श्री कवर चन्द जैन एडवोकेट के घर के कमरे मे तथा बाद म उसके समीप के मकान म। श्री जैन का इस काम मे काफी सहयोग रहा। इसके बाद (1957 तक) कार्यालय श्री कमलनयन के निवास पब्लिक पार्क म भी रहा।

श्री कश्मीरी लाल के शिक्षण व्यवसाय मे जाने के बाद सह सम्पादक का दायित्व श्री रमेश चन्द्र शास्त्री ने 1955 से दो वर्ष तक सम्भाला। बाद मे श्री शास्त्री गगानगर छोड कर (कैथल) हरियाणा मे जा बसे, जहा से व अब भी हरियाणा लीडर का प्रकाशन कर रहे हैं। 1957 मे श्री योगराज सावती ने सह सम्पादक (बाद मे सम्पादक) का भार सम्भाला और लगभग 22 वर्षों क सहयोग के बाद पारिवारिक जिम्मवारियां बढने के कारण 1981 म एक स्वतन्त्र प्रकाशन दनिक सीमा किरण के नाम से आरम्भ कर दिया।

11 जुलाई, 1957 से सीमा सन्देश क पृष्ठ के आकार म वद्धि होकर वह 3 कालम से 4 कालम का अखबार बन गया। नवम्बर 1966 मे सीमा सन्देश का शाखा कार्यालय जयपुर म स्थापित किया गया। इस शाखा कार्यालय का उद्घाटन तत्कालीन मुख्य मन्त्री श्री मोहन-लाल सुखाडिया के हाथो हिन्द होटल के हाल मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमे तत्कालीन राज्य मन्त्री श्री मनफूलसिंह भादू सहित गगानगर के कई गणमान्य नागरिक शामिल हुए थे। वतमान मुख्य मन्त्री तथा तत्कालीन जन सम्पर्क मन्त्री श्री हरिदेव जोशी इस समारोह मे किसी कारणवश देरी से पहुँचे। जयपुर मे कार्यालय कटेवा भवन एम आई रोड मालवीय मार्ग (सी स्कीम) व स्टेशन रोड से होता हुआ अतत पत्रकार कालोनी डी-32 शान्ति पथ में स्थाई हो गया। इस शाखा कार्यालय का भार श्री कमलनयन के ज्येष्ठ पुत्र श्री बृजभूषण (वतमान प्रधान सम्पादक) ने सम्भाला।

1 फरवरी, 1972 को सीमा सन्देश का दनिक समाचार पत्र के रूप मे प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। तत्कालीन जिलाधीश पदम श्री विजयसिंह ने गोल बाजार स्थित कार्यालय मे आयोजित एक समारोह म इसका शुभारम्भ किया। आरम्भ मे यह 4 कालम मे दो पेज का समाचार-पत्र था। बाद मे यह 5 कालम (5 अगस्त, 1976) 7 कालम व 8 कालम के समाचार पत्र के रूप मे छपता हुआ 1982 से सात कालम के चार पेज के रूप म आ गया। अब (नवम्बर 1987) इसका प्रकाशन सिलिंडर मशीन पर 8 कालम के चार पृष्ठ के आकार के समाचार पत्र के रूप मे आरम्भ कर दिया गया है।

1976 म तत्कालीन मुख्य मन्त्री श्री हरिदेव जोशी ने गगानगर म सीमा सन्देश काया लय पर आयोजित एक समारोह मे सीमा सन्देश के विशेषाक का विमोचन किया। इस समारोह म तत्कालीन प्रदेश काग्रेस अध्यक्ष श्री गिरधारी लाल व्यास, जिले के विधायका सहित नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

विशेषाक निकालने म सीमा सन्देश की एक विशेष परम्परा रही है। यू तो वप म इसके 3–4 नियमित अवसरो पर विशेषाक निकलत ही हैं मगर–राजस्थान नहर विशेषाक, राजस्थान विकास विशेषाक, कपास विशेषाक (दो बार) विशेष उल्लेखनीय हैं।

ऐसे ही एक विशेषाक या विमोचन तत्कालीन राज्य सभा के उप सभापति श्री गौडे मुराहरि ने किया जो लोहिया के समय से कमलनयन जी के समीप आ गये थे।

3

कुछ अग्रलेख और टिप्पणियाँ

● राज्य कर्मचारी

यह निर्विवाद है कि अल्पवेतन भोगी कमचारियो की आर्थिक दशा सदव शोचनीय रही है। यह प्रश्न केवल बीकानेर तथा राजस्थान तक ही सीमित नही है अपितु समस्त भारत का है। किन्तु अन्य प्रातो मे सुशिक्षित समाज होने, कुशल शासक होने के कारणो न इतना जटिल नही बनने दिया, जितना राजस्थान मे विद्यमान है।

कहावत है कि "आवश्यकता अविष्कार की जननी है।" महात्मा गाधी ने देशवासियो को *सत्याग्रह जैसा अस्त्र केवल बताया ही नही बल्कि प्रयोग कर साम्राज्यशाही को समाप्त कर दिखाया।* इसी परीक्षण को भिन्न भिन्न स्थानो म प्रयोग कर मजदूरो एव कमचारी सघो ने भी सफलता प्राप्त की है।

यो तो हमारे देश म जन साधारण की आर्थिक दशा सवथा दयनीय रही है किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध (1945) के पश्चात् तो कमचारियो की अवस्था बिलकुल हीन हो गई है। राजस्थान म दुहरी गुलामी ता थी ही कमचारियो का कोई स्वतत्र अस्तित्व न था। शासकीय व्यवस्था एकतन्त्र होने के कारण केवल राजेच्छा पर आश्रित रहता था। उनकी नियुक्ति, पदोन्नति वेतन वद्धि और तबादले आदि शासकों की कृपा दृष्टि पर निभर रहते थे।

आज देश को आजादी मिले चार साल हो गये इनकी विपम परिस्थिति ज्यो की त्यो बनी हुई है। शासन सूत्र दूसर हाथो म आगया, पत्रो मे विधान की भाषा बदल गई किन्तु सब साधारण तो क्या शासन के अग कमचारियो की अवस्था मे भी कोई अन्तर न आया। अन्तर आया है तो इतना कि दल-बन्दी से परे रहने वाले कमचारी का जीवन अत्यधिक कष्ट पूण बन जाता है।

सब साधारण मे भी कमचारियो के प्रति एक धारणा है कि कमचारी रिश्वत खाते हैं। यह आरोप कई अशो मे सत्य है। किन्तु विचारणीय प्रश्न तो यह है कि ऐसा निंद्य-कम इनको करना क्यो पडता है? क्या उक्त नीच-कम को सभी प्रसन्नता पूवक करते हैं? और जो कमचारी इस काय के योग्य ही नही है, उनका जीवन कितना भार बन गया है? क्या यह कुप्रवत्ति सामाजिक देन नही है? क्या धन लोलुप व्यक्ति स्वय के स्वाथ से प्रेरित होकर उन साधन हीन व्यक्तियो को कुमार्गी नही बनाते ?

इसका यह अथ कदापि नही कि मैं रिश्वत लेने वाले को निर्दोष समझता हूँ या इस दुष्कम को प्रोत्साहन दिया चाहता हूँ। मैं तो इस व्याधि के मूल मे शासन-व्यवस्था, सामाजिक कुरीति और आर्थिक विषमता को महत्व देता हूँ। विषय गम्भीर है इसका प्रतिपादन संक्षिप्त स्पष्ट नही किया जा सकता।

आज उदाहरण के रूप मे कन्ट्रोल को लें। चाहे हजारो की आय वाले हो, चाहे 30) रु० मासिक वेतन भोगी, समान वितरण मात्र ढोग है। उच्च अधिकारी तो पसो के बल पर अपना हक प्राप्त कर लेता है। चपरासी वहाँ क्या ले और क्या छोडे! जब से खाद्य वस्त्र आदि पर नियन्त्रण हुआ है कमचारियो की और भी दुदशा है। गगानगर मे मकानो का तो सवथा अभाव है। क्वाटर मुँह देखे मिलते है और हैं भी थोडे। कनक यद्यपि अन्य स्थानो से यहा सस्ती मिलने का प्रचार हो है। यहा से सरकार 40-प्रतिशत गेहूँ 13) रु० मन खरीदती है, वह राशन के द्वारा दूरस्थ जिलो मे सस्ता बेचा जाता है यहा 22-25) रु० मन। रहा यह आरोप कि यहा रिश्वत बडी ली जाती है तो वडी रिश्वत बडे अधिकारी लेते होंगे। यदि यह सही है तो थोडा थोडा हिस्सा छोटे को न लेने दें तो हाजमा बिगड जाने के भय से कमचारियो को लेने-देने का एक स्वाथ है अहसान नही। अधिकारियो की शिकायत यानी जन-साधारण की आवाज को सरकार नही सुनती या जानबूझ कर इस को महत्व नही देती जिसके दो कारण हो सकते है। एक तो सरकार स्वय भ्रष्टाचार म हिस्सेदार हो, या वह इतनी अयोग्य हो, कि स्थिति पर नियन्त्रण नही कर पाती हो।

हम इस विवाद मे नही पडना है। अभीष्ट विषय है कमचारियो की दुरवस्था का। यह कहना कि कमचारी रिश्वत खार है, उसके विषय मे क्यो सोचा जाये-तो समाज के साथ उनके साथ और स्वय के साथ विश्वासघात करना होगा। हम सब समाज के अग हैं और परस्पर अन्योनाश्रित सम्बन्ध है।

कमचारी वग को चाहिये कि एक दृष्ढ सगठन बनाये जिसम अपनी विपिन्न अवस्था को सामने रखते हुए एक सामूहिक कायक्रम बनालें जिससे सबका हित हो सके। यदि किसी म कोई

त्रुटि भी है तो घृणा के भावो मे नही वल्कि सहानुभूति के साथ सुलझायें। बीकानेर, अलवर, और उदयपुर के साथियो ने तो संगठन के महत्व का प्रत्यक्ष देखा है। यह कहावत कितनी यथाय है कि मघे शक्ति कलियुगे।"

कमचारियो को प्रजातन्त्र शासन मे अत्यधिक सजग, कमठ और निष्पक्ष रहने की आवश्यकता है। उन्हे राजनीतिक दल-बन्दियो से ऊपर रहना है। जनता राज्य मे जो पार्टी शासनारूढ हो उसकी नीति से जो व्यवस्था निर्मित हो उसका कार्यान्वित करना ही अधिकारियो और कमचारियो का पवित्र कतव्य है। जहाँ कमचारी अपने कतव्य का पालन करें वहा उनके अधिकारो की गारण्टी सरकार को देनी चाहिये। नियुक्तियाँ, पदोन्नति और वेतन योग्यता के आधार पर अनिवाय रूप से मिलनी चाहिये। अवकाश प्राप्त करने पर भी यथा सम्भव सुविधाए देनी चाहिय। योग्य कमचारियों की कतव्यपरायणता पर शासन टिका होता है। [30 अक्टूबर, 1951]

● मंहगाई

समस्त भारत मे महगाई की समस्या दिनो दिन जटिल होती जा रही है। खाद्यान्न समस्या व्यापक रूप धारण करने जा रही है। हमारा देश कृषि प्रधान देश कहलाता है किन्तु फिर भी इस विषय मे हम आत्म निभर नही बन सके।

देश स्वतन्त्र हुए आज एक युग समाप्त हो रहा है। देश मे सिचाई के लिए कई बाध और भाखरा, चम्बल, दामोदर घाटी जसी कई योजनायें कार्यान्वित हो चुकी है। कृषि सुधार अधिकतम भूमि सीमा निर्धारण, सहकारी कृषि फाम, उत्तम खाद आदि कई प्रश्न खाद्य समस्या समाधानाथ केन्द्रो व प्रातीय सरकारो के समक्ष विचाराधीन है।

एक ओर सम्वधित अधिकारी सही आकडे प्रस्तुत नही करते। दूसरी ओर व्यापारी और वडे बडे जमीदार स्टाक जमा करके ऊँचे भाव मे बाहर भेजकर लाभान्वित होना चाहते है।

यह ठीक है कि अति वृष्टि अनावृष्टि बाढ आदि प्रकृति-प्रकोप से भी काफी क्षति उठानी पडती है। आधुनिक औजार उत्तम बीज व खाद न मिलने से भी हानि होती है।

दूर न जाकर यदि हम गगानगर जिले को ही लें तो यहा कनक व चना इस जिले की खपत के अनुसार पर्याप्त कहा जा सकता है। अब वहा कनक 25) रु० मन भी प्राप्त नही हो रही है। पूजीपतियो ने बाहर भेज दी और बडे बडे जमीदार अब धीरे धीरे अधिक मूल्य पर बाजार मे बेचते हैं। यहा आस्ट्रेलिया की गन्दी कनक 14) रुपये मन केवल 3) रु० की 8-10 घण्टे की प्रतीक्षा करने पर कठिनता से प्राप्त होती है।

बडे आश्चय का विपय है कि इस क्षेत्र के उत्पादन कर्ताओ एव श्रमिको को गन्दी कनक खाने को बाध्य होना पडता है। यहाँ से कनक बाहर जाय, विदेशो की यहा आय और रेल्वे किराया आवागमन का व्यय उपभोक्ताओ पर पडे। यहा के निवासी अपनी मजदूरी छोडकर लाइन मे खडे रहें। वह कनक काला बाजार मे बिके, अधिकारी मौन रहे। यह सब एक देश वासियो के साथ अन्याय नही तो क्या है? इन्ही परिस्थितियो मे भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलता है। इसका उत्तरदायित्व अधिकारियो पर अधिक है।

[27 नवम्बर, 1958]

● अकाल

राजस्थान मे अकाल का पडना एक स्वाभाविक घटना है और इस विशाल प्रान्त के खेतो के लिए सिचाई की कोई भी व्यवस्था न होने के कारण भारत वर्ष के लिए प्रयोग किए जाने वाला यह व्यग कि "भारत मे कृपि मानसून पर एक जुआ है" राजस्थान के लिए शत प्रतिशत उपयुक्त है। देश की स्वतन्त्रता के फलस्वरूप जब राजाओ के अवशेषो पर राजस्थान का निर्माण हुआ, एक लोकप्रिय सरकार ने शासन व्यवस्था की बागडोर सम्भाली, तो सदियो से अपने खेतो की रक्षा के लिए बादलो की ओर कातर दृष्टि से निहारने वाले राजस्थानी किसान को आशा हुई कि अब उसकी कठोर मेहनत केवल बादलो की कोप दृष्टि के ही कारण व्यर्थ मे नही जायगी और यदि कभी ऐसा होगा भी तो उसकी सरकार उसे भूखो नही मरने देगी। रोटी खरीदने के लिए उसे अपने बैल और हल और खाने पीने के बर्तन बेचने नही पडेंगे।

लेकिन उस राजस्थानी किसान की आशाओ पर तुषारापात हो गया जब उसने देखा कि लगातार कई वर्षों से अकाल पडने पर भी सरकार कुछ नही कर रही है और उसे यह महसूस हुआ जैसे कि यह वही पुरानी सामन्ती शराब है एक नई काग्रेसी बोतल मे। लोकप्रियता का दम भरने वाली सरकार का कर्त्तव्य तो यह था कि वह स्थिति की गम्भीरता को समझकर अकाल पीडित क्षेत्रो की पूरी सहायता पहुँचाती, परन्तु इसके विपरीत सहायता पहुँचानी तो दूर रही वह वस्तु स्थिति से ही इन्कार कर रही है। खाद्य मन्त्री श्री मोहनलाल सुखाडिया के हाल ही मे दिये गये एकागी वक्तव्य से सबको निराशा पहुँची है। यह सत्य है कि जिस अकाल पीडित क्षेत्र का दौरा उन्होने किया उसमे उनके सामने किसी भी रूप मे अकाल के भयकर प्रकोप का प्रदर्शन नहीं होने दिया गया था। पर इनके बनावटी तथ्यो एव वक्तव्यों की पृष्ठभूमि की छान बीन करने पर पता चलता है कि मन्त्री महोदय के आगमन से चौबीस घण्टे पहले तक उन अकाल पीडित क्षेत्रो के लोगो की बहुत दयनीय हालत थी, पीने को ढग का पानी नही था रहने के लिए छायादार आश्रय नही था और सहायता के नाम पर प्रारम्भ किए गए कार्यो मे शिथिलता, पक्षपात एव भ्रष्टाचार का बोलबाला था। पर कहने को तो माननीय मन्त्री महोदय ने अपने इस दौरे के कार्यक्रम को गोपनीय रखा था पर जहा जहा उनके

दौरे का प्रोग्राम था वहा वहा के अधिकारियो के पास इसकी सूचना तीन दिन पहले पहुँचा दी गई थी और परोक्ष रूप से उन्हें यह आदेश दिया गया था कि उनके सामने अकाल का नगा रूप न आने पावे और इसके फल स्वरूप सहायता केन्द्रो म काम करने वाले मजदूरो के लिए घडो तथा सरकियो आदि का तत्काल अस्थायी एव दिखावटी प्रबन्ध किया गया और मजदूरो पर यह दबाव डाला गया कि वे मन्त्री महोदय के सामने वास्तविक स्थिति का पर्दाफाश न करें।

यह किसी से छिपा नही है कि प्रारम्भ मे राजस्थान सरकार न बीकानेर डिविजन के अकाल पीडित एव अभाव ग्रस्त क्षेत्रों के प्रति कितनी उपेक्षा दिखाई थी। पर बाद म पार्लियामेन्ट के कुछ सदस्यो द्वारा वस्तु स्थिति का दिग्दर्शन कराने तथा बीकानेर के कुछ प्रगतिशील एव जागरूक पत्रकारो द्वारा इस उपेक्षा के विरुद्ध आवाज उठाने पर राजस्थान सरकार के कानो पर कुछ जू रेंगी और भारत सरकार से भी कुछ सहायता प्राप्त हो गई। सहायता के रूप मे प्राप्त होने वाले इस धन का ही यदि सही ढग से उपयोग किया जाता तो अकाल पीडितो की कठिनाइया काफी दूर हो जाती। पर काग्रेसी सरकार ने इसे अपने प्रचार का अच्छा अवसर समझा और इस धन के अधिकाश का केवल अपने प्रचारको तथा समर्थको द्वारा एसे स्थानो मे भेजा है जहा वे काग्रेस के लिए रोटी के मोल जनता का अधिक से अधिक समर्थन प्राप्त कर सकें। ऐसी विकट एव असाधारण परिस्थिति मे हमारी लोकप्रिय कहलाने वाली सरकार की यह नीति आदमखोर तो है ही, साथ ही निन्दनीय एव जनहित घातक भी है।

यदि राजस्थान सरकार की यही नीति कुछ दिन और रही तो स्थिति इतनी विषम हो जायेगी कि फिर इस पर काबू पाना दुष्कर होगा। इस लिए वतमान सरकार को अपनी लोकप्रियता का दभ छोडकर तमाम राजनैतिक दलो एव सावजनिक कायकर्ताओ का इस विकराल स्थिति का सफलता पूवक सामना करने के लिए सहयोग प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिये। जिन इलाको म वर्षा हो गई है —वहा के लोगो को खेत जोतन के लिए सरकार द्वारा साधन प्रदान किए जाने चाहिए। तथा जो रिलीफ सोसाइटिया इसके लिए ईमानदारी के साथ काम कर रही हैं, उन्हे सरकार द्वारा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। [11 जून, 1953]

● गंगानगर

आज का युग अथ प्रधान है। वह व्यक्ति समाज या दश ही उन्नति कर सकता है जिसके पास युगकालीन साधन या साधन प्राप्त करने योग्य धन हो। धन की उत्पत्ति मे भूमि, श्रम और पूजी राजस्थान जैसे नव निर्मित, प्रदेश म विभिन्नताओ के होते हुए सभी दृष्टि (सामूहिक दृष्टि) से हो, तो गगानगर ही एक ऐसा जिला है, जो आत्म निभर ही नही अपितु प्रान्त के अन्य पिछडे (अविकसित) क्षेत्र की सहायता करने मे समथ है। यह यहा के प्रदेश निवासियों का सौभाग्य है। यहा अब तक अपेक्षाकृत बेकारी कम है। यहा के निवासियो का जीवन स्तर अन्य स्थानो की तुलना मे उत्तम है।

इसका कारण किसी की दया नही, ईश्वर चमत्कार नही और न ही सरकार की शासन व्यवस्था है । बल्कि यहा का प्रत्येक नागरिक परिश्रमी, साहसी, जागृत एव व्यवहार कुशल है । क्योकि इस कालोनी मे वही जमींदार किसान मध्यवर्गीय व्यापारी व मजदूर आया जो दूरदर्शी और अनुभवी था । यह कालोनी अभी आबाद हुई । स्वावलम्बी और श्रमी व्यक्ति ने स्वय अपने विवेक से खुद काय करके धनोपाजन किया, विरासत मे (परम्परागत) यहा था क्या जो प्राप्त होता ? कृषि एव व्यापार की नीव डाली, जो भूमि उत्पादक थी उसने श्रम के एवज म पूरी पैदावार प्रदान की । उसन भूखा, नगा, प्यासा और फटे हाल रह कर भूमि की साधना की और उवरा भूमि न निस्सकोच उस वरदान दिया ।

यहा के निवासियो ने प्रात निर्माण से प्रसन्नता प्रकट की थी । बल्कि या कह कि सामन्त शाही के साथ यहा के राजनीतिक योद्धाओ ने मुकाबला किया था । स्वतन्त्रता सग्राम मे इस क्षेत्र के निवासियो ने आग बढ कर भाग लिया था । सक्रिय भाग ही नही, अपितु आर्थिक सहायता मे भी यह प्रदेश किसी से पीछे नही रहा । शहीद बीरबल इसी भूमि का बीर था । इस क्षेत्र न सदव नेतृत्व किया । यदि कभी स्वतन्त्रता सग्राम का इतिहास लिखा गया तो इस प्रदेश को क्रान्ति कारियो का क्षेत्र (प्रात मे) गिना जावेगा । मूक राज्य कमचारियो का सगठन भी यहा अद्वितीय माना गया है जिसके अनुशासन की प्रशसा स्वय पटेल तक ने की थी ।

हम किसी पर दोषारोपण करना नही चाहते । न ही गडे मुर्दों के उखाडने से कुछ लाभ है । हा दान उससे लिया जाता है जो समथ हो । प्रजातन्त्र पारस्परिक सहयोग पर आधारित है किन्तु उसका अथ यह कदापि नही कि पक्षपात, भेदभाव एव शोषण की प्रवत्ति को प्रोत्साहन मिले । मशीन को अधिक काम मे लाना चाहते है तो उसकी खुराक पूरी दीजिए, उसका दुरुपयोग न कीजिए ।

वर्तमान सरकार ने चाह जान कर, चाहे दलबन्दी मे फसकर या अज्ञात मे इस प्रदेश की उपेक्षा की है । यहा जनसाधारण की सुविधा के लिए सरकार ने क्या किया है ? वह स्वय निणय करें कि यातायात से यहा कितनी आय है ? कितनी सडकें, कितने बस स्टेण्ड है ? गावो मे सडकें, पुल, शिक्षा स्वास्थ्य और मनोरजन के क्या साधन हैं ? क्या पीने का पानी स्वास्थ्यप्रद है ? यहा मण्डियो मे पीने का पानी तक नही । यहा कोई एक पाक भी है ? यहा खेलने का कोई सुन्दर स्थान है ? क्या ज्ञानोपाजन के लिए कभी सरकार ने ध्यान दिया है कि कितने पुस्तकालय हैं ?

यहा मुजारो को जो बेदखल किया है, गिरदावरियो मे काट छाट की है वो ही जाच नहीं हुई । क्या अस्सी प्रतिशत सरकारी कागजो मे मुजारो की जो काश्त दज थी, सबको एक साथ लकवा मार गया ? क्या यहा के अधिकारियो ने जो सम्पत्ति यहा बना ली है उनका व्यापार पहिले कभी था ? क्या यहा एक-एक मास्टर चालीस चालीस ट्यूशनें करता पकडा नहीं जा सकता ? जो भ्रष्टाचार सम्बन्धी बोलबाला यहा है सब राजनीतिक प्रचार है ? तो पार्टी के नेता भी ऐसा क्यो कहत पाये जाते हैं ? यह एक विडम्बना है ।

यही तक अंत नही, मन्त्रीगण जिलावाद और जातिवाद की दलदल मे बुरी तरह फंस हुए है।

यह संकीर्णता किसी स्वतन्त्र देश के नागरिक को शोभा नही देती। सरकार को निष्पक्ष होकर जाच करनी चाहिये। (14 अगस्त, 1954)

• हरिजन

अनेक जटिल समस्याओ के सदृश हरिजन समस्या भी स्वतन्त्र भारत के सामने एक प्रमुख समस्या है। विदेशी धर्म प्रचारक इस उपेक्षित समाज का पर्याप्त लाभ उठाकर अपने धर्म का प्रचार एव प्रसार करने मे सलग्न हैं। इस प्रकार हिन्दू भाइयो द्वारा धर्म परिवर्तन का उत्तरदायित्व हिन्दू समाज पर ही है। समाज का प्रमुख अग होने पर भी हरिजनो के प्रति उपेक्षा एव संकीर्णतापूर्ण व्यवहार हिन्दू समाज की एक विशेष कमजोरी रही है। इस कमजोरी का नाजायज लाभ सदैव ही दूसरो द्वारा उठाया गया है। आज भी उठाया जा रहा है। लेकिन भारत सरकार ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात् इस दिशा मे स्तुत्य कदम उठाया है। हरिजन दिवस के राष्ट्र व्यापी आन्दोलन का सूत्रपात सरकार का प्रथम प्रयास है।

लेकिन विचारणीय प्रश्न यह है कि समाज के अभिन्न अग के प्रति उपेक्षा एव घृणा किस प्रकार उत्पन्न हुई? इस का स्पष्ट एव सही उत्तर भारतीय सामाजिक जीवन अध्ययन करने से मिल सकता है। प्राचीन भारत के सामाजिक जीवन का आधार वर्ण व्यवस्था थी। समाज की गतिशीलता को कायम रखने के लिए समाज चार वर्णो मे विभक्त था। ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र प्रत्येक वर्ण कर्म के आधार पर बनाया गया था। जहा तक चौथे वर्ण शूद्र का प्रश्न है इसका आधार भी कर्म था लेकिन ऐसा कर्म जो निकृष्ट एव निम्न कोटि का हो। सम्भवत यह वर्ग मजदूरी आदि करके अपना जीवनयापन करता हो। लेकिन धीरे धीरे यह शब्द रूढिगत बन गया और विकृत भी होने लगा। विदेशो के, विशेषतया अग्रेजो के सम्पर्क मे इस वर्ग द्वारा निकृष्ट कार्य करवाये जाने लगे। इस प्रकार यह वर्ग अपने नीच कामो के द्वारा उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाने लगा और निम्न वर्ग मे इनकी गिनती होने लगी। इनका नया नामकरण भी हो गया और अब अछूत भी कहलाये जाने लगे।

विदेशी शासको ने इस परिस्थिति से लाभ उठाया। धर्म प्रचारको की सहायता से धर्म परिवर्तन का सूत्रपात हुआ, अपने धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए ईसाई पादरियों ने इन्हे लालच देना आरम्भ किया, लालच भी आर्थिक नही था। उन्हे अच्छे अच्छे सम्बन्ध मिले और समाज मे प्रतिष्ठा भी—भौतिक युग मे यह आकर्षण अचूक सिद्ध हुआ।

इस प्रकार फैले हुए समाज के इस विष का अनुभव सवप्रथम स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया। इन्होने हिन्दू समाज मे व्याप्त दुगुणो एव वाह्याडम्बरो के विरुद्ध आन्दोलन चलाया। उनके इस प्रशसनीय काय को महात्मा गाधी ने आगे बढाया। गाधी जी द्वारा चलाये गये इस आदोलन को कामयाब बनाने के लिए उनके विचारो पर चलने वाली काग्रस सरकार ने इस दिशा म अव प्रशसनीय कदम उठाया है।

लेकिन परिस्थिति अब कुछ भिन्न हो गयी है। जिन्हे पहले सवण घणा की दष्टि स देखत थे आज ये उनसे घृणा करने लगे हैं। सरकार द्वारा प्रोत्साहन मिलने पर इन्हे अलगाव मे ज्यादा विश्वास होने लगा है। राजनीतिक ओट मे कुछ हरिजन नेता भी इसी प्रकार का विष वमन करते नजर आ रहे हैं।

यदि यह दशा इस प्रकार रही तो यह स्थिति और अधिक जटिल हो जायगी। अत इसका सुलझाव सही तरीके से होना चाहिए और जो सकीणता दोनो ओर व्याप्त है उसका अवमूल्यन होना चाहिए तब जाकर इस समस्या के सुलझने की सम्भावना है। लेकिन नवीनतम गतिविधियो के आधार पर सकीणता के विकास की सम्भावना अधिक है।

हरिजन दिवस यदि इस दिशा मे कुछ कर सका तो इसकी साथकता सिद्ध होगी अन्यथा यह एक निरथक प्रयास ही सिद्ध होगा। [2 दिसम्बर, 1954]

● भ्रष्टाचार

गगानगर को राजस्थान प्रात का प्राण कहे तो अतिशियोक्ति न होगी। यह प्रदेश अन्य भागो की अपेक्षा समृद्धिशाली एव महत्वपूण है। सिचाई उत्पादन व्यापारिक केन्द्र तथा सामरिक दष्टि-कोण से इसका और भी महत्व बढ जाता है। इस जनाकीण प्रदेश ने उत्तरोत्तर आशातीत प्रगति की है। सामुदायिक विकास योजना के चार विकास खण्ड अब तक खुल चुके हैं। भाखरा की सिचाई आशिक रूप से प्रारम्भ हो चुकी है। राजस्थान कनाल का काय भी प्रारम्भावस्था मे है। सडको क काय म भी प्रगति हो रही है। इसका यह अथ नही कि यहा भावी विकास की आवश्यकता नही है।

जहा हम समृद्धि विकास और प्रगति की बात करत हैं वहा हमारा पतन भी कम नही हुआ। जहा समृद्धि है वहा विलासिता है, जहा विलासिता है, वहा नाश एव अध पतन भी। आज हम केवल उपदेश देकर सरकार की आलोचना करके ही सन्तोष कर लेते हैं ये लक्षण अच्छे नहीं हैं। इससे तो वही कहावत चरिताथ होती है— पर उपदेश, कुशल बहुतेरे आज धार्मिक युग नहीं कि

हम नरक की कल्पना स जनसाधारण के मानस को भयभीत कर सकें। आज भौतिक और यथार्थवादी युग मे केवल भावना से काय नही चल सकता। आज तो भाव एव भावनाए दोनो ही दूषित एव विकृत होते जा रहे हैं। इस भयावह स्थिति का मूल्याकन स्वस्थ सन्तुलित मस्तिष्क से करना होगा।

इस क्षेत्र के निवासी जहा विद्वान, बुद्धिमान, कुशल व्यवसायी, श्रमशील एव साहसी है वहा मद्यपान तथा सम्पन्नता के मद म अपराध करने के अभ्यस्त भी होते जा रहे हैं। मुकदमेबाजी म हजारो रुपये रिश्वत देने को विवश हैं। इस प्रकार का आचरण उनके सस्कार का रूप धारण करता जा रहा है। इस प्रकार की स्थिति मे किस सहृदय व्यक्ति को चिन्ता न होगी।

गत दिनो मुख्यमन्त्री राजस्थान श्री सुखाडिया ने अपने भाषण म स्पष्ट स्वीकार किया है। काग्रेसी कायकर्ताओ का यह पवित्र कर्तव्य हो जाता है कि राजस्थान सरकार द्वारा चालित भ्रष्टाचार निरोधक अभियान मे सक्रिय सहयोग देकर उसे सफल बनावें।

इस काय को कार्यान्वित करने हेतु प्रत्येक व्यक्ति का दलबन्दी, राजनीतिक स्वार्थ से ऊपर उठकर काय करे, तभी सफलता सम्भव है।

श्री सुखाडिया ने अपने भाषण म यह स्वीकार किया है कि इस क्षेत्र मे भ्रष्टाचार सब जिलो स अधिक है जिसको हम अक्षरश सत्य मानते हैं। इस सम्बन्ध म हमारा सुझाव है कि—

1 आई० जी० भ्रष्टाचार निरोध का केन्द्रीय कार्यालय गगानगर मे ही हो।

2 अब तक (इकाइ के समय से लेकर) जो जो अधिकारी उच्च पद पर रहे हैं नियुक्ति के समय से आज (या पेन्शन पाने) तक उनकी आर्थिक दशा क्या थी? उन्नत होने के मूल कारण क्या हैं?

3 इसी प्रकार राजनीतिक नेताओ की 1947 म क्या स्थिति थी साधन क्या थे? आज क्या स्थिति है?

4 जाच के समय यदि कोई अधिकारी इसी क्षेत्र मे हो तो उसका तबादला पहले कर दिया जाये।

5 यह जाच कमेटी किसी अन्य प्रान्त के भू पू न्यायाधीश की हो तो अधिक उत्तम होगा।

6 इसी कमेटी को तस्कर व्यापार की जाच का अधिकार हो।

7 यह कमेटी अपना निर्णय 2–3 मास की अवधि मे दे दे, ताकि दण्ड की व्यवस्था शीघ्र हो सके। इस प्रकार जनसाधारण का भी कर्तव्य है कि वे जाच कमेटी को सक्रिय सहयोग देकर इस अभिशाप पूर्ण काय की समाप्ति करके जन जीवन म एक नवीन परम्परा कायम कर सकें। जन जीवन फले फूले। इस सम्बन्ध मे जनमत तैयार किया जावे। समस्त राजनीतिक कार्यकर्ताओ को मैदान म डट जाना चाहिये।

[17 अक्टूबर, 1957]

● सीलिग

भारत कृषि प्रधान देश है। देश की 70 प्रतिशत जनसख्या गावा मे आबाद है। ग्रामीण जनता के जीवन निर्वाह का एक मात्र साधन कृषि है। विभाजन से भी भूमि की समस्या जटिल हुई है।

भू-स्वामित्व का प्रश्न स्वतन्त्रता के पश्चात भारत सरकार के लिए एक सर दद बन गया है। भूमिहीन किसान के पास आज जीविकोपाजन का कोई साधन नही है। कृषि योग्य अधिकाश भूमि वडे जमीदारो के कब्जे मे है काश्तकार का उस पर कोई हक नही जा अपने श्रम एव शक्ति से उत्पादन करता है वह भूखे पेट व फटे हाल रहता है। उसकी आर्थिक दशा दिनोदिन शोचनीय हानी जा रही है। वह ऋण एव बेगार से दबा हुआ है। भारत सरकार इस प्रश्न पर गम्भीरता स विचार करने के पश्चात् इस निणय पर पहुँची है कि अधिकतम भूमि सीमा का निर्धारण तत्काल किया जावे। प्रजातान्त्रिक तथा समाजवादी शासन प्रणाली मे बहुँ सख्यको की उचित माग को टाला नही जा मक्ता। इस सिद्धात को लेकर राजस्थान प्रात मे भी श्री मथुरादास माथुर के आधीन प्रात के आधार पर सीलिंग कमेटी बनी। प्रत्येक जिले मे उसने प्रत्येक दष्टिकोण से अध्ययन किया। 2-3 साल पूव यह कमेटी गगानगर भी आई। स्थानीय जिला बोड मे जमीदारो की बठक बुलाई गई जिसमे लगभग जिले के वडे 2 जमीदार उपस्थित थे। काश्तकारो व छोटे किसानो को शायद नहीं बुलाया गया। न अन्य राजनीतिक एव सावजनिक काय कर्ताओ को सूचना दी।

सयोगवश श्री नाथूराम जी योगी व श्री कमल नयन शर्मा वहा जा पहुँचे। श्री योगी ने 2 मुरब्बा सीलिंग हाने का प्रस्ताव रखा। श्री कमलनयन ने उनका समथन किया।

अब गत दिनो जब यहा प्रदेश काग्रेस कमेटी की बैठक हुई तो मुख्य मन्त्री ने सीलिंग करने की घोपणा की। आज कृपक समाज मे इसकी वडी चर्चा है। सैकडो रजिस्ट्रिया हो रही हैं। भूमि हीन किसान शायद इस सुविधा से भी वचित रह जावें।

राज्य सरकार किसानो के हक मे नियम बनाती है किन्तु जिस वग क हित म नियम बनाया जाता है, लाभ उसके विपरीत वग का पहुँचता है। यथा-बेदखली का कानून काश्तकारो के पक्ष मे था कि तु 80 प्रतिशत मुजारा बेदखल कर दिया गया। इसका प्रमाण सन 1947 स 49 के राजस्व विभाग का रिकाड और गिरदावरी उसकी साक्षी है। यही स्थिति छठा हिस्सा कानून की हुई। हजारो काश्तकार सीरी हाली और नौकर बन गये हैं।

कई वर्षो से बडे2 जमीदारो न अपन खाते की जमीन तकसीम कराली वह भी नाबालिगो क नाम। आज हजारो रजिस्ट्रीज हो रही हैं। इस प्रकार कानून चाहे कितना ही प्रगतिशील क्यो न हो उसको कार्यान्वित कस किया जाता है यह प्रश्न कम महत्त्व का नही है।

राजस्थान विधान सभा के इसी अधिवेशन मे सम्भवत आगामी 28 अप्रेल को बिल विचार के हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है। हमारी राय मे इस क्षेत्र के एक परिवार के लिये 2 मुरब्बे जमीन होनी चाहिये।

हमारा उद्देश्य जीवन स्तर को ऊचा उठाना है, न कि गिराना। प्रात के अय भागो की अपेक्षा यहा के ग्रामीण का जीवन स्तर अपक्षाकृत उन्नत है। अब प्रश्न रहता है परिवार की परिभाषा का। सो वह पति पत्नी एव 3 सन्तान (जो 15 साल तक हो) होनी चाहिये।

यह निर्विवाद है कि श्रमशील भूमि हीन किसान जब यह अनुभव करने लगेगा कि मैं स्वामी हूँ तो वह स्वय कठिन श्रम द्वारा अधिकाधिक अन्न उत्पन्न करेगा और देश के समक्ष जो खाद्य सकट का भय रहता है सदा के लिये समाप्त हो जायेगा।

[17 अप्रेल 1958]

4

वे हमेशा जनता के साथ खडे रहे

श्रीगगानगर जिले के सबसे पुराने और निर्भीक पत्रकार श्री कमलनयन शर्मा नही रहे। यह बात जब ध्यान म आती है तो हृदय मे एक शून्य सा भर जाता है। चालीस वष पहल उनसे जब मेरा परिचय हुआ तो हम दिन प्रतिदिन एक दूसरे की ओर खिचते ही चले गय। आपस म वह प्रेम भाव बराबर एक सा बना रहा। जब-जब भी मुझे श्रीगगानगर जाने का अवसर मिला मैं उनसे मिले बिना कभी नही आ सका और वह भी मुझे देखत ही गदगद हो जाते थे और सब काम काज छोडकर मेरा उपस्थिति के प्रत्येक क्षण का उपयोग आपस की गपशप एव राजनतिक चर्चाओ मे करने के लिए डट जाते थ। ऐस साथी और मित्र को खो देने का गम मुझे तो पता नही कितने दिन सताता रहेगा।

गत वष वे जयपुर आये तब मिलना हो गया था। हमेशा की तरह उत्साह से मिले बातें की। बातचीत के दौरान कहने लगे—"मानचन्द! पहले कभी सोचा ही नही था कि मैं साठ साल की उम्र के बाद भी जिन्दा रहूगा। पर कुदरत का खेल बडा विचित्र है। देखो मैं अब भी काम करता हूं।' उनसे मेरी वह आखिरी मुलाकात सिद्ध हुई और वे चल दिये जहा सभी को जाना है।

शर्मा जी से मेरी मुलाकात शुरू मे सन् 1948 के दिनो मे हुई। जब वे बीकानेर राज्य की सामन्ती सरकार के एक कर्मचारी थे और राज्य व्यापी राज्य कर्मचारी हडताल को सफल बनाने के लिये दीवाने की तरह लगे हुए थे। उन दिनो उनको धुन थी तो केवल एक ही कि किस प्रकार हडतालियो की मागो को मनवाने के लिए राज्य सरकार को झुकाया जाए। उन दिनो उन्हें न खाने की फिक्र रहती थी, न थके हुए शरीर को आराम करने देने का ध्यान।

अग्रेज जा चुके थे, केन्द्र मे पडित नेहरू और सरदार पटेल के नेतृत्व म लोकतत्र का ताना बाना तेजी से बुना जा रहा था। सविधान निर्मात्री परिषद सविधान तैयार करने मे लगी हुई थी पर देश की सैकड़ो देशी रियासतो म से एक रियासत, बीकानेर के शासक महाराजा सादूल सिंह इस उधेडबुन मे उलझे हुए थे कि किस प्रकार बीकानेर रियासत का भारतीय सघ मे एक इकाई के रूप म अस्तित्व बनाया रखा जाये। उन्होने अपने उद्देश्यो की पूर्ति के लिये अपने प्रतिनिधि, काग्रेस के मेम्बर और अन्य लोगो की मिली जुली लोकप्रिय सरकार भी बनाई। पर पीढियो के पुराने सस्कारो से प्रभावित तो थे ही।

राज्य कर्मचारी हडताल के नेताओ मे बीकानेर म श्री पचानन शर्मा और प्रो वेद कुमारी के नाम चलते थे तो श्रीगगानगर के कर्मचारी नेताओ मे श्री कमलनयन शर्मा का नाम सबसे पहले आता था। उन दिनो वे मुझ म रोज मिलने लगे। मैं उन दिनो श्रीगगानगर के नवयुवक सार्वजनिक पुस्तकालय का व्यवस्थापक था। खूब पढना और यथाशक्ति लिखना मेरी दिनचर्या का मुख्य अग रहता था।

शर्माजी दिन भर हडताल सम्बन्धी गतिविधियो के तनाव भरे वातावरण मे रह कर शाम को मेरे पास आ बैठते और अपने दिनभर के कार्यकलापो भाषणों आदि का ब्यौरा देकर मुझे उन सब बातो की समीक्षा करने को कहते, एक एक मुद्दे पर चर्चा करते। समाचार पत्रो मे समाचार भेजने मे मेरा सहयोग लेते। उनको भाषा मे अच्छे और उपयुक्त शब्द काम मे लेने का शौक इस समय ही लग गया था। अत इस काम के लिये मुझे सर्वाधिक साथी-सहयोगी समझ कर घण्टो मेरे साथ बिता कर खुश होते थे।

हडताल का दौर समाप्त हुआ। वृहद राजस्थान बनने के साथ रियासत का अस्तित्व भी समाप्त हो गया। 30 मार्च 1949 को राजस्थान बना। वह चाहते तो नई सरकार के सामने अपना केस रखकर पुन नौकरी मे आ सकते थे। पर ऐसा उन्होने कभी सोचा ही नही। सोचा तो यह सोचा कि श्रीगगानगर से साप्ताहिक पत्र निकाला जाय, जो इस सीमान्त जिले की समस्याओ को केन्द्रीय एव राज्य सरकार तथा जनता के सामने निरन्तर रख सके। उस समय म श्रीगगानगर से नियमित साप्ताहिक पत्र चलाना कोई आसान काम नही था—पर श्री कमलनयन शर्मा ने इस कठिन मार्ग को चुना।

असल मे सघर्षों म जूझना उनका स्वभाव हो गया था। अत जिले म कोई भी जन आदोलन होता तो वे सरकार के सामने जनता के साथ खडे दिखलाई देते। वे आन्दोलन के न केवल समाचार ही छापते बल्कि उसे सफल बनाने के लिए जगह-जगह भाषण देने से भी नही चूकते।

एक जागरूक पत्रकार के रूप म अपने आपको सही सिद्ध करने के लिय वे हर घटना-क्रम और राज्य की राजनैतिक उथल पुथल के सम्बन्ध मे एक सजग जिज्ञासु के रूप म हमेशा नजर आते थे। उनकी पत्रकारिता के पीछे केवल पेट भरने की भावना कभी नही रही। समाज म बदलाव आये देश और प्रदेश मे लोकतान्त्रिक मूल्यो का वचस्व बढे यह उनकी पत्रकारिता का उद्देश्य रहता था।

वे आज नही रहे पर श्रीगगानगर जिले के लोकतान्त्रिक इतिहास मे उनका नाम रहेगा ही—एक सजग पत्रकार और जनसेवी के रूप मे।

मालचन्द खडगावत, पत्रकार
अध्यक्ष राजस्थान पचायत परिषद जयपुर

पत्रकारिता और सामाजिक दायित्व

☐ डा० मनोहर प्रभाकर
अति निदेशक जनसम्पर्क

महर्षि अरविन्द घोष ने कहा था कि राजनैतिक स्वतन्त्रता राष्ट्र की प्राण-वायु है और इसकी अवज्ञा करके सामाजिक सुधार, शैक्षणिक सुधार, औद्योगिक विस्तार तथा नैतिक उत्थान के प्रयत्न निरी अज्ञानता के परिचायक हैं। उनके इस कथन की सार्थकता भारत में राजनैतिक स्वतन्त्रता के इतिहास से पूर्णत प्रमाणित हो सकती है।

यह सर्व विदित सत्य है कि भारतीय पत्रकारिता ने लोक चेतना को जागृत करने और राजनैतिक स्वतन्त्रता को प्राप्त करने में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दी पत्रकारिता ने अपने प्रारम्भिक काल में समाज सुधार की दिशा में भी बड़ी सक्रिय भूमिका निभायी है। राजा राममोहन राय, बाल गंगाधर तिलक और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसी विभूतियों ने सामाजिक रूपान्तरण की दिशा में उनके द्वारा प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से अविस्मरणीय योगदान किया है।

इस बारे में दो मत नहीं हो सकते कि हम लोग राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर चुके हैं किन्तु आज भी सामाजिक दृष्टि से हम लोग इतने पिछड़े हैं कि राजनैतिक स्वतन्त्रता के समस्त

फल इस पिछडेपन के कारण निरथक हो जाते हैं । समाज म आज भी दहेज, बाल-विवाह, वद्ध विवाह छुआछूत और अशिक्षा का बोलबाला है । आर्थिक मोर्चे पर तस्करी जमाखोरी और मिलावट करने आदि के असामाजिक दुष्प्रयत्न बराबर जारी है । इसी प्रकार प्रशासन म सभी स्तरो पर भ्रष्टाचार व्याप्त है । इन सारी स्थितियो का निराकरण करने मे समाचार-पत्रो की भूमिका बहुत प्रभावी सिद्ध हो सकती है ।

यह सही है कि भारत मे शिक्षा का प्रतिशत अभी बहुत कम है और इसलिए मुद्रित सामग्री के माध्यम मात्र से पूरी विचार-क्रान्ति सम्भव नही है । तथापि जो लोग पढे लिखे हैं वे समाचार-पत्रो के माध्यम से प्राप्त विचारो का उन लोगा तक पहुचा सकते हैं जो अभी साक्षर नही हैं । आजादी की लडाई का वह दौर अभी हम भूले नही है जब प्रशासन के अत्याचारो, उत्पीडन और आर्थिक शोषण की कथाए हमारे समाचार पत्र पूरे साहस के साथ प्रकाशित करते थे । चेतना की ये चिनगारिया हजारो पाठक दूर-दराज देहातो तक पहुचाते थे । हमारे स्टेशन मास्टर पोस्ट मास्टर और सामाजिक कार्यकर्ता समाचार पत्रो की सामग्री को गावा म लालटेन और दिये की रोशनी म बैठकर चौपालो और घरो के आगनो मे उन लोगो के सामन पढ कर सुनाते थे जो समाचार पत्रो का पढने मे सक्षम नही थे । कहने का आशय है कि शिक्षा का औसत कम होते हुए भी समाचार पत्रो के माध्यम मे हम नये सामाजिक मूल्यो का सन्देश जन-सामान्य तक पहुचाने का उपक्रम कर सकते हैं । आज की सबसे बडी आवश्यकता यह है कि हम आर्थिक पिछडेपन को दूर करने के लिए उन सामाजिक बुराइयो के प्रति वितृष्णा पदा करें जो हमारे समाज को घुन की तरह खाय जा रही हैं । शादी विवाहा मे फिजूल-खर्ची, लेन-देन और थोथे आडम्बर के खिलाफ हमारे समाचार पत्र एक प्रकार का जिहाद छेड सकते हैं । आज जिन समाजद्रोही तत्वो के उन्मूलन की सबसे बडी आवश्यकता है वह वे लोग हैं जो खाद्यान्नो मे मिलावट करते हैं, जमाखोरी करते हैं, महगाई बढाते हैं और करवचना करते हैं । समाचार पत्र इस प्रकार के समाजद्रोही तत्वो के विरुद्ध जन-मानस तैयार करने मे बहुत बडा काम कर सकता है ।

इसी प्रकार अपने राजनैतिक अधिकारो के प्रति जागरूकता पदा करने की दिशा म समाचार पत्र मतदाताओ के प्रशिक्षण का काय भी बडी खूबी के साथ अन्जाम दे सकते हैं ।

यह बडे खेद का विषय है कि जहा प्रतिष्ठित समाचार पत्र अपने इन दायित्वो का निर्वाह कर रहे है वहा बडी सख्या मे ऐस पत्र भी हैं जो पीत पत्रकारिता म उलझे हैं । लोगो का चरित्र हनन करने और प्रतिमा भजन करने का काय वे लोग करते है । इनकी सारी भूमिका ही नकारात्मक होती है । आज जब सारा देश पुनर्निर्माण के यज्ञ मे जुटा हुआ है समाचार पत्रो का यह दायित्व है कि देश के विभिन्न अचला मे हो रहे विकास-कार्यों की जानकारी जनता तक पहुचायें और मानवीय रुचि के ऐसे समाचार प्रकाशित करें जो जन मानस को प्रेरित करें । निराशा, हताकाक्षा और आस्थाहीनता को बढावा देने वाले समाचारो के प्रकाशन से दूर रह ।

एक बात जा हमारे सामाजिक परिवेश के सन्दर्भ मे बडी महत्वपूण है, वह है अन्ध विश्वासो जादू टोने और जन्तर मन्तर मे आस्था रखने की । हमारे समाचार पत्रा का यह कतव्य

है कि वे अ धविश्वासो को बढावा देने वाले सभी प्रकार के समाचारो का बहिष्कार करें और वैज्ञानिक दृष्टि विकसित करने मे सहायता करें। सक्षेप म समाचार पत्र एक नागरिक को प्रभावान और दृष्टिवान बनाने का माग प्रशस्त करने म बहुत बडी सहायता कर सकते हैं। जहा तक राजस्थान का सवाल है हमारा प्रदेश आर्थिक और सामाजिक दोना ही दृष्टियो मे बना पिछडा हुआ है। अशिक्षा का अ धकार और अपने सामती सस्कारा के कारण यहा का जन मानस नये विचारा को ग्रहण करने से कतराता रहा है। इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे वे समाचार पत्र जो कि ग्रामीण अचलो से निकल रहे हैं, हमारी सामाजिक कुरीतियो और अ धविश्वासा पर प्रहार करें और एक तक सम्मत स्वस्थ जीवन दृष्टिकोण बनाने मे मदद करें। राज्य सरकार इस प्रकार के पत्रा को प्रोत्साहन देने के लिए पूरी तरह कृतसकल्प है। हम लोगा को यह नही भूलना चाहिये कि राजस्थान म पत्रकारिता का इतिहास बडा उज्जवल रहा है। आर्यसमाजी पत्रकारिता जिसका आरम्भ यहा महर्षि दयान द ने किया राजस्थान मे सामाजिक चेतना की सवाहक रही है। अजमेर से प्रकाशित जगत हितैषी और राजस्थान समाचार जसे पत्रो ने जन जागरण की अलख जगान म ऐतिहासिक भूमिका अदा की है। स्वदेशी स्वधम स्वभाषा और स्वराज की परिकल्पना का मूत्त रूप देने मे राजस्थान के पत्रा ने भी उसी प्रकार क्रा तिकारी योगदान दिया है जिस प्रकार बगाल के पत्रा ने दिया है।

आज राजस्थान मे जो ब धु पत्रकारिता के व्यवसाय म लगे हुए हैं उ हे यह सोचना है कि वे एक गौरवपूण परम्परा के धनी हैं और जिस प्रकार उनके पूवजा ने अतीत मे अपने दायित्वो को पूरे उत्तरदायित्व के साथ निभाया है, वे उनके वशधर होने के नाते आज के बदले हुए सामाजिक एव राजनतिक परिवेश मे अपने दायित्व को उसी गरिमा क साथ निभायेंगे।

विस्तार और विश्वास

□ राजेन्द्र शकर भट्ट
सलाहकार, मुख्यमत्री राजस्थान

विश्वास और विश्वसनीयता की जो परम्परा से प्रचलित परिसीमाए है उनका अति-क्रमण आधुनिक जन सचार साधन कर रहे है। दादा-दादी नाना-नानी जो कहते हैं उतना ही नान है इसे मुद्रण ने ध्वस्त किया था, क्योंकि पुस्तके विविध क्षेत्रा मे अतिविकसित व्यक्तित्वो के ज्ञान और विश्वासा को सभी के लिए उपलब्ध करन लगी। पत्र पत्रिकाआ ने इसम विविधता और शीघ्रता जोडी। लेकिन रेडियो और टेलीविजन ने आकर तो विचार और विश्वास का जडा म हिला कर रख दिया और नान विनान स इनका तथा सम्प्रेषण के अन्य उपकरणा का जो विकास हो रहा है इसस मानव ज्ञान और मनुष्य की अनुभूति वास्तव मे विश्वव्यापी हो जायेगी और स्वय मानवीय सीमाओ मे रहते हुए भी मनुष्य यह देख और समझ सकेगा कि श्री कृष्ण ने जो अपना विश्वरूप दुर्योधन और अजन को दिखाया था वह नितान्त निराधार नही था।

जो मुख्य मुख्य तत्व मनुष्य शरीर और मानव स्वभाव का निर्माण और विकास करते उसके भाग्य का और उसके भविष्य का निर्धारण करते हैं, वे देशो बोलियो सामाजिक परिस्थितिया आर्थिक स्थितिया और शासन पद्धतियो के भिन्न होने भर से इतने एक दूसरे से पृथक नही हा जाते कि एक क्षेत्र का आदमी अपन को दूसरे क्षेत्र के आदमिया से अलग और अलग तरह का अनुभव कर। ग्रामीण जीवन मे जो एका और समता का बोध था, उसे आधुनिक सचार साधन सारे ससार के लिए लाकर रहेगे।

इसमे विश्वास जिनका नही बन पाये उन्हे पिछले पचास वर्षों म जो विकास पत्र पत्रिकाओ, रेडियो और टेलीविजन का हुआ है, उसका सिहावलोकन करना चाहिए। यह भली प्रकार से अदाज मे नही है कि इलेक्ट्रोनिक आविष्कार क्या क्या सचार उपकरण सर्वसाधारण के लिए निकट भविष्य मे सुलभ करने वाले हैं लेकिन हमारे देखते देखते मुद्रण, प्रसारण और प्रदशन म जो क्रातिकारी उन्नति हो गई है उमस भविष्य के लिए कल्पनाए और सकल्पनाए अपन अनजान भावी विकास के प्रति आस्थावान अवश्य हो जानी चाहिए।

ऐसे मे इन सचार साधनो के प्रति विश्वास का प्रश्न गौण होता जा रहा है। भारत ही अकेला देश नही है जहा रेडियो और टेलीविजन का सचालन शासन के एकाधिपत्य म है। रूस और चीन जसे विशाल साम्यवादी देशो के अतिरिक्त फ्रास और पश्चिमी यूरोप क कई देशो मे भी स्थिति प्राय इसी प्रकार की है। जहा तक प्रभाव का प्रश्न है वह शब्द और शली का इतना होना है कि कई बार उसका उच्चारण और उपयोग कौन कर रहा है इसका ध्यान ही नही रहता। भारत के ही वेद उपनिषद सहित अनक प्राचीन ग्रन्थ ऐसे हैं जिनके रचनाकारो के वास्तविक नाम हम नही जानत। इधर, महाभारत और रामायण हैं जिनकी विषय वस्तु ही ऐसी है कि जो अच्छी तरह कह ले वही विश्वसनीय हो जाता है। विज्ञान इसे सम्भव मानन लगा है कि महाभारत सग्राम के समय के स्वर और शोर को हमे फिर से सुनाया जा सकेगा तब पता लगेगा कि गीता को कैसे कहा गया था। अभी इस पर विश्वास नही होता, लेकिन हम देखते हैं कि दुनिया के दूसरे छोर पर जो खेल होते हैं, भाषण होते हैं, घटनाए होती हैं, उनका सीधा प्रसारण हमारे घरो मे रेडियो और टेलीविजन के माफत पहुँचता है। समय की अवधि मात्र का प्रश्न रह गया है। कुछ तो समय, चित्र और शब्द के अमेरिका से भारत पहुँचन मे लगता है—इसको आविष्कारो के गुणको से बढाते जाए तो हम अवश्य महाभारत काल मे पहुँच जायेंगे।

प्रश्न यहा विश्वास का था। जो सचमुच दिख रहा है और सुनाई दे रहा है, उस पर विश्वास नही करना चाहने पर भी, उसका प्रभाव पडता है। रूस, चीन और अमेरिका की बहुत सी बातें हम न स्वीकार करना चाहते हैं न हमारी आस्था उनमे है। फिर भी ये राष्ट्र हम पर अपना प्रभाव बढात जा रहे हैं, जिनमे इन देशो के उन्नत और व्यापक जन सचार साधनो का ही सर्वोपरि योगदान और प्रभाव है। अमेरिका जो इतना भारतीय जीवन म प्रविष्ट हो रहा है उसका माध्यम वहा जाने और वहा का अनुभव और लाभ प्राप्त करने वाले भारतीय है अमरिका के विचार और व्यवहार उन्नति करन क उपाय हैं, जो वहा की पुस्तको, फिल्मो तथा रेडियो प्रसारण स हमारे यहा के छोटे-छोटे कस्बो मे भी पहुँचने लगे हैं। हम अनुभव नही करें लेकिन भारतीय मानस को प्रभावित करने के अनेकानेक और अति प्रभावशाली प्रयत्न रूस और अमरिका दोनो भारत की भूमि पर भी कर रहे हैं। यह सब जन सचार साधनो के विस्तार और उद्देश्य मूलक उपयोग का परिणाम है।

इसी मे स प्रश्न निकलता है कि जो भारतीय जन सचार साधन हैं उनका इतना प्रभाव क्यो नही है क्यो वे अपने प्रति उतना विश्वास विकसित नही कर सके। पडोसी और प्रतिद्वन्दी पाकिस्तान के विषय म ही नही हमारी सना जो ऐतिहासिक अभियान श्री लका मे कर रही

है उसके बारे मे भी और बहुत बार भारत की प्रभावकारी घटनाओ के बार म भी जैसे बार-बार होने वाले साम्प्रदायिक दगे—हम बी बी सी पर आकाशवाणी से अधिक विश्वास करना चाहत है। दोनो प्रसारण प्रबन्धो पर थोडे-थोडे अन्तर का शासकीय नियन्त्रण है। फिर भी जो विदेशी है और सात समुद्र पार से प्रसारित होता है, उस पर अधिक विश्वास होता है। क्यो ?

ऐसा नही है कि भारतीय दूरदशन और आकाशवाणी का अनुकूल प्रभाव पडता ही नही। अध्ययनरत विद्यार्थियो और कायरत कृषको के लिए जो कायक्रम प्रसारित तथा प्रदर्शित हो रहे हैं उनके बढते प्रभाव का विश्लेषक तथा विशेषज्ञ भली प्रकार स्वीकार करते हैं। इसका कारण यह है कि इन दोना कायक्रमो मे इन क्षेत्रो के कुशल और अनुभवी व्यक्तियो का प्राय निर्णायक योगदान और करीब करीब शत-प्रतिशत सहयोग रहता है। यह बात वार्ताओ गोष्ठियो और समाचारो म जितनी कम है उतना ही कम उनका प्रभाव और उनके प्रति विश्वास है। तकनीको उपकरण तकनीक मे कुशल और पारगत व्यक्ति ही चला सकत है।

समाचार पत्र साप्ताहिक और पत्रिकाएँ अवश्य अधिकाश म कुशल सम्पादको और पत्रकारो के हाथो म हैं। जहा पत्र-स्वामी ही पत्रकार और सम्पादक होना चाहते हैं वहा का उत्पाद ता सुधर हा नही सकता। लेकिन समाचार पत्र सामान्यत सम्पादका द्वारा ही चलाये जा रहे हैं।

पत्र-सचालन मे जो प्रभाव पत्र-स्वामित्व का सभी देशो म पडता है उसके अतिरिक्त हमारे यहा की विशेषता यह है कि बहुपठित पत्र पत्रिकाए प्राय ऐसे स्वामित्व-समूहो के हाथो मे हैं जिनका ज्यादा हाथ अन्य प्रकार के उद्योग-व्यापार मे है। अपनी आय के अन्य साधनो की ओर उनका अधिक ध्यान है, क्योकि उनसे वास्तव मे उनकी अधिक आय होती है। उनकी पत्र पत्रिकाए उनके अन्य आय-अर्जन म सहायक रह इस स्वार्थजन्य चेष्टा म वे सम्पादको को अपने हितो का प्रवक्ता बनाना चाहते हैं। ये हित व्यापारिक के अतिरिक्त राजनीतिक भी हाते हैं क्योकि ये पत्र स्वामी घराने ही हैं जो ससद सदस्यो तथा विधायको को भी जितना हो सके सख्या म अपने प्रभाव म रखने का प्रयत्न करते रहते है। यह लोकतन्त्र और उसके वास्तविक विकास के विपरीत है इसीलिए भारत में लोकतन्त्र का चालीस लोकतन्त्रात्मक वर्षो म भरपूर विकास नही हुआ है।

इस बात को ज्यादा अच्छी तरह उन दनिको साप्ताहिको पर विचार करके समझा जा सकेगा जिनका सचालन औद्योगिक घराने नही करते जिनका सचालन या तो न्यासो के हाथो मे है या पत्रकारिता के प्रति समर्पित घरानो के। नाम लेने भर को ही नही वास्तविक प्रसार म ऐसे दैनिक और साप्ताहिक देश के कई प्रदेशो म है। उनका प्रभाव भी है और उन के प्रति विश्वास भी है। अतएव सचालन-प्रक्रिया तथा सचालन लक्ष्य का सम्बन्धित साधन के प्रभाव और विश्वास मे निर्णायक स्वर हुआ।

दुर्भाग्य यह है कि उत्तर भारत का, विशेषत हिन्दी का पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय भी स्वामित्व की इन्ही उलझनो मे ग्रस्त है। जो घराने पीढियो से लोकप्रिय पुस्तकें निकाल कर लोक जागरण म लगे हुए थे, उन्हे रौंद कर अर्थोपार्जन को सर्वोपरि मानने वाले प्रतिष्ठान उचित

अनुचित उपायो स अपना विकास कर रहे है। सेवा और लाभ म जो अन्तर होता है, उसी क असर म हमारा प्रकाशन व्यवसाय आ गया है। बहुत बुरा यह हुआ है कि उनके थोक-खरीद के चक्कर म पुस्तक विक्रेता पिस गया ह और अच्छी पुस्तक उत्सुक एव समथ पाठकों का भी सुलभ नही होती। कुछ उनके बढ मूल्य न उनका प्रसार घटाया है, कुछ इस निश्चिन्तता न कि सामान्य पाठक के पास पहुँच बिना भी पुस्तको स लाभ कमाया जा सकता है। दक्षिण म जसी पुस्तक दस रुपय म मिलती ह, विषय-वस्तु तथा स्तर म उसस गई-गुजरी पुस्तके हिन्दी वाला को चालीस-पचास रुपय म हमार प्रकाशक बचना चाहते ह। सार ससार का, विकसित देशो का, अनुभव यह है कि अत्यन्त आधुनिक सचार साधनो की प्रतिद्वद्विता म भी पुस्तको ने अपना महत्व बनाय रखा है। और वास्तविक निमाण तथा विकास उनके बिना नही हो सकता। हम पुस्तको स अपन को काटते जा रहे ह। स्थिति यह आ गई है कि पाच सौ हजार के सस्करणो से लखक प्रकाशक दानो सतुष्ट हो लेते हैं, जब कि पाच-पचास लाख के सस्करण भी कम होन चाहिए। इस समय हमार देश म कम स कम दस करोड लोग ऐसे ह जो चाह तो पुस्तको पर पर्याप्त व्यय कर सकते हैं।

जन सचार क जो पुरातन तथा परम्परागत साधन हैं, जसे तीथ, त्यौहार, वार्षिक तथा अवसर जन्य स्नान और मेले, भजन-कीतन, मनोरजन क प्राचीन साधन आदि, उनकी लोकप्रियता आधुनिकता कम नही कर पाइ है। इसम जो विश्वास का तत्व है, वही सवर्पोरि है। भारी टट म कुम्भ पर स्नान करने लाखो लाख अपने विश्वास के बिना अपन आप, बिना दूसरे की प्रेरणा और सहायता के, नही पहुँच सकत। प्रश्न इस विश्वास की उपयोगिता और आधुनिक युग म उपादयता का उपस्थित होता है।

विश्वास की बात को इस तरह भी देखा जाना चाहिए कि हमारे सविधान की उद्देशिका म और मूल अधिकार, राज्य की नीति के निदेशक तत्व तथा मूल कत्तव्य के भागो म कुछ राष्ट्रीय विश्वास प्रतिपादित किये गये हैं। कुछ विश्वास हमारे ऐतिहासिक अनुभव म स विकसित हुए हैं जसे राष्ट्रीय एकता समभाव और सद्भाव। जो उन्नतिकारक विश्वास हमारी पचवर्षीय योजनाओ न प्रोत्साहित किय है, उनका अतिशय व्यावहारिक महत्व ह।

जन सचार साधनो की समीक्षा इन उपस्थित और आवश्यक विश्वासो स सपूरित और सफलीभूत होन मे उनकी सामथ्य और दुबलता का दूर करके नहीं की जा सकती। क्या कि इन सभी मार्चो पर स्थिति अनुकूल भी ह और प्रतिकूल भी बाधाए दूर भी हुई ह और सकट बढे भी हैं। इसलिए अनेकानक प्रश्न जन सचार साधनो पर भी जड गय है। जो प्राचीन साधन थ उनसे राष्ट्रीय एकता भी बढी थी और राष्ट्रीय शक्ति भी। उन्होन भी कुछ समस्याए उलझाई, कुछ भेद-भाव बढाय। पर तु कुल मिलाकर उन्हान हमार देश को टूटन और गिरन नही दिया। आज, आधुनिकता के कारण जन सचार साधनो के अपार प्रसार तथा असदिग्ध शक्ति क सामने, अपन परिणाम और अपन प्रभाव के प्रश्न उठ आये है। प्रसार का विश्वास हो जाय, तब भी यह विश्वास कहा हो रहा है कि ये साधन हम सही रास्ते पर ले जायेंगे ?

समाजवाद का सघर्ष

●

कमलनयन जी द्वारा छोडे गये अधूरे कामो मे एक था–जिले मे समाजवादी आन्दोलन का इतिहास तैयार करना। विडम्बना यह रही कि उन्हे व्यक्ति और परिवार के लिए भी सघर्ष स्वय लडना था और समाज के लिए–समाजवाद की प्राप्ति के लिए भी। एक कलम का मोर्चा भी था। अकेला आदमी एक साथ कितने मोर्चो पर लडता ? उनके मन का अन्तर्द्वन्द इससे बढा ही।

इस कहानी मे सघर्ष और अन्तर्द्वन्द के स्वर ही प्रमुख हैं।

गगानगर में समाजवादी पार्टी

गगानगर की समाजवादी पार्टी के इतिहास को बीकानेर से अलग नही किया जा सकता क्योकि रियासत का मुख्यालय (राजधानी) होने के नाते सभी राजनीतिक गतिविधियो का केन्द्र बीकानेर ही था। सवश्री जानकी प्रसाद बगरहट्टा, ईश्वरमल वापना व मुरलीधर व्यास जस समाजवादी नेता भी बीकानेर मे ही थे। गगानगर के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिये भी बीकानेर ही जाते थे और एसे अनेक विद्यार्थियो ने बाद म यहा समाजवादी आन्दोलन को आगे बढाने म काफी योगदान दिया।

भारत की आजादी के बाद 1948 मे जब समाजवादी धडा काग्रेस स अलग होकर समाजवादी पार्टी के रूप मे सामने आया तो उसके कुछ महीनो के बाद गगानगर म भी पार्टी की गतिविधिया आरम्भ हो गइ। बाद म समाजवादी पार्टी की शाखाए जिले के विभिन्न स्थानो पर अस्तित्व म आई। तब तक कमचारी नेता सवश्री कमल नयन शर्मा व सतपाल शर्मा राजनीतिक (समाजवादी पार्टी) गतिविधियो म भाग लेने और कमचारी हडताल करवाने के आरोप म बीकानेर सरकार द्वारा राजकीय सेवा से बरखास्त किये जा चुके थे। सवश्री केदारनाथ श्री निवास थिरानी

व बुद्ध देव भारद्वाज अपनी शिक्षा पूरी कर वापस गगानगर आ चुके थ । विद्यार्थी काल म भी वे व गगानगर क कुछ अन्य छात्र समाजवादी आन्दोलन से जुड चुके थे । इन कमचारी नताओ व विद्यार्थियो ने समाजवादी पार्टी के बीकानेर म आयोजित प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन म सक्रिय होकर बढचढ कर हिस्सा लिया था । यह नशा भी उनके दिलो—दिमाग पर छाया था ।

गगानगर म भी समाजवादी विचारधारा के अनेक व्यक्ति मौजूद थे । अपनी स्थापना के आरम्भिक 4–5 वर्षों म गगानगर मे समाजवादियो ने एक महत्वपूण गुट बना लिया था । सवश्री कमल नयन शर्मा सतपाल शमा, केदारनाथ शर्मा नत्थूराम योगी, महादेव प्रसाद गुप्ता, करनलसिह, बुद्धदेव भारद्वाज ताराचन्द रघुवीर बेदी महावीर प्रसाद गग, काशीराम गोयन, केशोराम गग, मिलखराज गग रतीराम लक्ष्मीचन्द गोयल देव शमा मोहनलाल, गुरदयालसिह शामिल थ । नोहर मे सवश्री श्रीनिवास थिरानी ताराचन्द सुनार, छगनलाल सुनार, डा० महेन्द्रसिह ओम, मुन्ना लाल नाइ तारूराम चौधरी मोहनचन्द भादरा म सवश्री हरदत्तसिह (बीकानेर रियासत के पूव मन्त्री) दयाराम व अलीम, हनुमानगढ मे श्री उदयपाल सारस्वत, सूरतगढ-रायसिहनगर क्षेत्र मे श्री रामकृष्ण आय आदि सक्रिय थे ।

पार्टी की आर्थिक दशा अच्छी नही थी । नेताओ के पास पार्टी चलाने के लिये न तो पार्टी मुख्यालय से कोई पैसा आता था और न ही इसके चलान वाले मालदार थे । लोगो म राजनीतिक पार्टी को चन्दा देने की न तो आदत थी और न क्षमता । सेठ लोगो क हितो के विरुद्ध काम करन वाली पार्टी को धनवान सामथ्यवान पैसा भला क्यो देते ? पार्टी का कार्यालय श्री बुद्धदेव भारद्वाज के मकान मे चलता था । इसके बावजद पार्टी के लोगो मे भारी उत्साह था ।

1950 म सोशलिस्ट नेता श्रीराम मनोहर लोहिया के गगानगर आगमन से भी जिले के समाजवादी कायकताओ के हौसले बढे । जिले की पहली विरोधी राजनीतिक पार्टी समाजवादी पार्टी ही थी और जिले के अनेक प्रमुख नता इसी पार्टी की देन थे । तब पार्टी मे पदाधिकारियों व कायकताओ के बीच वह दूरी नही थी जो आज सभी पार्टियो मे नजर आती है । पार्टी के सभी लोग तन मन पूरी मेहनत व लगन म पार्टी का काम करते थ और व्यापक जनसम्पर्क ही उनका ध्यय था । इसके लिए वे प्रति सप्ताह जिले म कही न कही एक दो आम सभा करत थे । कायकर्ता वहा मौजद रह कर आने वालो की समस्याए सुनता लिखकर नोट करता और कायवाही क लिए आगे भेजता । लोग बडे विश्वास के साथ गाव मे पानी बिजली, इलाज पढाई जमीदारो के अत्याचार जमीन स बेदखली अफसरो व कमचारियो के भ्रष्टाचार की शिकायत लेकर वहा आत । उन्हे विश्वास हाता था कि पार्टी व उनके कायकता उनके लिए जरूर कुछ न कुछ करेंगे ।

आम चुनाव व पार्टी

पार्टी ने 1952 के आम चुनावो मे श्रीकेदारनाथ शर्मा को गगानगर ससदीय क्षेत्र व विधान सभा के लिए श्रीमहादेव गुप्ता को पार्टी के बरगद के पेड के चुनाव चिन्ह के साथ मैदान मे उतारा । इसके अलावा

जिले म पार्टी न भादरा से श्री हरदत्तसिंह हनुमानगट मे श्री हरिराम मक्कासर सुरतगढ से श्री सन्तीराम व गगानगर से श्री चेतराम को विधान सभा चुनाव म समथन दिया। पार्टी कायकर्ताओ ने अपन उम्मीदवारो विशेषकर श्री केदार व श्री महादेव के लिए जमकर प्रचार काय किया मगर वे कामयाव न हो सके। काग्रेस आजादी व महात्मा गाधी से जुडी थी तथा इस पार्टी व इसके उम्मीद वारो के पास आर्थिक साधना की कोई कमी नही थी। अतएव समाजवादिया का सफल न होना कोई आश्चय की बात नही।

1957 के आम चुनाव म समाजवाद पार्टी न अपना कोई अधिकृत उम्मीदवार मैदान म नही उतारा। अलबत्ता श्री केदारनाथ ने काग्रेसी उम्मीदवार के रूप मे बीकानेर महाराज क विरुद्ध ससदीय चुनाव लडा मगर सफल न हो सके। 1962 के आम चुनाव म श्री केदारनाथ गगानगर व श्री हरदत्तसिंह नोहर विधान सभा क्षेत्रो से चुने गये। मगर यह चनाव पार्टी टिकट पर नही, वरन् स्वतन्त्र रूप स लडा गया था।

1967 के आम चुनाव मे सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी न जिले के 4 विधान सभाई क्षेत्रो म अपन उम्मीदवार खडे किय। गगानगर से श्री केदारनाथ, करणपुर से श्री महादेव गुप्ता, नोहर स श्री श्रीनिवास थिरानी तथा भादरा से श्री दयाराम को टिकट दिये गये। मगर इनम से केवल एक उम्मीदवार श्री केदार ही सफल हो सके।

1972 के आम चुनाव मे समाजवादी पार्टी के श्री केदारनाथ गगानगर तथा श्री गुर दयालसिंह सधु करणपुर विधान सभा क्षेत्र से चुने गये। 1977 के आम चुनाव के समय तक समाजवादी पार्टी का जनता पार्टी मे विलय हो चुका था। उसमे श्री केदार शर्मा गगानगर से फिर चुने गये और राजस्थान म केबिनेट मन्त्री बने।

जन आन्दोलन

जिले म समय-समय पर हान वाले जन आन्दोलनो म समाजवादी पार्टी क कायकर्ताओ ने प्रमुख भूमिका निभाई। 1950 के वष मे गगानगर के नागरिक अनक समस्याओ स ग्रस्त थे। कमल नयन जी ने 18–7–50 के दिन अपनी डायरी मे लिखा है 'आरजी काश्त, बेदखलिया और नियन्त्रित खाद्यान्न आदि की अनेक समस्यायें हैं। यह सब अशिक्षा का प्रभाव है। ये परिस्थितिया जनमानस को आन्दोलन कर रही थी। मगर अक्टूबर माह के अन्तिम भाग मे आखिर आन्दोलन आरम्भ हुआ। कमल नयन जी की डायरी के अनुसार ' 26–10–50 को प्रात साथी देशसिंह का जन आन्दोलन मे सत्याग्राही बनाकर एक जत्था लेकर गगानगर पहुँचा। सौभाग्यवश ताराचन्द हनुमान और मुझे भी अकारण वदी बना लिया। केदारजी आदि बन्दी गृह मे पहले से उपस्थित थे। आन्दोलनकारियो के बार मे आगे उन्होने लिखा, 22 10-50 स 3 11 50 तक लगभग निरन्तर पेशी होती रही। अमरसिहजी, मोतीराम और ज्ञानीराम जी को गिरफ्तार अवश्य किया गया— आज तीन दिनो के पश्चात रिहा कर दिया गया। इसका प्रभाव मेरी राय मे जनता पर अच्छा न पडेगा।" (3-11 50)

4 11-50 को उन्होने लिखा 'आज 20 दिन के कारावास का निर्णय घोषित कर दिया गया ।"

इस क्षेत्र मे आजादी के बाद जन आन्दोलन चलाने का सम्भवत यह प्रथम प्रयास था ।

1953 मे बीकानेर का गेहूँ निकासी विरोधी आन्दोलन चला जिसम बीकानेर के अलावा गगानगर के समाजवादियो ने भी हिस्सा लिया । वास्तव म यह बडा आन्दोलन सभी राजनीतिक पार्टियो का सम्मिलित प्रयास था । यह आन्दोलन लेवी म वसूल गहूँ को पजाब आटा मिलो को बेचने के सरकारी निर्णय को रोकने म सफल रहा और गहू उसके हकदार उपभोक्ता को ही मिला ।

1954 म गगानगर क्षेत्र के किसानो ने आबियाना (सिचाई कर) वृद्धि विरोधी आन्दोलन चलाया जो करीब तीन महीने चला तथा जिसम एक हजार से अधिक गिरफ्तारिया हुई । इसमे भी समाजवादियो ने प्रमुख भूमिका निभाई । सवश्री केदारनाथ शर्मा महादेव गुप्ता बुद्धदेव भारद्वाज व पत्रकार श्री कमल नयन शमा, कुलदीप बेदी व श्री चम्पालाल राका (बीकानेर) सहित अनेक नेता गिरफ्तार हुए । विधायक श्री गुरदयाल सन्धु को इस आन्दोलन म भाग लेने, गिरफ्तारी देने व भूखहडताल करने के आरोप मे काग्रेस से निकाला गया और वे बाद म समाजवादी पार्टी मे शामिल हुए । राजस्थान विधान सभा मे इसकी गूज हुई । विरोधी दल के नेता सहित दस विधायक आन्दोलन का अध्ययन करने यहा आये । विधान सभा के बाहर प्रदशन करने पर गिरफ्तारिया हुई । यद्यपि यह आन्दोलन आशिक रूप से ही सफल रहा क्योकि सिचाई की दरो मे सरकार ने मामूली कमी ही की । मगर तीन माह तक हजारो लोगा को आन्दोलन से जोड रखना व गिरफ्तारा की बडी सख्या को देखते हुए इस आन्दोलन को चलाये रखना ही अपने आप मे कोई छोटी उपलब्धि नही कहा जा सकता । आन्दोलन की समाप्ति के बाद भी कुछ आन्दोलनकारियो को 307 120 व भारतीय दण्ड विधान की अन्य धाराओ के अतगत स्थापित मुकदमो के सिलसिल मे अदालतो की पेशिया 6–7 महीना तक भुगतनी पडी । सवश्री कमल नयन शर्मा बुद्धदेव भारद्वाज, शिशुपालसिंह व सुमेरसिंह ने पहले तो गगानगर मे पेशिया भुगती फिर मुकदमे केसरीसिंह नगर कोट मे स्थानान्तरित हो गये तो वहा जाना पडा । क्योकि सरकारी मुकदमा म कोई दम तो था नही इस कारण अतत खारिज कर दिये गये ।

1958 म समाजवादी पार्टी ने गरीबी बेकारी भुखमरी व भ्रष्टाचार क खिलाफ राजस्थान व्यापी आन्दोलन चलाया था जिसके अतगत जनता का 21 सूत्री माग पत्र भी सरकार का दिया गया । इन मागो म असहाय वृद्धो को पेशन बिक्रीकर व कोर्ट फीस हटाने लगान की बकाया पर ब्याज न लने बेघरा को सस्ती जमीन भ्रष्टाचार से अर्जित सम्पति के लिए निष्पक्ष बोर्डो का गठन तथा सरकारी व अदालती कामो म अग्रेजी का प्रयोग बन्द करने की मागें शामिल थी । इन मागा के साथ गगानगर क्षेत्र की यह स्थानीय माग भी जोड दी गई थी कि भाखरा नहर क्षेत्र के अतर्गत आने वाले सिचित कृषि भूमि की नीलामी न करके उस स्थानीय किसानो को

अलाट कर दिया जावे। क्योकि यह जमीन हनुमानगढ व नोहर क्षेत्र मे ही पडती थी अत इस आन्दोलन का जोर उसी इलाके म अधिक रहा। इस आन्दोलन के दौरान श्री श्रीनिवास थिरानी के नेतृत्व म करीब 58 व्यक्ति गिरफ्तार हुए। उस समय का आवाहन था 'कबिरा खडा बाजार म लिये लकुटिया हाथ, जो घर फूक आपना चले हमार साथ।' 1956–57 के बाद समाचार पत्र म व्यस्त होन के कारण कमल नयन जी ने सक्रिय राजनीति से सन्यास ले लिया था। अत वे इस आन्दोलन मे व्यक्तिगत रूप से शामिल तो नही हुए, मगर अपने समाचार पत्र सीमा स देश क माध्यम से इस समाजवादी आन्दोलन को आगे बढान म अपना पूरा योगदान दिया।

श्री थिरानी के अनुसार यह आन्दोलन एक मायने म सफल भी रहा क्योकि इसकी स्थानीय मुख्य माग मान ली गई और भाखडा नहर की सिंचित भूमि की नीलामी करवाने की बजाय सरकार ने इस इस क्षेत्र के किसानो को आवंटित किया। बाद म अनुभव हुआ कि यद्यपि किसानो को इससे लाभ हुआ, मगर यह कदम इस क्षेत्र के लिए समाजवादी सिद्धान्तो के विपरीत पडा क्योकि पूर्व मे बीकानेर रियासत के कानून के अनुसार जमीन का मालिकाना हक सरकार के पास था। जो किसान सरकार की जमीन जोतता वही लगान भरता था। किसानो को खातेदारी का हक मिलने का एक दुष्परिणाम यह भी निकला कि बाद म जमीन के मालिकाना हक के लिए लोगो म छीना झपटी व खून खराबा बढा, जिसका खमियाजा मुख्यत कमजोर वर्ग को भुगतना पडा। तब समाजवादियो ने शायद ऐसे गम्भीर परिणामो के बारे मे कल्पना भी न की होगी।

जिले के ही नही वरन् शायद पूरे राजस्थान के सबसे बडे जन-आन्दोलनो मे एक गगानगर मे 1969–70 का वह आन्दोलन था जिसे आर सी पी भूमि नीलामी रोको आन्दोलन के नाम से जाना जाता है। जिले मे विश्व की सबसे बडी राजस्थान नहर (अब इन्दिरा गाधी नहर) आने पर इसके अन्तगत सिंचित भूमि को नीलाम कर सरकार न सरकारी खजाना भरने की योजना बनायी थी। सरकार के इस निणय के विरोध मे गर काग्रेसी विरोधी दलो ने सगठित रूप से किसान आन्दोलन चलाया जिसकी बागडोर तत्कालीन भारतीय क्रान्ति दल के नेता श्री कुम्भाराम आर्य (भा क्रा द विधायक) उपाध्यक्ष श्री श्रीनिवास थिरानी (समाजवादी) व महाम त्री श्रीसेवासिंह (भाक्राद) के(हाथो म थी। श्री थिरानी के अलावा श्री केदारनाथ व श्री महादेव गुप्ता आदि समाजवादियो न भी इसमें भाग लिया। यह आन्दोलन नवम्बर 1969 स मार्च 1970 तक चला जिसके दौरान हजारो आन्दोलनकारी जेल गये तथा सागरिया भादरा व चूरू मे पुलिस फायरिंग से कुछ व्यक्ति मारे भी गय व कुछ और घायल हुए। पुलिस फायरिंग पर बाद मे जाच आयोग भी बैठाये गये। विधान सभा मे इस आन्दोलन पर गरमागरम बहस भी हुई। अन्तत सरकार को राजस्थान नहर परियोजना क्षेत्र मे कृषि भूमि की नीलामी रोकनी पडी। आन्दोलनकारियो की कुछ अन्य मार्गे भी मान ली गई, जिसम कृषि के लिए नहर जल वितरण के मामले मे मोतीराम आयोग की सिफारिशें लागू करना भी शामिल था जो आज तक लागू नही हुई।

इस आन्दोलन के कुछ नेताओ और उनकी नीतियो से मतभेद रखते हुए भी श्री कमल नयन ने अपने समाचार पत्र सीमा सन्देश के माध्यम से इस आन्दोलन के स्वरूप व महत्व को देखते

हुए इसकी गतिविधियां को विस्तार मे प्रकाशित किया तथा गुण व दोष के आधार पर अपने सम्पादकीय मे समय समय पर विवेचन किया। उनकी सबसे बडी आपत्ति व मतभेद यह था कि जिस व्यक्ति ने मन्त्री पद पर रहकर आम गरीब किसान का भला नही किया, बल्कि शोषण ही किया हो, वही इस आन्दोलन के माध्यम से गरीब किसानो का मसीहा बनने का स्वांग रचे। 1954 के आबियाना आन्दोलन को कुचलने व उसे असफल बनाने मे इसी व्यक्ति ने प्रमुख भूमिका निभायी थी। उन्हे यह विश्वास नही था कि ऐसा व्यक्ति वास्तव मे ही यह आन्दोलन छोटे किसानो के लिए चला रहा था।

श्री कमल नयन सीमा सन्देश के प्रकाशन की जिम्मेदारी सम्भालने के कुछ अर्से तक तो पार्टी के जलसे जलूसो मे शामिल होते रहे व जोशीले भाषणो के जरिये लोगो तक अपनी बात पहुँचाते रहे। मगर 1956–57 के बाद उन्होने अपने आप को पूर्णत पत्रकारिता को समर्पित कर दिया। मगर अपने समाचार पत्र के माध्यम से उन्होने सोशलिस्ट विचारो घटनाओ जलसो, आन्दोलनो को सदा पहले व प्रमुखता से प्रकाशित कर लोगो के सामने रखा। जिले मे कोई भी सोशलिस्ट कार्यकर्ता गंगानगर आता तो वह कमल नयन जी से बिना मिले व विचार विमर्श किये नही जाता। गंगानगर वाले तो अक्सर मिलते ही थे। कमल नयन जी का सीमा सन्देश कार्यालय सोशलिस्टो का अड्डा था या अघोषित पार्टी कार्यालय था।

कमल नयन जी अपने प्रभाव व साधनो से यदि किसी सोशलिस्ट कार्यकर्ता की मदद करने की स्थिति मे होते तो जरूर करते थे। अपने सोशलिस्ट साथियो को अपना अखबार भेजने का खर्च भी वे स्वयं वर्षों तक वहन करते रहे।

जिले मे सोशलिस्ट पार्टी को पनपाने व इसे आगे बढ़ाने मे इसके राष्ट्रीय नेताओ के दौरो ने भी काफी योगदान दिया है। विशेष रूप से डा० राम मनोहर लोहिया की 1950, 1958 व 1966 की गंगानगर जिले की यात्राओ से उनके स्थानीय नेताओ से व्यक्तिगत सम्पर्क भी बने। श्री कमल नयन उनमे से एक थे। 1966 की यात्रा के दौरान तो उन्होने डा० लोहिया के सम्मान मे सीमा सन्देश मे एक समारोह भी रखा, जिसमे सभी सोशलिस्ट कार्यकर्ता शामिल थे। चुनावो के दौरान व जन आन्दोलन के दौरान सर्वश्री राजनारायण, जार्ज फर्नाडिस मनीराम बागडी अर्जुनसिंह भदौरिया, पार्टी कोषाध्यक्ष व सांसद श्री चक्रधर भी गंगानगर जिले मे आ चुके हैं।

सोशलिस्ट पार्टी गंगानगर जिले मे गठित होने वाली प्रथम गैर कांग्रेसी विरोधी पार्टी थी जिसके पास उत्साही कार्यकर्ताओं की कमी नही थी। मगर तो भी जिले मे न तो यह पार्टी जनता मे अपनी गहरी पैठ बिठा पायी, और न ही आम चुनावो मे विधान सभा मे पार्टी उम्मीदवारो को पर्याप्त संख्या मे सफल बना पायी।

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए समाजवादी पार्टी के पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष श्री श्रीनिवास थिरानी ने बताया कि न तो पार्टी बिखराव से बच सकी और न ही जिले मे पार्टी मे कोई मुखिया की भूमिका निभा पाया। अपनी बात को विस्तार से समझाते हुए श्री थिरानी ने बताया कि पार्टी

के पास केदार, कमल नयन सत्यपाल जीवनदत्त महादेव गुप्ता हरदत्त सिंह करनैलसिंह सत्यूराम योगी जसे कार्यकर्ता थे। मगर वे हमारे साथ न रह सके। 1950 की दशाब्दि के मध्य म जब तेलंगाना (आन्ध्र प्रदेश) मे कम्युनिस्ट पार्टी का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ तो जिले के अनेक समाजवादी खिंचे हुए उस अधिवेशन म चले गये। इसका परिणाम यह निकला कि करनैलसिंह, केदार व महादेव गुप्ता जैसे साथियो पर लाल रग बुरी तरह से चढ गया। महादेव तो उन दिनो कहा करते थे "हिन्दुस्तान लाल होने वाला है और जो इससे बच जायेंगे, सबको फासी लगा दी जावेगी।

केदार व महादेव के सिर म तो यह भूत कुछ समय बाद उतर गया, मगर योगेन्द्र हाडा व करनैलसिंह कम्युनिस्ट बन गये। और इस प्रकार यहा पार्टी मे बिखराव आरम्भ हो गया। कमल नयन न सक्रिय राजनीति छोडकर पत्रकारिता का अपना लिया सो वह भी छूट गये। सत्यूराम योगी किसान सभा के रास्ते काग्रेस मे चले गये। कुछ दूसरे नेता भी तत्कालीन लाभ देखकर व चुनाव लडने काग्रेस म गये पर वापस लौट आये। बुद्धदेव भारद्वाज गगानगर ही छोड गये। पार्टी के ऐस बिखराव से पार्टी कमजोर होती चली गयी। ऐसी दशा म पार्टी से कुछ ज्यादा उम्मीद की भी नही जा सकती।

कुछ पूव समाजवादी नेताओ की यह मान्यता भी है कि इस क्षेत्र, विशेषकर गगानगर शहर के प्रमुख निवासियो की सोच पर पैसा व नेतागिरी की हवस इस कदर सवार रही है कि उन्होंने सावजनिक हित को प्रमुखता देने की बजाय व्यक्तिवाद को ही प्रमुखता दी और येन केन प्रकारण समृद्ध होना ही एकमात्र ध्येय हो गया। ऐसे बलशाली लोगो ने कार्यकर्ताओं को प्रलोभन व आपसी फूट डलवाकर कभी पनपने नही दिया। पार्टी गौण होकर रह गई और व्यक्ति प्रधान हो गय। ऐसा समाजवादी पार्टी मे ही नही, अन्य पार्टियो मे भी हुआ है। इस क्षेत्र की यह शायद चारित्रिक विशेषता कही जावेगी।

पार्टी म जा बने रहे उनमे से किसी ने भी पार्टी को ठोस नेतृत्व या दिशा देने का कोई *गम्भीर प्रयास नही किया। पार्टी के स्थान पर उन्होने व्यक्तिगत आकाक्षाओ को तरजीह दी। बिना* मजबूत नेतृत्व के कोई भी पार्टी या सगठन प्रगति नही कर सकता।

1977 के बाद सोशलिस्ट पार्टी रही ही नही। अब तो वह जनता पार्टी लोक दल या दूसरे दलो म खो चुकी है।

1949 के अप्रेल माह मे यहा पार्टी की स्थिति का पता सोशलिस्ट पार्टी के प्रान्तीय मन्त्री श्री जे वगरहट्टा के पत्र से चलता है जो अविकल रूप मे यहा दिया जा रहा है। इस पत्र के सन्दभ मे कमल नयन जी की डायरी के पृष्ठ जो आगे दिये जा रहे हैं भली भाति समझे जा सकेंगे।
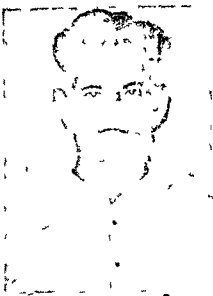
रानी बाजार
बीकानेर
ता 26 4 1949

प्रिय साथी कमलनयन,

आज और कल म गगानगर से कई पत्र आये। मालूम हाता है कि पार्टी का काय तो दूर रहा आपसी झगडो ने सारी पार्टी को अस्त-व्यस्त कर दिया है। चूकि जिला पार्टी का चुनाव अगले महिने के पहल सप्ताह मे होने वाला है और व्यास जी विलायत जा रहे है इसलिए यह झगडा भी शायद मुझे ही निबटाना पडे। मैं आज शाम का गाडी स प्रान्तीय कायकारिणी की मीटिंग क लिए टोक जा रहा हूँ। वहा से 3 या 4 तारीख तक वापस आऊगा और आन के बाद गगानगर आऊगा। इस समय मे जसे भी हो स्थिति को नही बिगडने देना चाहिये। मुल्कराज और मुदगल क विषय म मैंने पहले भी आपको कहा था और अब भी कहता हूँ कि जहा तक हो आपको सावधानी से काय करने की आवश्यकता है। मैं टोक स आकर गगानगर के सारे सदस्यो की एक मीटिंग बुलाकर खुद अपने सामने नया चुनाव कराऊगा। इस अर्से मे अगर आप चाहे ता पार्टी के सदस्य बनाने का काम जारी रख सकते है, और कुछ नही।

आप यदि मुनासिब समझें ता सत्यपाल शमा को भी यह पत्र दिखा सकते हो और प्राथना कर सकते हो कि वे भी झगडे को शान्त रखने के लिए आपका सहयोग दें।

आपका
जानकी प्रसाद बगरहट्टा
प्रान्तीय मन्त्री

अभावों से झूझते समाजवादी का अन्तर्द्वंद

'आत्मा की पुकार है कि लगन से तत्परता के साथ सतत् प्रयत्न और साहस के साथ लगे रहो, सफलता तुम्हारी ही है।' ये पंक्तियां लिखी थीं श्री कमलनयन ने अपनी डायरी के पन्नों में 9 दिसम्बर 1949 को। उनकी यह विशेषता थी कि जिस कार्य में हाथ डाल लेते थे फिर उसमें वे अपनी जी-जान लगा देते थे। समाजवादी कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने अपनी पार्टी की भरपूर सेवा की। अभाव से ग्रस्त जीवन व्यतीत करके भी उन्होंने पार्टी का कार्य किया। क्या-क्या कष्ट नहीं सहे उन्होंने? अपने पारिवारिक सदस्यों पत्नी बच्चों किसी की भी परवाह किये बिना वे सतत अपने पथ पर अग्रसर रहे। अपने द्वारा किये गये कार्य पर वे निरंतर मनन व चिंतन करते थे अपनी त्रुटियां निकालते थे और उन्हें अपनी डायरी के पन्नों में लिख डालते थे। पार्टी के कार्य के लिए जिले के गांव गांव में घूमे थे वे। 20 20 मील पैदल भी चलना पड़ा था उन्हें चन्दा वसूली के लिये क्योंकि उनके पास साधनों का अभाव था।

उनकी डायरी के अवलोकन से पता चलता है कि उन्हें पार्टी के लिये चन्दा वसूली हेतु कैसे दर दर भटकना पड़ता था।

प्रात मे पार्टी का च दा वसूल किया । जनता का पूणत महयोग नही है कुछ सहानुभूति अवश्य ह ।

साय 4 बजे गोवि दपुरा हाते हुए महियावाली पहुँच । लक्ष्मण का व्यवहार सु दर न था । स्यापतगम एक उत्साही नवयुवक मिला । विश्राम । (14–9–49)

प्रात गगानगर को प्रस्थान किया । दापहर म नेनवाली नाइया की ढाणी होत हुए पहुँचे । (15–9–49)

3 बजे मध्या ह ट्रक द्वारा माहनपुरा हरनामपुरा और खाट म प्रचार करत हुए केरी पहुँचा । जनता उत्सुकता से प्रतीक्षा मे थी । रात्रि को सभा की । (16–9–49)

प्रात करी मे गगानगर प्रस्थान किया । मध्याह्न मे कसरीसिहपुर पहुँचा । वहा पार्टी का काय स तोपजनक था । रात्रि को विश्राम किया । (17–9–49)

दिन भर चित्त अशात रहा । साय मोटर से चूनावट पहुँचा । ग्रामवासियो मे उत्सुकता थी । रात्रि को सभा की उपस्थिति पर्याप्त थी । पास के गावा के निवासी भी आये थे । (18–9–49)

मध्याह्न की गाडी से करणपुर को प्रस्थान किया । वर्षा अधिक हान के कारण काय न बन सका । रात्रि को रामचन्द्र व एक मजदूर साथी से समाजवाद पर विचार किया । (19–9–49)

श्री कमलनयन जी न 20–9–49 के पत्र पर लिखा है —

मैं इस निणय पर पहुचा हूँ कि समाजवाद का सिद्धान्त न कोई जानना चाहता है न जानता है । शिक्षा का अभाव है । लोग व्यक्तिगत स्वाथ से प्रेरित होकर ईर्ष्या वमनस्यता और कटुता की भावना लेकर आते है । जिन तत्वो को काग्रेस मे अपने स्वाथ पूण करने मे सफलता नही मिलती वे समाजवादी मच से अपने क्रोध, विक्षोभ और द्वेष का शात करने का निशाना बनाने आते हैं । हमारे लक्ष्य पवित्र है तो हमारे लक्ष्य प्राप्ति के साधन मूलत विशुद्ध हाने चाहिए । अन्यथा हम अपने पथ से भ्रष्ट हो जायेंगे । ऐसा मेरा विश्वास है । गरीब मजदूर और किसान हमारी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा ह । यह वग सशक्ति अवश्य हैं । काग्रेस के वादो का मिथ्या पाकर भी हम आशावादी है । क्या हमारी पार्टी उनके मनोरथ को सफल बनायेगी ? लोहिया के भापणा का प्रभाव शिक्षित और निरपेक्ष व्यक्तियो पर अच्छा नही पडता ।

कमलनयन जी ने समाजवाद का अपन नजरिय से भी देखने की काशिश की थी । उन्ही के शब्दा मे— समाजवाद क्या है ? धनाढय वग ने साधना पर किस भाति अधिकार जमा रखा है । धन को विकेन्द्रित करना या साधनो की प्राप्ति का समान अवसर जनसाधारण को सुनिश्चित व्यवस्थानुसार विकसित होने दना समाजवाद का प्रमुख अग है ।

कई बार उन्ह अपने ही साथियो का व्यवहार अच्छा नही लगता था, तो कई बार वे स्वय पर भी झुझला उठते थे । 2 अक्तूबर 1949 को उन्होंने लिखा — कायकर्ताओ म पद

लोलुपता, पारस्परिक ईर्ष्या और द्वेष की भावना क्यो है ? आपसी सहयोग का अभाव क्यो है ? फिर लिखते हैं—' मैं तो अपनी स्वय की अयोग्यता अधिक समझता हू । यह भी अनुभव करता हूँ कि अयाग्य कार्यकर्ताओ को अधिकारी बनाकर पार्टी ने गलती की है । सहनशीलता, विवेक दूरदर्शिता और सौजयता की कमी मुझ म भी है—तब दूसरो पर आराप कैसे ?'

उनके मन म कई बार तीव्र अन्तद्व द चलता था । क्या करें क्या न करें निणय नही कर पाते थे । ' कितना उदासीन हूँ कि गहूँ की जो बोरी थी सभालन के अभाव म नष्ट कर दी । बच्चा क साथ क्या म याय कर रहा हूँ ? यदि नही, तो देश क प्रति जनता क प्रति मैं अनुत्तरदायित्व का अधिकारी नही हूँ ? परिवार पत्नी मित्र और अनुभवी हमदर्दों न पर्याप्त नम्रता एव कटुता से कहा व्यावहारिकता को समझने को । सन् 1936 स एक भावना ने मुझे विवश कर रखा है जन सेवा के लिए । मैं प्रत्यक्ष राजनीति क आधुनिक विकृत स्वरूप का इसम पूर्व देख नही पाया था । आजादी से पूव बलिदान लक्ष्य था । आज धनलिप्सा ने प्रतियोगिता मे बढावा ग्रहण किया हुआ है । 15 दिन निरन्तर प्रयत्न करने पर भी मकान नही मिलता । आश्चय है, विडम्बना मे ही जिया है जीवन ।'
(27–10–49)

कसी विडम्बना थी कि घोर अभाव के बावजूद भी सेवा माग पर चल रहे थे वे । ' मैं कसी विचित्र स्थिति म उलझ गया हूँ । मुक्त कसे हाऊं–समझ नही आता । सावजनिक जीवन कितना अधम नारकीय और हेय बन गया है । मानवता के हित कल्पनातीत हैं ।" (14–11–49)

मैं भी आर्थिक दशा हीन होने, ऋणी होकर गृहणी को परिवार वालो को उन्ही की दशा पर छोड जी नही पा रहा हूँ । क्या समाज सेवियो का यही पुरस्कार मिलना चाहिये ? तो क्या इस काय को अधूरा छोड दिया जाये ? तो क्या बलिदान होने वाले शहीदो को भुला दें ? तो क्या हमने ही प्रतिज्ञा की है ऐसी तपस्या करने की या हमको उन्माद ने दबा लिया है ? नही तो यह समाज हमको उपेक्षा, घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से ही क्यो देखता है ? (3–1–50)

आर्थिक समस्या सुलझन म नही आती । मेरे पास परिवार को पालन-पोसने के साधन नही हैं । अन्त म मैं क्या करू ? प्रत्येक व्यक्ति का प्रथम प्रश्न होता है क्या काम करत हैं आजीविका का क्या साधन है पेट की समस्या कसे हल होती है ? जिज्ञासा स्वाभाविक है । मैं भी यदि उनके स्थान पर होता तो यही सोचता । मैं कई बार रातो विचार मग्न रहकर विवेकपूवक, गम्भीरता से इस समस्या क हल को ढूढता हूँ । मैं किसी भी निणय पर नही पहुँच पाता । मानव समाज को अपने स्वरूप स्थिति और विकृत दशा का ज्ञान ही कहाँ जो इस विवेचन को समझ सके । मेरा जसा भावुक व्यक्ति मुझे नही मिला । परिवार की उपेक्षा कर समाज सवा म सलग्न हूँ । समाज अपमान करता है । तिरस्कार और उपेक्षा की दृष्टि से देखता है । योग्य होते हुए भी युवावस्था मे धनोपाजन न करना । आने वाले भविष्य म स्वार्थी लोग पार्टी पर अधिकार करके मुझे यानि कि मेरे जस निस्वाथ सेवियो का लाछन लगाकर बाहर निकाल देंगे । यह स्वाभाविक सा है । क्योकि समाज म आमूल परिवतन लाना है । इस अव्यवस्था को समाप्त करना ह । इसी स्वणमयी आशा के भरोसे आगे बढना है । (–1–50)

युवावस्था के अमूल्य पांच वर्ष यहां शान्ति से व्यतीत किये। जीवन की दिशा को बदला। यहां की प्रेरणा ने प्रभाकर उत्तीर्ण होने में, कर्मचारी संघ के गठन करने को अग्रसर किया। यह वही नहर है जहां अभी बैठा हूँ। आज इसमें जल धारा नहीं है। मेरे जीवन की भांति इसमें भी व्यवधान आ गया है। परन्तु यह अवस्था शाश्वत नहीं है। बाधा आया करती है कर्म करने में। कार्यकर्ताओं के सामने बाधाएं आती हैं। परिवार की चिन्ता भी स्वाभाविक है। लोग कहते हैं कि देश सेवा धनी कर सकता है। किन्तु बलिदान के इतिहास में ऐसी घटनाएं अपवाद में ही प्राप्त हो सकती हैं। (18-1-50)

मेरा हृदय तभी से जन सेवा का अभिलाषी है जब से हैदराबाद के सत्याग्रह में जाना चाहते हुए भी न जा सका। श्याम की आकस्मिक मृत्यु से भी संसार से उदासीनता की भावना को प्रोत्साहन मिला। 1945 में इस सशक्त भावना ने उग्र रूप धारण कर लिया जब अल्पभोगी वेतन कर्मचारियों की दुर्दशा भुक्त भोगी बन देखी। प्रतिस्पर्धा ने भी योग दिया। 1946 में बीकानेर राज्य कर्मचारी संघ की स्थापना कर डाली। मुझमें कई अवगुण हैं। इसमें यह भी शामिल है कि जिस कार्य में लगता हूँ दृढ़ता से और सारा ध्यान केन्द्रित कर देता हूं। विश्राम की चिन्ता मुझे नहीं होती। रात्रि को भी नींद उचटते ही वही चिन्ता रहती है। बच्चों तक का ध्यान गौण बन जाता है। (21-1-50)

मैं पार्टी के कार्य के लिए प्राय मर गया हूँ। संकोच भी होता है आर्थिक सहायता के लिए याचना करते हुए। ग्लानि होती है, पूंजीपति के समक्ष हाथ पसारते हुए। गर्व को धक्का पहुँचता है, सम्मान कलंकित होता है उनके द्वार पर खड़े होने में। पर मैं क्या करूं? पार्टी की स्थिति को कायम करने हेतु विपरीत कार्य प्रसन्नता दिखाकर, नतमस्तक होकर करना पड़ता है। (2-2-50)

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि कमलनयन जी ने स्वाभिमान को मारकर भी पार्टी के लिए काम किया। यहां तक कि आत्म हत्या का विचार भी उनके मन में कौंध गया था। उन्होंने 25 फरवरी 1950 को लिखा—'हृदय में विक्षोभ, चिन्ता उपेक्षा और ग्लानि की भावना उग्रता धारण किये जा रही है।" उन्होंने आगे लिखा है—"पार्टी की आर्थिक दशा हीन होने एवं कार्यकर्ताओं का सहयोग न होने के कारण संस्था को छोड़ने का विचार दृढ़ हो रहा है। मगर जय प्रकाश लोहिया और मिश्रा आदि की त्याग, तपस्या को देखकर हृदय नहीं चाहता और इस अवस्था में जबकि संगठन अस्त व्यस्त व अपरिपक्व है। (27-2-50)

इस अन्तर्द्वन्द के बावजूद भी उन्होंने समाजवाद लाने का प्रण लिया। मैं प्रण लेता हूँ कि सर्वस्व खोकर भी समाजवाद लाना है। (3 3-50)

डायरी के पन्नों का अवलोकन करने से पता चलता है कि 3 अप्रेल 1950 को जब लोहिया जी गंगानगर पधारे तो उन्हें भोजन कराने को घर में कुछ नहीं था। अतः एक रिश्तेदार

के यहा भोजन करवाया गया। अपना जीवन यापन करने के लिए उन्होने समाचार पत्र विक्रेता के रूप म काय शुरू किया। उन्होने एक जगह लिखा भी है— प्रात स साय तक काय में प्राय व्यस्त रहा। लोगो के व्यवहार मे आशिक सहानुभूति है। हृदय म सन्तोष की भावना है। मैं अपन अटल पथ से दूर होने की की क्रिया कर रहा हू किन्तु असमथ हूँ।

'आज प्रात बच्चा (ललित) पैदा हुआ तब तक भी पसा मरे पास न था। एम पी गुप्ता स 5 रुपय प्राप्त किये। एसे अवसर जीवन मे अपना विशेष महत्व रखत हैं। आज बहुत से हमदर्दों की परीक्षा की।' (18-4 50)

प्रात से चित्त अत्यन्त खिन्न हू। कई अपनत्व की डींग हाकने वालो को देखा। यह ससार इतना स्वार्थी नीच और हीन है। बडा विकृत व भौंडा है। कौन सा मोह जीवित कर लूं? पुन मनन किया। क्या इमसे व्यवस्था सुधर जायगी? इतनी निराशा हुई कि आत्म हत्या कर लू। नही निरथक हत्या से किसी को कोई लाभ न होगा। विषय गम्भीर व गवेषणापूण है।

(24 4 50)

जीवन म क्या किया? क्या करन की कल्पना की थी। मैंने अनुभवहीनता एव अदूरदर्शिता के कारण ऐसा किया। आरजी काश्त बेदखलिया और नियन्त्रित खाद्यान आदि की अनेक समस्याए है। यह सब अशिक्षा का प्रभाव है। सभ्य समाज के लोग विषमता पक्षपात, दरिद्रता और *निधनता की निन्दा करते हैं। यही व्यक्ति समाजद्रोही भी हैं। इन्ही का सम्मान देखने को मिलता* है। यह व्याधि व्यापक है। निवारण करन की दुहाई सब वग, दल और राष्ट्र देते है। ऐसा विश्वास किया है कि एक भयकर क्राति होगी। गृहणी को सदव चिन्तित और व्याकुल देखता हू। क्या इतना बलिदान देकर सतुष्ट हो सकता हूँ? स्वय को पर्याप्त नष्ट कर क्या कर पाया है? आज स्मरण आते है उन व्यक्तियो के उपदेश जिनकी मैंने सदैव अवहेलना की और उनको शत्रु समझा ही नही अपितु निरन्तर विरोध किया। धन्य है उनकी सहनशीलता जिन्होने हसते हुए टाल दिया।

यद्यपि मैंने जो माग चुना है गम्भीरता विवेक और बुद्धिमत्ता के साथ शान्त चित्त मे चुना था। आज जो परिस्थिति बन गई है उनका उत्तरदायित्व आशिक रूप से मुझ पर भी है। मैंने सहयोगी बनान म जो उपेक्षा एव उदासीनता रखी है उसी का परिणाम आज भोगना पड रहा है। मानव स्वभावत दूसरा पर आरोप लगाने का अभ्यासी है, स्वय के दोष के प्रति वह अधिक सहानुभूति और सस्कारवश कम सोचता है।

कृष्णा (पत्नी) का आग्रह है कि मैं बेकारी, भूख और अकमण्यता का ध्यान करू। इसम शिथिलता अनिष्टकारी हो सकती ह। आज तक मैंने उसके आग्रह को ठुकराया है। इसका मुझे हृदय स पश्चाताप है। एक एक क्षण भारी है। मैं स्वय को एकाकी निराश्रय और असहाय पाता हूँ। (18-7-50)

श्री कमलनयन जी इस क्षेत्र म नेताजी के नाम स जाने जाते थे। पार्टी मे वे कोई पद नही लेना चाहते थे। आजीविका के लिए 27 जी जी के स्कूल मे अध्यापन काय भी किया।

श्री गगानगर के सार्वजनिक पुस्तकालय मे पुस्तकाध्यक्ष का पद भी सभाला लेकिन उनकी रुचि जनसेवा म ज्यो की त्यो बनी रही । अन्तद्वन्द यथावत रहा । पार्टी के कार्यों म अनेक कष्टों के बावजूद भी लगे रहे । नौकरी भी इसी कारण जाती रही । पारिवारिक क्लेश बढ रहा था, लेकिन फिर भी ।

'दोपहर की गाडी से केसरीसिहपुर गया । गृहणी अत्यन्त असतुष्ट थी । बच्चे भी असहयोग किये हुए थे । घर डसन को आ रहा था । तत्काल रात्रि को लौटने की आवाज देकर चला आया । कनक या आटा नही था । न रुपये थे और न उधार का जरिया । कसी विडम्बना थी ?

रात्रि को पत्नी ने हत्या कर लेन की विवशता प्रकट की । मगिनि की दुदशा वस्तुत उपेक्षणीय नही है । गृहणी मजदूरी करने को प्रस्तुत है । रात्रि को ज्वर हो गया । चिन्ता म निमग्न रहा । मैंने गलतिया कम नही की और अब भी बाज नही आ रहा हूँ । (15-1-51)

गत दिनो एक समय भोजन करके तथा अनियमितता के कारण अस्वस्थ रहने लगा हूँ । अब केवल चाय, चने, रेवडी और मगफली आहार बन कर रह गये हैं । सीने मे दद, बदन मे पीडा, चित्त मे व्यग्रता बढती जा रही है । दो दिनो से आत्म हत्या करने के विचार आ रहे हैं । यह तो मानने को अभी भी तयार नही हू कि धन सर्वोपरि है किन्तु भौतिक युग म यह अन्य साधनो से महत्वपूण अवश्य है ।" (18-1-51)

मैंने नत्थूराम मोगी से एक सबक जाना—जब तक व्यक्ति स्वय की आर्थिक दशा पर नियन्त्रण नही कर पाता तब तब वह समाज में अपनी स्थिति कायम करने मे समथ हो ही नही सकता । (22-1 51)

नेताजी अभाव की लडाई के साथ-साथ समाजवादी आन्दोलन को आगे बढाने मे लगे रहे । माच 1951 में उन्होंने 100 रुपय मासिक वेतन पर जयपुर म सघ के कार्यालय म सेवाकाय सम्भालने की हा भर दी ।

पार्टी कार्यालय मे कार्य किया । शाखाओ को पत्र लिखे गये । शुल्क का स्मृति पत्र लिखा । भावलपुर शरणार्थी सभा म उपस्थित हुआ । रात्रि को आय समाज सम्मेलन मे भाग लिया । हिन्दू कोड बिल को सुना और शका रखी । यहा हिन्दू धम के ठेकदारो का बहुमत है ।' (1-4-51)

समस्त दिन अकमण्य सा निश्चेष्ट और भ्रान्त सा निरुद्देश्य, लक्ष्यहीन एव पथभ्रष्ट सा सडक पर घूमता रहता हूँ और चाहता हूँ सुख शाति और सफलता । स्वय का जब निरीक्षण सूक्ष्म दृष्टिकोण से निष्पक्ष होकर करता हूँ तो स्वय को सबस बडा अपराधी पाता हूँ । परिवार की उदासीनता समाजसेवा के हित । समाज की सेवा कर नही रहा । माना हो नही पा रही है । क्षमता नही है तो ढोग क्यो ?' (7-4 51)

संकलन डा ओ पी गुप्ता
महर्षि दयानन्द महाविद्यालय
श्री गगानगर

"लोहियाजी, हम बेवकूफ न होते तो आपको पूछता कौन ?"

□ महादेव गुप्ता
समाजवादी नेता

मैं कमलनयनजी को अपना साथी ही नही अपना बडा भाई मानता हूँ। वे मेरे राजनीतिक जीवन के साथी ही नही समाजवाद की ओर मुझे प्रेरित करने वालो मे से थे। मेरे प्रेरणा के स्रोत डा० राममनोहर लोहिया व राजनारायण थे। 40 वर्ष पूर्व मैं तो केसरीसिंहपुर म एक व्यापारी था। एक बडा व्यापारी, जिसने 1950 के जमाने मे 5 लाख रुपये का आयकर भरा था।

1950 के दशक मे सोशलिस्ट नेता डा० राममनोहर लोहिया जब गगानगर जिले मे प्रथम दौरे पर आये, तो सबसे पहले केसरीसिंहपुर गये। वहा समाजवादी कार्यकर्त्ताओ की मीटिंग हुई जिसम मैं और कमलनयन जी भी मौजूद थे। मुझे उस मीटिंग की वातें अभी भी याद हैं खासकर एक किस्सा। बातो बातो मे डा० लोहिया ने गुस्से मे आकर कार्यकर्त्ताओ को फटकारते हुए कहा—"तुम सब तो बेवकूफ हो।' राष्ट्रीय नेता डा० लोहिया की इस झिडकी के सामने बोलने का साहस भला किस हो सकता था ? सब यह कडवी घूट पीकर रह गये। कमलनयन जी से नही रहा गया और उन्होंने पलट कर डा० लोहिया को जवाब दिया 'लोहिया जी हम अगर बेवकूफ नही होते तो

आपको कौन पूछता ?' लोहिया जी इस साहसपूर्ण हाजिर जवाबी से बड़े प्रसन्न हुए। उनका सारा गुस्सा जाता रहा और इसके बाद डा० लोहिया जब कभी गगानगर आये सबसे पहले कमलनयन जी से मिलने की सोचते ऐसी निर्भीकता विरला म ही देखने को मिलती है।

अब कमलनयन जी के जाने के बाद मुझे डाटने डपटने वाला कोई नहीं रहा। मैं इस कमी को शिद्दत से महसूस करता हूँ। जीवन के अन्तिम वर्षों म कमलनयन जी मुझसे कहा करते थे महादेव छोड़ ये राजनीति। अब अपने जिले व राजस्थान म समाजवादी आन्दोलन का इतिहास लिखते है।' मेरा उत्तर था दादा लिखना अपने वस का नहीं। टिककर म बैठ नहीं सकना। ये लिखने पढ़ने का काम हमने तुम्हारे जिम्मे पर छोड़ दिया है।'

कमलनयन जी मेरी तरह लोहिया जी के तो पक्के भक्त थे, मगर राजनारायण के बारे म उनके विचारो मे मतभेद था। मगर हाल ही म कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली म उनका साथ लेकर राजनारायण जी से मिला तो राजनारायण जी के बारे म कमलनयन जी धारणा कुछ बदली।

किसी राजनीतिक आन्दोलन मैं कूदने से पहले मैं बड़े भाई कमलनयन जी से जरूर सलाह करता था और अक्सर हम आन्दोलनो म साथ ही रहे। इन आन्दोलनो म केदार जी व माणिकचन्द सुराणा ने भी भाग लिया था। ये दोनो तो बाद म इन आन्दोलनो की बदौलत बड़े नेता व मन्त्री बन गये मगर मैं और कमलनयन जी सदा फक्कड़ ही रहे और इस बारे म कभी गम्भीरता से सोचा ही नहीं। कमलनयन जी से मेरी वैचारिक समानता काफी थी। विशेष कर असमानता के विरुद्ध जमकर मोर्चा लेने मे। मुझे यकीन है कि जिस असमानता के विरुद्ध कमलनयन इस लोक मे लड़ा वह लड़ाई उसने धमराज के यहा भी जारी रखी होगी यदि उसे वहा अन्याय व बेइन्साफी नजर आइ। अब मेरी भी इच्छा है कि उस लड़ाई मे वहा जाकर मैं उसका साथ दू क्योकि लड़ाइया तो हमने साथ ही लड़ी है।

कमलनयन घर में

●

परिवार के मुखिया के रूप मे भी कमलनयन जी का एक रुप था। उनकी पावन स्मृति मे उनके पुत्र अपनी माता सहित, जितना सम्भव हो पा रहा हे, उनकी आशा-आकाक्षाओ की पूर्ति कर रहे है।

परिवार के प्रवक्ता के रूप मे उनके पुत्रो के श्रद्धा-सम्मरण यहा प्रस्तुत है।

कमलनयन परिवार

दादा (कमलनयन) और दादी (श्रीमती कृष्णा देवी)
पोते सौरभ और पोती शालिनी के साथ
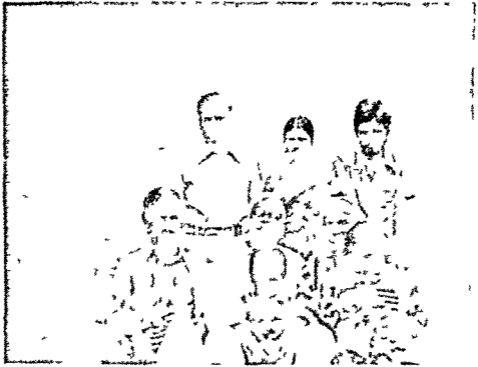
कमलनयन जी के साथ सोफ पर बाईं ओर पुत्र (स्व०) महेश और दाहिनी ओर धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा देवी। पीछे पुत्र श्रीधर (बायें) और विनोद के बीच में है पुत्रवधू सन्तोष।

इस चित्र में माता पिता, भाइयों और भाभी के साथ ललित (पुत्र) भी सोफे पर बैठे हैं।

परिवार

श्री कमल नयन शर्मा का विवाह 21 वष की उम्र मे 1937 म कृष्णादेवी से हुआ। वे पाच पुत्रो व एक पुत्री के पिता बने। एक पुत्र महेश की मृत्यु 19 दिसम्बर 1982 को हो गयी। उनके सबसे बडे पुत्र ब्रज भूषण शर्मा व सबसे छोटे पुत्र विनीत कुमार सीमा सन्देश मे उनके सहयोगी रहे और अब उनके बाद समाचार-पत्र की जिम्मेदारी उन्ही पर है।

ब्रज भूषण का विवाह सन्तोष (जयपुर म एक स्कूल चलाती है) स हुआ तथा वे दो पुत्रियो रिचा व साक्षी के पिता हैं।

उनके एक पुत्र डा० श्रीधर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय श्रीगगानगर मे प्राध्यापक हैं जिनकी रुचि लेखन व अनुसन्धान काय मे भी हैं। डा० श्रीधर की पत्नी सन्तोष शर्मा (प्राध्यापिका राजकीय कन्या महाविद्यालय श्रीगगानगर) है और उनके एक पुत्र सौरभ व दो पुत्रिया शालिनी व सुरभि हैं।

उनके पाचवें पुत्र ललित कुमार राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल मे सहायक अभियन्ता पद पर नियुक्त है। व्यवसाय से इन्जीनियर होते हुए भी वे साहित्यक रुचि के व्यक्ति हैं। वे अभी अविवाहित हैं।

सिफारिश नहीं की, आत्म विश्वास जगाया !

1968 का वर्ष समाप्ति पर था। तब मैं एम एस सी करने के बाद स्थानीय एस डी कालेज म प्राध्यापक लगा ही था। सरकारी सेवा म व्याख्याता पद पर स्थाई चयन के लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग का साक्षात्कार पत्र मिला। मैं इस साक्षात्कार के लिए जाने का मानस नहीं बना पा रहा था क्योंकि पूर्व म प्राइवेट कालेजों के इस प्रश्न से मैं परेशान था कि शिक्षण का पूर्व अनुभव नहीं था। फिर सिफारिश न होना एक दूसरी मुसीबत थी।

इस बीच पिताजी (श्री कमल नयनजी) के वकील मित्र श्री जगदीशचन्द्रजी करणपुर से आये और पिताजी से पूछा 'तुम्हारा लडका आर पी एस सी का इन्टरव्यू देने जा रहा है ?

पिताजी ने बताया वह जाने के मूड म नहीं है।' श्री जगदीश चन्द्र ने ओर दिया "उसे अवश्य भेजो। मेरे लडके को बुलावा ही नहीं आया वरना, वह जरूर जाता।" इस पर पिताजी ने मुझे समझाया तुम सोचते हो मैं तुम्हारे लिए सुखाडिया, किसी मन्त्री या श्री रामचन्द्र चौधरी (आर पी एस सी अध्यक्ष) से सिफारिश करू। आजकल तो उनके पास इतनी सिफारिशें आती है कि मेरा कहा वे शायद ही कर पायें। मान लो मेरा कहना मानकर तुम्हे चुन भी लें, तो जीवन भर तुम्हारे मन म यही अहसास रहेगा कि तुम मे स्वय म कोई योग्यता नहीं थी—पिताजी के

सहारे ही तुम आगे बढ पाये। अपनी योग्यता मे विश्वास रखकर चलोगे तो तुम्हारे लिए आगे के रास्ते खुल जायेंगे। दक्षिण भारत वाले उत्तर मे आकर कडी मेहनत व योग्यता के बल पर ही चयनित होते हैं उनकी कौन सिफारिश करता है? इन्टरव्यू मे जाने के लिए तुम्हारे 100–200 रुपये व 2–4 दिन की छुट्टिया ही खर्च होगी। यह कोई बडी बात नही। तुम इन्टरव्यू देने जरूर जाओ—परिणाम चाहे जो हो।

पिताजी की सलाह मानकर अन्तिम क्षणो मे मैंने साक्षात्कार के लिए अजमेर जाने का निर्णय लिया। साक्षात्कार मे प्रथम दो प्रश्नो के उत्तर मैं नही दे पाया मगर इसके बाद कोई ऐसा प्रश्न नही था जिसका उत्तर मैं न दे पाता। परिणाम जब आया तो मुझे लगा पिताजी ने सही राय दी—मैं अपने विषय मे प्रथम स्थान पर चयनित हुआ। उनके द्वारा जगाये गये आत्म विश्वास के बल पर ही मैं बाद मे पी एच डी की उपाधि ले सका। रोटरी इन्टरनेशनल द्वारा चयनित होकर अमरीका व कनाडा जा सका अपने विषय के अन्तर्गत अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनो मे शोध पत्र प्रस्तुत करने कनाडा अमरीका व योरोप के देशो मे जा सका, बी बी सी लन्दन द्वारा साक्षात्कार हेतु आमन्त्रित किया गया, दूरदर्शन के "जनवाणी" कार्यक्रम मे भाग ले सका, आदि। मैं सोचता हू यदि पिताजी ने मेरे भीतर आत्मविश्वास जागृत नही किया होता तो क्या मैं इतना आगे बढ पाता?

डॉ० श्रीधर
व्याख्याता वनस्पति शास्त्र
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
श्रीगंगानगर

सिफारिश नहीं की, आत्म विश्वास जगाया।

1968 का वर्ष समाप्ति पर था। तब मैं एम एस सी करने के बाद स्थानीय एस डी कालेज मे प्राध्यापक लगा हुआ था। सरकारी सेवा मे व्याख्याता पद पर स्थाई चयन के लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग का साक्षात्कार पत्र मिला। मैं इस साक्षात्कार के लिए जाने का मानस नहीं बना पा रहा था क्योंकि पूर्व मे प्राइवेट कालेजो के इस प्रश्न से मैं परेशान था कि शिक्षण का पूर्व अनुभव नहीं था। फिर सिफारिश न होना एक दूसरी मुसीबत थी।

इस बीच पिताजी (श्री कमल नयनजी) के वकील मित्र श्री जगदीशचन्द्रजी करणपुर से आये और पिताजी से पूछा 'तुम्हारा लडका आर पी एस सी का इन्टरव्यू देने जा रहा है?

पिताजी ने बताया वह जाने के मूड मे नहीं है। श्री जगदीश चन्द्र ने जोर दिया उसे अवश्य भेजो। मेरे लडके का बुलावा ही नहीं आया वरना वह जरूर जाता। इस पर पिताजी ने मुझे समझाया तुम सोचते हो मैं तुम्हारे लिए सुखाडिया किसी मन्त्री या श्री रामचन्द्र चौधरी (आर पी एस सी अध्यक्ष) से सिफारिश करू। आजकल तो उनके पास इतनी सिफारिशें आती हैं कि मेरा कहा वे शायद ही कर पायें। मान लो मेरा कहना मानकर तुम्हें चुन भी लें, तो जीवन भर तुम्हारे मन मे यही अहसास रहेगा कि तुम मे स्वयं मे कोई योग्यता नहीं थी—पिताजी के

सहारे ही तुम आगे बढ पाये। अपनी योग्यता मे विश्वास रखकर चलाग ता तुम्हार लिए आगे के रास्ते खुल जायेंगे। दक्षिण भारत वाले उत्तर मे आकर कडी मेहनत व योग्यता क बल पर ही चयनित होते हैं उनकी कौन सिफारिश करता है? इटरव्यू मे जाने के लिए तुम्हारे 100-200 रुपये व 2-4 दिन की छुट्टिया ही खच हागी। यह कोई बडी बात नही। तुम इटरव्यू देने जरूर जाओ—परिणाम चाहे जो हो।

पिताजी की सलाह मानकर अन्तिम क्षणो मे मैंने साक्षात्कार के लिए अजमेर जाने का निणय लिया। साक्षात्कार मे प्रथम दो प्रश्नो के उत्तर मैं नही दे पाया मगर इसके बाद कोई ऐसा प्रश्न नही था जिसका उत्तर मैं न दे पाता। परिणाम जब आया तो मुझे लगा पिताजी ने सही राय दी—मैं अपने विषय म प्रथम स्थान पर चयनित हुआ। उनके द्वारा जगाये गये आत्म विश्वास के बल पर ही मैं बाद मे पी एच-डी की उपाधि ले सका। रोटरी इटर नेशनल द्वारा चयनित होकर अमरीका व कनाडा जा सका, अपन विषय के अन्तगत अतराष्ट्रीय सम्मलनो म शोध पत्र प्रस्तुत करने कनाडा अमरीका व योरोप के देशो मे जा सका, बी बी सी लन्दन द्वारा साक्षात्कार हेतु आमन्त्रित किया गया, दूरदशन के जनवाणी कायक्रम म भाग ले सका, आदि। मैं सोचता हू यदि पिताजी ने मेरे भीतर आत्मविश्वास जागृत नही किया होता, तो क्या मैं इतना आगे बढ पाता?

डॉ० श्रीधर
व्याख्याता वनस्पति शास्त्र
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
श्रीगगानगर

जाते जाते भी मेरी शिकायत दूर करने की फिक्र

☐ ललित

मैं छठी–सातवी म था। जब पिताजी (कमलनयन जो) एक बार बीमार हुए ता उन्होंने इच्छा जाहिर की कि गगानगर मे एक अच्छा वृहद् पुस्तकालय बने।

स्कूली समय मे मैं वादविवाद प्रतियोगिताओ म भाग लेता, तो मेरी पढाई में होन वाला व्यवधान उन्हें नही अखरता था। वे कहा करत थे कि वे स्वय अपने स्कूल म छात्रो को भाषण सुनाया करत थे।

मेरा पिताजी स सम्ब ध कनई अपरम्परावादी रहा। वे समय समय पर मुझे बताते थे कि उनका पिता (मर दादा प बापूजी) स कसे अनेकानेक मुद्दो पर गहन मतभेद रहता था। वे सही बात पर सदा अडिग रहे तथा अपन भीतर के कमलनयन को बेटे की वेदी पर बलिदान नही किया।

यही बात मेरे साथ थी। अ तमन म मैं शायद अपन पिताजी का अनुसरण करना रहा। दृढता के प्रयास म मैं कई दफा बदतमीज व बेहूदा भी हुआ—लेकिन सदव उदार कमलनयनजी ने मुझे माफ किया। उन्हें लिखे मेरे पत्र—दोस्ता को लिखे पत्रा जमे ही होते थे।

अन्तकाल के दिनो म जब कमजोरी की हालत म वे मुझसे अन्तरगता स अपने बचपन, पसन्द नापसन्द की बातें लम्बे समय तक करत रहे तो, मैंने उनकी हालत के अनुसार चुप रहने व आराम करन की सलाह दी। इस पर पिताजी ने मेरे एक पत्र का हवाला दिया, जिसमे मैंने अपन परिवार मे (हर औसत भारतीय परिवार की भाति) सदस्यो के बीच सम्प्रेषण न होन की शिकायत की थी।

वे बोले, मैं सोचता हूँ जाता जाता तेरी शिकायत किसी हद तक दूर कर द।

छोटी छोटी बाता को वे भूलते नही थे। औरो को भावुक कहत थे, स्वय सबसे अधिक भावुक थे। भीतर ही भीतर सबके लिए सहायता भावना, दया, उदारता व सदाशयता से भर रहते थ।

चाहे उनके प्रेस पत्र के कमचारी हो या अजनबी सबके लिए उन्होने खूब किया—सबको खूब दिया। चाहत तो अफसरो-सेठो जमीदारो से ब्लकमेल करके लाखा कमा सकते थे। लेकिन उ हें सादादिली, फक्कडपन प्यारे थे। उनका हृदय से सम्मान करन वाले बेशुमार लाग हैं जो हमसे भी उतने ही मान व ममता से मिलते है।

राजनीतिक चितन एसा कि आज के युग मे विरलो का ही होगा। उनके नजदीक के लोग जानत हैं कि आपात काल की घोषणा चुनावो का समय, इन्दिराजी की हत्या व राज्य की राजनीति के बारे म उनका चितन व भविष्य वाणिया अक्षरश सत्य सिद्ध हुई।

अपने सघष से व जनसम्मान के दिनो को सोचकर वे कभी कभार भावुक हो जाते थे—जब हजारो कमचारी हडताल मे सफलता के बाद उन्हें कन्धो पर उठाकर उनके पिता के घर ले गये थे। उन दिनो "बागी' व नास्तिक' कमल नयन ने अपने पिता का घर त्याग रखा था। मेरे दादा उस दिन बहुत खुश व प्रभावित हुए। कमल नयन जी के अनुसार, उनके आशीर्वाद से ही वे बने, जो कुछ भी बने।

कमल नयनजी का सान्निध्य व ससग कसा रहा हागा यह इस तथ्य से भी जाहिर है कि छात्र काल मे उन्हें नेता व आदश मानने वाले अपने घर वाला की आपत्तियों के बावजूद कमल नयन जी के कायक्रमो म भरपूर योगदान दने वाल लाग सवश्री ज्ञानप्रकाश पिलानिया मुन्नालाल गोयल कन्हैयालाल कोचर अजु न सहगल, कृष्ण सहगल व अन्य अनेक अपने अपने क्षेत्रो मे शिखर पर तथा सफल हैं।

पचास के दशक म श्री बी पी सूद, आई ए एस रायसिहनगर मे उपजिलाधीश थ। कमल नयन जी व सूद के बीच घनिष्ठता ऐसी बैठी कि रायसिहनगर प्रवास क दौरान व सूद साहब

के यहा ही ठहरते, खाना खाते। एक बार सरकार के विरुद्ध आन्दोलन के दौरान कमलनयनजी सरकारी शासन के प्रतीक उपजिलाधीश (सूद) के विरुद्ध गधारेहडी मे (तब प्रचार हेतु यही वाहन प्रचलित था) धुआधार भाषण दे रहे थे।

इतने म सूद साहब का नौकर आया और उनसे बोला सूद साहब आपका इन्तजार खाने पर कर रहे है। कमल नयनजी बोले, सूद का दोस्त कमलनयन अभी मरा हुआ है, आन्दोलनकारी कमलनयन बोल रहा है। सूद का दोस्त जब जिन्दा होगा—मैं आ जाऊगा। रात का खाना खाने वे दोनो साथ बठे।

परस्पर विरोधी माने जाने वाले पेशा प्रशासन अधिकारी व पत्रकार (तथा विरोधी नेता) के बीच ऐसी प्रगाढता आज विरल है। सूद व कमलनयन जी तमाम हालात के बावजूद सच्चे मित्र व एक दूसरे के हितैषी रहे। सूद ने जायज तरीको से कमल नयन जी को जमीन (कृषि) अलॉट करनी चाही – जिसे उन्होने अस्वीकार कर दिया।

हरिजनो के प्रति कमल नयन जी का सुधारवादी रवया पूरे बीकानेर क्षेत्र म आन्दोलन कारी व काया कल्पकारी कहा जायगा एक कट्टर सनातनी पडित के बेटे होकर अपने बीकानेर जसे पुरातन पथी नगर म हरिजनो को मन्दिरो मे प्रवेश दिलाया। इस जिले म हरिजनो के वे अगुआ तथा हित रक्षक थे। पन्नालाल बारूपाल के समर्थन मे सभाओ म आपने धुआधार भाषण दिये उनके परिवार म हमारे परिवार के घुलने मिलने का मकसद ब्राह्मण–हरिजन की दीवार को तोडना था। जिले म आये हरिजन प्रशासनिक पुलिस अधिकारियो को उन्होने विशेष स्नेह समर्थन दिया।

कमल नयनजी सीमा सन्देश के जरिये व व्यक्तिगत तौर पर पूरे समाज खास कर गगानगर जिले के पहरए या चौकीदार की भूमिका अदा करते थे। कलक्टर एस पी का सही राय व मार्ग दर्शन देते—यदि कोइ मागता। अन्यथा अखबार के जरिये उसे चेताते। वह न मानता तो एक लडाई शुरू कर देते। आर के शास्त्री ए वी गणेशन, मानटक एल एन गड्डा जैसे ईमानदार अफसरो के वे प्रशसक रहे। उनकी इन नीतियो का लाभ पूरे जिले को मिला।

अपनी उम्र म कमल नयनजी ने खूब पढा खूब सघर्ष किया अनगिनत लोगो को नौकरी दिलाकर या अन्य तरीको से काम धधे लगाया। तारीफ यह कि उन्हें इन लोगो की शकल तक याद न रहती। राज्य के वित्त सचिव रहे सदाशिवन् तक कहते हैं कि कमल नयन जी के प्रयासो म कर्मचारियो को मिले लाभ के बाद ही मैं आई ए एस बन सका और इस उच्च स्थान पर पहुँचा।

ऐसा नही कि कमल नयन जी को उनके सघर्षों त्याग का सिला न मिला हो। हजारो लोग 50 के दशक म बीकानेर शहर म उन्हें सडक पर देख उठकर उन्हें सम्मान व प्रेम दर्शाते। सुखाडिया सहित राज्य के मुख्य शासको प्रशासको के लिए कमल नयन जी एक स्तम्भ व राजनीतिक पण्डित थे। डी एस नागा जसे काबिल अभियन्ता उनके अनन्य भक्त थे। असख्य लोगो का जीवन व करियर कमल नयन जी ने बनाया वे इस बात को मानते हैं।

श्रद्धा सुमन

●

श्री कमलनयन शर्मा सर्वप्रिय थे। वे सभी वर्गो के लिए श्रद्धा और स्नेह के पात्र थे। राजनेता, न्यायिक एव प्रशासनिक सेवाओ के उच्चाधिकारी, शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष, उद्योगपति, व्यापारी एव व्यावसयिक एव मजदूर सगठन, कर्मचारी नेता, पत्रकार और लेखक सभी उनके प्रति श्रद्धा-विनत है।

यहाँ प्रस्तुत ह उनमे से कुछ के सहज, हार्दिक उद्गार।

जो उन्हें स्मरण करते हैं

० सा० विस्नाई

...रवराम सिनानिया

lways
tained
been
the
Sma
st a
he
this
as

राजकुमार गाग

रामनुभावा

विनयकुमार
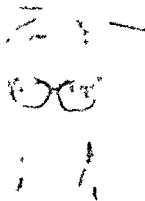
During my stay at Ganganagar, he had always been very kind to me Even afterwards he maintained great affection for me Sh Kamal Nayanjee has been a noted freedom-fighter and always espoused the cause of the downtrodden through his paper Sima Sandesh In his sad demise, Rajasthan has lost a great and patriotic son For about 4 decades, he guided the destiny of Ganganagar and, therefore, this is not only a personal loss but a loss to the society as well

Justice, Jas Raj Chopra
Judge, Rajasthan High Court
Jodhpur

यह एक बहुत ही प्रशसनीय काय है कि आप स्वतत्रता सेनानी एव दनिक ' सीमा सदेश ' के सस्थापक स्व श्री कमलनयन शर्मा जी की यादगार म स्मृति ग्रथ ' प्रकाशित करने जा रहे हैं।

वस्तुत देशी रियासतो के जन आदोलनो म सक्रिय रूप म भाग लेने वाले स्वातत्र्य योद्धाओ क जीवन परिचय युवा पीढी के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होंगे। मैं आपके इस सद्प्रयास की हृदय से सफलता की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओ सहित,

आपका
अशोक गहलोत,
अध्यक्ष

राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी जयपुर-1

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दनिक सीमा सन्देश समाचार के सस्थापक व सामाजिक कार्यकर्ता स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय कमलनयन शर्मा की स्मृति म एक स्मृति ग्रथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

स्वर्गीय कमलनयन शर्मा जी न जीवन पर्यन्त अग्रेजी शासन के खिलाफ तथा राजाशाही एव जागीदारी के खिलाफ आवाज उठाई। वे कर्मचारियों के नेता के रूप म सदैव कल्याणकारी कार्यों मे जुटे रहे। आजादी के बाद उन्होन पत्रकारिता के माध्यम मे राजस्थान की विभिन्न समस्याओ के बारे म अपनी लेखनी के माध्यम स समूचे राजस्थान की सेवा की। उन्होने दहेज प्रथा के खिलाफ, सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध एव हरिजनो के उद्धार के लिए प्रेरणदायी काय किये। श्री शर्मा जी जब भी मिलते थे वे प्रदेश के चहुँमुखी विकास क बारे म तथा देश की आजादी की रक्षा के लिए युवको की रचनात्मक भूमिका के बारे मे अपने विचारो से अवगत कराते रहते थे। मैं स्वर्गीय श्री शर्मा जी की स्मृति मे प्रकाशित होने वाले ग्रथ के सफल प्रकाशन की मगल कामना करता हूँ।

सद्भावी
बी० डी० कल्ला
सरकारी मुख्य सचेतक, राजस्थान विधान सभा, जयपुर

खरे व्यक्ति थे। कभी भी कुछ दिल मे नही रखा। जो उनक मन मे था—बेबाक कहते थे। ऐसे स्पष्टवादी दिल के साफ होते हैं। कमलनयन जी जसे व्यक्ति बहुत कम होते हैं।

श्री रामचन्द्र चौधरी
पूव मन्त्री राजस्थान

जन्मजात ट्रेड यूनियनिस्ट और समाजवादी

कमलनयन शर्मा गगानगर जिले के कई मामलो मे सव प्रथम थे। इस जिले के प्रथम ट्रेड यूनियनिस्ट थे, जिन्होने कमचारी मघ की स्थापना रियासती राज के समय करने का प्रयास किया। वे इस जिले के प्रथम पत्रकार भी थे, जो अपने जीवन के अन्तिम समय तक बन रहे। इसके अलावा वे समाजवादी पार्टी के जिले मे सस्थापको मे से भी एक थे।

श्री कमलनयन शर्मा परिस्थितिवश ही राजनीति मे तथा पत्रकारिता मे गये जहा वे सन्तुष्ट नही थे तथा वे इसीलिए इसमे सफल भी नहीं हो सके। वे स्वभाव से मुहफट, स्पष्टवादी, भावुक तथा उग्रभाषा के प्रयोग के आदी थे, और ये सब गुण एक ट्रेड यूनियन नेता के जन्म जात गुण होते हैं। श्री कमलनयन शर्मा स्वभाव व रुझान मे एक ट्रेड यूनियनिस्ट ही थे। वे इसी लाइन म सफल होकर ऊँचाई पर जा सकते थे, पर चूकि गगानगर जिला एक कृषि प्रधान जिला था, यहा औद्योगीकरण नाम मात्र का भी नही था। श्री शर्मा को ट्रेड यूनियन के क्षेत्र को छोडकर समाजवादी राजनीति मे तथा बाद मे पत्रकारिता मे आना पडा।

श्री शर्मा स्वभाव से सरल, सहज विश्वासी तथा स्पष्ट भाषी थे और इसीलिए वे राजनीतिक पार्टी मे किसी नता के विश्वास पात्र नही बन सके। श्री शर्मा भयकर अभावो के बीच राजनीति मे आये थे। अपने अथक परिश्रम से उन्होने अपना आर्थिक जीवन कुछ व्यवस्थित किया था। इतनी तगी के दिनो मे जबकि घर मे दूसरे वक्त के राशन का जुगाड भी नही होता था, श्री शर्मा बेफिक्र एव अजीब फाका मस्ती मे सोशलिस्ट पार्टी का झण्डा उठाये घूमते थे, व लापरवाही तथा बेफिक्री उनके जीवन का स्थायी अग बन गई थी जो जीवन के आखिरी दिनो तक बनी रही।

श्रीनिवास
पूव अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश सोशलिस्ट पार्टी

कमलनयनजी ने हर बुराई अन्याय व अत्याचार का वडा विरोध किया इन पर सदव करारी चोट की लेकिन कभी भी असम्भव तरीके से नही लिखा।

नत्थूराम योगी
स्वत त्रता सेनानी व जिला काग्रेस अध्यक्ष एव पूव पालिका अध्यक्ष, गगानगर
(देहावसान अक्टूबर 1987)

उन्होन दनिक सीमा सदेश के प्रधान सम्पादक के रूप मे समाचार पत्र के माध्यम से समाज की जो सेवाए की हैं वह सदव याद रहेगी। उनके सादा जीवन और उच्च विचार स भावी पीढ़ी आने वाले समय मे प्रेरणा लगी।

सी० पी० जोशी
विधायक व महाम त्री राज प्रदेश काग्रेस जयपुर

कमलनयन जी ने पत्रकारिता के माध्यम से जिस प्रकार गगानगर क्षेत्र एव राजस्थान प्रदेश की सेवा की, उसे कभी भुलाया नही जा सकता। वे निर्भीक पत्रकार के अलावा समाज सेवी सत भी थे।

के० सी० बिश्नोई
विधायक एव अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश युवक कांग्रेस जयपुर

श्री कमलनयन शर्मा मेरे मित्र और पुराने साथी थे। स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी साथी के नाते और मेरे साथ पत्रकारिता के क्षेत्र मे सहयोगी के नाते इनका बिछुडना मेरे लिए बहुत ही दुखद है।

सूरजप्रकाश पापा
अध्यक्ष राज्य स्वतन्त्रता सेनानी समिति जयपुर।

पडित कमलनयन को मैं तबसे जानता हूँ जब ये 15 16 वष के थे। मैं और वे हम उम्र थे। मुझ से वे 7–8 महीने ही बडे थे। जीवन के किसी काल मे वे नास्तिक भले रहे हो, मगर उनके मन के कोने मे आस्तिकता जरूर छिपी थी क्योकि वे लगभग नियमित रूप स दुर्गा पाठ करते थे। हा उनकी आस्तिकता म आडम्बर व दिखावा नही था। सबसे उल्लेखनीय बात है यह है कि ईश्वर से भी अधिक विश्वास उन्हे मानव सेवा मे था और वे इससे कभी विमुख नही हुए।

कत्तव्य परायणता उनका दूसरा प्रमुख गुण था। अखबार म उन्होने वही छापा जिसे उन्होने सही समझा। न तो किसी धमकी के आगे झुके और न किसी प्रलोभन के लिए अपने माग से विचलित हुए। आज के भौतिक युग मे अपने कत्तव्य का इस प्रकार निर्विवाद भाव से पालन कर पाना बहुत कठिन है। कही न कही समझौता करना ही पडता है मगर कष्ट सहकर व आर्थिक विपन्नता सहकर भी उन्होने पत्रकार के अपने दायित्व को निभाया। ससार मे जो व्यक्ति व्यक्तिगत लाभ हानि से ऊपर उठ जाता है वही समाज के बारे मे सोचता है और कुछ करता है। भाई कमलनयन का व्यक्तित्व भी ऐसा ही था। तभी वे आज भी याद किय जाते हैं।

प० रामेश्वरदत्त वैद्य
पूव नगरपालिका अध्यक्ष व प्रमुख चिकित्सक

राजस्थान के वरिष्ठ पत्रकार श्री कमलनयन जी से मेरे व्यक्तिगत सम्बन्ध थे तथा सावजनिक जीवन मे हमेशा ही उनका बडा योगदान रहा था।

भवानी शकर शर्मा
महामन्त्री राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (आई) कमेटी, जयपुर

कमलनयन जी को मैं अपना राजनीतिक गुरु मानता हूँ। मेरा राजनीति मे आना भी उनकी सलाह से हुआ। राजनीति की ऊच नीच और इसके व्यावहारिक पक्ष का थोडा बहुत ज्ञान जो मुझे प्राप्त हो सका उन्ही की सगत से सीखा है। मुझे उन्होने यही सिखाया कि जिस काम को मन स सही मान लो उसमे जुट जाओ। किसी विरोध से घबराओ नही।

राजकुमार जैन
प्रदेश महामत्री राज युवक काग्रेस व महामन्त्री नगर
जिला काग्रेस (आई) कमेटी, श्रीगगानगर (राज.)

श्री शर्मा जी रियासती जमाने से ही सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय थे। बीकानेर राज्य प्रजा परिषद मे भी उनका महत्वपूर्ण स्थान था। सामन्ती युग मे भी उन्होने राज्य कर्मचारियो के लिए सबसे बडे आन्दोलन का नेतृत्व किया। श्री शर्मा बहुत मिलनसार तथा स्पष्टवादी व्यक्ति थे। साथियों और परिचितो के लिए उनमे गहन अपनत्व की भावना थी। उनकी अमूल्य सेवाओ के लिए समाज कृतज्ञ रहेगा।

चम्पालाल उपाध्याय
रतनगढ

मेरे पर उनका कितना स्नेह था यह तो मैं ही जानता हू। सन 1946 मे मैं उनके सम्पर्क मे आया और उसके पश्चात चाहे हम कम मिले या एक साथ न भी रहे हो परन्तु जब भी मिले तो ऐसा महसूस होता था कि बडा भाई मिला है। और उसे अधिकार हैं कि वह यह कहे 'मुनिया आज कल तेरा क्या हाल है रे।' मुझे इतना अपने मन स कहने वाले कुछ ही व्यक्ति हैं।

एक बात अवश्य है। वे पत्रकारिता मे रहकर व इतनी छोटी जगह मे रहकर भी जहा पत्रकारिता दोषो से मुक्त नही है वहा पर वे एसा जीवन व्यतीत कर गये कि उनके जीवन की चादर इतनी स्वच्छ हैं कि जितनी कही नही मिलती। उस चादर पर एक भी छीटा कहीं नहीं मिलता। यह सब आप लोगो का रहेगा और आने वाले लोग उनके जीवन की एक मिसाल दिया करेंगे।

मुन्नी लाल गर्ग
एडवोकेट राजस्थान हाईकोर्ट जोधपुर

कमलनयन जी को मैं लम्बे अरसे स जानता हूँ।

श्री देवीलाल दशोरे
जिला प्रमुख जिला परिषद श्री गगानगर

लेखक-पत्रकार

श्री कमल नयन शर्मा सीमा सन्देश के माध्यम से पत्रकारिता की स्वस्थ परम्परा पर चले और उन्होने अपना कर्तव्य पालन किया। ऐसे व्यक्ति के प्रति समाज का कृतज्ञता ज्ञापन करना ही चाहिए।

मैं पुस्तक के लिए अपनी शुभकामनाए भेजता हू।

अक्षय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व लेखक, पूव सम्पादक नवभारत टाईम्स

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि "सीमा सदेश' के प्रधान सम्पादक तथा स्वतन्त्रता सेनानी के सम्बन्ध म "स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। किसी भी निष्ठावान और कर्मठ व्यक्ति का जीवन दूसरो के लिए एक आदर्श तथा आलोक सिद्ध होता है। ऐसे व्यक्ति मर कर भी अमर ही होते हैं।

ऐसे व्यक्ति का स्मृति ग्रन्थ हर दृष्टिकोण से सफल तथा रुचिकर हो—ऐसी मेरी कामना है। मैं आपके सद्प्रयास की सफलता की कामना भी करता हू।

विजय कुमार
सम्पादक हिन्द समाचार–पत्र समूह

स्व० श्री कमलनयन शर्मा की आगामी जयन्ती पर सीमा सन्देश कमलनयन शर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व प्रकाशित करने जा रहा है।

सीमा सन्देश उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर आये ऐसे लेखो का चयन करेगा जिनसे राजस्थान के लोगो को प्रेरणा मिलती रहे। यही मेरा उनके लिए सन्देश होगा।

आपका
प्रभाष जोशी
सम्पादक जनसत्ता

वन्देमातरम्। आपका 27 8 87 का पत्र मिला। आप स्वतन्त्रता सेनानी स्व कमलनयन शर्मा स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित करने जा रहे हैं। खुशी हुई।

श्री कमलनयन जी शर्मा सच्चे देश भक्त, समाज सुधारक जागरूक पत्रकार एव समाजवादी विचारा के थे।

मेरा उनसे कई वार मिलना हुआ था। मेरी ओर से स्मृति ग्रन्थ मे हार्दिक शुभ कामनायें प्रकाशित करवाने का कष्ट करें।

भवदीय
दुर्गा प्रसाद चौधरी
सम्पादक, नव ज्योति

स्व श्री कमलनयन शर्मा प्रधान सस्थापक सम्पादक व स्वतन्त्रता सेनानी की आगामी जयन्ती पर "सीमा सन्देश' अपना श्रद्धाजलि अक प्रकाशित कर रहा है यह गौरव की बात है।

यो तो शर्मा जी को सघर्षशीलता उनकी जन्मभूमि जीन्द (हरियाणा) स ही प्राप्त हुई थी। हिन्दी के गिने चुने सघर्षशील पत्रकारो मे शर्मा जी को सदव स्मरण किया जाएगा। अखिल भारतीय समाचार सम्पादक सम्मेलन मे भी सत्यता के कई विषयो पर उलझ जाते थे। पैनी दृष्टि और पैनी लेखनी वाली कहावत आप पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती थी।

समाज वादी विचारधारा के क्रियान्वय करने मे सदैव सघर्ष रत रहे। राजाओ (सामन्तशाही) के विरुद्ध उन्होने जो सघर्ष किया वह उनको बडा महगा पडा, किन्तु सामन्तवाद के विरुद्ध सघर्षरत रहे और अन्त मे उसमे सफलता भी प्राप्त की। भगवान से प्रार्थना है कि उन द्वारा सस्थापित दैनिक 'सीमा सन्देश' को जीवित रखने मे आप पूर्ण रूपेण सफल हो।

ऋषि रामचन्द्र कौशिक
सम्पादक, अजन्ता

स्व कमलनयन शर्मा जी से मेरा बहुत निकट सम्बन्ध तो नही रहा परन्तु भेंट कई बार अवश्य हुई। वे एक निर्भीक पत्रकार रहे और परिस्थितियो से समझौता न करते हुए सघर्ष का रास्ता सदा अपनाया। ऐसे जुझारू पत्रकार के जीवन स उदीयमान पत्रकारो को एक नई प्रेरणा लेनी चाहिए।

बालेश्वर अग्रवाल, पत्रकार
पूर्व प्रबन्ध सम्पादक हिन्दुस्तान समाचार सहकारी समिति
व अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद
(नई दिल्ली) भारत के वर्तमान महामन्त्री

कमलनयन जी बीकानेर रियासत के ही नहीं, बल्कि राजस्थान के प्रमुख पत्रकार एव स्वतन्त्रता सेनानी थे। उनका मुझ पर पितृवत स्नेह था।

श्याम सुन्दर आचार्य
सम्पादक, नवभारत टाइम्स, जयपुर।

भाई श्री कमलनयन जी शर्मा एक प्रखर और कमठ पत्रकार थे। वे जीवन के विभिन्न आयामो को स्पर्श करने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और कठोर संघर्ष मे भी वे अपना धैर्य नहीं खोते थे। कई वर्षों के बाद वे मुझे हठात् अपने परिवार की एक शादी में मिले। दोनो एक दूसरे को जाकर गले मिले। कुशल मंगल के बाद उन्होंने कहा तुमने सामन्तो और राजाओ के बारे में तीखा लिखकर अच्छा किया। सामन्तवाद को मिटाये बिना नयी जागृति नहीं हो सकती। मैंने प्रसंग बदल कर कहा आपकी क्या गतिविधियां हैं? उन्होंने लम्बा सांस लेकर कहा—चन्द्र! अब तो पत्रकारिता एक व्यवसाय का रूप लेती जा रही है।—वह सच्चाई, साहस और दबंगपन है ही नहीं। पहले सत्य की खोज होती थी और अब सनसनी की। फिर मुझे लगता है कि समय ही बदल गया। आदमी के भीतर सुविधा भोगी प्रेत जन्म लेकर बड़े से बड़ा हो रहा है।—एक और बात है। पत्रकार को युग एक व्यथता का आभास कराता है। उसके साथ ही उसका इतिहास खत्म हो जाता है।

मैं आज भी इन विचारों के बारे में सोचता हूं तो लगता है कि उन्होंने सच कहा था।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
सुप्रसिद्ध लेखक

भाईजी (कमलनयन जी) से मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध ही नहीं था बल्कि वे हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत थे। उन्होंने अपना जीवन बीकानेर रियासत मे निरकुश शासन के विरुद्ध लोगो को एक साथ लेकर तत्कालीन राजा के शासन के विरुद्ध विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित की और राज्य कर्मचारियों के हितो के एक संरक्षक के रूप में जाने जाने लगे थे।

राजस्थान की पत्रकारिता को उन्होंने अपने खून पसीने से सिंचित कर पत्रकारिता को आगे बढ़ाया।

विष्णु शर्मा अरुणेश
सम्पादक अधिकार

उनका हम पर असीम स्नेह था । वे एक महान व्यक्ति थे, सुलझे हुए कमठ पत्रकार थे । उन्होने सघषमय जीवन जिया जो हम सभी के लिए आदश बन गया है ।

शेखर सक्सना
सम्पादक गणराज्य

भाई कमल जी लोकमत परिवार के ही सदस्य थे । बीकानेर मे जुझारू राजनीति का सूत्रपात उनके द्वारा ही किया गया था । वे उम्र भर सघषशील रहे और उन्होने आदर्शों के लिए जीवन जिया ।

अम्बालाल माथुर
सम्पादक, दनिक लोकमत

श्री गगानगर जिले म पत्रकारिता के महान स्तम्भ निर्भीक एव निष्पक्ष लेखक तथा दनिक सीमा स देश के सस्थापक व प्रधान सम्पादक प कमलनयनजी शर्मा की मृत्यु से पत्रकार एक अपूरणीय क्षति अनुभव करते हैं । उनकी मृत्यु से श्री गगानगर मे जो शून्यता आ गई है उसे शीघ्र भरा जाना सम्भव नही होगा ।

1 आनन्द पाल (त्रास)
2 कृष्ण चन्द्र शर्मा (तज)
3 अजय सोवती (सीमा किरण)
4 कमल नागपाल (प्रताप केसरी)
5 शिव स्वामी (लोक सम्मत)
6 वीरेन्द्र मल्होत्रा (यू एन आई)
7 जे बाली (प्रिय दर्शिका)
8 जगजीत सिह ढिल्लो (भारत जन)
9 चन्नी भाटिया (मरु अमृत)
10 भूपेन्द्र नागपाल (जनता और देश)
11 राकश शर्मा (लोक सम्मत)
12 ओम प्रकाश बसल (प्रशान्त ज्योति)
13 देवेन्द्र कुमार जैन (गगानगर गजट)
14 देव किशन (कटीले फूल)
15 श्याम चुघ (शाश्वत सत्य)
16 हरि गौड (सीमा किरण)
17 सीता राम मौय (भारत रक्षक)
18 देवेन्द्र जीत सिंह (युवा सत्य शक्ति)
19 जसविन्द्र बल (युवा सत्य शक्ति)
20 सुरेश मुदगल (प्रताप केसरी बम्बई)
21 अशोक सोनी (प्रशात ज्योति)

स्व शर्मा ने जिस साहस धय व निर्भीकता के साथ सरकारी त त्र को 35 वष तक पत्रकारिता के माध्यम स आम जनता क सामने रखा । इसके द्वारा उन्होन न कवल इस ऊसर क्षेत्र को अपनी लेखनी से सींचा है बल्कि पत्रकार जगत को भी विशेष प्रेरणा मिली है ।

मदन लाल अरोडा
सम्पादक सा सादुल केसरी

उनके कहकहे मे निश्चितता और सदाशयता का मिश्रण जो मैंने देखा और कही नही। अपनत्व की वे प्रतिमूर्ति थे।

निर्मोही व्यास
(सीमा सन्देश के पुराने लेखक व साहित्यकार)

सन् 1951 से 1986 तक "सीमा सन्देश" ने कहा कहा मुकाम किये, कौन कौन से कष्ट झेले, किन किन परिस्थितियो मे साहस, सूझ बूझ और सक्षमता दिखाई, कब, कहा कमजोर रहे – ये सभी बाते इतिहास का विषय हैं परन्तु कमलनयन जी शर्मा की "कलम" के रूप मे सीमा सन्देश सही मायने मे सीमा सन्देश ही रहा।

डॉ परमेश्वर सोलकी
ब्यूरो चीफ जलते दीप बीकानेर

हमे याद है एमरजेन्सी मे जब पत्रो पर सेंसरशिप थी। तब तत्कालीन मुख्यमन्त्री हरिदेव जोशी ने कुछ इन गिने पत्रकारो को अपने चम्बर मे बुलाया था। उनमे श्री कमलनयन जी भी थे। जब मुख्यमन्त्री ने यह कहा कि आप हमारा साथ दो, सरकार के खजाने आपने लिए खुले हैं। न साथ देने पर डी आई आर व सीमा आदि खुले है जो चाहे माग चुन लें। तब कमलनयन जी ने बडे साहस से कहा था कि आपके डी आई आर सीमा आदि हमारे कमले को नही डगमगा सकते। उस स्थिति मे ये साहस भरे शब्द सुनकर हमारे भी हौसले बुलन्द हुये।

म० चावला, सम्पादक
बीकानेर एक्सप्रेस

वरिष्ठ अप्रतिबद्ध पत्रकार होने के नाते कमलनयन जी के प्रति मैं श्रद्धा और आदर के भाव रखता हू। मेरी श्रद्धा मे और वद्धि यह सोचकर होती है कि पत्रकार होने के अतिरिक्त वे एक कमचारी नेता और प्रगतिशील विचारधारा के सामाजिक कायकर्ता भी थे। श्रद्धेय शर्मा जी सदैव जीवन मूल्यो की प्रतिष्ठा के लिये सघपरत रहे और इस सघष मे उन्होने कभी हार नही मानी।

मैं कमलनयन जी को श्रद्धा अर्पित करने के साथ ही सीमा सन्देश परिवार को भी साधुवाद देता हूँ, जो उनके जीवन की सुनहरी कहानी को प्रभाव म लाते है।

राजमल सघी
वरिष्ठ पत्रकार

श्री शर्मा ने पत्रकारिता के जो आयाम स्थापित गये हैं वह नई पीढी के लिए मील का पत्थर सिद्ध होगे।

युवा लेखक सघ
श्री गगानगर।

मुझे यह कहने म जरा भी सकोच नही है कि मैंने अपना जीवन कमलनयन जी के अखबार मे कम्पोजिटर के रूप मे आरम्भ किया था। उन्हें गुस्सा जल्दी आता था तो वे डाट भी देते थे मगर दूसरे ही क्षण मना भी लेते थे। उनकी आर्थिक स्थिति तब अच्छी नहीं थी। मगर इसके बावजद उन्हें सदा इस बात की चिन्ता रहती थी कि काम करने वालो का पसे समय पर मिल जायें उन्हें किसी तरह की तकलीफ या परेशानी न हो। भले ही उनका अपना परिवार आर्थिक समस्याओ से जूझ रहा हो। अपने काम करने वालो के प्रति ऐसा दृष्टिकोण, व्यवहार व आत्मीयता इन दिनो कम ही दिखने को मिलती है।

पत्रकारिता के प्रति मेरा रुझान भी तभी से बना जब मैं कमलनयन जी के यहा काय करता था। यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि पत्रकारिता की कलम चलाना उन्होंने ही मुझे सिखाया।

राजे द्र सारस्वत
प्रतिनिधि दनिक नवज्योति

स्व श्री कमलनयन शर्मा से हम अपनी रचनाओ के सम्बन्ध म जब भी मिलते चेहरे पर अमिट मुस्कान व शान्त प्रकृति के व्यक्ति व के धनी शमाजी हमेशा हम समझाते व बताते कि फला भाग इस तरह नही इस तरह करो।

उनके इस समझाने व बताने मे गुरु की तरह आज्ञा होती और इस डाट के पीछे छिपा हुआ होता स्नेह भरा प्यार। उस प्यार को हम कभी नही भुला पायेंगे।

अब उनका स्नेह व प्यार भरी डाट को कभी नही सुन पायेंगे। प्रकृति का क्रूर हाथ हमेशा उन लोगो पर पडा है जिसकी आज समाज को व देश को बहुत जरूरत है। उनकी सहनशीलता व निर्भीक लेखनी के हम हमेशा कायल रहे हैं। चाह जन समस्या रही हो या सरकारी महकमे मे फला हुआ अन्याय व भ्रष्टाचार, उन्होने हमेशा बढ-चढ के आवाज उठाई जिसके फलस्वरूप कमचारी आन्दोलन म नौकरी से हाथ धोना पडा था। यही उन्हे नगर विकास न्यास के विज्ञापन बन्द किए जाने पर आर्थिक हानि भी उठानी पडी पर वह कभी भी गलत बात पर झुकने को राजी नही थे।

सुरेश कुमार, चेतराम शर्मा
53 सी ब्लाक, श्री गगानगर।

श्री कमलनयन एक निर्भीक एव निष्पक्ष पत्रकार थे, गगानगर मे पत्रकारिता की रीढ थे।

मीरा
राजस्थान सस्थान श्री गगानगर।

राज्याधिकारी

स्वर्गीय कमलनयन शर्मा एक जुझारू व्यक्तित्व के धनी थे। वे कलम के सिपाही थे जो निरन्तर अन्याय एवं अनाचार के विरुद्ध लिखते रहे। उन्होंने 35 वर्ष के लम्बे अरसे तक निर्भीकता एवं निडरता से पत्रकारिता के पवित्र कार्य का निर्वहन किया। उन्होंने भ्रष्टाचार एवं अत्याचार से कभी समझौता नहीं किया। उनकी कलम हमेशा ही पैनी एवं तीखी रही। वे सदा ही जनता के सजग प्रहरी बने रहे।

सन् 1946–48 के संक्रमण काल में श्री कमलनयन शर्मा ने बीकानेर की राजशाही के विरुद्ध, विद्रोही कर्मचारी नेता के रूप में बगावत की। कर्मचारी संघ का नेतृत्व करने का दण्ड, उन्हें नौकरी से बर्खास्तगी के रूप में मिला। वे अत्यधिक आर्थिक संकट के दौर से गुजरे, परन्तु अपनी आन बान पर अडिग रहे। सत्ता का भय, विपन्नता का कष्ट, दमन की यातना एवं अर्थ का लोभ, उन्हें अपने कर्त्तव्य पथ से विचलित नहीं कर सका। उन्होंने आपत्तियों के सामने भी वीर बन कर रहे। सरकारी नौकरी की गुलामी से मुक्त होकर, उन्होंने विद्रोही पत्रकार का बाना पहना। जन-जन से जुड़े होने के कारण गंगानगर क्षेत्र में समय-समय पर होने वाले जन आन्दोलनों में उन्होंने प्रमुख भूमिका अदा की। 'सीमा सन्देश' के माध्यम से जन जागरण किया। वे घर फूंक कर, सेवा के रास्ते पर चलने वाले फक्कड़ थे। उनका व्यक्तित्व निर्मल, अक्खड़, निर्भीक एवं कालजयी था। उनकी पार्थिव काया पंचभूतों में विलीन हो गई है परन्तु उनका यश शरीर अजर और अमर था। वे गंगानगर जिले की भावी पीढ़ी के लिए सदा सर्वदा श्रद्धास्पद एवं प्रेरणा के स्रोत रहेंगे।

डा० ज्ञानप्रकाश पिलानिया
डाइरेक्टर जनरल सिविल डिफेंस एण्ड कमाण्डेन्ट
जनरल, होमगार्ड्स राजस्थान

आपका पत्र क्रमांक 1723 दिनांक 27 8 87 का प्राप्त हुआ। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि स्वर्गीय श्री कमलनयन जी शर्मा की पुण्य स्मृति में दैनिक सीमा सन्देश "स्वर्गीय कमलनयन शर्मा स्मृति ग्रन्थ" का प्रकाशन करने जा रहा है।

मेरी प्रथम मुलाकात स्वर्गीय श्री कमलनयन जी शर्मा से सन् 1966 में उस समय हुई जब मैं जिलाधीश गंगानगर के पद पर कार्यरत था। मैं उनकी निर्धन एवं पिछड़े लोगों के प्रति समर्पण एवं सेवा की भावना से अति प्रभावित हुआ। यद्यपि गंगानगर से प्रस्थान के बाद पुनः उनसे मुलाकात नहीं हुई फिर भी मुझे प्रति वर्ष नव वर्ष की शुभकामनाएं भेजते रहे। यह उनकी सद्भावना का द्योतक है कि वे उन व्यक्तियों को सदैव स्मरण करते रहे जिनसे उनका परिचय वर्षों पूर्व हुआ था।

मैं 'स्व० कमलनयन शर्मा स्मृति ग्रन्थ' के सफलता की कामना करता हूँ।
सादर

शुभेच्छु
टी० वी० रमणन
वित्त सचिव राजस्थान सरकार

वर्षों स्वतन्त्र पत्रकारिता की मशाल अनवरत सीमान्त जिले मे जलाये रखना भारत के पत्रकारिता के इतिहास मे सदैव स्मरणीय रहेगा। मेरे पिताजी (श्री जानकीप्रसाद बगरहट्टा) एक परिवार से उनका बहुत पुराना सम्बन्ध रहा तथा उस बडप्पन का उन्होने अक्षुण्ण रखा। उनकी निश्छल छवि मेरे समक्ष है। उनके जीवन से आप हम सभी प्रेरणा प्राप्त करें तथा निर्भीकता पूर्वक कर्तव्यरत रहे।

प्यारेमोहन बगरहट्टा
जिला व सत्र न्यायाधीश

वह स्वयं मे एक संस्था थे और उनसे मिलने के बाद गंगानगर सदैव के लिए अपना हो जाता है। श्री कमलनयन जी के जाने से गंगानगर मे जो वेक्यूम हो गया है वह शायद ही कोई भर सके।

सज्जनसिंह राणावत, आई० ए० एस०
निदेशक भेड व ऊन विभाग

स्वर्गीय कमलनयन शर्मा विलक्षण प्रतिभा वाले विरले पत्रकार थे जिन्होने हिन्द-ओ-पाक सीमा पर अपनी पत्रकारिता के माध्यम से ऐसा "सन्देश" दिया, एक ऐसा बिगुल बजाया कि सीमा पर बसे भारतीयो मे नयी चेतना जगी, उन्हें नया आत्म विश्वास मिला और वे एक बडी हद तक न केवल सीमावर्ती भारतीयो के लिए सम्बल बने, बल्कि स्वयं भी दूसरी पंक्ति के सैनिको की तरह सीमा क्षेत्र मे अपना जीवन बिताने मे समर्थ हो सके।

अन्सार अहमद खान
ए डी एम, उदयपुर

मुझे यह जानकर बडा प्रसन्नता हुई कि आप स्वर्गीय कमलनयन जी की स्मृति मे एक ग्रन्थ का प्रकाशन कर रहे हैं।

एक बालक की तरह सरल और बुजुर्ग के विवेक के साथ साथ नवयुवक की सुन्दरता का बहुत अच्छा मिश्रण स्व कमलनयन जी के रूप में था। स्व कमलनयन जी की विशेष इज्जत मैं इस बात के लिए करता था कि उन्होने अपने अखबार का त्याग व बलिदान की भावना से आगे बढाया तथा उन्होने अपनी कलम को निजी स्वार्थ के लिए प्रयोग नही किया। बहुत अवसर ऐसे आये जिनमे प्रलोभन भय एवं भ्रम के भवर जाल से स्व कमलनयन जी साफ सुथरे निकल गये।

श्री कमलनयन जी का जीवन स्वच्छ पत्रकारिता के लिये प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

आर एन अरविंद
नगर परिषद् प्रशासक जोधपुर (राजस्थान)

स्वर्गीय श्री कमलनयन जी शर्मा न केवल एक अग्रणी पत्रकार थे, वरन उन्होन अपनी राजकीय सेवा का परित्याग कर स्वतन्त्रता सग्राम म भी महत्वपूर्ण सक्रिय भूमिका निभाई थी। वह अपने स्पष्ट, निर्भीक, प्रगतिशील, क्रान्तिकारी तथा परिपक्व विचारो के लिये न केवल श्रीगगानगर जिले म वरन् राजस्थान भर मे एक लब्धप्रतिष्ठ पत्रकार एव विचारक माने जाते रहे हैं। मेरे तथा मेरे परिवार के उनसे अत्यधिक घनिष्ठ एव व्यक्तिगत सम्बन्ध रहे हैं। श्री शर्मा के निधन से न केवल पत्रकारिता जगत को एक ऐसी क्षति पहुँची है, जिसकी बहुत समय तक पूर्ति नही हो सकेगी वरन् हम सब भी उनके निधन से एक अत्यन्त घनिष्ठ मित्र, शुभचिन्तक तथा विचारक से वचित हो गये हैं। उनकी मधुर स्मृतिया हम सबको अनेक वर्षों तक प्रेरित करती रहगी।

रमेशचन्द्र गुप्ता
अतिरिक्त निदेशक
पर्यटन कला एव सस्कृति विभाग,

सीमा सन्देश के सस्थापक स्व० श्री कमलनयन शर्मा का व्यक्तित्व बडा ही सरल व गरिमामय था। जिस किसी व्यक्ति के सम्पर्क म वे आते थे तत्काल अपनी स्पष्टवादिता एव मधुर व्यवहार से प्रभावित कर देते थे। उनका जीवन एक श्रेष्ठ कर्मठ व्यक्ति का था। वे जिज्ञासु थे विवेकपूर्ण पर दम्भ रहित चिन्तन व विश्लेषण ही उन्हे प्रिय था। वे अपनी धुन के पक्के थे। दूरदर्शिता के साथ साथ मानवोचित सहृदयता का अपार भण्डार उनके व्यक्तित्व मे देखने को मिलता था। उनकी स्मृति मे जो ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है वह स्वय मे अत्यन्त सुन्दर प्रयास है। आपको इस प्रकाशन के लिये मेरी हार्दिक शुभ कामनायें।

सादर

श्यामप्रताप सिंह राठौर
उप महानिरीक्षक पुलिस,
जयपुर रेंज जयपुर

श्री कमलनयन शर्मा जी को मैं लगभग 10 वर्ष म जानता था। उन्होंने अपने समाचार पत्र के माध्यम से गगानगर क्षेत्र की जनता की जो सेवा की है वह हमेशा याद की जावेगी।

फतेहसिंह चारण
उपसचिव गृह विभाग
राजस्थान सरकार जयपुर

श्री शर्मा जी एक बहुत निडर पत्रकार थे। वे अपने पत्र के माफत सही बात लोगो तक पहुँचाने का हर सम्भव प्रयत्न करते थे, चाहे इससे उनके अपने मित्र बड से बड़े सरकारी अधिकारी या सरकार के मन्त्रीगण भी न क्यो नाराज हो। उनके द्वारा की गई समाज सेवा कभी भी भुलाई नहीं जा सकती। श्री शर्मा के निधन से सेवाभावी समाज म एक बहुत बडी क्षति हुई है, जो कि इस क्षेत्र के लोगो को आने वाले काफी लम्बे अरसे तक खलती रहेगी।

आशा है, श्री शर्मा द्वारा दर्शाया गया मार्ग-दर्शन सीमा सन्देश परिवार द्वारा भविष्य म भी अपनाया जाता रहगा।

आर के चौधरी
कार्यकारी निदेशक (विपणन)
इफको मुख्यालय नई दिल्ली

पत्रकारिता के क्षेत्र म उनके द्वारा किय गये सेवाओ के कार्य सदा स्मरणीय रहगे।

देवीसिंह नरूका
उपनिदेशक राजस्थान सूचना केन्द्र,
नई दिल्ली

श्री शर्मा जीवन पयन्त पत्रकारित से जुडे रह। उन्होंने पत्रकारिता को एक मिशन के रूप म लिया। इन्दिरा गांधी नहर परियोजना के प्रचार प्रसार म भी उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

रामावतार बुनकर
सहायक निदेशक प्रचार
इन्दिरा गाधी नहर मण्डल जयपुर

राज्य के इस स्वतन्त्रता सैनानी की स्मृति मे।0 ।2 86 का एक बैठक म स्व० कमलनयन शर्मा–स्वतन्त्रता सैनानी एव पत्रकार के देहावसान पर गो मिनट श्रद्धाजली दी व दो मिनट मौन रखा।

वे कितने सहृदय मिलनसार और हसमुख व्यक्ति थे। मित्रो के मित्र और दुष्टो से जम कर टक्कर लेन वाले थे। हम उन्ह कभी नही भुला सकते।

मेघराज कालडा
रिटायड मुख्य अभियन्ता (सिंचाई)
बीकानेर

आज से 30-40 वर्ष पूर्व का जमाना था। बीकानेर रियासत की हडताल चल रही थी। आन्दोलन को चलाने के लिए पैसो की सख्त कमी थी। पैसा इकट्ठा करने के लिए हमने कलक्ट्रेट के प्रागण मे मीटिंग की और श्री कमलनयन जी ने भाषण दिया। कर्मचारी आन्दोलन को जारी रखने व आगे बढाने के लिए उन्होने पैसो की अपील की। उनके भाषण का चमत्कारिक असर हुआ और देखते-देखते एक हजार रुपये की राशि इकट्ठी हो गई। तत्कालीन म्युनिस्पिल बोर्ड के एक ओवरसीयर ने तो जेब मे पडे पूरे दो सौ रुपये ही निकाल कर उन्हे दे दिये। इस राशि के महत्व का सही अनुमान तो तभी लगाया जा सकता है जब हमे यह पता हो कि दफ्तर के बाबू की मासिक तनख्वाह 30-35 रुपये ही होती थी।

कर्मचारी आन्दोलन के दौरान कमलनयन के परिवार की आर्थिक दशा बडी सकटपूर्ण थी। मगर तब कर्मचारियो मे अपने नेता के प्रति ऐसा जबरदस्त जज्बा था कि वे यह देखते थे कि नेताजी के परिवार का चूल्हा जला कर ही अपना चूल्हा जलायेंगे। हमारे मकान आगे पीछे थे। उनके परिवार के लिए राशन पानी जुटाने की जिम्मेदारी मुझ पर ही थी। अपने परिवार को इतनी गरीबी व कष्टो मे डालकर कर्मचारियो के हितो की रक्षा के लिए जो आदमी लडेगा, ऐसे व्यक्ति के प्रति आदर व श्रद्धा भाव जागृत होना स्वाभाविक ही है।

हरवशसिंह सेठी
लेखाधिकारी, कलक्ट्रेट
श्रीगगानगर

शिक्षक शिक्षाविद

मेरे लिए वे एक आदर्श व्यक्ति थे। उनमे मुझे वे सभी गुण नजर आये जिनकी मैं आदर्श व्यक्ति मे अपेक्षा करता हूँ। संघर्षरत व्यक्ति के लिए वे प्रेरणा के स्रोत थे। 1984 के आन्दोलन के दौरान मैंने उनसे विचार विमर्श किया और मार्ग दर्शन प्राप्त किया। वह प्रेरणा और मार्गदर्शन आज भी मेरे काम आ रहा है।

वी एन पाण्डेय,
जिला अध्यक्ष
राज० राज्य व्याख्याता संघ,श्रीगंगानगर

गंगानगर के लिए यदि गिन्नीज बुक आफ रिकार्ड में लिखा जायेगा तो यह बात स्पष्ट रूप से आयेगी कि गंगानगर में कर्मचारी संघ की नींव डालने वाला प्रथम साप्ताहिक पत्र शुरू करने वाला व इसे दैनिक कर इतने लम्बे समय तक अखबार चलाने वाला एक ही व्यक्ति था कमलनयन शर्मा। इनको प्रथम बार देखने व सुनने की धुंधली याद 1949 की है जब मार्च माह में मैं बीकानेर में दसवीं का विद्यार्थी था और कमलनयन जी किसी हड़ताल मे जोशीला भाषण दे रहे थे। इसके बाद मुझे इन्हें करीब से देखने का अवसर तब मिला तब राजस्थान राज्य निर्माण के बाद गंगानगर मे 1957 में पहली बार कर्मचारी संघ के चुनाव हुए। कमलनयन जी उसके संरक्षक और श्री हंसराज सोनी अध्यक्ष बने। उनका यह गुण था कि जिसने भी उनसे दिशा निर्देश चाहा, उन्होंने बेहिचक व पूरी ईमानदारी से दिया। आज के समय मे जब सरकार और अधिकारी केवल आन्दोलन की भाषा ही समझते हैं कमलनयन जी ऐसे संघर्ष के लिए प्रेरणा के स्रोत थे। उनको खो देने से कर्मचारी वर्ग को गहरी क्षति हुई है। मगर उनके कर्मों की छोड़ी गई विरासत हमें सदा संघर्ष के लिए प्रेरित करती रहेगी।

मदनमोहन राजवंशी
अध्यक्ष जिला पुस्तकालय संघ

कमलनयन जी ने जो सही समझा वही कहा। वे निर्भीक व अक्खड़ तबीयत के थे कबीर की तरह। उनके दूसरे गुण जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया वह है उनका सादा जीवन। कपड़ो, रहन सहन, आचार विचार सभी तरह से सरल सादा व आडम्बर विहीन व्यक्ति थे। 36 वर्षों की पत्रकारिता की सेवा के दौरान उन्होंने अपने समाचार पत्र सीमा संदेश को एक पहचान दी। एक विशेष स्थान दिलवाया। जिले भर के लोगो के लिए यह पत्र अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बना।

वी एन कौशिक,
प्रिंसीपल, बिहाणी शिक्षा
महाविद्यालय श्रीगंगानगर (राजस्थान)

मेरा उनका 40–45 वष का सम्पक था। बीकानेर राज्य कमचारी सग के गठन और उनके नेतृत्व मे किये गये सघष मे मैं सहभागी रहा हू - उनको पत्रकारिता म प्रवेश कराने मे हम लोगो की प्रेरणा भी रही थी। मुझे याद आता है कि 'सीमा सन्देश' नाम भी कुछेक साथियो ने मिल बैठकर तय किया था। अभी कुछ माह पूव उनका एक पत्र उस युग के सस्मरण लिखने के विषय मे प्राप्त हुआ था। उसमे लिखा था कि स्वातन्त्र्य पूव की पीढी का धीरे धीर अवसान हो रहा है। शायद उन्हे पूवाभास हो गया था।

उनका पूरा जीवन सघष कमठता का प्रतीक रहा है।

रामधन गोयल
प्रधानाचाय (अवकाश प्राप्त)

निस्सदेह श्री कमलनयन जी घमण्ड से कोसो दूर, भ्रष्टाचार व अन्याय के खिलाफ लडने वाले, सिद्धान्तो को समर्पित नेक दिल इन्सान थ। पत्रकारिता के पितामह को हार्दिक श्रद्धाजलि।

हनुमान दीक्षित,
प्रधानाध्यापक, नोहर

वे अपने जिले म पत्रकारिता के प्रवतक थे। यहा के निवासियो की भावनाओ के लिए उन्होने सबल अभिव्यक्ति का माध्यम दिया। यहाँ की जीवन धारा को ललित एव प्रवहमान बनाने मे उनका योगदान सबको स्मरण रहेगा। वे अतीत हो गये। पर उनकी अपनी प्रासगिकता मे अस्मिता की एक लहर बन गई।

ओम प्रकाश बिहाणी
(व्यवसायी)
मन्त्री ग्रामोत्थान विद्यापीठ
सागरिया (श्रीगगानगर)

कमलनयन जी को सामाजिक व राजनीतिक सस्कारो का आदर्श अपने पिता प० वासुदेव से मिला जो बीकानेर के प्रतिष्ठित ज्योतिषी व राजगुरु थे। गगानगर म आकर उन्होने अपने समाचार पत्र सीमा स देश के माध्यम से जन चेतना जगान का काय ही नही किया वरन गत 3 वर्षों के सीमा सन्देश के अक अब गगानगर क्षेत्र के लिए ऐतिहासिक दस्तावेज बन गये हैं। इन फाईलो के आधार पर गगानगर का आधुनिक इतिहास लिखा जा सकता है। इस अमूल्य धरोहर को सीमा सन्देश सम्भाल कर रखे क्योकि अब यह हमारी साझी सम्पत्ति है। इन अखबार की प्रतिया के सहारे शोध काय किया जा सकता है। यदि सीमा सन्देश परिवार इन समाचार पत्रो की एक-एक प्रति स्थानीय सूचना केन्द्र मे रखवान का प्रब ध कर सके तो कि जिज्ञासु नागरिको की अमूल्य सेवा होगी।

गगानगर क्षेत्र के लिए स्व० कमलनयन जी का योगदान इतना महत्वपूण रहा है कि उनके जीवन के कार्यों को प्रकाश मे लाने के लिए उनके सम्मान मे एक स्मृति ग्रन्थ श्रद्धाजलि के रूप मे निकलना बहुत ही सामयिक होगा।

डा० विद्या सागर शर्मा
व्याख्याता, राजनीति शास्त्र
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
श्रीगगानगर।
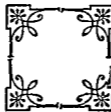
उद्योगपति व्यावसायिक यूनियन

पत्रकारिता भारत म कभी भी साधारण पेशा नही रहा। आजादी से पहले के पत्रकार विद्रोह की मशाल लेकर चलने वाले का काम करते थे। स्वतन्त्र होने के बाद कुछ पत्रकार तो पत्रकारिता के नाम पर सिर्फ भाड बन कर रह गये। कुछ व्यक्तियो का प्रशस्ति गान अथवा कुछ व्यक्तियों की आलोचना चर्चा ही उनके हिस्से मे आई। वे इसी को अपना कतृव्य मानते रहे। पर कुछ पत्रकारो ने उस मशाल को आगे बढाया। निष्पक्ष एव निडर होकर उन्होंने देश के हित की बात लिखने मे जरा भी सकोच नही किया। श्री कमलनयनजी शर्मा ऐसे ही पत्रकार के रूप मे उभरे। उन्होंने कभी भी अन्याय एव अत्याचार के विरुद्ध घुटने नही टेके बल्कि अपने विचारों से समाज के अन्दर प्रेरणा भरते रहे। यह सही है कि ऐसे विचार देने वाले व्यक्ति कालजयी होते हैं। मृत्यु इनको अमर बना देती है।

बजरगलाल जाजू

प्रमुख उद्योग पति जयपुर/नई दिल्ली

(

उनके मन मे समाज के उस वग के लिए बहुत ख्याल था जो गरीब, असहाय व पिछडा हुआ है। उनके मन मे उनके प्रति कुछ करने की भावना सदा रही। जहा तक व्यापारी वग का प्रश्न है उन्होने व्यापारियो के प्रति सरकार की गलत नीतियो का सदा विरोध किया। व्यापारियो के दृष्टिकोण को अपने अखबार के माध्यम से सरकार के सामने रखा। कई ऐसे अवसर आये जब व्यापारियों को सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करना पडा और ऐसे अवसरों पर उन्होने व्यापारियो का साथ दिया। समाज के हित मे जो उन्हे लगा उसे करने में उन्हे कभी हिचक महसूस नही हुई।

बीमारी की अवस्था म ही जब दिल्ली से दोबारा आये तो मैं मिलने गया। उनके निधन से 5–7 दिन पहले। मुझसे उन्होने अच्छी तरह बात की मगर साथ ही यह भी कहा 'हमारे दिन तो अब समाप्त हो गये। मेरे बाद परिवार का ध्यान रखना।' इससे स्पष्ट है उन्हे कि मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। मगर वे जरा भी विचलित नही थे। जैसे जिन्दगी मे वे किसी मुसीबत से नही डरे, अन्तिम दिनो मे मौत से भी भयभीत नही हुए। ऐसी दृढता सहनशीलता व धैय विरलो मे ही देखने को मिलता है।

श्रीकृष्ण पेडीवाल

पूव अध्यक्ष गगानगर ट्रेडस एसोसियेशन, श्रीगगानगर

कमलनयन जी सक्रिय राजनीति मे न रहते हुए भी समाज मे राजनीतिक जागृति पदा करना चाहते थे। इसके लिए उन्होने अपने पत्र सीमा सदेश का पूरा उपयोग किया। वे चाहते तो राजनीतिक जोडतोड व समझौतावादी रुख अपना कर सत्ता की राजनीति मे स्थान प्राप्त कर सकते थे जसा कि उनके कुछ साथियो ने किया। मगर इसमे उनका विश्वास नही था। वे जीवन जिये तो अपने ही ढग से, अपनी ही शर्तों पर। उनके अनेक साथी राजनीति मे उच्च स्थानो पर पहुँचे मगर उनसे लाभ न लेने की उन्होंने कसम खा रखी थी। मैं उम्मीद करता हूँ कि हमारी पीढी ऐसे व्यक्ति के जीवन से प्रेरणा लेगी।

महेश पेडीवाल
अध्यक्ष होलसेल उपभोक्ता भण्डार श्रीगगानगर

वे एक निर्भीक पत्रकार थे। उन्होने अपने पत्रकारिता के जीवन में अनेक कठिनाईयो का सामना करते हुए एक सम्मानित पत्रकार की पदवी प्राप्त की।

सीताराम मौर्य
अध्यक्ष अम्बेडकर नवयुवक सघ, श्रीगगानगर

श्री शर्मा ने एक साहसी एव निष्पक्ष सम्पादक के रूप मे जो काय इस क्षेत्र मे किया है वह सराहनीय है।

गगानगर ट्रेडस एसोसियेशन

शर्माजी ने हमेशा सभी मजदूर आदोलनो मे मालिको द्वारा की गई गुडागर्दी का पर्दाफाश किया तथा अपने जीवन मे जुल्मो के खिलाफ सदा सघर्ष किया।

फेरी कबाड मजदूर यूनियन श्री गगानगर

मजदूर की आवाज को बुलद करने म उनकी लेखनी ने हम पूरा-पूरा सहयोग दिया। ऐस कमठ समाज सेवी पत्रकार को हम सच्चे मन से श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं।

सचिव, भाखडा गगानहर राष्ट्रीय मजदूर
यूनियन, भाखडा क्षेत्र श्री गगानगर

सीमा सन्देश को उन्होने बच्चो की तरह पाला था, इसमे कोई दो राय नही। गगानगर व राजस्थान की राजनीति पर उनकी बेबाक टीकायें तथा अपने कार्यालय के सामने के बुक स्टाल पर पत्र पत्रिकाओ को पल्टते पढते सामयिक घटनाओ पर कई बार उनके दृष्टिकोण सुने।

एक खरा, साफगोई व सिद्धान्तो पर अडिग व्यक्तित्व था उनका। सिद्धान्तो की नींव से जो भी हटा चाहे वह कितना ही निकट का साथी रहा हो, दो टूक कहते, नहीं बोलता तुझसे जा। कमचारी आन्दोलन बीकानेर के जलसे मैंने देखे। वही जुझारूपन वर्षों तक पाला उन्होंने अपने मे। अभिव्यक्ति की स्पष्टता, सिद्धान्तो पर अटल रहना, सिवाय प्रेम स्नेह के किसी भी कीमत 'गोलमाल नहीं'। जमाने का बदलाव उनके विचारों को प्रभावित न कर सका। खरी पत्रकारिता के पर्याय तथा इस सीमान्त जिले की पत्रकारिता के जनक थे वे।

रामायण मे मेरा सबसे प्रिय पात्र जटायु हमारी परम्परा का सवप्रथम सत्याग्रही माना जा सकता है। आज जब भी किसी के साथ कोई अन्याय करता है और कोई उसको एक शब्द भी नही कहता, तब जटायु याद आता है। रावण को अपने बाहुबल से पराजित करना जटायु के लिए सम्भव नही था। परन्तु उसके जीवित रहते बिना रोकने की कोशिश के रावण सीता को हरके ले जाये यह कसे सम्भव है। कितने ही पत्रकारो से यह कहते हुए सुनता हू मुसीबत काहे को मोल लेनी। इस वाक्य मे अनासक्ति नही, अपितु पलायन वाद होता है। दादू (कमलनयन जी को लोग दादू" ही कहते थे) ने कभी पलायन नही किया। सत्य के लिए सदैव अग्रणी रहे। जब भी कोई लेखनी पत्र के माध्यम से सत्यता उजागर करती है तब दादू याद आते हैं। ऐसे लोग अब और क्यो पदा नही होते ? ऐसे व्यक्ति जा नही सकते, वे सदैव जीवित रहते हैं, निर्भीक पत्रकारिता के आदर्श के रूप मे।

धमचन्द चोपडा
व्यवसायी व उद्योगपति करणपुर

मैं कमलनयन जी के इस गुण से बहुत प्रभावित हूँ कि वे कभी किसी दबाव मे नही आते थे। खरीखोटी सुनाते समय वे ये नही देखते थे कि वे किसे सुना रहे हैं। सुनाते समय उन्होने यह परवाह नही की कि सुनने वाला कितनी बडी हैसियत या प्रभाव वाला है।

विजयकुमार गोयल
अध्यक्ष अरबन को-ऑपरेटिव बैंक, श्रीगगानगर

कर्मचारी नेता

"आ ए उठ। स्ट्राईक की कॉल तेरे तक पहुची नही ?'

मैं कुलबुलाया। आवाज से ही पहचान गया। वही है, लापरवाही की हद तक दार्शनिक पर कमठ सेनानी भाई कमलनयन।

"क्या हुआ है तुझे ?'

निमोनिया।'

"मैदान मे आ, सब ठीक हो जायेगा।" जस जबरी अपहृत कर ले जाना चाहता हो मुझ, इस भाव से जबरी उठा लिया। रात भर योजना बनती रही। साथी सत्यपाल। कई एक और भी थे। सघष की लाईन स्केच करते रहे थे। हम और अत मे स्ट्राईक की काल दे दी।

बीकानेर अभी रियासत थी। सन् 1946 के दिनो म हडताल एक दम नई बात थी और वह भी सरकारी कमचारियो की। राज के नौकरो को पहली बार राज से भिडा कर सबको आश्चय म डाल दिया था भाई कमलनयन ने।

लडाई शुरू हो चुकी थी। और मुझे बे वक्त घेर लिया बीमारी ने। 'नई चीज ह रजवाडी राज मे हडताल, राजशाही से डरते है कमचारी। तू सम्भाल अपने क्षत्र म इन्ह। पुलिस वालो को समझा, इसमे उनका भी हित है। आतक फलान की कोशिश न करें।'

मेर ही मफलर से मेरी पसलियो को जकड, ले चला मुझे भाई। आम सभा की गयी। मैं बोलने लगा तो पहल पसलिया ददराई। पीछे जादू के माफिक सब ठीक हो गया। जसे जसे आवाज ऊची उठी कि दद का अहसास नीचे बैठता गया। बगल मे जो बठा था भाई कमलनयन।

बाद मे खुद वाला ता खूब धुआधार बोला। जल्दी जल्दी बोलने की आदत। अगारे उगलती जुबान। स्ट्राईक हो गयी कम्पलीट। अध्यापिकाए सबसे अगले हरावल पर। जो स्ट्राईक ज्वाइन न करे चूडिया पहने।

रामकुमार ओझा
बुद्धिजीवी, नोहर

कमलनयन जी ने कर्मचारी संघ की राजनीति में आने को प्रेरित किया, मैं आ गया। फिर उन्होंने जो मार्ग दिखाया उस पर चलना आरम्भ कर दिया। उन्होंने मुझे दो ही बातें सदा याद रखने को कही। पहली—किसी से पैसे लो नहीं। लो तो पैसे जल्दी से जल्दी वापस करने का प्रयास करो। यदि वापस देने की स्थिति नहीं है तो भी देने वाले को कहते रहो कि तुम्हारा उधार देना है, ताकि उसे विश्वास रहे कि आपकी नियत वापस देने की हैं। दूसरे यदि किसी से मतभेद है तो उसे खुल कर सामने कहो पीछे से चुगली नहीं करो। यानि वार करना है तो छाती पर करो। पीठ में छुरा मत घोंपो।

सत्य नारायण शर्मा
पूर्व, जिला अध्यक्ष
राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ गंगानगर

1975 से 1977 के बीच देश में आपातकालीन स्थिति यानि इमरजेन्सी थी। उस काल में कर्मचारियों को बहुत दबाया गया मगर कर्मचारियों ने चू तक नहीं की। मैं सोचता हूँ कि वह सख्ती राजा महाराजाओं के जमाने से अधिक दमनकारी तो नहीं थी। इस सन्दर्भ में जब मैं श्री कमलनयन जी द्वारा बीकानेर रियासत के समय कर्मचारियों के विद्रोह का झंडा उठाने की बात सोचता हूँ तो चकित हो जाता हूँ कि हम कर्मचारी तो लोकतान्त्रिक व्यवस्था में अपनी चुनी हुई सरकार के सामने ही मुह न खोल सके और कमलनयन जी एक निरकुंश शासन के सामने खड़े होने का साहस दिखा पाये जब न स्वतन्त्र प्रेस था और न जन चेतना। जनता सामन्तवादी सोच की थी। उन्हें इस लड़ाई का परिणाम भी मालूम था और वह उन्होंने भोगा भी। ऐसे कर्मचारी नेता हमारे आदर्श होने चाहिये।

पत्रकारिता का पेशा भी उन्होंने इसीलिए अपनाया क्योंकि वे स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के हिमायती थे और सीमा सन्देश उनकी अभिव्यक्ति का माध्यम बना। अपने समाचार पत्र के जरिये भी उन्होंने कर्मचारियों के हितों की बात ही की। कभी विरोध नहीं किया। जब जरूरत होती वे संघर्ष के समय हौसला, साहस व सहारा देते। अपने अनुभवी निर्देशों से मार्ग दर्शन देते। आज के युग में इन्सान होना बहुत बड़ी बात है और मैं तो कहूंगा—कमलनयन जी श्वेत वस्त्रों में साधु थे।

ओमदत्त शर्मा

वह कमलनयन जैसी हस्ती ही थी, जिसने कर्मचारियों के हितों के लिए राज्य से टक्कर ली। 1982 के कर्मचारी आन्दोलन के समय उन्होंने हम राज्य कर्मचारियों का जो पथ प्रदर्शन किया वह मुझे याद रहेगा। हमें उनका बड़ा सहारा था। हम कर्मचारी उनके बताये रास्ते पर चलें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

हरिकिशन कपिल

कमलनयन शर्मा

' चाकरी उस रास न थी और वह
नेतृत्व करके आला हुक्काम की बराबरी
खडा हुआ। कमचारी सघष के लम्बे
युद्ध मे पहला मोर्चा कुर्सियो का ही रहा
त्रासदी की बात। त्रासदी तो कमलनयन ने
से गले लगायी थी। विजय भरपूर थी
सिंहगढ विजय जसी, जिसमे सिंह को खो
पर विजय के पुरस्कार स्वरूप कमलयपन को
से बर्खास्त कर दिया गया।

'बीकानेर कमचारी सघष के इतिहास को
पीढी के लिए लिपिबद्ध करने के उद्देश्य से
कमचारी सघ के पुराने सघष के साथियो
लिखे और कमचारी सघ की हडताल
अनेक महत्वपूण दस्तावेजो को उन्होंने बडी
मे सजोकर रखा हुआ था।"